प्रेयरी नगर का बालक

कार्ल सैण्डबर्ग

प्रेयरी नगर का बालक

कार्ल सैण्डबर्ग

अनुवादक
हरवंश राय शर्मा एम०ए०

प्रकाशक
इंडियन प्रेस (पब्लिकेशन्स) प्राइवेट लि०
इलाहाबाद

१९५८

३·२५ रुपये

HINDI EDITION

PRAIRIE–TOWN BOY

BY

CARL SANDBURG

Taken from *Always The Young Strangers*

Price Rs. 3·25

Published by B. N. Mathur
Indian Press (Publications) Private Ltd., Allahabad

Printed by P. L. Yadava
at The Indian Press (Private) Ltd., Allahabad

विषय-सूची

प्रेयरी नगर का बालक

प्रस्तावना

न्यू इँगलैंड से आनेवाले लोग तथा उनके वंशज इलिनोइस राज्य में स्थित गेल्सबर्ग नगर के अधिकांश भाग के स्वामी थे और राजनीति, गिरजाघर, स्कूल तथा कालेज में उनका बोलबाला था। केंटकी और टेनेसी से इँगलिश और स्काच-आयरिश जाति के लोग आये थे। स्वीडेन से आये अनेक लोग मतदाता हो गये थे और राजनीति एवं व्यापार में उनका प्रभाव स्थापित हो गया था। हमारे घर और रेलवे के अहातों के बीच में स्थित मकानों की ढाई पंक्तियों में स्वीड बहुसंख्यक थे; उनके पश्चात् 'आदिवासी', दो या तीन 'मैंकी' दो अँगरेज परिवार, कुछ आयरिश और जर्मन आते थे। सन् १८९० के लगभग बहुत से इटैलियन आ गये थे—कोई तीस पुरुष, स्त्रियाँ और बच्चे जो छोटी रेलवे लाइन के निकटस्थ दो मकानों में रहते थे।

१८९० में आरम्भ होनेवाले दशाब्द में मेरे मन में बहुधा यह विचार आया

करता था कि गेल्सबर्ग प्रेयरी का कितना नया नगर है—जिसमें प्रायः बीस हजार लोग रहते हैं और वे सब पिछले पचास वर्षों ही में यहाँ आये हैं। उसके पहले वहाँ केवल प्रेयरी का खुला मैदान था। यहाँ आकर बसनेवालों का कोई नियमित प्रवर्त्तक रहा हो इसका कोई प्रमाण न था। उनमें से अधिकांश कठोर परिश्रम कर सकते थे, दुर्भाग्य का सामना कर सकते थे। उन्होंने प्रेयरी को आबाद किया, सड़कें और गलियाँ बनाईं, पहले विद्यालयों और गिरजाघरों की स्थापना की तथा उस नगर और देहात की परम्परा का सृजन किया जहाँ मेरा जन्म और पालन-पोषण हुआ। मैं बालकपन में सत्तर और अस्सी वर्ष के कुछ ऐसे कम बुड्ढों को देखता था जिन्होंने इसको आकर बसाया था और अब जिनके बाल पक गये थे और जो दुर्बल हो चले थे। मैं अपने किशोर मस्तिष्क में उन्हें उस स्थान पर खड़े चित्रित करने का प्रयास किया करता था जहाँ पर आजकल मेन स्ट्रीट है परन्तु जहाँ उस समय न तो कोई सड़क ही थी, न दीवार और न कोई घर। मैं उनको चारों तरफ देखते और यह निर्णय करते हुए कल्पना करता था कि कहाँ पर जमीन साफ करके मकानों की पहली पंक्ति बनाई जाय, कहाँ पर सार्वजनिक चबूतरा, गिरजाघर, लोहार की दूकान और सामान्य दूकान बनायी जाय और कहाँ पर कालेज स्थापित किया जाय जो युवकों और आगे आनेवाली पीढ़ियों के लिए प्रकाश तथा आशा का केन्द्र बने। उन्होंने अपने छोटे नगर को उस स्थान पर विकसित होते हुए और नाम ग्रहण करते हुए देखा जहाँ पहले शांति भंग करने के लिए केवल वन्य-पशुओं की बोली और वर्षा तथा वायु ही थे।

वे लोग ओहियो, न्यूयार्क, टेनेसी या केन्टकी से घोड़ा गाड़ियों में अपने-अपने कुटुम्ब और गृहस्थी के सामान लेकर यहाँ आये थे। कुछ लोगों के परिवार में छः, आठ या दस बच्चे थे। वे अपने घोड़ों और गाड़ियों को ऐसे वनमार्गों से हाँककर लाये थे जहाँ उनके पैर और पहिये की हालें झाड़ियों में फँस जाती थीं। जहाँ रात हो जाती थी वहीं वे ठहर जाते थे और दिन निकलने पर फिर यात्रा आरम्भ कर देते थे। सन् १८५४ में नाक्स काउंटी में रेल आने के पहले-वाली पीढ़ी के कुछ लोगों ने अपनी यात्रा का कुछ भाग हाथ से खेई जानेवाली नावों या भाप से चलनेवाली नावों के द्वारा तय किया था।

मेरे जन्म के समय नगर और जिले के सर्वश्रेष्ठ नेता जार्ज डब्ल्यू० ब्राउन थे जो उस समय गेल्सबर्ग के मेयर थे। वे न्यूयार्क राज्य के अन्तर्गत सैराटोगा जिले में खेत में काम करते थे। उन्होंने बढ़ई का काम सीखा और मोहाक घाटी की प्रारम्भिक रेल पर काम करने लगे थे। उन्होंने सम्बन्धियों से सुना कि इलिनोइस में अच्छी सस्ती भूमि मिलती है। इसलिए सन् १८३६ में, अर्थात् जब वहाँ २१ वर्ष के हुए वह और उनकी स्त्री दोनों छतदार घोड़ागाड़ी में बैठकर पश्चिम की ओर चल पड़े। वे कई सप्ताह तक यात्रा करते रहे। प्रतिदिन वर्षा होती थी, इसलिए गाड़ी के पहिये कीचड़ में फँस जात थे और उनको उठाकर या खोलकर निकालना पड़ता था। जुलाई में, गेल्सबर्ग से कोई नौ मील पर, उन्होंने अपने घोड़ों के बदले में अस्सी एकड़ जमीन खरीद ली। उनकी स्त्री खेती का और वह घर बनाने का काम करते थे। बाद में, गेल्सबर्ग, नाक्सबिल और हेन्डरसन ग्रोव में लोग उन घरों को दिखाया करते थे जिनको जार्ज डब्ल्यू० ब्राउन ने इतना अच्छा बनाया था। अपनी आमदनी में से जितना सम्भव होता वह बचा लेते थे जब कि साथ ही वह एक ऐसी मशीन का भी चिंतन, अध्ययन और परीक्षण करते रहते जिससे अनाज बोया जा सके।

सन् १८५२ ई० के वसन्त में उन्होंने अपनी मशीन से अपने लिए सोलह एकड़ अनाज बोया और अपने पड़ोसी के लिए आठ एकड़। उस वर्ष उन्होंने दस मशीनें बनाने की आशापूर्ण योजना बनाई थी परन्तु वह एक ही मशीन बना सके। उन्होंने अपने मवेशियों को बेच डाला, फिर अन्तिम घोड़े को भी बेच दिया जिससे अपनी मशीन को पेटेण्ट कराने के लिए उनके पास धन हो जाय। अनाज बोनेवाली मशीनें बनाने और बेचने के लिए उन्होंने अपना फार्म बेच डाला और दस प्रतिशत वार्षिक ब्याज पर रुपया उधार लिया। १८५६ ई० में उन्होंने गेल्सबर्ग में अपना कारखाना शुरू कर दिया और ६०० मशीनें बनाईं। अगले वर्ष उन्होंने एक हजार मशीनें बनाईं। युद्ध-काल (१८६१-६५) में उनकी मशीनें मध्य पश्चिम में फैल गईं और उनसे खाद्यान्न की उपज में वृद्धि हुई, जिससे युद्ध में विजय प्राप्त करने में उत्तरी रियासतों को सहायता मिली।

जब मैं युवक था तब "ब्राउन कार्नप्लान्टर वर्क्स" प्रति वर्ष आठ हजार

मशीन बनाता और बेचता था। दो सौ मनुष्य उसमें काम करते थे। नगर के भवनों की एक पंक्ति में कोने के भवन को छोड़कर शेष सब में उनकी दूकानें थीं। कोनेवाला मकान उन्होंने मेथडिस्ट चर्च के लिए सुरक्षित कर दिया था और उसमें वह नित्य नियमित रूप से जाया करते थे।

जब धूलिपूर्ण नाक्सविल मार्ग पर साढ़े चार मील चलकर हम जिले के मेले को जाते थे तब रास्ते में आइजक गुलिहर का मकान पड़ता था। वह केन्टकी के ईसाई जिले में पैदा हुए थे। परन्तु सन् १८३० में वह इलिनोइस के अन्तर्गत संगामन काउंटी में चले गये थे और सत्तरह वर्ष की उम्र में सन् १८३२ में वह ब्लैक हाक युद्ध में भरती हुए और कप्तान अब्राहम लिंकन के मातहत उन्होंने सिपाही के रूप में सेवा की। सन् १८३३ में वह नाक्स काउंटी में चले गये। सन् १८५८ में जब लिंकन डगलस के साथ वाद-विवाद करने के लिए नाक्सविल से गेल्सबर्ग जा रहे थे तब उन्हें बतलाया गया कि यही वह घर है जिसमें आइजक गुलिहर रहते थे। लिंकन अपनी बग्घी से उतर पड़े। वह घर के भीतर गये और जब वह संगामन काउंटी के पुराने मित्रों के साथ एक गिलास ठंडा पानी पीते रहे तब बग्घियों और अन्य घोड़ा-गाड़ियों की एक मील लम्बी पंक्ति दस मिनट तक रुकी रही।

बाहर सेमिनरी स्ट्रीट सेड पर डैनियल ग्रीन बर्नर का पाँच सौ सैंतालीस एकड़ का फार्म था। वह नाक्स काउंटी में इलिनोइस में स्थित न्यूसलेम से आये थे जहाँ उन्होंने चार वर्ष तक निवास किया था और युवक लिंकन को ब्लैक हाक युद्ध में जाते हुए देखा था। उन्होंने उस किराने की दूकान पर क्रय-विक्रय किया था जहाँ लिंकन गाहकों की सेवा करते थे और उन्होंने लोगों के साथ लिंकन के शिष्ट व्यवहार को देखा था। गेल्सबर्ग के एक समाचारपत्र के एक संवाददाता से श्री बर्नर ने कहा था कि "लिंकन में इतने मजाक भरे हुए थे जितने कुत्ते में पिस्सू होते हैं....। वह दीवार पर टेक लगाकर अपनी बाँहें फैला देते थे। अपनी बाँहों को इतना फैलाते हुए मैंने कभी किसी मनुष्य को नहीं देखा। लोगों को प्रसन्न करने के लिए वह ऐसे ही छोटे-मोटे काम किया करते थे....। अपने मनोरंजन के लिए वह दूसरों के पास नहीं जाते थे किन्तु यदि दूसरों को मनोरंजन की आवश्यकता होती थी तो वह उनके पास जाते थे

और उनको परिहास से परिपूर्ण पाते थे....।" बहुत अच्छा हुआ होता यदि मैंने श्री बर्नर के फार्म में फसल काटते समय काम किया होता और लिंकन तथा न्यूसलेम के दिनों के विषय में उनकी बातें सुनी होतीं।

नाक्स कालेज, लोम्बार्ड कालेज और ब्राउन्स बिजीनेस कालेज के कारण गेल्सबर्ग का उपनाम "कालेज नगर" पड़ गया। जब मैं दूध का दो गैलनवाला कनस्तर लेकर जाता था तब कई बार नाक्स कालेज के निकट सड़कों पर मुझे एक छोटे कद के आदमी मिलते थे जो बिना बोले हुए मुझे नमस्कार करते थे और जिनको मैं बिना बोले हुए नमस्कार करता था। वह एक चुस्त, चौकोर कोनेवाला और सिंगल-ब्रेस्ट का काला कोट पहने रहते थे। वह उनके घुटने तक लटका रहता था और उसमें उनकी ठुड्ढी तक बटन लगे हुए थे। सामने से आप उनका कालर नहीं देख सकते थे क्योंकि उनकी दाढ़ी पंखे की तरह फैली रहती थी और उनके जबड़ों ठुड्ढी और ऊपरी ओंठ को ढके रहती थी। मेन स्ट्रीट पर एक बार मैंने एक मनुष्य को कहते हुए सुना, "उस व्यक्ति का ऐब-लिंकन से परिचय था।" मुझे ज्ञात हुआ कि उक्त सज्जन सात बार इलिनोइस राज्य में सार्वजनिक शिक्षा के सुपरिण्टेण्डेण्ट निर्वाचित हुए थे और चौदह वर्ष सेवा की थी। स्प्रिंगफील्ड में राजभवन में उनका कमरा उस कमरे से लगा हुआ था जिसमें लिंकन रहते थे जब वह राष्ट्रपति-पद के लिए उम्मेदवार थे और वह दोनों व्यक्ति मैत्रीपूर्ण वार्तालाप किया करते थे।

यह नाक्स कालेज के अध्यक्ष न्यूटन बेटमैन थे जिनको कभी-कभी लोग "लघु न्यूट" के नाम से पुकारते थे। वह कहते थे कि लिंकन उनका परिचय "मेरे छोटे मित्र इलिनोइस के महान् अध्यापक" कहकर कर देते थे। एक बार लिंकन उनके पास एक पत्र लाये थे और उनसे पूछा था कि क्या इसमें व्याकरण-सम्बन्धी सुधार की आवश्यकता है? लिंकन ने यह भी कहा था कि "मैं व्याकरण में कभी बहुत अच्छा नहीं था।" उन्होंने कहा कि जब देश में तूफान आनेवाला था तब उससे उद्विग्न होकर लिंकन को इधर से उधर टहलते हुए उन्होंने देखा था और यह कहते हुए सुना था कि "मैं प्रत्येक बात में सत्य के अतिरिक्त कुछ नहीं चाहता।" उन्होंने यह भी कहा कि जब लिंकन राष्ट्रपति निर्वाचित कर लिये गये तब स्प्रिंगफील्ड से वाशिंगटन के लिए गाड़ी के प्रस्थान करने के पहले लिंकन से हाथ मिलानेवाले वह अन्तिम व्यक्ति थे।

न्यूटन बेटमैन का जन्म न्यूजर्सी में सन् १८२२ में हुआ था। उनके पिता एक लुंज जुलाहे थे जो सन् १८३३ में अपनी पत्नी और पाँच बच्चों को एक छतदार घोड़ा गाड़ी में लेकर पश्चिम की तरफ इलिनोइस में गये थे। जैकसनविल के पास न्यूटन बेटमैन की माता हैजे से मर गई और लोगों में हैजे का भारी डर फैल गया। इस कारण उन्होंने इतनी शीघ्रता के साथ उनको दफन कर दिया कि उनकी कब्र पर कोई स्मारक चिह्न भी नहीं बनाया जा सका। उनके कनिष्ठ पुत्र न्यूटन ने बाद में उसकी बहुत खोज की परन्तु वह कब्र का ठीक पता नहीं लगा सके। शिक्षा प्राप्त करने के संघर्ष में वह कुछ समय तक उबाली हुई मक्का और दूध खाकर जीवन व्यतीत करते थे जिसके लिए वह प्रति सप्ताह ग्यारह सेन्ट देते थे। वह बिसाती के सामान पीठ पर लादकर घूमते थे और पिन, सुई और तागा आदि बेचते थे। उनका लक्ष्य पुरोहित बनना था पर बाद में उन्होंने उसे बदल दिया और अध्यापक हो गये। वह जैकसनविल विद्यालयों के अध्यक्ष थे और उन्होंने राज्य के अध्यापक संघ का संगठन किया था। वह सन् १८७५ से १८९२ तक नाक्स कालेज के सभापति रहे। इतने अधिक समय तक और कोई व्यक्ति नाक्स का सभापति नहीं रहा था। कहा जाता था कि उनके सभापतित्व-काल में जितने स्नातकों ने संसार में प्रवेश किया और ख्याति प्राप्त की उतने उनके पहले और किसी सभापति के समय में नहीं हुए थे। मैंने एक व्यक्ति को कहते हुए सुना, "उनमें चरित्र-बल था और वह छात्रों के पास जाता था।"

लघु न्यूट जब सत्तर वर्ष के हुए तब उन्होंने नाक्स के सभापति के स्थान को रिक्त कर दिया। पर वह कुछ कक्षाओं का अध्यापन करते रहे। एक नये व्यक्ति ने सभापति का पद ग्रहण किया। वह जान हस्टन फिन्ले थे जो उन्नीस वर्ष के थे और जो "संयुक्त राज्य में सबसे अल्प-वयस्क कालेज प्रेसिडेण्ट थे।" जब मैं दूध का दो गैलनवाला कनस्तर लेकर जाता था तब कई बार फिन्ले से मिलता था, किन्तु वह मेरे पास से होकर निकल जाते थे, उनका सिर झुका रहता था और उनका मस्तिष्क कहीं अन्यत्र रहता था। फिन्ले ने नाक्स को सारे देश में उस कालेज के रूप में विख्यात कर दिया जहाँ लिंकन और डगलस ने वाद-विवाद

किया था। अक्टूबर ७, १८९६ को उन्होंने उस वाद-विवाद की जयन्ती मनवाई। मैं दूध की गाड़ी छोड़कर वहाँ पहुँचा और भीड़ चीरकर भीतर गया जहाँ चान्सी एम० डिप्यू को भली भाँति देखने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ। जब वह भाषण दे रहे थे तब प्रिंज अलबर्ट कोट और सिर पर फेडोरा टोपी पहने थे। दिन ठंडा था और प्लैटफार्म पर लोग ओवरकोट पहने थे जिनके कालर खड़े कर दिये गये थे। चान्सी डिप्यू ने जो कुछ कहा उसमें से मुझे एक शब्द भी याद नहीं है। किन्तु मैं कह सकता था कि मैंने न्यूयार्क सेण्ट्रल रेलवे के अध्यक्ष को देखा था जिन्होंने सन् १८६४ में न्यूयार्क राज्य भर में लिंकन के राष्ट्रपति निर्वाचित किये जाने के पक्ष में प्रभावोत्पादक भाषण दिये थे।

उस अपराह्न को अब्राहम लिंकन के पुत्र राबर्ट टाड लिंकन ने एक छोटा भाषण दिया था। मैं नहीं जानता था कि ह्वाइट हाउस में वह अपने पिता से कसी बातें करते थे और राष्ट्रपति गारफील्ड तथा राष्ट्रपति आर्थर के मंत्रिमंडल में वह किस प्रकार के युद्धमंत्री रहे थे। मैंने पढ़ा था कि कैसे एक के बाद दूसरे रिपब्लिकन नैशनल कन्वेन्शन में कोई प्रतिनिधि राष्ट्रपति निर्वाचित होने के लिए उनके नाम का प्रस्ताव करता था और वह एक मत पाते थे। जिन चीजों के विषय में सोचता हुआ मैं वहाँ से लौटा उनमें से एक के बारे में भी उन्होंने अपने भाषण में कुछ नहीं कहा था।

उन दिनों, जब मैं उस प्रेयरी नगर में लड़का था, मैंने अनेक छोटी-मोटी बातें सीखी थीं। उस समय मैं नहीं जानता था कि वे मेरी शिक्षा के अंग हैं। गेल्सबर्ग में कुछ लोगों से मेरी मुलाकात हुई थी जो मेरे लिए पहेली के समान थे। बाद में जब मैंने शेक्सपियर का अध्ययन किया तो मुझे लगा कि वही लोग उसके लिए भी पहेली के समान रहे होंगे। मैंने अनेक प्रकार के आश्चर्यजनक पशु तथा पौधे देखे जो बारबार मेरे लिए विस्मयकारी बने रहे। बाद में मुझे मालूम हुआ कि इन्हीं आश्चर्यजनक पशुओं तथा पौधों में इमर्सन, थोरो, और वाल्ट ह्विटमन गम्भीर रुचि रखते थे। जब मैं नटखट लड़का था तब मैंने बहुत से अंधविश्वास, लोककथाएँ तथा पौराणिक कथाएँ सीखीं। बाद में मैंने उनके विषय में पुस्तकें पढ़ीं। पुस्तकों और विद्यालयों के बाहर मेरी जो कुछ शिक्षा हुई उनमें इन सबका थोड़ा बहुत भाग था।
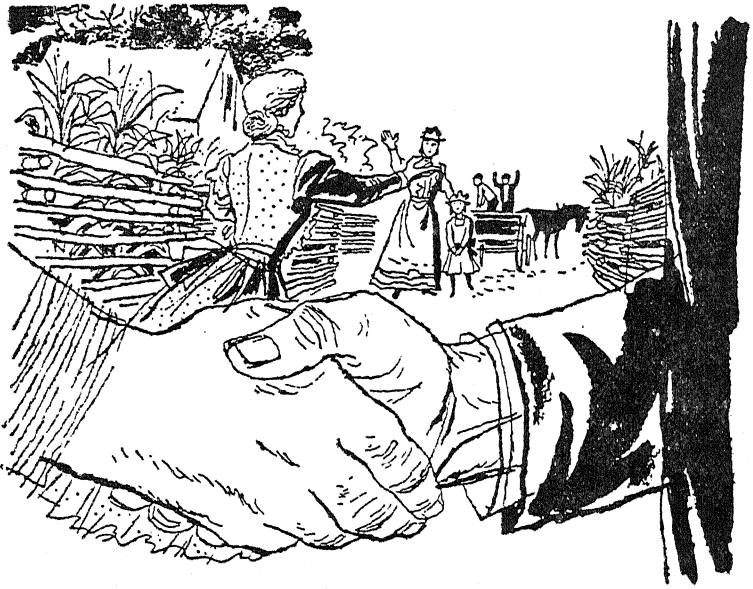
पहला परिच्छेद

घर के लोग

मैं जिस घर में पैदा हुआ था उसके विषय में मुझे कुछ भी स्मरण नहीं है। वह थर्ड स्ट्रीट में स्थित लकड़ी का बना हुआ मकान था जिसमें तीन कमरे थे। इलोनोइस राज्य के अन्तर्गत गेल्सबर्ग नगर में वह शिकागो, बर्लिंगटन और क्विन्सी रेलवे के पूर्व में दूसरा मकान था। मेरा जन्म ६ जनवरी, १८७८ को आधी रात के थोड़ी देर बाद हुआ था। पहली संतान, कोई तीन वर्ष बड़ी, बहन मेरी थी। मेरी माता और पिता एक पुत्र चाहते थे। अतएव मेरा बहुत स्वागत हुआ।

बाद में एक बार मेरी ने मुझे वह पालना दिखलाकर कहा था, "जब उन्होंने मुझे पालने से बाहर निकाला तब उसको उसमें

लिटा दिया।" पालने के दोनों सिरों पर तीन पाये थे जिन पर वह स्थित था। माता ने मुझे बतलाया था कि उसे पिता ने बनाया था। डेढ़ वर्ष पश्चात् मेरे स्थान में वही पालना मार्ट के काम आने लगा।

मैं मक्के के छिलके भरे हुए गद्दे पर पैदा हुआ था। जब तक मेरी अवस्था दस वर्ष या उससे अधिक नहीं हो गई और हमारे परिवार में नौ सदस्य नहीं हो गये तब तक हमारे बिस्तर मक्के के छिलकों से भरे हुए गद्दे ही होते थे। चूँकि हम लोग मक्के के छिलकों पर अच्छी तरह सोते थे और पंख भरे हुए गद्दों से बहुत वर्षों तक अनभिज्ञ थे इसलिए हम लोग उसी प्रकार के बिस्तर का पक्ष लेते थे जो हमारे पास थे। परन्तु लकड़ी की जिन पतली पट्टियों पर गद्दा फैलाया जाता था, उसकी शिकायत हम लोग कभी-कभी करते थे। कभी-कभी एक पट्टी टूट जाती थी और तब दूसरी, फिर अन्त में गद्दा जमीन पर गिर पड़ता था——और नई पट्टियों को हम संदेह की दृष्टि से देखते थे।

हम लोग एक दूसरे मकान में चले गये जो एक मंजिला था। उसमें तीन कमरे थे। यह मकान साउथ स्ट्रीट के उत्तर में पर्ल से तीन मकान पश्चिम की ओर था। यहाँ मैं शिशुओं की पोशाक पहनता और पिता को बाग खोदते तथा आलू और गाजर बोते एवं खोदते देखता था। जब मैं उँगलियों से आलू और गाजर पर से काली मिट्टी पोंछता था और उनको टोकरियों में फेंकता था तब मुझे उनका स्पर्श सुखद प्रतीत होता था। यहाँ हमारे पास डोली नामक घोड़ी थी——छोटी, बुड्ढी, मोटी और धीरे-धीरे चलनेवाली जो मकान से लगी हुई जमीन के सिरे पर ओसारे में बाँधी जाती थी। डोली हमें चार पहिये और दो सीटोंवाली गाड़ी में खींचकर नगर की गलियों और मकानों के बाहर उस स्थान पर ले गई जहाँ

हमने पहली बार खुला हुआ देहात, विस्तृत मैदान और लकड़ी के जंगल, मीलों तक फैले हुए रेल के टेढ़े-मेढ़े घेरे, अनाज और जई के खेत, और चरागाहों में चरती हुई गायें, भेड़ें तथा घोड़े देखे। खुले मैदानों में चरते हुए पशु मेरे लिए आश्चर्य की वस्तु थे।

हम लोग स्वीडिश ल्यूथरन चर्च की प्रार्थना-सभाओं में नियमित रूप से जाते थे। यद्यपि महीने में लगभग एक रविवार के प्रातःकाल पिता बुड्ढी डोली को जीन पहनाते थे और कहते थे "हम लोग क्रैन्स लोगों के यहाँ जा रहे हैं।" लगभग सात मील पर कोयले की एक छोटी खान के पास, सोपरबिल नामक डाकखाने के निकटस्थ चौरस्ते के पार, तीस एकड़ के फार्म में जान और उनकी पत्नी लीना क्रैन्स रहते थे। लीना मेरी माता की चचेरी बहन थीं। स्वीडेन में जन्म लेनेवाले उन चार अमरीकियों में प्रेमपूर्ण सम्बन्ध था। जब वे एक दूसरे को देखते थे तब उनके चेहरे चमक उठते थे और उनका वार्तालाप स्नेहपूर्ण तथा सुखकर होता था। उन सबकी अवस्था प्रायः तीस वर्ष की थी। वे सब काम करने के लिए बलवान् थे, उसे पसन्द करते थे और उसके विषय में बातचीत करते थे। वे स्वीडिश भाषा में इतनी शीघ्रता से बातें करते थे कि हम बच्चे निश्चित रूप से नहीं जान पाते थे कि वे क्या कह रहे हैं। किन्तु जब वे अपनी स्वीडेन से अमरीका की यात्रा के विषय में, छः से दस सप्ताह तक पाल के जहाज में रहने और उस काली रोटी, पनीर और बैलोनी को खाने के विषय में बातें करते थे जो वह अपने साथ लाये थे तब हम जानते थे कि उनकी यात्रा कठोर थी। प्रायः हम माता-पिता से सुनते थे, "पुराने देश में केवल ईस्टर और क्रिसमस को हमें गेहूँ की रोटी मिलती थी। यहाँ अमरीका में वर्ष में प्रतिदिन हमें गेहूँ की रोटी मिलती है।"

मेल्सबर्ग में रहनेवाले होम्ज परिवार के सिवाय क्रैन्स लोग अमरीका में हमारे निकटतम सम्बन्धी थे। जब १८७० के लगभग जान और लीना क्रैन्स ने अपना फार्म खरीदा था तब वे वर्ष में आठ या नौ महीने सूर्योदय से लेकर अँधेरा होने तक काम करते थे, जब तक उनके रेहन के रुपये चुकता न हो गये। फसलें काटने में उन्हें पड़ोसियों से सहायता मिलती थी और वे भी अपने पड़ोसियों की सहायता करते थे। क्रैन्स लोग जिस भूमि के स्वामी थे वे उसके अंग हो गये थे। गायों के चरागाह में जहाँ एक छोटी-सी नदी टेढ़े-मेढ़े बहती थी, अनाज और जई के खेतों में, तरकारी के बाग और आलू के खेत में उनके पैरों से ऐसे मार्ग बन जाते थे जो साल भर तक नहीं बदलते थे। जान क्रैन्स कृषि में बड़ी रुचि रखते थे, उनके विचार अपनी जमीन, पशु और फसलों से कभी भी दूर नहीं जाते थे। वह "हास्टर्नी" के विषय में बातें कर सकते थे जिसका अर्थ होता है "घोड़े"। इसलिए मेरी समझ में वह आंशिक अश्व प्रतीत होते थे।

वह मझोले कद के आदमी थे परन्तु अपने सिर को पीछे की तरफ लटका कर वह ऐसे ढीले-ढाले ढंग से चलते थे कि लोगों को उनके लम्बे होने का आभास होता था। उनकी आँखों में चमक थी और होठों पर मुस्कराहट रहती थी जिसे आप दाढ़ी में से देख सकते थे। कमरे की चार दीवारों के भीतर भी ऐसा मालूम पड़ता था कि उनका सिर, बाल और दाढ़ी तेज हवा में हैं। जब मैं उनके घुटने पर बैठकर अपना पाँच वर्ष का नन्हा-सा हाथ उनकी दाढ़ी पर फेरता था तब वह मुझे "मेरा छोटा लड़का" कह कर पुकारते थे और उनकी पुकार में हँसी और प्रेम की लहर होती थी। वह अपनी इंजील और कभी-कभी समाचार-पत्र पढ़ते

थे यद्यपि प्रायः वह स्थल, आकाश, घोड़ों की आदतों और अनाज का अध्ययन करना पसन्द करते थे। वह तर्क करनेवाले व्यक्ति नहीं थे परन्तु हल से वह कठोर भूमि और चमड़े की लगाम को शक्तिशाली हाथों से पकड़कर भगेड़ू घोड़ों से तर्क कर सकते थे।

रविवार को घोड़ी को हलकी गाड़ी में जोत कर परिवार को एक या दो मील की दूरी पर लूथरन चर्च में ले जाने से वह प्रायः नहीं चूकते थे। मुझे संदेह है कि उन्होंने कभी किसी ऐसे पादरी का प्रवचन सुना होगा जो उनकी अपेक्षा कम भय और अधिक विश्वास रखता हो। कभी-कभी मैं सोचता हूँ कि जान क्रैन्स ईश्वर का चित्रण एक कृषक के रूप में करते थे जिसके घर-गृहस्थी के काम अनन्त और अचिन्त्य हैं जो इस संसार तथा इससे परे अन्य संसारों में अपनी फसलें ऐसे रहस्यपूर्ण ढंग से बोता है, उनकी देख-रेख करता है और काटता है कि मानव बुद्धि उसे नहीं समझ सकती।

क्रैन्स लोगों के पास लकड़ी का धान्यागार था जिसका फर्श कच्चा था। उनके यहाँ तीन घोड़े और चार गायें थीं जो प्रातःकाल निकटस्थ चरागाह में हाँक दिये जाते थे और संध्या समय फिर वापस हाँक लाये जाते थे। यहाँ हमने हाथों से दूध निकालते हुए और दूध की धार को मटकों में जाते हुए देखा। यह मटके एक ढाल पर चढ़कर तीस गज की दूरी पर स्थित घर को ले जाये जाते थे। वहाँ तहखाने में साफ और मिट्टी का कड़ा फर्श था। उसमें तख्तों के टाँड़ बने हुए थे जिन पर मिट्टी के घड़े रक्खे थे। दूध इन्हीं घड़ों में उँडेल दिया जाता था। हम इन मिट्टी के घड़ों के मुँह पर पीली मलाई देखते थे और हमने एक बार मलाई को मथकर बनाया हुआ मक्खन भी देखा। यहाँ पहली बार हमने

ऐसा दूध पिया जिसे हमने गायों को देते हुए देखा था और ऐसे तले हुए अण्डे खाये जिन्हें उन मुर्गियों ने दिया था जिन्हें हमने देखा था।

जब मैं लगभग चार वर्ष का था तब हम घरों की दो पंक्तियों के पार बेरियन स्ट्रीट में स्थित एक ऐसे मकान में गये जिसमें दस कमरे थे और जिसकी तीसरी मंजिल पर एक ऐसा बड़ा कमरा था जो घर की लम्बान भर फैला था। उसमें चार कमरों का एक तहखाना था जिसके सामनेवाले दो कमरों में फर्श बना हुआ था। एक शौचालय था जिनमें दो खाने थे और उसके पीछे मुर्गियों का दरबा था। इस मकान से लगी हुई जमीन साउथ स्ट्रीटवाले मकान की जमीन से तिगुनी बड़ी थी। इसमें एक बड़ा बाग था जिसमें गूसबेरी की अनेक झाड़ियाँ थीं; सामने एक आँगन था जिसमें नर्म मेपल के पाँच लम्बे वृक्ष, पिकेट की झाड़ी और बगल में ईंटों का बना हुआ रास्ता था। उसके सामने एक खाई थी। यह वास्तव में दो मकान और उनसे सम्बन्धित जमीन थी। दो नम्बर ६२२ और ६२४ ईस्ट बेरियन स्ट्रीट प्रकट करते थे कि हम दो मकानों में रहते हैं। यहाँ पर स्वीडेन से आनेवाले आगस्ट सैण्डबर्ग समुचित विनम्रता तथा निरन्तर चिन्ता के साथ भू-स्वामी के रूप में बसे थे। वर्षों तक पहली मंजिल पर के दो पूर्वी कमरे और उनके नीचे के तहखानेवाले दो कमरे विभिन्न परिवारों को किराये पर दिये जाते थे। वे कभी एक या दो दिन से अधिक खाली नहीं रहते थे और दूसरी मंजिल पर के दो बड़े पूर्वी कमरे सदैव किराये पर उठे रहते थे।

मेरे पिता ने कभी लिखना नहीं सीखा था। उन्होंने स्कूल में केवल पढ़ना सीखा था। जब स्वीडेन में उनकी माता और पिता की मृत्यु हो गई और वह एक शराब के कारखाने में फुटकर

काम करने लगे। वह शराब के कारखाने में घोड़े हाँकने लगे और अमरीका जाने के लिए उन्होंने काफी धन बचा लिया। जब वह न्यूयार्क में आये तब उन स्वीड लोगों ने, जिनके सम्बन्धी हर्की-मर, न्यूयार्क में थे, उनको वहाँ एक पनीर के कारखाने में लगा दिया। कुछ महीनों तक पनीर बनाने के पश्चात् उन्होंने इली-नोइस के अन्तर्गत गेल्सबर्ग में रहनेवाले अपने चचेरे भाई मैगनस होम्ज का पत्र पढ़ा जिसमें लिखा था कि वहाँ उनके लिए बड़ा अच्छा अवसर है। मैगनस होम्ज वहाँ रेल से १८५४ में गये थे। वह पहला वर्ष था जब सी० बी० एण्ड० क्यू० गेल्सबर्ग पहुँची थी। वह उस जत्थे में सम्मिलित हो गये थे जिसने राक नदी पर पुल बनाया था। वे उन्नीस वर्ष के थे। यदि वह स्वीडेन में दो वर्ष और अधिक रहे होते तो उनको स्वीडिश सेना में दो वर्ष तक सेवा करनी पड़ी होती। २१ वर्ष की आयु के पश्चात् अव-काश ग्रहण करने के समय तक उनके पिता ने अपना सारा जीवन स्वीडिश सेना में व्यतीत किया था। मैगनस होम्ज ने सैनिक जीवन निकट से देखा था। वह सैनिक नहीं होना चाहते थे। उन्नीस वर्ष की अवस्था में उन्होंने स्वीडेन छोड़ दिया और पाल से चलने-वाले जहाज पर न्यूयार्क के लिए प्रस्थान कर दिया। उस जहाज ने दस सप्ताह तक तूफानी समुद्र से संघर्ष किया और अपने मार्ग से उड़ा दिया गया। इसलिए वह क्विबेक में उतरे।

वह अल्बनी पहुँचे, फिर ईरी नहर से बफेलो गये और वहाँ से रेल से शिकागो और गेल्सबर्ग पहुँचे। गेल्सबर्ग में उन्होंने अपना मैगनस नाम तो रहने दिया परन्तु होम को होम्ज में परिवर्तित कर दिया, क्योंकि "होम" स्वीडिश और "होम्ज" अँगरेजी नाम जान पड़ता था वहाँ वह मिसूरी के अन्तर्गत स्थित हैनिबल के रेल

की सड़क बनानेवाले जत्थे के साथ काम करते थे। एक मेथोडिस्ट शिविर सभा में वह एक स्वीडिश युवती पर आसक्त हो गये जो ऐसे परिवार में सेविका थी जो दासों का व्यापार किया करता था। वह हैनिबल से गेल्सबर्ग गई और होम्ज उससे मिलने जाया करते थे। जब वह लोम्बार्ड कालेज के महिला छात्रावास में काम करती थी और वह क्यू० ब्लैकस्मिथ दूकान में बोल्टू बनाने का काम किया करते थे। वह केवल इसलिए उसमें अभिरुचि नहीं रखते थे कि वह सुन्दर और भोजन पकाने में दक्ष थी वरन् इसलिए भी कि उसके पास एक पुस्तक थी जिसे वह पढ़ रही थी ...... फास्ट का अनुवाद। उनका विवाह हो गया।

वे ७ अगस्त १८५८ के अपराह्न को नाक्स कालेज के मैदान में गये और ठंडी उत्तरी-पश्चिमी हवा में, बीस हजार व्यक्तियों की भीड़ में, अब्राहम लिंकन और स्टीफन डगलस के वाद-विवाद को तीन घंटे तक सुनते रहे। मैगनस होम्ज ने अपना मत लिंकन को दिया परन्तु सेना के लिए लिंकन ने जो आह्वान किया था उसकी उन्होंने उपेक्षा की क्योंकि वह युद्ध से घृणा करते थे और उनकी आत्मा उसके लिए तैयार नहीं होती थी। चूँकि होम्ज सैनिक सेवा से घृणा करते थे और जीवन के प्रारम्भिक भाग में स्वीडेन का त्याग करके वह सी० बी० एण्ड० क्यू० रेलरोड कारखाने में काम करते थे इसलिए उन्होंने नवागन्तुक चचेरे भाई को पश्चिम की तरफ आकर काम करने का परामर्श दिया। पहले पहल मेरे पिता क्यू० रेलरोड में मजदूरों के एक जत्थे के साथ एक डालर प्रतिदिन पर काम करने लगे। वे गाड़ी के खाली डिब्बे में रहते थे, अपना भोजन स्वयं बनाते थे और कपड़े स्वयं धोते थे। वह सप्ताह में छः दिन और प्रतिदिन दस घंटे काम करते थे।

मेरी माता—युवती क्लारा मैथिल्डा ऐंडरसन, जिसने मेरे पिता के साथ विवाह किया था—कहती थीं कि उनकी माता का शीघ्र देहान्त हो गया था और उनके पिता ने पुनः विवाह कर लिया था। उनकी माता ऐपूना में राजहंस चराया करती थीं। घर पर वह दो सरोवरों में राजहंस और बत्तक रखने में अपनी माता की सहायता किया करती थीं। जब उनकी सौतेली माँ आई तब "हम लोगों की उतनी अच्छी तरह नहीं पटती थी। मैंने स्वीडेन छोड़ दिया क्योंकि वह मेरी माता से बिलकुल भिन्न थीं। अमरीका में रहनेवाले स्वीड लोगों के पत्र आते थे जिनसे मालूम होता था कि वहाँ की स्थिति स्वीडेन से अच्छी है। मैंने किसी प्रकार रुपया बचाया कि अमरीका जाकर यथाशक्ति प्रयत्न द्वारा उन्नति कर सकूँ। मेरे साथ मेरा एक घनिष्ठ मित्र भी आया था। इसलिए मुझे अकेलापन नहीं मालूम होता था।"

मैंने केवल अपनी माता से सुना था कि कैसे मेरे पिता के साथ संयोग से उनकी भेंट हो गई थी। मैंने उनसे पूछा था कि कैसे वे दोनों एक दूसरे के साथ विवाह करने के लिए उद्यत हुए थे। तब उन्होंने उत्तर दिया, "मैं बुशनेल (इलिनोइस) में एक होटल में काम करती थी। वहाँ मैं बिस्तर लगाती थी और रसोई बनाने में सहायता देती थी। वह रेल बनानेवाले जत्थे के साथ बुशनेल आये थे। एक दिन वह होटल में आये और मुझे देखा। हमने बातचीत की। उन्होंने कहा कि मैं तुमसे विवाह करना चाहता हूँ। मैंने देखा कि मेरे लिए यह एक अच्छा अवसर है। मैं शीघ्र गेल्सबर्ग गई और आदरणीय पुरोहित लिंडाल ने हमारा विवाह करा दिया और हमने गृहस्थ जीवन आरम्भ कर दिया।" जब उन्होंने कहा कि "मैंने देखा कि मेरे लिए यह एक अच्छा अवसर

है" तब उनके चेहरे पर अर्धलज्जित मुस्कराहट फैल गई और उनकी आँखों में तीव्र चमक आ गई। यह बात वह विवाह के वर्षों बाद कह रही थीं और सदा उन्हें कठिन परिश्रम करना पड़ता था। कभी-कभी उनका भाग्य कठोर होता था परन्तु उन्हें इस बात के लिए तनिक भी खेद नहीं था कि जब उन्होंने अपना "अवसर" देखा तब उस पर कूद पड़ी थीं।

मेरे पिता के बाल खड़े और काले थे। उनकी आँखें काली और थोड़ी भूरी थीं। वे हड्डी में गहरी घुसी हुई थीं और जब वह हँसते या मुस्कराते थे तब आँखों के चारों तरफ झुर्रियाँ पड़ जाती थीं। वह मँझोले कद से छोटे थे। उनका वज़न १४८ पौण्ड के लगभग था। उनका शरीर सुगठित था। जब उनका कालर मुड़ जाता था तब उनके सीने का चमड़ा पीला, सफेद दिखाई पड़ता था जब कि उनकी गर्दन पर कालिख और गर्द जमी रहती थी। कोई खेल-कूद उन्हें पसन्द नहीं था, यद्यपि, जो काम करना आवश्यक होता था उसको वह खेल की ही तरह करते थे। वह सी० बी० एण्ड क्यू० ब्लैकस्मिथ दूकान में बिना किसी लम्बी छुट्टी के काम करते थे और "सहायक" समझे जाते थे। वह प्रातःकाल ६ बजकर ४५ मिनट पर घर से निकल पड़ते थे, पैदल चलकर क्यू० दूकान पर ७ बजे पहुँचते थे। उन्हें कभी भी देर नहीं होती थी। बारह बजे तक वह इंजिन या गाड़ी के भागों को हथौड़े से पीटकर बनाते थे, तब वह घर जाकर दोपहर का खाना खाते थे। लौटकर फिर दूकान में एक बजे काम आरम्भ कर देते थे और ६ बजे की सीटी तक उसमें लगे रहते थे। तब वह हथौड़े को निहाई के पास रख देते थे और घर चले जाते थे।

रात का खाना खाने के पहले हाथों, चेहरे और गर्दन से कालिख

धोने में उन्हें दस या पन्द्रह मिनट लगते थे। वह हौज में इकट्ठा किया हुआ वर्षा का पानी एक मटके से टीन के तसले में उँडेलते थे जो एक स्टैण्ड पर रक्खा रहता था। वह इस्तेमाल किये हुए पानी को दो बार फर्श पर रक्खे हुए दूसरे मटके में फेंकते थे। अन्त में वह तीसरे तसले में सुगन्धित साबुन लगाकर उस पानी से हाथ-मुँह धोते थे जो छत से गिरकर हौज में एकत्रित रहता था। उनके हाथों के भीतर की मांस-ग्रंथियों में अनेक जटिल और टेढ़ी-मेढ़ी तथा गहरी रेखाएँ थीं। इन गहरी दरारों में से धोकर कालिख निकालने में अन्य अंगों के धोने की अपेक्षा अधिक समय लगता था और तिस पर भी कालिख की सब रेखाएँ नहीं साफ हो पाती थीं।

वसन्त के पिछले भाग गर्मी और पतझड़ के प्रारम्भिक भाग में वह अँधेरा होने के बहुत बाद तक प्रायः बाग में काम किया करते थे। अक्तूबर की रात को चन्द्रमा के प्रकाश में वह टमाटर चुना करते थे या आलू खोदा करते थे। और अधिक ठंडे महीनों में वह कुछ लगाया या सुधारा करते थे। वह अपने जीन की पतलून या काम करनेवाले कोट में पैबन्द लगाना पसंद करते थे। खोये हुए बटनों की जगह पर नये बटन लगाने के लिए उनका अपना मजबूत तागा और बड़ी सुई होती थी। उन प्रारम्भिक वर्षों में वह शिकागो से प्रकाशित होनेवाला "हेमलैण्डेट" नामक एक साप्ताहिक समाचार-पत्र पढ़ा करते थे जो "मातृभूमि" का पर्यायवाची स्वीडिश शब्द है। नियमित रूप से वह, या माता स्वीडिश बाइबिल को उच्च स्वर से पढ़कर एक दूसरे को या बच्चों को सुनाते थे।

मेरी माता के बाल सुन्दर थे। उनका रंग सफेद और भूरे

के बीच का था। वह जई के डंठल के रंग से मिलता था जब वह धूप से पकी नहीं होती थी। उनकी आँखें हल्की नीली थीं। उनका चमड़ा ऐसा सफेद था जैसा मोमबत्ती की रोशनी में ताजा लिनेन दिखाई पड़ता है। उनके मुख पर मुस्कराहट रहती थी। जब पिता हमारे ऊपर एक बार मुस्कराते थे तब वह दस बार मुस्कराती थीं। उनकी नाक ऊपर की तरफ उठी हुई थी, चपटी नहीं थी। वह पाँच फुट पाँच इंच लम्बी थीं और शायद उनका वजन एक सौ चालीस पौंड था। उनकी हड्डियों पर अथक मांसपेशियाँ थीं और घर के काम-काज में वह अथक थीं। वह अपने नौ प्राणियों-वाले परिवार के लिए खाना पकाती थीं, कपड़े धोती थीं, सिलाई करती थीं, बिस्तर लगाती थीं और घर की सफाई करती थीं। पहले अपने पति के लिए और बाद में बच्चों के लिए जलपान तैयार करने को वह प्रातःकाल छः बजे उठ जाती थीं। फिर दोपहर और शाम को सब के लिए खाना पकाती थीं। कपड़ों में सदा पैबन्द लगाना होता था। लड़कों के पतलून की सीट कभी-कभी तीन बार घिस जाती थी। जब हम लम्बे पतलून पहनते थे तब साधारणतया घुटनों पर पैबन्द लगाने की आवश्यकता होती थी। वसन्त में गोलियाँ खेलकर, कुश्ती लड़कर और लड़ाई-झगड़ा करके हम लोग घुटनों में छेद कर देते थे। जब तक "मामा" उन पर पैबन्द नहीं लगा देती थीं तब तक हमारे घुटने नंगे दिखाई पड़ते थे। जब कभी हम उनसे बातें करते थे या परिवार में उनके विषय में बातें करते थे तो उनको इसी नाम से इंगित करते थे।

मेरे पिता मैगनस होम्ज का सम्मान और उनसे प्रेम करते थे। मैगनस होम्ज उनसे १५ वर्ष बड़े, घनिष्ठ मित्र तथा परामर्श-दाता थे। जब १८७० के लगभग आगस्ट सैण्डबर्ग होम्ज भवन में

आये तब मैगनस होम्ज भली भाँति 'अमरीकी' हो गये थे। वह पन्द्रह वर्ष से अधिक समय तक गेल्सबर्ग में रह चुके थे। जिन मनुष्यों के साथ वह काम करते थे वह प्रायः आयरिश और अँगरेज थे और उन्होंने तथा श्रीमती होम्ज ने अँगरेजी ऐसी अच्छी तरह सीख ली थी कि उनके घर में केवल वही भाषा बोली जाती थी। इसलिए उनके चारों पुत्रों ने कभी भी स्वीडिश बोलना नहीं सीखा और उनकी पुत्री लिली ने एक ग्रीष्म ऋतु में स्वीडिश ल्यूथरन पैरिश स्कूल में जाकर स्वीडिश बोलना सीखा।

आगस्ट सैण्डबर्ग ने मैगनस होम्ज से अनेक सरल तथा महत्त्व-पूर्ण शब्द सीखे जिनकी उन्हें आवश्यकता थी। इस चचेरे भाई ने उन्हें समझाया कि अमेरिकन नागरिक होने के लिए उन्हें कहाँ जाना चाहिए और किन-किन पत्रों पर हस्ताक्षर करना चाहिए। वर्षों तक होम्ज परिवार के लोग नवम्बर के अन्तिम बृहस्पतिवार को थैंक्स गिविंग भोज के अवसर पर सैण्डबर्ग परिवार में आते थे और सैण्डबर्ग परिवार के लोग नये वर्ष के पहले दिन होम्ज परिवार में जाते थे। एक बार थैंक्स गिविंग के दिन अपने घर में मैंने श्री होम्ज को स्वतन्त्रता-घोषणा के विषय में बातें करते हुए सुना और फिर उन्होंने मेरे पिता को संयुक्त राज्य का संविधान साफ-साफ समझाया।

सैण्डबर्ग परिवार में प्रथम तीन बच्चों, मेरी, कार्ल आगस्ट और मार्टिन गाडफ्रे, ने स्वीडिश भाषा काफी अच्छी तरह सीखी। मुझे निश्चय है कि जब मैं बच्चों की पोशाक पहनता था तब जिन वस्तुओं की मुझे आवश्यकता होती थी उन्हें बताने के लिए मैं केवल स्वीडिश शब्दों का प्रयोग करता था। परन्तु दो लड़के एमिल तथा फ्रेड, और दो लड़कियाँ, ईस्थर और मार्था, जिनका

जन्म बाद में हुआ था, स्वीडिश में छः तक भी गिनती नहीं जानते थे।

बाद में चर्च के युवा सदस्य बड़बड़ाते और भुनभुनाते थे। "हम स्वीडिश भाषा में धार्मिक व्याख्यान क्यों सुनें जब हम यह नहीं समझ पाते कि उपदेशक हमें क्या बता रहे हैं?" कुछ समय के उपरान्त कभी-कभी अँगरेजी में प्रवचन होते थे। बहुत से गिरजाघरों में परिवर्तन होते रहे और अंत में पूरा उपदेश अँगरेजी में होने लगा। पुराने समय के पकी दाढ़ीवाले व्यक्तियों को यह सुखद नहीं मालूम होता था जिन्हें वह समय याद था जब वे अपने स्थान में बैठकर रहते थे और उनके कान मातृभूमि के मधुर शब्द का रसपान करते थे जिसका आकर्षण उस समय भी उन लोगों के लिए वर्तमान था।

यद्यपि स्वीडेन के जीवन में अनेक अन्यायपूर्ण बातें थीं जिनके कारण मेरी माता और पिता अमरीका आये थे तथापि उनके हृदय में स्वीडिश लोगों और पुराने देश की भाषा के लिए हार्दिक सहानुभूति और सच्चा स्नेह था। "पुराने देश" के लिए उनके हृदय में गहरा सम्मान था किन्तु वे हम लोगों को उसके विषय में कुछ नहीं बतलाते थे। अमरीका में अपने प्रारम्भिक वर्षों में उन्होंने अपना पूरा मन इस बात पर लगा दिया था कि नये देश में उनका कारोबार ठीक चलता रहे और कदाचित् पुराने देश को भूल जाने के लिए यह एक अच्छा उपाय था। तब जैसे-जैसे समय व्यतीत होता गया, वे नये देश की नई भाषा बोलने लगे और ऐसे अनेक लोगों से उनकी मित्रता तथा परिचय हो गया जो स्वीडिश भाषा नहीं बोलते थे। बाद में पैदा होनेवाले स्वयं उनके बच्चे भी केवल अँगरेजी बोलते थे। वे नये देश के अंग हो गये।

दूसरा परिच्छेद

बेरियन स्ट्रीट में स्थित घर

मैं बेरियन स्ट्रीट स्थित मकान में १८८२ से १८९९ तक रहा। यह मेरे बढ़ने और विकास के वर्ष थे और मैं बच्चों की पोशाक से हाफ पैण्ट और फिर लांग पैण्ट पहनने लगा। उस घर में दस वर्ष में अन्य बच्चों का जन्म हुआ . . . . तीव्र बुद्धि और मिलनसार लड़का एमिल, छोटा अस्थिर लड़का फ्रेड, सुन्दर लड़की ईस्थर और उसकी साधारण तथा विनम्र बहन मार्था।

दस कमरोंवाला मकान आगस्ट सैण्डबर्ग के लिए एक चुनौती था। वह उसकी मरम्मत का खर्च नहीं उठा सकते थे और बढ़ई, राज, मकानों के रँगने, कागज टाँगने, दराजवाले सन्दूक बनाने और ठेले पर पौधे आदि पहुँचानेवाले माली का काम करने लगे।

में फुटकर काम करनेवाला लड़का था। बाद में मार्ट भी मेरा साथ देने लगा। जब छत पर लकड़ी के पतले-पतले तख्ते लगाने की आवश्यकता होती थी तब मैं तख्तों को लेकर सीढ़ी पर चढ़ता था और उनके पास उन्हें पहुँचाता था। जब किसी हौज की वार्षिक सफाई होती थी तब मैं नंगे पाँव उसमें उतार दिया जाता था और मैं मिट्टी और कीचड़ फावड़े से बाल्टी में भरता था जिसको वह रस्सी से ऊपर खींचते थे। जब कोई कुर्सी या मेज हिलने लगती थी तब मेरे पिता उसे तहखाने में अपनी काम करनेवाली बेंच पर ले जाते थे और जब वह गढ़ते थे, फिट करते थे, छेद करके चूल सालते थे और हथौड़े से ठोंकते थे तब मैं मिट्टी के तेल की बत्ती से उन्हें रोशनी दिखाता था। सेवन्थ वार्ड स्कूल पुस्तकालय से मैं जे० टी० हेड्ले द्वारा लिखित ग्रन्थ "नेपोलियन और उसके मारशल" ले आया था और रात के भोजन के बाद मैं रसोईघर की मेज पर उसको पढ़ता था। जब उन्होंने मुझे बुलाया तब मैंने कहा, "यह अच्छी पुस्तक है और मैं नेपोलियन के विषय में जानना चाहता हूँ।" परन्तु पिताजी कहते थे, "शोली (चार्ली), तुम आज रात को नेपोलियन को जाने दो और मुझे बत्ती दिखाओ।"

यद्यपि मेरे शिशु सिर पर पवित्र जल छिड़का गया था और धार्मिक रीति से मेरा नामकरण कार्ल आगस्ट सैण्डबर्ग हुआ था तथापि स्कूल के पहले या दूसरे वर्ष में मैंने अपने लिए चार्ल्स नाम के प्रयोग करने का निर्णय किया। मुझे ऐसा प्रतीत होता था कि "कार्ल" नाम से लोग समझेंगे कि एक और गरीब स्वीड लड़का आ गया है। परन्तु 'चार्ल्स' नाम से वे निश्चयपूर्वक नहीं जान पावेंगे कि मैं स्वीड हूँ या अन्य किसी देश से आया हूँ। इसी समय के लगभग मेरी मार्ट और मैंने यह निर्णय किया कि अपने पारिवारिक

नाम के वर्ण-विन्यास में बेर्ग (berg) के स्थान में बर्ग (burg) लिखेंगे।

वह दोनों अक्षर ch अनेक स्वीड लड़कों को परेशान करते थे। हमारी तीसरी कक्षा की पाठ्य-पुस्तक शेल्डन्स रीडर में "चार्लीज चिकेन्स" शीर्षकवाली एक कहानी थी। वह चार्ली नामक एक लड़के के विषय में थी जो पंख बोता था और मुर्गी के बच्चों की फसल पैदा होने की आशा करता था। एक के बाद दूसरे स्वीड लड़के जानसन, नेल्सन, बास्ट्रम और हिल्स्ट्रम उस कहानी को जोर से पढ़ने के लिए खड़े हुए। एक एक करके उन सबने "शार्लीज शिकेन्स" पढ़ा। अध्यापिका ने स्वयं उसका स्पष्ट उच्चारण किया और उनसे फिर से पूछा। किन्तु प्रत्येक ने फिर कहा, "शार्लीज शिकेन्स", अतएव अच्छी और धैर्यवती अध्यापिका ने चेष्टा करना छोड़ दिया। अपने स्थान पर बैठा हुआ मैं अपने मन में हँस रहा था क्योंकि मैंने चार्ल्स नाम चुना था और मैं बड़े अच्छे तथा शुद्ध ढंग से उसका उच्चारण करता था।

सोमवार कपड़े धोने का दिन था। जब मुझमें काफी शक्ति आ गई तब मैं आँगन के हौज से धोने के टब को भरने के लिए बाल्टियों में पानी ले जाता था। एक टब में गर्म पानी था और कपड़ों में साबुन लगाने तथा रगड़ने के लिए एक तख्ता था। दूसरे टब में धोने के लिए ठंडा पानी था और उसमें कपड़ों से पानी निचोड़ने के लिए एक मशीन लगी थी। ग्रीष्म ऋतु और छुट्टियों में पड़नेवाले सोमवारों को मैं निचोड़नेवाली मशीन चलाता था और माता उसमें कपड़े रखती जाती थी। जाड़े में पड़नेवाले अनेक सोमवारों को मैं धोये हुए कपड़ों की टोकरी को घर के पिछले आँगन में बाँधी हुई रस्सी के पास ले जाता था। प्रायः कपड़े बर्फ से जमकर

कड़े हो जाते थे। इलिनोइस के शून्य अंश मौसम में उन जमे हुए कपड़ों को रस्सी पर फैलाना और लकड़ी की पिन से उनको बाँधना जाड़े का ऐसा खेल था जो हमारी बुद्धि और ठिठुरी हुई उँगलियों को चुनौती देता था। इसके ऊपर कभी-कभी उत्तरी-पश्चिमी हवा जोर से चलती थी और लकड़ी की भाँति कठोर कमीज का धक्का हमारे सिर में लगता था। कई बार मुझे कपड़ों की टोकरी रसोईघर में ले जानी पड़ती थी जिससे उन पर जमी हुई बर्फ पिघल जाय और मेरी उँगलियाँ भी गर्म हो जायँ।

जब धुले हुए कपड़े टँग जाते थे तब हममें से तीन या चार लड़के रसोईघर की मेज पर चढ़ जाते थे। माता साबुन का पानी फर्श पर फेंक देती थीं और उसे झाड़ू से रगड़ती थीं और हम यह खेल खेलते थे मानो हम किसी ऐसे द्वीप या मकान की चोटी पर हैं जो नदी में बह रहा है। रात का खाना खाने के बाद या दूसरे दिन प्रातःकाल मैं बाहर जाता था और बर्फ जमे हुए कपड़ों का ढेर टोकरी में रखकर घर में लाता था। सोमवार को दोपहर और शाम को हम लोग कई पीढ़ियों से उबाली हुई हेरिंग मछली और उबाले हुए आलू खाते थे। वर्षों से इस सरल तथा उत्तम भोजन में कोई परिवर्तन नहीं हुआ था। इसके विषय में वे सिर ऊँचा करके कहते थे, "यही वह वस्तु है जो स्वीड लोगों को इतना शक्तिशाली बनाती है।"

माता इस बात का ध्यान रखती थीं कि हम लोग बिना स्नान किये हुए बहुत दिनों तक न रहने पावें। वह धोने के एक टब को गर्म पानी से आधा भर देती थीं और हमें साबुन देकर मलने को कहती थीं। जब मार्ट और मैं बाशटब में स्नान करते थे तब तीनों बहनें

रसोईघर से बाहर चली जाती थीं। तब हम लोग सोने जाते थे और बहनों की बारी आती थी।

माता सावधानी के साथ तहखाने के उस कोने को देखती रहती थीं जहाँ अक्टूबर में करमकल्ले की राशि लगाई जाती थी जिससे जाड़े के कुछ भाग में हमें सलाद और उबाली हुई पातगोभी मिलती रहे। यदि हम भूल जाते थे तब वह मार्ट और मुझको फरवरी में बाग की याद दिलाती थीं जहाँ हम जमी हुई जमीन को खोदकर और ढेलों को कूँचकर एक या दो बुशल चुकन्दर निकाल सकते थे।

जब पिताजी के पास पैसा होता था तब वह पहली मंजिल से तहखाने में जानेवाले जीने के नीचे की तिकोनी कोठरी में जाड़े में एक पीपा सेब रख देते थे। वह दरवाजे पर ताला लगाकर चाभी छिपा देते थे। उन्होंने देखा था कि जब सेबों से भरा हुआ पीपा ऐसी जगह रखा जाता है जहाँ सब लोग जा सकते हैं तो वह शीघ्र खाली हो जाता है। यदि उनको यह मालूम होता कि मार्ट और मैं क्या करते हैं तो वह उस सूराख पर तख्ता जड़ देते जो दरवाजे के ऊपर था। अपने शरीर को सिकोड़ और ऐंठकर हम उस सूराख से होकर सेबों के पीपे पर पहुँच जाते थे। हम केवल हर तीसरे दिन दो सेब लेते थे। हमारी चोरी को कोई नहीं देखता था और हम कहते थे, "जब हम दो लड़के दो सेब चुराकर बाँट लेते हैं तो हम प्रति लड़का केवल एक सेब चुराते हैं और एक सब चुराना वास्तव में चोरी नहीं है; वह तो एक प्रकार की लुका-छिपी का खेल है।"

हमारे किरायेदारों में जो एल्सर मुझे सबसे अधिक याद आत हैं, वह अपने कंधे पर बढ़ई के औजारों का बक्स रक्खे हुए हमारे घर में आये थे। उनका सामान पहले ही गाड़ी से आ चुका था।

और वह, दूसरी मंजिल के दो पूर्वी कमरों में गये जिनमें बाहर रक्खी हुई लकड़ी की सीढ़ी से जाना होता था। उस सीढ़ी के नीचे कोयला रखने की खत्ती बनी थी।

जो एल्सर न तो शराब पीते थे, न सिगरेट पीते थे और न तम्बाकू खाते थे। वह किसी प्रकार की धार्मिक सभा में नहीं जाते थे। उनके कमरों में कोई पुस्तक नहीं थी और वह सार्वजनिक पुस्तकालय से भी कोई पुस्तक नहीं लेते थे। वह कभी असन्तोष नहीं प्रकट करते थे। हम लोगों ने उन्हें कभी बीमार नहीं देखा था। वह स्वयं अपना भोजन बनाते थे और अपने कपड़े धोते थे। वह अपने मोजों में रफू करते थे, अपने कपड़ों की मरम्मत करते थे और अपने कमरों को साफ-सुथरा रखते थे।

जो लम्बे, बलवान् और इकहरे बदन के थे। हम प्रायः उनको अपने औजारों का बक्स कंधे पर इस प्रकार लेकर जाते हुए देखते थे मानो वह उन्हें पसन्द था। वह लगभग पचास वर्ष के थे। उनका चेहरा और बाल कुछ भूरे थे। उनकी मूँछें छोटी कटी होती थीं। वह कभी जल्दी नहीं करते थे, जिस काम को वह करते होते थे उसमें अगला कदम उठाने के लिए उनमें दक्षता दिखाई पड़ती थी। साल भर मजे में नियमित रूप से जो को बढ़ई का काम मिलता रहता था। कभी-कभी जब मौसम बुरा होता था या जब किसी मकान की बुनियाद पूरी नहीं हुई रहती थी तब उनको अवकाश के कुछ दिन मिल जाते थे। इन दिनों में वह औजारों को तेज करते थे और बिछाने की चद्दरों तथा तकियों के गिलाफों को धोते थे।

जाड़े की कई रातों को मार्ट और मैं उनसे मिलने के लिए ऊपर जाते थे। वह सदा हमारा स्वागत करते थे। हमने उनको "चाचा-जो" कहना आरम्भ कर दिया था और उनको यह अच्छा लगता

था। वह अपने एकाकीपन का कभी भी जिक्र नहीं करते थे और हमको विश्वास नहीं होता कि उनको एकाकीपन में कोई दुःख है। रात का खाना खाने के बाद हम उनके रसोईघर में जाते थे। वह भोजन करने के लिए अपनी मेज लगाते थे और उसके ऊपर आयल क्लाथ बिछाते थे। वह हमारे लिए मेज के पास कुर्सियाँ रखते थे और तब चूल्हे के पास जाकर ताजे सेंके हुए समोसे लाते थे। वह कुछ समोसे मेरी तश्तरी में रखते थे और कुछ मार्ट की तश्तरी में। उन्हें अपने बनाये हुए समोसों पर गर्व था। मुझको और मार्ट को भी उन पर गर्व था। जब हम उनसे कहते थे कि हम लोगों ने ऐसे अच्छे समोसे कभी नहीं खाये हैं तब उनके मुखमंडल पर एक शान्त आभा बिखर जाती थी।

माताजी कहती थीं कि तुम लोग बहुत जल्द और बार-बार उनके पास जाया करते हो। "तुम्हें चाहिए कि तुम कुछ समोसे उनके लिए भी रहने दो।" जब हम उनके पास उस समय जाते थे जब वह शाम का भोजन कर चुके होते थे तब वह कुछ बादाम निकालते थे और हम दोनों को एक-एक हथौड़ी देते थे। फिर वह किरमिच का एक झोला लाते थे जिसमें अखरोट, चिरौंजी और काजू भरे होते थे। यद्यपि वह भी इन सूखे फलों को तोड़ने और खाने में हमारे साथ शामिल होते थे तथापि हम लोग सदैव उनसे अधिक खाते थे परन्तु वार्तालाप अधिकांश नहीं करते थे।

जो एल्सर युद्ध में भाग ले चुके थे। उस समय केवल एक ही युद्ध था जिसमें कोई पुरुष भाग ले सकता था—संघ की स्थापना और दासों की विमुक्ति का युद्ध। जो चार वर्ष तक युद्ध में रह चुके थे। वह सामान्य सिपाही की हैसियत से युद्ध में गये थे और सामान्य सिपाही की हैसियत से ही वहाँ से वापस आये। वह लड़ाई में मोर्चे

पर रह चुके थे। वह जलाने की लकड़ी लेते थे, एक लकड़ी फर्श पर रखते थे, "जहाँ वे लोग पंक्तिबद्ध खड़े थे" और दूसरी लकड़ी फर्श पर रखते थे, "जहाँ हम खड़े थे।" तब वह लकड़ियों के स्थान में यह दिखाने के लिए परिवर्तन कर देते थे कि कहाँ उन्होंने हमारे ऊपर आक्रमण किया और कहाँ हम लोगों ने उन पर प्रत्याक्रमण किया। उन्हें कभी चोट नहीं लगी थी "परन्तु मुझे एक बार मलेरिया का बुखार आ गया था जो छः सप्ताह तक बुरी तरह चलता रहा।" वह अपने को किसी प्रकार का योद्धा नहीं बताते थे।" हम युद्ध में भरती हो गये और तब जो कुछ हुआ, हमें उसे स्वीकार करना पड़ा। खाने के लिए हमको प्रायः "सूअरी का पेट और फलियाँ मिलती थीं यद्यपि कभी-कभी शत्रु-देश में हम कुछ जानवरों को पकड़कर मार डालते थे और हमें अच्छा खाना मिलता था। कभी-कभी हमको सूअर और मुर्गी के बच्चे दिखाई पड़ते थे। हम उन्हें पकड़कर मार डालते थे और गोश्त को भून या तल लेते थे।" सैनिकों के पास पहले दो झोले होते थे परन्तु बाद में उन्होंने झोलों को फेंक दिया और प्रत्येक वस्तु को कम्बल में लपेट लेते थे। जब वे मार्च करते थे तब बायें कंधे पर कम्बल का बंडल लटका लेते थे और दाहने कंधे पर बंदूक रखते थे—और कमर में कारतूस की पेटी बँधी होती थी।

वर्दियाँ, जूते, मोजे और खाद्य पदार्थ सब कुछ सरकार की ओर से मिलता था। हमें कुछ खरीदने की आवश्यकता नहीं होती थी किन्तु यदि किसी को किसी विशेष वस्तु की आवश्यकता होती थी तो वह सैनिक विक्रेता से खरीद सकता था जो सेना का अनुगमन करता था और जहाँ कहीं सेना ठहरती थी वहाँ अपना भंडारघर सजाता था।

जब तीन या चार वर्ष के पश्चात् जो एल्सर हमारे मकान से

चल गये तब हमें उनकी अनुपस्थिति खलती थी। उनके पास जो कुछ था उससे वह मजे का जीवन व्यतीत करते थे। वह बढ़ई का काम करके प्रतिदिन दो डालर मजदूरी पाते थे और सरकार से प्रतिमास ३० डालर पेन्शन पाते थे। वह अपना काम पसन्द करते थे और अच्छे बढ़ई होने पर उन्हें गर्व था। वह संयमी थे परन्तु संयम के विषय में कभी बातचीत नहीं करते थे। वह एकाकी थे और अपने एकाकीपन को वे अच्छा समझते थे। जो एल्सर के भयभीत होने का कभी भी कोई लक्षण नहीं दिखाई पड़ता था। वर्तमान या भविष्य से निर्भय रहकर जीवन व्यतीत करना उन्होंने किसी प्रकार सीख लिया था।

जब मेरे पिता ने बेरियन स्ट्रीटवाला मकान खरीदा था तब मुझे पूरा विश्वास है कि उन्होंने अपने चचेरे भाई मैगनस होम्ज से काफी कमरे होने के लाभ पर बातचीत की होगी कि उन्हें किराये पर उठाकर प्रति मास कुछ रुपया पैदा किया जा सकता है। श्री होम्ज ने लकड़ी का पुराना दफ्तर खरीदा था और घोड़ों के द्वारा रोलरों पर खिंचवाकर उसे अपने घर के निकट खाली जमीन पर ले गये थे और किराये पर देने के लिए उसे मकान के रूप में खड़ा कर दिया था। जब आगस्ट सैण्डबर्ग ने पानी काउंटी, कैन्सस में कुछ भूमि का चौथाई भाग खरीदा तब वह अपने चचेरे भाई की तरह एक-सी गति से उन्नति कर रहे थे जिन्होंने होल्ड्रीज, नेब्रास्का के निकट उतनी ही जमीन खरीदी थी।

बड़े मकान के खरीदने के लिए पिताजी ने जो रुपये उधार लिये थे वह उनके मन पर बोझ बने थे। इसी प्रकार भूमि के उस प्रथम चतुर्थांश के खरीदने के कारण उनके ऊपर जो ऋण हो गया था वह भी बोझ था। उन्होंने कुछ लाभ लेकर यह भूमि बेचकर दूसरा
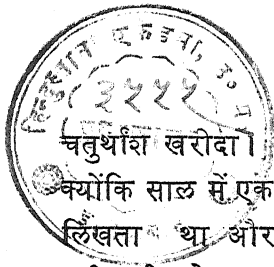
चतुर्थांश खरीदा। मुझे मण्डल और नगर के नाम कंठस्थ हो गये, क्योंकि साल में एक बार में पानी काउंटी के काउंटी खजांची को पत्र लिखता था और वार्षिक कर चुकाने के लिए उसके साथ पोस्टल मनीआर्डर भेजता था। वह पत्र लिखने के लिए पिताजी मुझे एक पेंसिल देते थे जिसे वह मूल्यवान् समझते थे। हम कभी भी यह ठीक नहीं जान सके कि क्यों वह अपने पास उस पेंसिल को रखते थे। उसका मसाला बैंगनी और अमिट था। उन्हें यह बात पसन्द थी कि हम जो कुछ लिखते हैं उसे मिटा नहीं सकते।

कई वर्षों से १६० एकड़वाले उस कैन्सस फार्म पर हमारे परिवार का मन लगा हुआ था। पिताजी अनिश्चयपूर्वक गेल्सबर्ग छोड़ने और उस फार्म पर भाग्य की परीक्षा करने की बातें करते थे। रेलवे और सट्टेबाजों से चित्रों के अनेक समूह आते थे जिनमें यह दिखाया जाता था कि वहाँ पर गेहूँ, मक्का, नाशपाती और सेब की कैसी लाभप्रद फसलें पैदा की जा सकती हैं। "स्वतंत्र"—हम लोगों ने वह शब्द सीखा। फार्म का स्वामी कभी भूखों नहीं मरता; जो कुछ वह पैदा करता है उसे खाकर अपना जीवन व्यतीत कर सकता है; वह स्वयं अपना मालिक है; वह अपने पद से च्युत नहीं किया जा सकता; वह "स्वतंत्र" होता है।

तब १८९३ का संकट और कठोर समय आया। हमने सुना कि कैन्सस में अनाज प्रति बुशल १० सेण्ट के हिसाब से बिकने लगा है। हम पढ़ते थे कि कैन्सस के किसान ईंधन की जगह अनाज जलाते हैं। कैन्सस की भूमि का मूल्य गिर गया। मैंने कभी नहीं सुना कि पिताजी ने अपनी जमीन कितने में बेंची। परन्तु हम लोगों ने अपना पारिवारिक वाद-विवाद छोड़ दिया कि कौन मनुष्य

अधिक स्वतंत्र है—जो रेलवे में काम करता है अथवा जो फार्म चलाता है।

सर्वत्र भय छाया था। लोग दौड़कर बैंक जाते थे और देखते थे कि वे बन्द हैं। मनुष्य बेकार हो गये थे; दान के लिए नाच कराये जाते थे; महीनों तक समाचार में काक्सी की सेना की प्रमुखता रही, मनुष्य वाशिंग्टन की तरफ जाते थे जिससे वह कांग्रेस से कहें कि हमें काम दिलाओ और यह कठोर समय निश्चित रूप से गेल्सबर्ग पहुँच गया। चौकीदारों को छोड़कर रेल की दूकानों में काम करनेवालों का काम १० घंटे प्रतिदिन से घटाकर ४ घंटे प्रतिदिन कर दिया गया और वेतन दिवस को पहले की अपेक्षा आधे मूल्य के चेक दिये जाने लगे।

हमने सूअर की चर्बी और नमक पुती हुई रोटी खाना सीखा और उसे पसन्द करने लगे। जब सूअर की चर्बी घट गई तब हम रोटी पर शीरा रखकर खाते थे। वह खाने में इतना अच्छा नहीं होता था। हम लोगों के सौभाग्य से हमारे बाग में आलू की फसल अत्यधिक हुई। आलुओं से परिपूर्ण जमीन हँसती थी। जब मैं और मार्ट आलू खोदने और बुशल की टोकरी में उसे भरकर तहखाने में ले जाने में उनकी सहायता करते थे तब हमने पिताजी को पहली और अन्तिम बार कुछ लिखते हुए देखा। प्रत्येक बुशल के लिए जो भीतर लाया जाता था, वह छत की कड़ी पर एक खड़ी लकीर बनाते थे। जब चार खड़ी लकीरें बन जाती थीं तब वह उन्हें एक कर्णवत् रेखा से काट देते थे। इससे उनका तात्पर्य होता था कि पाँच बुशल भीतर चले गये।

पड़ोसियों की एक छोटी सहकारी समिति बन गई। उन्होंने एक घोड़ा और गाड़ी उधार ली और जान क्रैन्स का एक सूअर

खींचकर नगर में ले गये। क्रन्स ने हँसकर कहा था कि उसका "मूल्य लगभग शून्य था।" हमसे लगभग दो भवनों की दूरी पर, एक छोटे धान्यागार के सामने, जाड़े के दिन में एक खुले हुए मैदान में हमने सूअर का मारा जाना देखा। हम बच्चों के लिए उसका मारा जाना एक नाटक था। मैं एक बाल्टी खून घर ले गया जिससे माताजी ने स्वादिष्ट "हलुआ" बनाया। मार्ट और मैं शीघ्रतापूर्वक उनकी जाँघ और थोड़ा और गोश्त ले गये जिससे सप्ताहों तक खाने के लिए हमें विभिन्न भोज्य प्राप्त हुए।

उस जाड़े में हमने कोयले के छोटे-छोटे रद्दी टुकड़ों के विषय में सीखा। उसमें बड़े-बड़े डले नहीं थे। वह अच्छे मुलायम कोयले से बहुत सस्ता मिलता था। अपने रसोईघर की छोटी अँगीठी में हम उसे फावड़े से भरते थे और तब उसे देखते रहते थे। जब उसका पिण्डा बन जाता था तब हम उसे सीकचे से तोड़ देते थे। यदि सावधानी से उसकी देखभाल न की जाती तो राख के इतने बड़े-बड़े पिण्डे बन जाते कि वह अँगीठी की जाली से नीचे न जाते। सीकचे और फावड़े से हम इन पिण्डों को निकालकर टीन की एक विशेष बाल्टी में रखते थे।

मैंने दरवाजे से होकर जीने के नीचे कोयले की खत्ती में झुककर जाना सीखा। मैंने झुककर हथौड़ा झुलाकर कोयले के बड़े-बड़े डलों को तोड़कर छोटा करना सीखा जिससे वे कोयले की टोकरी और अँगीठी के दरवाजे में जा सकें। मेरे हाथ काले हो जाते थे और मेरी नाक तथा कानों में कोयले की गर्द भर जाती थी। मैं सोचता था कि मैं अपना भोजन तथा पालन-पोषण का खर्च कमा लेता हूँ। मैं अपने भाग्य को बहुत कठोर समझता, यदि मैं "यूथ्स कम्पैनियन" नामक पुस्तक न पढ़ता होता जिसमें खान खोदनेवालों

और कोयला तोड़नेवाले बालकों का वर्णन था जो दिन भर काम करते थे और जब वे बाहर आते थे तब उनके चेहरे काले होते थे और उनके ऊपर कोयले की गर्द की तह जमी रहती थी। एक बार मैंने टिन के एक छोटे से डिब्बे में छेद कर रस्सी डाली और उसे अपनी टोपी में बाँधकर इस प्रकार कोयले की अँधेरी खत्ती में गया मानो मैं सचमुच खान खोदनेवाला हूँ और मेरे सिर पर बत्ती जल रही है।

रसोईघर एक मात्र कमरा था जो जाड़े के महीनों में गर्म किया जाता था। जो कुछ गर्मी दरवाजे से और जीने के ऊपर से होकर जाती थी वह दूसरी मंजिल के कमरों को मिलती थी। तीसरी मंजिल के कमरे में कुछ भी गर्मी नहीं पहुँचती थी जहाँ मैं और मार्ट सोते थे। परन्तु हमें आनन्द आता था जब हम शून्य से न्यून तापक्रमवाली रात को रसोईघर की गर्म अँगीठी के पास खड़े होते थे, अपने सब कपड़े उतार देते थे, केवल जाँघिया रह जाती थी और तब दो मंजिल दौड़ते हुए हम लिहाफ के नीचे और मक्के के छिलके भरे हुए गद्दे पर आराम से लेट जाते थे इसके पहले कि बुड्ढे मिस्टर शून्य फारेनहाइट हमारे ऊपर प्रभाव डाल सकें।

पहले रसोईघर एक ढक्कनदार अँगीठी से गर्म किया जाता था। अँगीठी के सिरे पर एक आयताकार टैंक था जिसमें गर्म कोयलों से गर्म किया हुआ पानी भरा रहता था। बाद में यह अँगीठी तहखाने में रख दी गई जहाँ यह गर्म महीनों में धुलाई के दिनों काम आती थी। तब रसोईघर में आधुनिक आविष्कारों का आगमन हुआ—भोजन पकाने के लिए एक गैसो-लीन स्टोव और गर्म करनेवाला स्टोव जिसमें मछली के सरेस

का बना हुआ दरवाजा था और पेंदे में राख एकत्र होनेवाला एक तसला था। मैं हजारों बार उस राख के तसले को लेकर गया हूँगा और आलू की पंक्तियों के अन्त में राख की ढेर में उसे उँडेला होगा।

रसोईघर पन्द्रह फुट लम्बा और बारह फुट चौड़ा था। उसमें खाना रखने की आल्मारी, भंडारघर, मोरी, गैसोलीन स्टोव, गर्म करनेवाला स्टोव, एक मेज, आठ कुर्सियाँ और एक छोटी ऊँची कुर्सी थी। इसलिए उसमें आने-जाने के मार्ग तंग थे। उस एक कमरे में हम लोग—एक समय नौ व्यक्तियों का परिवार—रहते थे और वही हमारा रसोईघर, भोजन का कमरा, अध्ययन का कमरा, खेल का कमरा और कारखाना था। हम देखते थे कि माताजी आटा गूँधती हैं, उसको तन्दूर में रखती हैं और उससे बादामी रोटियाँ बाहर निकालती हैं। हम देखते थे कि कोट और पतलून में पैबन्द लगाये जाते हैं और मोजों में रफू किया जाता है। संकट के समय हम देखते थे कि पिता चमड़ा काटकर हमारे जूतों में हाफ-सोल कीलों से जड़ते हैं और घर की कैंची से लड़के के बाल काटते हैं—बाल अच्छे तो नहीं काटते थे, छोटे बड़े हो जाते थे, परन्तु उससे जो दो सेण्ट नाई को दिये जाते वह बच जाते थे।

हम लोग मक्के को फुलाकर टाफी बनाते थे। हम अपने घुटनों पर एक लोहे को उलटकर रखते थे और उस पर रखकर हथौड़ी से उन अखरोटों और काजुओं को तोड़ते थे जो हमने अक्तूबर में चुन रक्खे थे। हम अखबारों के ऊँचे हैट बनाते थे। जब लैम्प ठीक करने की आवश्यकता होती थी तब हम तहखाने से मिट्टी के तेल का कनस्तर लाते और बत्ती काटकर उसमें तेल भर देते थे। लैम्प जलाने के लिए हम नीली गन्धक की दिया-

सलाई खुरचते थे, नीला प्रकाश समाप्त होने और पीला प्रकाश आने तक प्रतीक्षा करते थे, तब उससे बत्ती जलाकर चिमनी चढ़ा देते थे।

हमने एक दो बार एक बिल्ली पाली, किन्तु वह बहुत अधिक जगह घेरती थी और हमारे काम में बाधा डालती थी। पिताजी जीवन के सुखद पहलू पर विचार कर रहे थे जब उन्होंने कहा कि माँ एक कैनरी (पीले रंग का गाना गानेवाला पक्षी) खरीद सकती हैं। जब वह हमारे सिर के ऊपर लटका दिया जाता था तब हमारे काम में बाधा नहीं डालता था। कैनरी हमारे घर एक या दो वर्ष रहा, परन्तु नये-नये बच्चे हमारे घर पर जन्म ले रहे थे और पालतू जानवर की भाँति प्रत्येक का पालन-पोषण आवश्यक था। हमारे रसोईघर जैसे कमरे में हम लोग एक दूसरे के स्वभाव से परिचित हो गये। हमने सीखा कि हमें अपने काम पर ध्यान देना चाहिए नहीं तो बखेड़ा हो जायगा।

पिताजी रसोईघर की नाली के पास एक छोटे दर्पण के सामने दाढ़ी बनाते थे। जिस गम्भीर पिता के गालों, ठुड्ढी और गर्दन पर साबुन का फेन लगा हो उसके बच्चों की दृष्टि में उसकी गम्भीरता कम हो जाती है। तीन दिन के उगे हुए गलमुच्छों को काटनेवाले उस्तरे की आवाज हमारे लिए सुखद आश्चर्य थी। वह बिना मुँह बनाये हुए दाढ़ी नहीं बना सकते थे। कभी-कभी उनका चेहरा ऐसा भयानक दिखाई पड़ता था कि हम कुछ डर जाते थे।

हम देखते थे कि उनका उस्तरा उनकी ठुड्ढी के नीचे एक सीमित क्षेत्र को छोड़कर उनके गालों, ठुड्ढी, ऊपरी होंठ और जबड़ों के नीचे सर्वत्र यात्रा करता है। वहाँ वह बालों का एक छोटा

गुच्छा छोड़ देते थे। कुछ सप्ताहों के पश्चात् हम देखते थे कि वह कैंची लेकर बकरी की दुम जैसे इस गुच्छे से छाँट देते थे। जब मार्ट और मैं वह जनप्रिय गीत गाते थे जिसके प्रत्येक पद के अन्त में होता था "उसकी ठुड्ढी पर था बालों का छोटा गुच्छा", तो पिताजी उसकी परवाह नहीं करते थे और हमें डाँटते फट-कारते नहीं थे।

मकान के पिछले आँगन में पानी का पम्प लकड़ी का था और पिछले दरवाजे से जीने से लगभग पन्द्रह कदम पर था। गर्म महीनों में जो पानी बाल्टी में घंटा दो घंटा रखा रहता था उसका स्वाद अच्छा नहीं होता था और पिताजी पुकारते थे, "शोली, ताजा पानी लाओ।" रसोईघर की नाली के पास से मैं टीन की एक बाल्टी लेकर पम्प के मुँह के नीचे रख देता था और लकड़ी के पम्प के दस्ते पर दोनों हाथ रखकर नीचे दबाता था और ऊपर खींचता था। इस प्रकार मैं पम्प चलाता रहता था जब तक पम्प के मुँह से पानी निकालकर बाल्टी को भर नहीं देता था। यह काम कभी-कभी दूसरे बच्चे भी करते थे परन्तु मैं सबसे बड़ा लड़का गिना जाता था—चतुर और मजबूत जो पानी लाने के लिए पुकारा जाता था।

ग्रीष्म ऋतु के शुष्क काल में जब पम्प का हैण्डल हलका और ढीला चलता था तब मैं जान जाता था कि पानी नीचे है और पम्प में ऊपर से कुछ पानी छोड़ने की आवश्यकता है। मैं रसोई-घर वापस जाकर हौज से वर्षा का एक बाल्टी पानी लाता था और चमड़े के "सकर" और ट्यूब में छोड़ देता था। तब मैं पम्प के दस्ते को दबाता था और ऊपर खींचता था जिससे अन्त में पम्प के मुँह से पानी निकलने लगता था। कठोर गर्मी के दिनों

में जब रसोईघर में मक्खन पिघल जाता था तब माँ उसे टिन की एक छोटी बाल्टी में रखकर उसके दस्ते में दोहरी पतली रस्सी बाँध देती थीं और मैं उसे ठंडा और कठोर होने के लिए कुएँ में लटका देता था।

कभी-कभी जाड़ों के प्रातःकाल मैं दस्ताने पहनकर पम्प का हैण्डल चलाने का प्रयास करता था और वह नहीं हिलता था। रसोईघर की खिड़की से देखकर वे लोग एक बाल्टी पानी गर्म कर देते थे। मैं जाकर उसे लाता था और पम्प में छोड़ देता था। कभी-कभी मुझे गर्म पानी की दूसरी बाल्टी के लिए भी जाना पड़ता था। जब पम्प की बर्फ पिघल जाती थी तब मैं उसे चलाता था और घर में दो बाल्टी पानी ले जाता था जो परिवार के खर्च के लिए दूसरे दिन के प्रातःकाल तक के लिए काफी होता था जब हम फिर पम्प की बर्फ को पिघलाते थे। इसका अर्थ होता था कि मुझे हौज से कुछ फालतू पानी ले जाना पड़ता था जिसमें पम्प नहीं लगा था। इसलिए मुझे लोहे की बाल्टी उसमें लटकाकर पतली बर्फ को उससे तोड़ना पड़ता था और रस्सी से पानी भरी बाल्टी ऊपर खींचना पड़ता था।

तीन या चार बार जब मैं पम्प को दबाता और खींचता था पर पानी नहीं आता था तब पिताजी उसको ध्यान से देखते थे फिर चमड़ा काटकर एक नये "सकर" के आकार का बनाते थे। वह मुझे एक रस्सी के सहारे कुएँ में उतारते थे और बताते थे कि मुझे क्या करना चाहिए। इसके बाद वह खड़े होकर देखते रहते थे और यह बताते जाते थे कि मैं और क्या करूँ। जब वह खींचकर मुझे बाहर निकालते थे और हम कह सकते थे नया "सकर" काम कर रहा है तो मुझे बहुत हर्ष होता था।

हमारे बालकपन में प्रत्येक मकान और उसके इर्द-गिर्द की जमीन तथा निकटस्थ मकानों के समूहों के सामने, पीछे और दाहने-बायें की जमीन घेरी रहती थी। सामने के घेरे में फाटक होता था। धीरे-धीरे घेरे और फाटक हटा दिये गये। पहले सामने के घेरे हटाये गये, तब अगल-बगल के और अन्त में पीछे के। घेरों का हटाना ऐसी सड़कों पर आरम्भ हुआ जैसे नार्थ ब्राड और नार्थ प्रेयरी जहाँ पर धनी और समृद्ध लोगों के मकान थे। घेरों और फाटकों के प्रचलित और लुप्त होने से सम्बन्धित सिद्धान्त उन प्रारम्भिक दिनों की ओर संकेत करता है जब कि अमीर और गरीब सब लोग घोड़े, गाय, सूअर और मुर्गियाँ पालते थे। ये जानवर बराबर इधर-उधर घूमा करते थे। यदि किसी मनुष्य के मकान और आँगन घिरे नहीं रहते थे तो वे उसमें घुस-कर उसके बाग को रौंद डालते थे। जब इन घूमनेवाले जानवरों की संख्या कम हुई, तब उत्तरी दिशा के लोगों ने घेरों को तोड़ने की प्रणाली प्रचलित की और शेष नगर ने शनैः-शनैः इनका अनुकरण किया। वह वर्ष भी आया जब हमने अपने सामनेवाले आँगन का घेरा तोड़ डाला। अच्छे तख्तों को हमने घर की मरम्मत करने के लिए बचाकर रख दिया और शेष को ईंधन की तरह जला डाला। परन्तु अगल-बगल और पीछे के घेरे उन सत्रह वर्षों तक बने रहे जब हम उस मकान में रहते थे।

तीसरा परिच्छेद

बालक रिपब्लिकन

उस अक्टूबर की रात को मेरी अवस्था छः वर्ष की थी जब मैं अपने पिता का हाथ पकड़कर दक्षिण के निकट सेमिनरी स्ट्रीट में पैदल गया। वह पहला अवसर था जब मैंने देखा कि राजनीति के कारण लोग किस प्रकार आवेश में आ जाते हैं। सैकड़ों आदमी दो-दो की पंक्तियों में खड़े थे। जहाँ तक मेरी आँखें देख सकती थीं वह पंक्ति उससे भी दूर तक फैली थी। हर एक मनुष्य अपने कन्धे के ऊपर एक बाँस लिये था। बाँस के सिरे से एक जलती मशाल लटकती थी। मैंने अपने जीवन में कभी एक मशाल भी न देखी थी और अब अचानक सैकड़ों मशालों को एक पंक्ति में खड़े देखा। प्रत्येक मनुष्य के कन्धे पर लाल, सफेद और नीले

आयल क्लाथ का चोगा था जिसमें आस्तीन नहीं थी। मशाल से मिट्टी के तेल की बूँदें आयल क्लाथ पर गिरती थीं। मेरे पिता ने बतलाया कि यह "रिपब्लिकन दल का समारोह" है। सड़क की पटरियाँ उन मनुष्यों से भरी हुई थीं जो इस मार्च को देखने के लिए प्रतीक्षा कर रहे थे।

हम लोग टहलते-टहलते उत्तर की ओर गये और उन आदमियों के निकट पहुँचे जो जलती मशाल लिये थे। जब आज्ञा दी गई तब प्रत्येक मनुष्य ने एक पाइप में फूँका जो उसके सिरे के ऊपर तक फैला था और उनसे तीन या चार फुट ऊँची आग की लपटें निकलीं जो आग के बड़े-बड़े फूलों की तरह बिखर गईं। मैंने पहले एक भी जलती मशाल नहीं देखी थी और अब सहसा बीस मशालों को जलती हुई देखना मेरे लिए आश्चर्य की वस्तु थी। जब लम्बी, लाल और पीली लपटें धीमी होकर बुझ गईं तब अंधकार पहले की अपेक्षा और अधिक हो गया।

हम घूमते हुए और उत्तर की ओर गये और पीतल के बाजे बजानेवालों के पास पहुँचे जो जलूस के आगे थे। जब वे मेन स्ट्रीट में घूमे तो उनका नेतृत्व एक लम्बा आदमी कर रहा था जो पीला पतलून, लाल कोट और लाल मखमल का हैट पहने था। वह लग-भग मेरे बराबर ऊँचा था। वह एक छड़ी लिये था जिसके सिरे पर सोने की मूँठ लगी थी। इस छड़ी से वह जलूस को बतला रहा था कि किस प्रकार घूमकर चलना चाहिए। नरसिंघे बजाते हुए और ढोल पीटते हुए वे मेन स्ट्रीट पर पश्चिम की ओर जाते थे।

मेन स्ट्रीट के कोने पर खड़े होकर हमने जलूस को जाते हुए देखा। मार्च करनेवाला प्रत्येक व्यक्ति रिपब्लिकन था। मार्च करके वह डेमोक्रैट लोगों को दिखा रहा था कि मैं रिपब्लिकन

हूँ। पिताजी ने मुझे यह समझाया। मैंने मार्च करनेवाले आदमियों को पटरी पर खड़े होनेवाले मनुष्यों से चिल्लाते सुना। प्रायः वह कहते थे "ब्लेन की जय"! "ब्लेन को राष्ट्रपति बनाओ।" कभी-कभी सैकड़ों आदमी पैर से ठेका कर साथ-साथ चिल्लाते थे, "ब्लेन, ब्लेन, जेम्स जी० ब्लेन।"

पटरी पर एक आदमी को मैंने चिल्लाते हुए सुना, "क्लीवलैण्ड की जय हो।" तुरन्त जलूस से आवाज आई, "और उसे फाँसी पर लटका दो।" मैंने इसके विषय में पिताजी से पूछा और उन्होंने कहा, "क्लीवलैण्ड डेमोक्रैट हैं। वह ब्लेन के विरोधी हैं।"

घर लौटते समय रास्ते में मैंने पिताजी से और प्रश्न पूछे। उन्होंने मुझे बताया कि रिपब्लिकन अच्छे आदमी हैं और डेमोक्रैट या तो बुरे लोग हैं या अच्छे आदमी हैं जो पथ-भ्रष्ट हो गये हैं या एक प्रकार के गूँगे लोग हैं। और मुझे ऐसी भावना हुई कि क्लीवलैण्ड एक कुरूप व्यक्ति है और यदि रिपब्लिकन लोग एक रस्सी लेकर उन्हें फाँसी पर लटका दें तो मुझे खेद न होगा। किसी ने मुझे यह ठीक-ठीक नहीं समझाया था कि मनुष्य को फाँसी कैसे दी जाती है परन्तु यदि फाँसी वही थी जो रिपब्लिकन लोग क्लीवलैण्ड को देना चाहते थे तो मैं उसके पक्ष में था। मैं एक बालक रिपब्लिकन था, छः वर्ष का बच्चा रिपब्लिकन!

कुछ महीने पश्चात् निर्वाचन का समय आया। मुझे बतलाया गया कि फाँसी पर लटकाये जाने के बदले में ग्रोवर क्लीवलैण्ड राष्ट्रपति निर्वाचित कर लिये गये हैं। और जब क्लीवलैण्ड ने गेल्सबर्ग के लिए नये पोस्टमास्टर को मनोनीत किया तो वह विलियम टूहिग थे जो हमसे मकानों के केवल दो समूहों के अन्तर पर प्रेम पर बने हुए एक साधारण मकान में रहते थे। हम उन्हें

बिली टूहिग कहते थे। अपने पिछले आँगन में वह बालू का ढेर रखते थे और जब कभी मेरे पिता को ईंट जोड़नी होती थी तब वह मुझे बिली टूहिग के घर हाथगाड़ी में दस सेन्ट की बालू खरीदने को भेजते थे। इस प्रकार आने-जाने से मैं उनको जान गया और मैं सोचता था, कि वह अच्छे व्यक्ति हैं यद्यपि वह डेमोक्रैट हैं और यद्यपि कुरूप ग्रोवर क्वीवलैण्ड ने उन्हें गेल्सबर्ग का पोस्टमास्टर और डाक ढोनेवाले सब हरकारों का मालिक मनोनीत किया है। मेरे पिता भी बिली टूहिग को पसन्द करते थे। मेरे मन में रिपब्लिकन और डेमोक्रैट लोगों के विषय में ऐसे अस्पष्ट और मिश्रित विचार थे कि मैंने उनके विषय में अपने पिता से और अधिक प्रश्न न पूछे।

मैं साढ़े सात वर्ष का था जब जनरल युलिसेज एस० ग्राण्ट की मृत्यु हुई थी और मैं उनकी अन्त्येष्टि क्रिया में गया था। वह गेल्सबर्ग से बहुत दूर मरे थे, मैंने यह नहीं सुना कि कहाँ। परन्तु अपराह्न के लिए मेन स्ट्रीट के गोदाम बन्द हो गये और क्यू० दूकानें, ब्राउन कार्न प्लान्टर वर्क्स और फ्रास्ट्स फाउंड्री भी बन्द हो गये। सेमिनरी स्ट्रीट में क्यू० डिपो से जलूस चला और मेन स्ट्रीट तक गया। वहाँ से पश्चिम की ओर घूमा और पब्लिक स्क्वायर गया। लोग कहते थे कि गेल्सबर्ग में पहले कभी इतना लम्बा जलूस नहीं निकला था।

सेमिनरी से स्क्वायर तक मेन स्ट्रीट के मकानों के पाँच लम्बे समूहों के सामने की पटरियों पर लोग भरे हुए थे। सन् १८८५ में गर्म जुलाई के अपराह्न का समय था। मेरे पिता ने कई बार धक्का खाया था और भीड़ में पिसे थे। उन्होंने भी

दूसरों को धक्का दिया था और भीड़ में से आगे निकलने की चेष्टा की थी। अन्त में हम लोग विशाल ओ० टी० जानसन ड्राईगुड्स स्टोर के सामने मोड़ से तीन-चार फुट पर खड़े हो गये। यह बड़ा अच्छा था कि लोगों ने मुझे मोजे और जूते पहना दिये थे, क्योंकि जिस प्रकार मेरे पैर कुचल गये थे वह और भी बुरा हुआ होता यदि मैं नंगे पैर होता। जो लोग मेरे सामने थे उनकी टाँगों के बीच से झाँककर मैंने जलूस को देखने की चेष्टा की किन्तु मैंने अपने सामने केवल और आदमियों की और अधिक टाँगें देखीं। मैंने अपने पिता का हाथ खींचा और चिल्लाया, "मैं नहीं देख सकता! मैं नहीं देख सकता!"

पिताजी ने मुझको उठाया, अपने सिर को मेरी टाँगों के बीच में कर दिया और मैं उनकी गर्दन पर एक टाँग एक तरफ और दूसरी टाँग दूसरी तरफ किये बैठ गया। अब जितनी अच्छी तरह मैं परेड देख सकता था उससे और अधिक अच्छी तरह केवल देव देख सकता था। परेड के आगे मार्शल थे जो एक चपल और हलके लाल तथा भूरे रंग के घोड़े पर सवार थे जिसकी लगाम चमक रही थी और जीन में पीतल के बटन लगे थे जिनमें से प्रत्येक चाँदी के डालर से बड़ा था। उनके पीछे पुलिस सिपाहियों की दो पंक्तियाँ थीं जिनके नीले कोटों पर गिलट की पालिश किये सितारे चमक रहे थे। प्रत्येक की पेटी से एक डंडा लटक रहा था। उनके पीछे बाँसुरी और ढोल बाजनेवाली सैनिक टुकड़ी थी। ढोल पीटने से जो शोर होता था, मालूम होता था कि वह इमारतों को हिला दे रहा है। मैंने पिताजी का हैट और कसकर पकड़ लिया जिससे मैं गिर न पड़ूँ। उनके पीछे-पीछे मनुष्यों की एक लम्बी पंक्ति चल रही थी। वे लोग ऐसा वस्त्र पहने हुए

थे मानो रविवार को गिरजाघर जा रहे हों। वे चार-चार की टुकड़ी में चल रहे थे।

गेल्सबर्ग मेरीन बैण्ड हमारे पास से होकर गया। लोग चल रहे थे और अपनी तुरहियों को मुँह से बजा रहे थे। एक मनुष्य के पास लम्बा नरसिंघा था जो उसके चारों तरफ लपेटा सा दिखाई पड़ता था और मैं चकित था कि वह उसके भीतर कैसे घुसा। वे नीले कोट और धारीदार नीले पैण्ट पहने थे। उनका संगीत धीमा और शोकपूर्ण था। युद्ध समाप्त हुए केवल बीस वर्ष हुए थे और जनरल ग्राण्ट युद्ध के सबसे महान् जनरल थे। वे दिखाना चाहते थे कि वे उनकी मृत्यु के कारण दुखी हैं।

हमारे निकट से मार्च करते हुए कुछ लोग गये जो गहरे नीले कोट और बड़े, काले हैट पहने थे। उनके हैट के चारों ओर सोने का एक छोटा तार लपेटा था जिससे एक झब्बा लटकता था। वह जी० ए० आर० ग्रैंड आर्मी आफ रिपब्लिक (प्रजातंत्र की महत्त्वपूर्ण सेना) थी। मैंने सुना कि इनमें से कुछ मनुष्यों नें जनरल ग्राण्ट के साथ युद्ध में भाग लिया था और वे बतला सकते थे कि घोड़े पर सवार होने पर वह कैसे दिखाई पड़ते थे और किन गुणों के कारण वह महान् जनरल हो गये थे। उनमें से आठ या दस एक लम्बे काले सन्दूक की दोनों तरफ मार्च करते थे जो कि एक काली गाड़ी पर रक्खा था जिसे आठ काले घोड़े खींचते थे। जनरल ग्राण्ट का शव सन्दूक में नहीं था। किन्तु मैंने देखा कि जलूस का यह भाग जब निकट से होकर गुजरता था तब प्रत्येक मनुष्य पहले से भी अधिक शान्त हो जाता था।

मुझे स्मरण है कि दो तोपें हमारे निकट से होकर गईं जिन्हें छः या आठ घोड़े खींच रहे थे। नीग्रो सिलवर कार्नेट बैण्ड

मार्च कर रहा था। उनका संगीत भी धीमा और शोकपूर्ण था। जलूस में केवल उन्हीं के चेहरे काले थे। जब वे निकट से जाते थे तब मैंने मनुष्यों और स्त्रियों के चेहरों को प्रकाशित होते हुए देखा। मैंने पिताजी और श्री होम्ज से सुना था कि जिस युद्ध में जनरल ग्राण्ट महान् जनरल थे वह काले लोगों को स्वतंत्र करने के लिए लड़ा गया था। मैं नहीं समझता था कि लोगों के स्वतंत्र न होने और घोड़ों की भाँति खरीदे और बेचे जाने का क्या तात्पर्य होता है। गेल्सबर्ग में इस प्रकार की कोई वस्तु नहीं थी। किन्तु चाहे जो कुछ हो, यह चीज बड़ी भयानक थी और उसके विषय में बातें करते हुए लोग अपने सिर हिलाते थे। इसलिए लोग काले लोगों को शोकपूर्ण बाजा बजाते हुए देखना पसन्द करते थे क्योंकि जनरल ग्राण्ट का देहान्त हो गया था जिन्होंने उन्हें स्वतंत्रता दिलाने में सहायता दी थी।

एक बड़ा झंडा उस मोटे आदमी के ऊपर लहरा रहा था जो उसे ले जा रहा था। जिस डंडे पर झंडा बँधा हुआ था उसका दूसरा सिरा एक प्रकार की जेब में रक्खा था जो उस मनुष्य की कमर की पेटी से लगा था। वह भारी दिखाई पड़ता था। उसके फूले गालों पर से बहते हुए पसीने को मैं देख सकता था।

यह परेड अन्य परेडों से भिन्न थी। मैंने एक सर्कस की परेड देखी थी जिसमें सड़कों की पटरियों पर खड़े लोग विदूषकों और पिंजड़ों में रक्खे हुए हाथियों तथा अन्य जंगली जानवरों को देखकर हँसते और चिल्लाते थे। मैंने रिपब्लिकन रैली (परेड) को देखा था जिसमें लोग जलती हुई मशालें लिये थे। पटरियों पर खड़े हुए डेमोक्रैट लोग उन पर आवाजें कसते थे और रिपब्लिकन लोग जवाब में डेमोक्रैट लोगों पर आवाजें कसते थे। परन्तु जनरल ग्राण्ट की

अन्त्येष्टि क्रिया की इस परेड में मार्च करनेवाले लोग अपना चेहरा सीधा किये थे। इसी प्रकार पटरी पर खड़े होनेवाले लोग भी अपना चेहरा सीधा किये थे। जिन लड़कों और लड़कियों को मैंने देखा वह भी बड़े लोगों की तरह अपना चेहरा सीधा किये थे। मेरी तरह वह भी जानते थे कि यह महत्त्वपूर्ण दिवस है। दोनों बैण्ड, बाँसुरी और ढोल बजानेवाली सैनिक टुकड़ी, पैरों, घोड़ों के खुरों और पहियों के पत्थरों पर चलने की आवाजों के सिवाय हमें और कुछ नहीं सुनाई पड़ता था। धीमा और शोकपूर्ण संगीत भी शान्त मालूम होता था। मेरा खयाल है कि जब तक जलूस जा रहा था तब तक मैंने केवल एक बार मुस्कराहट देखी थी और वह उस समय जब पिता ने अपना चेहरा ऊपर करके मुझे देखा और उन्हें सन्तोष हुआ कि उन्होंने मुझे इस प्रकार रक्खा है कि मैं परेड देख सकता हूँ।

मुझे स्मरण है कि मैंने यह सोचने के लिए कितना कठोर परिश्रम किया था कि उस युद्ध का क्या तात्पर्य था और जनरल ग्राण्ट ने क्या किया था जिससे वह सबसे बड़े जनरल हो गये थे। मैंने सुना कि वह राष्ट्रपति भी रह चुके थे। मैंने यह भी सुना कि वह रिपब्लिकन दल के महान् पुरुषों में से थे और यह कि रिपब्लि-कन लोग उनकी मृत्यु से दुखी होंगे। मैंने यह भी सुना कि कुछ डेमोक्रैट लोग जो उनके साथ युद्ध में सम्मिलित हुए थे उनकी कार्य-प्रणाली और उनके व्यवहार को पसन्द करते थे। रिपब्लिकन लोगों की भाँति यह डेमोक्रैट लोग भी दुखी थे।

जब परेड समाप्त हो गई तब पिताजी ने मुझे कंधे पर से उतार दिया। हम लोग हजारों आदमियों के साथ मेन स्ट्रीट पर चलते रहे और फिर घर गये। मैं समझ सकता था कि मेरे पिता के लिए यह एक

महत्त्वपूर्ण दिवस है। कुछ दूकानों की खिड़कियों में मैंने जनरल ग्राण्ट के चित्र देखें जिनके चारों ओर काले कपड़े लटकाये गये थे। उन अन्य मनुष्यों से वह किस बात में भिन्न थे जिनके चेहरे पर गलमुच्छे हों और जिनके बाल छोटे-छोटे कटे हों, यह मैं नहीं समझ पाता था। वह लोम्बार्ड प्रोफेसर श्री ग्रब से बहुत भिन्न नहीं दिखाई पड़ते थे जो हमारे मकान के सामने सड़क के पार रहते थे और जो प्रतिदिन प्रातःकाल कालेज जाने के पहले अपनी जर्सी गाय का दूध दुहते थे। तब मैं अपने मन में कहता था कि यद्यपि प्रोफेसर ग्रब का चेहरा करीब-करीब बिलकुल जनरल ग्राण्ट के चेहरे की तरह है तथापि यदि उनकी मृत्यु हो जाय तो जैसी परेड हमने जनरल ग्राण्ट के लिए देखी थी वैसा जलूस उनके लिए न निकाला जायगा। उस रात को मैं यह कहते हुए सोया कि मुझे आशा है, कभी न कभी मैं उस युद्ध, हब्शियों की स्वतंत्रता, जनरल ग्राण्ट के विषय में और अधिक ज्ञान प्राप्त करूँगा और यह भी जान सकूँगा कि राष्ट्रपति और वाशिंग्टन में सरकार का प्रधान होने का क्या तात्पर्य होता है।

चौथा परिच्छेद

शिक्षा की भूख

बालकपन की जिन वस्तुओं का मुझे स्पष्ट स्मरण है, उनमें से एक हमारे घर की बाइबिल है जो स्वीडिश भाषा में लिखी थी। मैं चार वर्ष का था और बेरियन स्ट्रीट में स्थित मकान की दूसरी मंजिल पर अपनी माता और पिता के सोने के कमरे में था। जाड़े का दिन था। बाहर तेज हवा चल रही थी। मिट्टी के तेल के छोटे लैम्प के प्रकाश में बाइबिल का एक अध्याय पढ़कर पिताजी ने मुझको और मेरी को सुनाया। उस सप्ताह में मैं कई बार उस स्थान पर गया जहाँ वह पुस्तक एक मेज पर रक्खी थी। उसको खोलकर मैंने उसके पन्नों को पलटा। कुछ शब्द मुझे याद थे। मैंने माँ से उन शब्दों को दिखलाने को कहा। मुझे बड़ी सान्त्वना मिली

जब माँ ने कहा कि जब मैं स्कूल जाकर पढ़ने लगूँगा तब मैं सब शब्द भली भाँति जान जाऊँगा।

वह दिन आया जब मैं फोर्थ वार्ड स्कूल के लिए रवाना हुआ जो हमारे घर से चार भवन-समूहों के अन्त में था। परन्तु अगले वर्ष हम लोगों ने बेरियन स्ट्रीट के सेवन्थ वार्ड में मकान ले लिया और हम लोगों को स्कूल जाने के लिए मकानों के छः समूह और पार करने पड़ते थे। मुझे वर्णमाला सिखाई गई। हम कक्षा में आवृत्ति करते थे। हमने सीखा कि प्रत्येक शब्द के उच्चारण की शुद्ध और अशुद्ध विधि होती है। हमें स्पष्ट हो गया कि प्रत्येक भाषा अनेक शब्दों से बनती है और यदि आप शब्दों को सीख लें तो आप भाषा को जान जायँगे।

जब मैं पाँचवीं कक्षा में पढ़ता था, जाड़े में एक शुक्रवार के अपराह्न को जान एस० सी० अबाट् के लिखे हुए "नेपोलियन बोनापार्ट का इतिहास" के प्रथम भाग को घर ले गया और तीसरी मंजिल के अपने कमरे की उत्तरी खिड़की पर ओवरकोट पहनकर बैठ गया। शनिवार तथा रविवार का अधिकांश समय मैंने उसके पढ़ने में व्यतीत किया। अगले सप्ताह मैंने दूसरा भाग भी पढ़ डाला। मैंने नेपोलियन के विषय में इतनी अधिक बार सुना था जिससे मैं यह जानना चाहता था कि वह किस प्रकार का योद्धा था। नेपोलियन कैसा था, मेरे मन में इसका एक चित्र बन गया। मैंने चमड़े की एक पेटी अपनी कमर में बाँधी और उसमें एक तलवार बाँध ली जो मैंने लकड़ी काटकर बनाई थी। इस प्रकार सुसज्जित होकर मैं नेपोलियन की भाँति अपने सेनाध्यक्षों को आज्ञा देता हुआ तिमंजिले के कमरे से तहखाने और तहखाने से तिमंजिले के कमरे में जाता था।

छठीं कक्षा में कुमारी गौल्डक्विस्ट हमसे बार-बार "पढ़ने की आदत" डालने पर जोर देती थीं। वह कहती थीं, "जब तक तुम अनेक पुस्तकों को नहीं पढ़ लेते तब तक तुम नहीं जान सकते कि वे तुम्हारी कितनी महान् मित्र हो सकती हैं।" उनके प्रिय शब्दों में से एक शब्द "शिक्षा" था। वह कहती थीं कि हम कभी भी आवश्यकता से अधिक शिक्षा नहीं प्राप्त कर सकते। मैंने जेकब अबाट् और जान एस० सी० अबाट् द्वारा लिखे हुए अनेक इतिहास ग्रन्थ तथा जे० टी० हेडले द्वारा लिखे हुए "नेपोलियन एण्ड हिज मार्शल्स" और "वाशिंग्टन एण्ड हिज जनरल्स" नामक ग्रन्थ पढ़े। टामस डब्ल्य० नाक्स द्वारा लिखा हुआ "ब्वाय ट्रैवलर्स इन डिफरेन्ट कंट्रीज" कुछ शुष्क मालूम हुआ। वह हेजेकिया बटरवर्थ द्वारा लिखित "जिग-जैग जर्नीज ओवर दी वर्ल्ड" के ऐसा अच्छा नहीं था। जो समय मैं अपने पाठ याद करने से बचा सकता था उसमें मैं स्कूल से लाई हुई चैम्पलिन की "यंग फोक्स साइक्लोपिडिया आफ परसन्स एण्ड प्लेसेज" और "यंग फोक्स साइक्लोपिडिया आफ कामन थिंग्ज" के पन्ने उलटा करता था।

चार्ल्स कार्लटन काफिन द्वारा लिखी हुई अमेरिकन इतिहास ग्रन्थमाला सबसे अच्छी थी। "वायज आफ सेवंटी-सिक्स" पढ़कर मुझे ऐसा प्रतीत होने लगा कि यदि मैं भी जार्ज वाशिंग्टन के दिनों में बालक रहा होता तो बहुत अच्छा हुआ होता! मैं उनको घोड़े पर सवार देखता—एक अच्छे सवार जो आराम से और सीधे बैठे होते और फटे-पुराने कपड़े पहने हुए तथा छर्रे की बन्दूकें लिये हुए सिपाहियों के आगे-आगे चलते। मैं पाल रिवियर को घोड़े को तेज भगाता हुआ और फार्महाउसों पर रुककर यह चिल्लाता हुआ देख सकता था कि अँगरेज आ रहे हैं। मैं कनेक्टिकट के

किसान घुँघराले बालोंवाले बुड्ढे इस्रायल पुटनम को देख सकता था जैसा कि पुस्तक में उनका वर्णन है, "बुड्ढे पुट चिल्लाये वे इसे लें और हम लोगों ने अनेक रेड इंडियनों को झील में ढकेल दिया—कुछ दिन बाद——फ्रांसीसियों और इंडियन लोगों ने छिपकर हमारे ऊपर आक्रमण किया। हम लोग कूदकर पेड़ों के पीछे चले गये और चीतों की भाँति लड़े। पुटनम ने चार इंडियनों को गोली मार दी——एक फ्रांसीसी ने राजर की बन्दूक छीन ली और दूसरा उसको छुरा भोंकनेवाला था जब पुट ने बन्दूक चलाकर उसके सिर को तोड़ डाला।"

जनरल नैथेलीन ग्रीन से मेरी मुलाकात हुई और मैंने उनको लड़ते हुए देखा। जब घमासान युद्ध होने लगा तब वह अपने सिपाहियों के साथ युद्ध-स्थल से अलग हो गये और फिर जब विजय प्राप्त करने का ठीक समय आया तब वह वापस लौट आये। वह शोरगुल करते हुए युद्ध-क्षेत्र से अलग हो जाते थे फिर जब शत्रु उनके आने का सन्देह नहीं करता था, वह वापस आ जाते थे और या तो शत्रु को लुंज कर देते थे या उसका नाश कर डालते थे। मैंने ब्रिटेन के प्रधान मंत्री लार्ड नार्थ के विषय में पढ़ा जो युद्ध करा रहे थे। मैंने उस कमअक्ल की तसवीर देखी और एक दूसरे लड़के के साथ मैं सहमत था जिसने कहा था, "मैं उसकी आँतें काटकर निकाल सकता हूँ।"

मैं "व्वायज आफ सेवन्टी-सिक्स" को केवल उसके चित्रों के लिए पढ़ता रहा। जिस किसी व्यक्ति ने उन्हें खींचा था वह भी पुस्तक को उपयोगी तथा रोचक बनाने के लिए उतना ही महत्त्वपूर्ण था जितना लेखक। जो कुछ मुखपृष्ठ पर कहा गया था उस सबका चित्रण भी था।

"ओल्ड टाइम्स इन दी कालोनीज" जैसी पुस्तकों के लिए मैं श्री काफिन के प्रति कृतज्ञ था। उस पुस्तक को पढ़ते समय हम ठीक उन लोगों के बीच पहुँच जाते थे जो झोंपड़े और छोटी-छोटी कोठरियाँ बनाते थे, जंगल काटकर साफ करते थे, नई जमीन पर लकड़ी के हल चलाते थे और पेड़ों की जड़ों के चारों ओर जोतते थे। इसके साथ ही वह अपनी बंदूकों पर भी ध्यान रखते थे जो रेड इंडियन लोगों को मारने के लिए तैयार रक्खी रहती थीं। "दि स्टोरी आफ लिबर्टी" में उन्होंने यह बतलाने की चेष्टा की थी कि यूरोप में क्या हो रहा था जिससे लोग वहाँ से महासागर पार करके अमेरिका आये थे। हमने "अत्याचारियों और अत्याचार" तथा उन लोगों के विषय में ज्ञान प्राप्त किया जो धर्म के लिए हुए युद्धों में मारे गये थे।

जब मैं श्री काफिन द्वारा लिखित "दि ब्वायज आफ सिक्सटी वन" और गृह-युद्ध तथा दो या तीन पुस्तकें घर ले गया तब मुझे ज्ञात हुआ कि वे "ब्वायज आफ सेवंटी सिक्स" और उनकी पहले की किताबों की तुलना में शुष्क हैं। मैं यह नहीं समझ सकता था क्योंकि मैंने पढ़ा था कि गृह-युद्ध में श्री काफिन युद्ध-संवाददाता रह चुके थे, वह सेनाओं के साथ जाते थे और जब कुछ घमासान लड़ाइयाँ लड़ी गई थीं तब वह युद्ध-स्थल पर वर्तमान थे। जब वह ऐसे युद्ध के विषय में लिखते थे जिसको उन्होंने देखा था तब उनका वर्णन पढ़ने योग्य नहीं होता था। मैं इस पर देर तक और सावधानी से विचार करता था, "६१ का युद्ध, ७६ के युद्ध से बड़ा था और शायद इतना बड़ा था कि वह भली भाँति उसको समझ नहीं सके। या हो सकता है कि सेनाओं का अनुगमन करते-करते वह युद्ध से ऊब गये और उन्हें ऐसी अरुचि हो गई कि जब उन्होंने उसके विषय में लिखना

आरम्भ किया तो उन्होंने अपनी अरुचि को छिपाने का प्रयत्न किया परन्तु वह उनकी पुस्तक में प्रवेश कर गई यद्यपि वह इसे नहीं जानते थे।"

सबसे बद्धू लड़कों के सिवाय प्रत्येक बालक ने जेम्स आटिस की उन दो पुस्तकों को पढ़ा था जिनके नाम थे "टोबी टाइलर" और "टेन वीक्स विद ए सरकस" और "टिम एण्ड टिप; अ र दि ऐडवेन्चर्स आफ ए ब्वाय एण्ड ए डाग"। इनकी जो प्रतियाँ पुस्तकालय में थीं वे फटी-फुटी थीं; उनके पन्ने मुड़े थे और उन पर हाथ के अँगूठे और उँगलियों के चिह्न बने थे और कहीं-कहीं पेन्सिल से लिखा हुआ था "सुन्दर" या "शाबाश"।

उन दिनों की जासूसी कहानियों की किताबें प्रायः ओल्ड कैप कोलियर द्वारा लिखित होती थीं जो प्रति पुस्तक पाँच सेन्ट के हिसाब से बिकती थीं। हम लोग उसे स्कूल के कमरे में भूगोल की पुस्तक के पीछे रखकर पढ़ते थे और एक दूसरे से अदला-बदली कर लेते थे। परन्तु शीघ्र मैंने फिर "यंग फोक्स साइल्को पीडिया आफ परसन्स एण्ड प्लेसेंज" को पढ़ना आरम्भ कर दिया। उसके बाद मैंने "निक-कार्टर" और उसके पिछलग्गू 'चिक' को पढ़ा जो "ओल्ड कैप कोलियर" से अधिक रोचक थे। फिर एक समय आया जब मैंने निर्णय किया कि जासूसी कहानियों में प्रायः चालाकियाँ भरी होती हैं।

हम लोगों ने मार्क ट्वेन द्वारा लिखित "हक्लबरी फिन" और "टॉम साइयर" को पढ़ा। परन्तु उन्होंने हमें उतना प्रभावित नहीं किया जितना अन्य पुस्तकों ने किया था। ऐसा मालूम होता था कि वे बाद के समय के लिए हैं। यही दशा चार्ल्स डिकेन्स के उपन्यासों की थी।

स्कूल में हमने शरीर-रचना शास्त्र की पहली पुस्तक पढ़ी और तब एक या दो और पढ़ीं। हमने शराब के विषय में पढ़ा और देखा कि शराबी के आमाशय की क्या दशा होती है। किन्तु मुझे अपने पिता के आमाशय के विषय में चिन्ता नहीं थी क्योंकि नगर में शराब की जो एक दर्जन दूकानें थीं उनमें वह कभी भी नहीं जाते थे। जब जाड़े की ठंडी रात को वह शुद्ध अनाज की एक पिण्टवाली बोतल उतारते थे और काली काफी के प्याले में एक या दो चम्मच उँडेलते थे तब हम जानते थे कि उस जाड़े में वह बोतल समाप्त हो जायगी और फिर अगले जाड़े के पहले दूसरी बोतल नहीं आयगी। हम जानते थे कि फ्रैन्स लोग, होम्ज लोग और स्वीडिश ल्यूथरन लोग सब प्रकार की शराब से दूर रहते हैं। शायद वे ऐसा केवल इसलिए करते हैं कि जो धन उस पर नष्ट किया जायगा वह उन चीजों पर खर्च किया जा सकता है जिसे वे लोग और अधिक पसन्द करते थे।

वह दिन आया जब मैं एक भाषण प्रतियोगिता में सम्मिलित हुआ। उसमें मुझे शराब की बुराइयों के विरुद्ध बोलना था। बेरि-यन स्ट्रीट से दो भवन समूह दक्षिण सेमिनरी में एक अपराह्न रवि-वार स्कूल था जिसका नाम "मिशन" था। उसमें बेरियन स्ट्रीट और अन्य मोहल्लों से लगभग एक सौ लड़के और लड़कियाँ एकत्र हुईं। फ्रेम पर बनी हुई इमारत बादामी रंग से पुती हुई थी परन्तु पुताई उचड़ रही थी। वह क्यू० मशीनों की दूकान के सामने सड़क के पार क्यू० की प्योरिया शाखा के निकट स्थित थी। इसमें स्कूल पतझड़ और जाड़े में लगा करता था। इसके अध्यापक अधिकतर नाक्स कालेज के विद्यार्थी थे। मिशन में हमारा समय आनन्द से बीतता था। मिशन की जूनियर एपवर्थ लीग के सदस्य की हैसियत

से मैं एक बार प्रतिनिधि होकर मनमथ की सभा में गया था। मन-मथ गेल्सबर्ग से १६ मील पर है। मैंने पहले कभी घर से इतनी दूर की यात्रा नहीं की थी। वहाँ हम लोगों ने मनोरंजन की व्यवस्था की थी। तीन-चार बार प्रोग्राम का रिहर्सल करने के पश्चात् हम लोगों ने एक दिन शाम को वयस्क लोगों तथा बच्चों को आमन्त्रित किया। एक बार मैंने चार की एक टोली में गाना गाया और एक बार एक एकांकी नाटक में भिक्षुक का पार्ट किया।

परन्तु डिमोरेस्ट सिलवर मेडल प्रतियोगिता ही एक ऐसी प्रतियोगिता थी जिसमें हम सबने मिशन में गुनगुनाया था। श्री डिमोरेस्ट पूर्वी भाग के धनी पुरुष थे। उन्होंने एक पत्रिका निकाल-कर धन कमाया था जिसमें वह स्त्रियों के लिए पोशाक के विषय में नये-नये विचार और नमूने प्रकाशित करते थे। वह शराब से बिल-कुल परहेज करते थे। उन्होंने स्वयं कभी एक बूँद शराब नहीं पी थी और वह चाहते थे कि अमेरिका में शराब की प्रत्येक दूकान बंद हो जाय। इसलिए उन्होंने डिमोरेस्ट मेडल प्रतियोगिताएँ चलाई थीं। जिनमें किसी स्कूल या पड़ोस के बालक शराब के विरोध में भाषण सुना सकते थे। श्री डिमोरेस्ट ने हममें से प्रत्येक के पास एक पुस्तक भेजी थी जिसमें से प्रतियोगिता में बोलने के लिए हम कोई खंड चुन सकते थे। मैंने पुस्तक से सबसे छोटा खंड चुना और उसकी अन्तिम पंक्ति थी : "संसार प्रगतिशील है !" मैंने उसे कहने की कई विधियों का अभ्यास किया था और यह निर्णय नहीं कर पाता था कि उसको धीरे-धीरे कहूँ या तेजी और भयानकता के साथ जैसे अँधेरे में गोली छोड़ी जाती है।

यह सब बहुत उत्साहवर्धक था, क्योंकि जो कोई हमारी प्रतियोगिता में रजत-पदक जीतता वह रजत-पदक के दूसरे विजे-

ताओं क साथ दूसरी प्रतियोगिता में भाग लेता। तब जो कोई उस प्रतियोगिता में विजयी होता वह स्वर्ण-पदक पाता। तब स्वर्ण-पदक विजेताओं में हीरक-पदक के लिए दूसरी प्रतियोगिता होती। हम इसके विषय में बातें करते थे और सबकी सम्मति थी कि यदि हममें से कोई हीरक-पदक प्राप्त करेगा तो वह काफी उच्च सम्मान की बात होगी और हम संतुष्ट होंगे।

प्रतियोगिता की वह रात आई और मिशन में इतनी भीड़ हुई जितनी पहले कभी नहीं हुई थी। हम लोग प्लैटफार्म पर एक पंक्ति में बैठे थे। हम श्रोतागण को देख रहे थे और श्रोतागण हमको देख रहे थे। हम लोगों ने उनमें कुछ परिचित चेहरों को देखा और उन लोगों ने हममें से कुछ को पहचाना। वे मुस्कराये परन्तु हमने मुस्कराने की चेष्टा नहीं की। जब आप रजत-पदक के लिए भाषण देने वाले हों तब आप नहीं मुस्कराते। कम से कम हम यह सोचते थे कि आपसे मुस्कराने की आशा नहीं की जाती।

एक एक करके चार बालक खड़े हुए और चार बालिकाएँ और प्रत्येक ने अपनी वक्तृता सुनाई। प्रोग्राम के लगभग बीच में मेरा नाम पुकारा गया। मैं प्लेटफार्म के बीच में गया। मुझे हर्ष था कि मुझे जो कुछ कंठस्थ करना पड़ा है वह दूसरे बालकों की वक्तृता के केवल आधे के बराबर है। मैंने अपने प्रारम्भिक वाक्यों को सुनाया। मैं नहीं जानता था कि वे श्रोता लोगों को कैसे लगते हैं। वक्तृता के बीच में मुझे रुक जाना पड़ा। मुझे स्मरण नहीं था कि उसके बाद क्या है। मैंने चेष्टा की और जो कुछ मैं चाहता था उसे किसी प्रकार कहा। अन्त में जाकर मैंने ऐसी भयानकता और तेजी से कहा "संसार प्रगतिशील है" जैसे अँधेरे में गोली छोड़ी गई हो

और मैंने देखा कि गम्भीरतापूर्वक बैठनेवालों की अपेक्षा अधिकांश लोग हँस रहे हैं।

निर्णायक का यह निर्णय सुनने के लिए कि कौन विजेता है, हमें देर तक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी। मैं जानता था कि प्रोग्राम में भाग लेनेवाले अन्य बालकों और बालिकाओं से मेरा भाषण थोड़ा खराब हुआ है और मुझे आशा नहीं थी कि जो कोई पारितोषिक प्राप्त करेगा उसके विषय में मुझे उत्साह या गर्व होगा। परन्तु जब एक निर्णायक ने खड़े होकर हमें बतलाया कि किसने विजय प्राप्त की है तब मुझे बहुत उत्साह और गर्व हुआ। निर्णायक कह रहे थे, "यह घोषणा करते हुए हमें अत्यन्त आनन्द हो रहा है कि डिमोरेस्ट रजत-पदक की विजेता कुमारी मेरी सैन्डबर्ग हैं।"

"होस्टेटर्स इलसट्रेटेड यूनाइटेड स्टेट्स आल्मनैक" एक पुस्तक थी जो प्रति वर्ष हमें साल के प्रथम दिन दी जाती थी और हमारे पास तब तक रहती थी जब तक वह खो नहीं जाती थी। आधी जंत्री होस्टेटर्स स्टमक बिटर्स के लिए अच्छे-अच्छे प्रमाण-पत्रों से भरी रहती थी। इस विषय में भी सलाह लिखी रहती थी कि कैसे मस्सों, गोखरू और फोड़ों से छुटकारा पाया जा सकता है, कैसे फूली हुई उँगली में से अँगूठी निकाली जा सकती है, और पैर में यदि जंग लगी हुई कील धँस जाय या और कोई कष्ट हो तो क्या करना चाहिए। पाँच पृष्ठों पर विचित्र-विचित्र चित्र खिंचे होते थे और उनके नीचे मजाक लिखे रहते थे। हम लोग होस्टेटर्स जंत्री को रसोईघर में जोर से पढ़ते थे और मजाकों तथा उन "बुद्धिमत्ता-पूर्ण उक्तियों" के विषय में बातें करते थे।

जब मेरी, मार्ट और मैं उस भीड़-भाड़वाले रसोईघर में होस्टे-टर्स जंत्री पढ़कर एक दूसरे को सुनाते थे तब हम यह नहीं जानते थे

कि मनोरंजन के साथ-साथ हमारी शिक्षा भी हो रही है। उसमें सब प्रकार के तथ्य भरे हुए थे जो हमारे लिए नये और रोचक थे––साल के प्रत्येक मास में प्रातःकाल और संध्याकाल दिखाई देनेवाले तारे, समुद्र के ज्वार-भाटे, पृथ्वी की चाल और ग्रहण आदि के विषय में हम लोग सीखने के लिए भूखे थे।

प्रथम जीवन-चरित्र जो मुझे मिला वह ऐसे आकार का था कि मैं उसे अपने वेस्टकोट की जेब में रख सकता था। जब मैं सेवन्थ वार्ड स्कूल जा रहा था तब वह मुझे सड़क की पटरी पर मिला था। उस पर वर्षा हुई थी, मैंने उस पर से गर्द पोंछ डाली और जहाँ पर ऊपरी कोना मुड़ गया था उसको सीधा कर दिया। बाद में जब मैंने उसे नापा तो वह पौने तीन इंच लम्बा और $1\frac{1}{2}$ इंच चौड़ा था। उसका "फ्रंट कवर" "ग्लास" कागज का बना था। उस पर दो सितारेवाले जनरल के सिर और कंधों का चित्र बना था। वह संघ की भूरी वर्दी पहने था। उस पुस्तक का शीर्षक था "जनरल पी० टी० बोरिगार्ड का संक्षिप्त इतिहास।"

उसमें छोटे-छोटे टाइप में छपे हुए पढ़ने के तेरह पृष्ठ थे। पिछले "कवर" के भीतर "सीरीज आफ स्माल बुक्स" की एक सूची थी––गृह-युद्ध के पचास जनरलों का इतिहास और एक नोटिस थी जिसमें कहा गया था कि अन्य ग्रन्थमालाएँ तैयार की जा रही हैं। उससे मैंने सीखा कि यह किताबें कैसे प्राप्त की जा सकती हैं। उसमें लिखा था "ड्यूक्स सिगरेट्स में बन्द।"

यद्यपि यह इतिहास की पुस्तकें अच्छी थीं तथापि उनसे अपने वेस्टकोट की जेबों को भरने के लिए मैं दस सेन्ट मूल्यवाले "ड्यूक्स कैमियों" या "ड्यूक्स क्रास-कट सिगरेट" नहीं खरीद सकता था। हम बालकों में सिगरेट बदनाम था, हमारा विश्वास था कि केवल

छैले और मूर्ख सिगरेट पीते हैं। शरीर रचना-शास्त्र की हमारी किताबों ने हमें सचेत कर दिया था कि तम्बाकू में निकोटीन होता है और निकोटीन एक विष है; और सिगरेट के साथ हम विष को सीधे अपने फेफड़ों में ले जाते हैं। इससे क्षय रोग हो सकता था या कम से कम यह हमारी साँस को कमजोर कर सकता था और हमारी दौड़ने या गेंद खेलने की शक्ति को कम कर सकता था। जब हम पाँच सेंट के पाँच वर्जिनिया चुरुट या पाँच सेंट के दस छोटे सिगरेट खरीदकर पीते थे तब हम मानो तगड़े मनुष्यों की तरह यह जाँच करने को तैयार होते थे कि वास्तविक तम्बाकू हमें क्या हानि पहुँचा सकती है।

मैंने चारों तरफ ध्यान से देखा और मुझे तीन मनुष्य मालूम हुए जो यदा-कदा परिवर्तन के लिए "ड्यूक्स सिगरेट" पीते थे। उनमें से एक स्वयं अपने लिए पुस्तकें बचाकर रख लेता था। शेष दो ने उन्हें मेरे लिए रखना आरम्भ किया। कुछ समय के उपरान्त मेरे पास बोरिगार्ड, कारनिलियस, बैंडरबिल्ट, और सराहबर्नहार्ट, टी० डी० विट टामेज का जीवन, और जार्ज पीबाडी, जेम्स बी० ईड्स, होरेस बी० क्लैफ्लिन और राबर्ट इंगरसोल के जीवन एकत्र हो गये। बाद में पुस्तकों के शीर्षक में "इतिहास" के स्थान में "जीवन" शब्द का प्रयोग होने लगा था।

सूची में मैंने "मानीटर" के आविष्कारक स्वीड जान इरिक्सन का नाम देखा जिसने युद्ध जीतने में उत्तरी राज्यों की सहायता की थी। मैंने प्रयत्न किया पर इरिक्सन के जीवन की एक प्रति न प्राप्त कर सका। एक दिन एक स्वीड बालक ने उसकी एक प्रति अपने वेस्टकोट की जेब से निकाली और मेरी तरफ देखकर मुस्क-राया। वह जानता था कि मैं उस पुस्तक को चाहता हूँ। मैंने उसके

लिए उसको एक पेन देने को कहा और बढ़ते-बढ़ते पाँच सेंट तक गया पर उसने अपना सिर हिलाकर मना कर दिया। तब उसने उसको मुझे उधार दिया और मैंने उसे अपनी सराहबर्नहार्ट उधार दी। उसने सुन रक्खा था कि सराह अपने सोने के कमरे में एक जनाजा रखती थी और आराम करने के लिए उस पर लेटना पसन्द करती थी। मैंने उसे पुस्तक में वह स्थान दिखाया जहाँ इस बात का वर्णन था। "बहुत अच्छा!" उस स्वीड लड़के ने कहा "मैं इस किताब को अवश्य पढ़ना चाहता हूँ।" मैंने उससे प्रस्ताव किया कि अपनी जान इरिक्सन मेरी सराहबर्नहार्ट से बदल लो। उसने कहा, "हो सकता है" और दूसरे दिन उसने मुझसे कहा कि मैंने इस विषय में अपने स्वीड माता-पिता से बातें की थीं परन्तु उन्होंने उत्तर दिया, "नहीं, तुम अपनी जान इरिक्सन को अपने पास रक्खो।"

इस प्रकार मेरे पास वेस्टकोट पाकेट में आनेवाले इतिहासों और जीवन-चरित्रों का पुस्तकालय हो गया। किसी-किसी दिन मैं आठ पुस्तकें लेकर जाता था—चार वेस्टकोट की दाहनी तरफ के ऊपरी पाकेट में और चार बाइ तरफ के ऊपरी पाकेट में। मेरे पास यह ऐसी पुस्तकें थीं जिन्हें मुझे सेवंथ वार्ड स्कूल के पुस्तकालय या पबलिक लाइब्रेरी में नहीं लौटाना था। मैं इन पुस्तकों का स्वामी था।

ग्रीष्म ऋतु के एक स्वच्छ सोमवार को प्रातःकाल माँ तहखाने में धुलाई कर रही थीं। भीतर जाकर मैंने देखा कि सुन्दर वस्त्र-धारी एक पुरुष उनसे बातें कर रहे हैं। धुलाई बन्द करके वह उसकी बातें सुन रही थीं। वह उन्हें एक पुस्तक का नमूना दिखा रहे थे। जिसके "कवर" और नमूने के पृष्ठ वहाँ थे। असली पुस्तक

उसकी पाँच गुनी बड़ी थी। माँ का चेहरा और आँखें चमक रही थीं। वह कह रहा था कि शिक्षा महत्त्वपूर्ण है। और हम शिक्षा कैसे प्राप्त करते हैं? पुस्तकों के द्वारा, अच्छे प्रकार की पुस्तकों के द्वारा। आपके सम्मुख यह साइक्लोपीडिया आफ इम्पार्टेन्ट फैक्ट्स आफ दी वर्ल्ड (विश्वकोष) है और बच्चे इसको बिना पढ़े नहीं रहेंगे। जब आपके बच्चे संसार में प्रवेश करेंगे तो इसका ज्ञान उनके लिए बहुत महत्त्वपूर्ण होगा। "जितना अधिक वे सीखेंगे उतना ही अधिक वे कमायेंगे।"

माँ इस समय तक कुछ गड़बड़ा सी गई थीं। शिक्षा और ज्ञान के विषय में वह मनुष्य उन्हीं के विचारों को प्रकट कर रहा था। यदि उसके स्थान में पिताजी होते तो वह मुँह सिकोड़ते और सिर हिलाते। माँ उन विचारों में अत्यधिक रुचि ले रही थीं। उन्होंने नमूना ले लिया और उसके पृष्ठों को पलटा। उन्होंने मेरे चेहरे को देखा। क्या मैं पुस्तक को लेना चाहूँगा? मैंने कई प्रकार से "हाँ" कहा। उन्होंने अपना हस्ताक्षर कर दिया और जब दस दिन बाद वह आदमी पुस्तक लेकर आया तब उनके पास वांछित पचहत्तर सेंट तैयार थे।

पिताजी इस साइक्लोपीडिया के विषय में भुनभुनाते थे और कहते थे कि यह धन का अपव्यय है। बच्चों को स्कूलों में शिक्षा प्राप्त करना चाहिए। असली उपद्रव उन्होंने बाद में किया। इस बार भी मैं उपस्थित था जब किताब का एजेण्ट आया था। यह वही व्यक्ति नहीं था। परन्तु पहले मनुष्य की ही भाँति अच्छे वस्त्र पहने था और शिष्ट तथा वाक्पटु था। इसकी पुस्तक साइक्लोपीडिया से तिगुनी बड़ी थी—पृष्ठ बड़े थे, प्रत्येक पृष्ठ में दो स्तम्भ थे और अनेक चित्र थे। उसका नाम था "ए हिस्टरो आफ द वर्ल्ड

एण्ड इट्स ग्रेट इवेण्ट्स" जिसमें सब कालों के युद्धों पर विशेष ध्यान दिया गया था। माँ पहले की भाँति बहुत आशापूर्ण नहीं थीं। उन्हें यह निश्चय नहीं था कि पुस्तक खरीदी जाय या नहीं। परन्तु मुझे दृढ़ विश्वास था कि मैं इस पुस्तक को पसन्द करूँगा। माँ ने फिर हस्ताक्षर कर दिया। इस बार पुस्तक का दाम डेढ़ डालर था जो मेरे पिता क एक दिन के वेतन से अधिक था। परन्तु जब दो सप्ताह बाद पुस्तक आई तब माँ के पास रुपया तैयार था।

जब पिता ने पुस्तक देखी और उसका दाम सुना तब उन्होंने जो कांड खड़ा किया, मैं उसका वर्णन नहीं करूँगा। उन्होंने कहा कि हम लोग नाक्सविल पुअरहाउस की दिशा में जा रहे हैं। यदि फिर ऐसी घटना घटित हुई तब मैं नहीं जानता कि मैं क्या करूँगा। इसका परिणाम यह हुआ कि माँ ने पुस्तकों के एजेण्टों की बातें सुनना बंद कर दिया।

माँ भविष्य के विषय में स्वप्न देखती थीं और बड़ी आशा रखती थीं। जब मैं सिर झुकाकर "ए हिस्टरी आफ द वर्ल्ड एण्ड इट्स ग्रेट इवेण्ट्स" को पढ़ता था तब वह प्रकाशपूर्ण मुख से कहती थीं, "हम आशा करते हैं कि इसका परिणाम बहुत अच्छा होगा।" पिताजी मेरे पास खड़े होकर कहते थे, "शोली, इस पुस्तक से क्या लाभ होगा?" और मेरे पास कोई उत्तर नहीं होता था। मैं उनका ऐसा कहना पसन्द नहीं करता था परन्तु मुझे इस बात का भी कुछ अस्पष्ट ज्ञान था कि वह उन रेहन और गिरवियों के विषय में सोचते थे जिनके लिए उन्हें रुपया चुकता करना था।

जब मैंने सेवंथ वार्ड स्कूल की पढ़ाई समाप्त की तब मुझे ऐसा ज्ञात होता था कि मैं बढ़ रहा हूँ और अर्द्धविकसित मनुष्य हो गया हूँ। नगर में एक मील चलकर ग्रामर स्कूल जाना और फिर एक

मील चलकर घर वापस लौटना मेरे लिए एक परिवर्तन था। नगर के प्रत्येक कोने से विद्यार्थी ग्रामर स्कूल में आते थे। मुझे कई नये चेहरे देखने को मिलते थे; वहाँ धनी परिवारों के और अधिक लड़के और लड़कियाँ पढ़ने के लिए आते थे।

ग्रामर स्कूल पबलिक स्क्वायर से थोड़ी दूर पर था। उनके बीच में ओल्ड फर्स्ट चर्च स्थित था जिसे चालीस वर्ष से अधिक पहले प्रथम औपनिवेशिकों ने बनवाया था। ग्रामर स्कूल के ठीक सामने सड़क के पार हेनरी आर० सैण्डरसन का दोमंजिला मकान था। उनकी लम्बी सफेद दाढ़ी थी और उनका चेहरा शान्त था। जब १८५८ में लिंकन डगलस के साथ वाद-विवाद करने के लिए आये थे तब वह गेल्सबर्ग के मेयर थे। हमने सुना था कि वह अब्राहम लिंकन को अतिथि के रूप में अपने घर लिवा गये थे और लिंकन को स्नान करने में तौलिया और गर्म पानी देकर सहायता पहुँचाई थी।

जब मैं आठवीं कक्षा में था तब कुमारी फ्रैन्सेज (फैनी) हेग मुझे वास्तव में एक महती अध्यापिका मिलीं। वह किताबों को जानती थीं और उनसे प्रेम करती थीं चाहे वह उन्हें पढ़ाती हों या न पढ़ाती हों। उन्होंने यूरोप की यात्रा की थी और वहाँ के नगरों और खंडहरों का वह हमसे सजीव वर्णन कर सकती थीं। उनके अध्यापन में मेरे लिए सबसे महत्त्वपूर्ण पुस्तक "एब्रीफ हिस्टरी आफ द यूनाइटेड स्टेट्स" थी। मुखपृष्ठ से यह नहीं ज्ञात होता था कि किसने लिखा है। मेरे लिए वह पहली पुस्तक थी जिसमें हमारे देश की कहानी का वर्णन था। उसमें आरम्भकालीन इंडियन्स से लेकर राष्ट्रपति ग्राण्ट के समय से आगे तक का इतिहास प्राप्त होता था। उसकी शैली क्लिष्ट थी तथा उसमें बड़े-

बड़े शब्दों का प्रयोग हुआ था तथापि उससे मैंने अमरीका की कहानी को नये प्रकाश में देखा। कुमारी हेग इतिहास भी जानती थीं और प्रायः उसके अनुच्छेदों को सजीवता तथा सार्थकता भी प्रदान करती थीं।

जब मैं कुमारी हेग के कमरे के बाहर निकल आया तब भी मेरा मन बार-बार उसमें जाया करता था। मैं निश्चित रूप से नहीं जानता था कि "शिक्षा" किसे कहते हैं परन्तु मुझे निश्चय था कि उनके अध्यापन से मुझे थोड़ी शिक्षा प्राप्त हुई है। तब से बहुत वर्षों बाद तक जो कुछ शिक्षा मुझे मिली वह स्कूलों के बाहर पुस्तकें, समाचार-पत्र और पत्रिकाएँ पढ़ने, अनेक प्रकार के लोगों को देखने और उनकी बातें तथा कामों के विषय में सुनने से मिली।
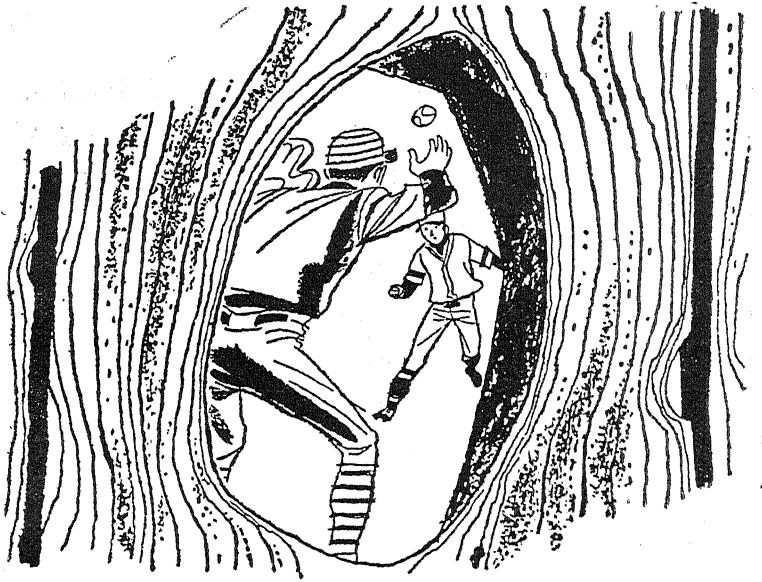
पाँचवाँ परिच्छेद

खेल-कूद के दिन

बेरियन स्ट्रीट की काठ की पटरियों पर हम एक प्रकार का "मम्ब्ल-पेग" खेलते थे और सामनेवाले आँगन की घास पर या पटरी और नाली के बीच की घास पर हम अधिक जटिल और मनोरंजक खेल खेलते थे जैसे "जम्प-दि-फेन्स", "थ्रेड-दी-नीडल" "प्लाउ-फार्टी-एकर्स" और "प्लाउ-एइटी-एकर्स" आदि। लकड़ी की पटरियों पर हम लट्टू नचाते थे, हाथ के अँगूठे से कटहल के बीज उछालते थे और खड़िया से "टिट-टैट-टो" खेलते थे। सड़क पर हम बेसबाल, टू-ओल्ड-कैट, चूज़-अप, और नाकिंग-अप-फ्लाइज़ नामक खेल खेलते थे। हाकी में हम किसी प्रकार के डंडे से टिन का कनस्तर या लकड़ी की गेंद को गोल की तरफ मार सकते हैं। यद्यपि जिसका

डंडा सिरे पर झुका हुआ होता है वह औरों की अपेक्षा अधिक अच्छी तरह खेल सकता है। हम लोग "डक-आन-ए-राक" खेलते थे। एक बड़ी गोली को छोटी गोली से मारते थे, फिर अपनी-अपनी गोली को पकड़ने के लिए दौड़ते थे और प्रयत्न करते थे कि हमें कोई छूने न पावे और हम बीच की रेखा पर पहुँच जायें।

जब हम लोग नाक्स या लोम्बार्ड के मैदान में खेल-कूद का आरम्भ-दिवस देख लेते थे तब हम लोग बेरियन स्ट्रीट की गर्मी की धूल में नंगे पाँव अपने खेल-कूद के टूर्नामेंट आरम्भ करते थे। साधारणतया ढाई डालरवाली वाटरबेरी घड़ी लेकर कोई लड़का समय देखता था जब हम पचास या सौ गज की दौड़ दौड़ते थे। हम लोग कालेज के दौड़नेवालों से कुछ सेकंड धीमे होते थे और संसार के रेकार्ड से पाँच या छः सेकंड पीछे रहते थे। हम जानते थे कि खड़े होकर लम्बी कूद कूदने में दौड़कर लम्बी कूद कूदने में हाफ-स्किप-एण्ड-ए-स्टेप में, तथा खड़े होकर ऊँची कूद और दौड़कर ऊँची कूद कूदने में हम लोग कालेज रेकार्ड के बहुत निकट पहुँच जाते हैं। जो कोई सिरे पर मुड़ा हुआ छड़ सबसे दूर फेंक सकता था वह "शाटपट" का चैम्पियन माना जाता था। "पोलवाल्ट" के सिवाय हम उन सब खेलों को खेलते थे जिन्हें कालेज के खिलाड़ी खेलते थे। एक मील की दौड़ हम तीसरे पहर दौड़ते थे। इसमें हम कुछ अपने रेकार्डों को छोड़कर कोई और रेकार्ड नहीं तोड़ते थे, यथापि हम अपने को यह सोचकर सान्त्वना देते थे कि यदि हमें एक बार साँस लेने का मौका मिल जाय तब हम एक मील की दौड़ समाप्त कर लें।

हमारे मकान से लगे हुए पूर्व तरफवाले घर के सामने सड़क के उस पार एक औसत दर्जे का दोमंजिला मकान था जो फ्रेम

पर बना हुआ था और जिसके सामने एक बरसाती थी। जब हम बेसबाल खेलते थे तब इस घर के सामने हमारा "होम-बेस" होता था। प्रायः हम उस बरसाती पर एक हिलनेवाली कुर्सी में एक वृद्धा महिला को देखते थे जिनके बाल वृद्धावस्था के कारण दुग्ध-श्वेत हो गये थे। उनका अतीत काफी उज्ज्वल रह चुका था। यद्यपि वह चकाचौंध करनेवाला नहीं था। यदि उनकी इच्छा होती तो वे ख्यात हो सकती थीं; जो लाखों लड़के मैक गफी और अन्य स्कूल रीडरों को पढ़ते थे वह उनके नाम से परिचित थे और उन्होंने उनकी लिखी हुई कविताओं को कंठाग्र किया था। उनके जीवन-काल में अँगरेजी की कोई ऐसी छोटी कविता नहीं थी जिसका इतना अधिक प्रचार रहा हो, ख्याति रही हो या जिसकी इतनी आवृत्ति होती रही हो जितनी उनकी "छोटी चीजें" शीर्षकवाली निम्नांकित कविता की होती थीं :—

जल की छोटी बूँदें,
बालू के छोटे कण,
इनसे बनता विशाल सागर
और महान् धरातल।
दयापूर्ण लघु कर्म
स्नेहपूर्ण लघु शब्द;
ये करते पृथ्वीतल सुखपूर्ण
जैसे ऊपर स्वर्ग।

उनका नाम जूलिया कार्ने था। उनके पुत्र फ्लेचर और जेम्स सब प्राणियों के मोक्ष में विश्वास करनेवाले थे और लोम्बार्ड के स्नातक थे। फ्लेचर तीन या चार बार गेल्सबर्ग के मेयर रह चुके थे। अपने अतीत पर शान्तिपूर्वक विचार करती हुई वह

बैठी रहती थीं। कभी-कभी वह कुर्सी पर धीरे-धीरे हिलती थीं। वह शान्ति और सुख की प्रतिमा प्रतीत होती थीं। जब हम लड़के जोर से चिल्लाते थे "अब उसे जोर से नाक पर मारो!" "वह गुब्बारे को नहीं मार सकता था!" "मैक गिण्टी नीचे समुद्र के पेंदे तक पहुँचा।" तो यह देखने के लिए कि हम क्या कर रहे हैं, उन्होंने शायद ही अपना सिर घुमाया हो। हमारे लिए वह एक अच्छी वृद्धा स्त्री थीं जो लड़कों के खेल में बाधा नहीं डालना चाहती थीं। स्कूल में हमें उनके विषय में सुनना चाहिए था। समाचार-पत्रों में हमें उनके विषय में छोटे-छोटे लेख पढ़ना चाहिए था। अमरीकी साहित्य के इतिहास में उनके लिए एक छोटा, विशेष स्थान सुरक्षित है जिसके नीचे एक पंक्ति लिखी जा सकती है—"वह बच्चों से प्रेम करती थीं और ऐसी कविताएँ लिखती थीं जिनके लिए उन्हें आशा थी कि बच्चे उनसे प्रेम करेंगे।"

प्रारम्भिक वर्षों में अँधेरा होने से पहले सड़क पर बत्ती जलानेवाला आता था तब हम उसके पीछे-पीछे चलते थे। उसके पास एक छोटी सीढ़ी थी जिसे वह बत्ती के खम्भे पर लगा देता और हम उसे उस पर चढ़ते हुए देखते थे। तब वह शीशे के उस "केस" के दरवाजे को खोलता था जिसमें एक गैसबर्नर रहता था, गैस को खोलकर निकलती हुई गैस को वह जलती हुई मोमबत्ती से जला देता था। तब नीचे उतरकर वह एक भवन-समूह पूर्व पर्ल और बेरियन के कोने से डे और बेरियन के कोने को जाता था। इसके पश्चात् बिजली की बत्तियों का आगमन हुआ। हर दूसरे कोने पर एक बड़ा लैम्प जलता था। वह चौरस्ते के बीचोंबीच होता था। वह इतना ऊँचा होता था कि घास का बोझ गाड़ी पर ले जानेवाला मनुष्य भी उसे

नहीं छू सकता था। बत्ती जलानेवाला अब नहीं आता था। हम लोगों को उसके न आने पर खेद था।

थोड़े ही दिनों में बेरियन स्ट्रीट में रहनेवाले माताओं और पिताओं को अपने पुत्रों के कारण एक नया कष्ट भोगना पड़ा। डे और बेरियन के कोने पर जो बिजली बत्ती थी उसके नीचे लड़कों ने खेल का एक नया मैदान बनाया। वह रात को दिन में परिवर्तित कर सकते थे। वहाँ पर रात को बेसबाल, हाकी, रस्साकशी और डक-आन-एराक होने लगा। जो लोग जीतते थे वह विजय के कारण चिल्लाते थे। पराजित लोग भी यह कहकर चिल्लाते थे कि अगली बार हम लोग विजेताओं को पराजित कर देंगे। जिन कमरों में क्यू० दूकान में ईमानदार काम करनेवाले, रेलवे के योग्य फायरमेन और ब्रेकमेन थोड़ा सोने की चेष्टा कर रहे थे उनमें खिड़कियों से होकर जोर से की गई टीका-टिप्पणियाँ और शोरगुल पहुँचता था।

सोने की चेष्टा करनेवालों में एक को नींद नहीं आ सकी। एक रात को वह बड़ी लीग के अम्पायर की तरह आवाज से अपने शयनागार की खिड़की से बोला, "लड़को, तुम लोग अब शान्त हो जाओ और अपने-अपने घर जाओ। यदि तुम लोग ऐसा न करोगे तो मैं पुलिस को बुलाकर तुम लोगों को गिरफ्तार करा दूँगा।" शोरगुल बन्द हो गया। हम लोग पटरी के निकट घास पर पल्थी मारकर बैठ गये और कानाफूसी करने लगे, "क्या तुम समझते हो वह सचमुच ऐसा करेगा?" "ओह! हमें चिल्लाने का अधिकार है। यह स्वतंत्र देश है।" "आह, परन्तु यदि वह सचमुच ऐसा करना चाहता हो तो क्या होगा? हम दौड़कर भीतर चले जायेंगे।" "आह, मैं नहीं चाहता कि पुलिस मुझे पकड़-

कर पेट्रोल-वैगन में बिठा ले जाय।" इसी समय के लगभग अपने लड़के को खोजती हुई एक स्त्री आई। वह उसका एक कान पकड़कर उसे लिवा ले गई। लड़के का चेहरा भेड़ों जैसा भयभीत दिखाई पड़ता था तब दो आदमी आये जो दो लड़कों के पिता थे। उन्होंने अपने लड़कों को पहचान लिया और उनका कालर पकड़कर उन्हें इस प्रकार लिवा ले गये जैसे मारने के लिए भेड़ ले जाई जाती है। मार्ट और मैं घर गये। यदि हम लोग नौ बजे तक घर नहीं जाते थे तो हम पर डाँट पड़ती थी और कभी कभी इससे भी बुरा होता था।

बादवाली एक रात को लड़के अपने आपको भूल गये और ऐसा शोर मचाया जो एक भवन-समूह के अन्त तक सुनाई पड़ता था। तब मनुष्य ने जैसी प्रतिज्ञा की थी, पुलिस का पेट्रोल-वैगन आया। उसके रुकने के पहले ही पाँच या छः लड़के भाग गये। इसके बाद हम पाँच-छः लड़के बच गये जो भागकर यह नहीं दिखाना चाहते थे कि हम भयभीत हैं। हम लोग इकट्ठे दुबककर खड़े हो गये और प्रतीक्षा करने लगे। पेट्रोल-वैगन में से पुलिस के दो सिपाही निकले। गिलट की पालिश किये हुए तारे उनकी कोटों पर चमक रहे थे। उनमें से एक फ्रैंक पीटरसन था जिसका वजन लगभग दो सौ बीस पौंड था और जो हमारी तरफ आते हुए एक युद्ध-पोत की तरह दिखाई पड़ता था। पुलिस के सिपाही पीटरसन से हम कठोर शब्द सुनने की आशा करते थे। परन्तु वह बहुत हलके-हलके बोला मानो जो कुछ वह कह रहा था वह कोई भेद की बात हो। "लड़को! क्या तुम लोग नहीं जानते कि तुम लोग उन लोगों की नींद में बाधा डाल रहे हो जो सोने की चेष्टा कर रहे हैं?" हम लोग ऐसे शान्त, बुद्धिमत्तापूर्ण

प्रश्न के विषय में क्या कह सकते थे? एक लड़के ने कहा, "हाँ" दूसरे ने कहा, "आप जानते हैं, हम कुछ खेल करने की चेष्टा कर रहे थे।" फिर शान्त और विश्वसनीय ढंग से पीटरसन ने कहा, "हाँ, ठीक है, परन्तु क्या तुम्हारे खेलने का और कोई ढंग नहीं हो सकता जिससे उन लोगों को जगना न पड़े जो सोने की चेष्टा कर रहे हैं?" हम लोग पुलिस के सिपाही पीटरसन को पसन्द करने लगे थे। हम लोगों ने समझ लिया कि वह हम लोगों के ऊपर क्रोधान्ध नहीं है और ऐसा मालूम होता था कि वह हम लोगों को वैगन में रखकर कारागार नहीं ले जायगा। हमने कहा, "हाँ, हम लोग चेष्टा करेंगे कि बिना इतना शोरगुल मचाये हुए खेलें।"

वहाँ से जाने के पहले पीटरसन ने कहा, "लड़को! देखो यह एक प्रतिज्ञा है और मैं आशा करता हूँ कि तुम लोग इसे पूरी करोगे। यदि तुम लोग शोरगुल बन्द न करोगे तो हमें विवश होकर तुमको जेल में पहुँचाना होगा" और उसका स्वर थोड़ा कठोर हो गया जब उसने कहा, "यह याद रक्खो। हम तुम लड़कों को गिरफ्तार नहीं करना चाहते किन्तु कभी-कभी हमें ऐसा करना पड़ता है।" "गिरफ्तार" शब्द हमारे कानों में अटक गया। वे हमें गिरफ्तार कर सकते थे। जब कोई गिरफ्तार किया जाता है तब इसका अर्थ होता है कि वह अपराधी है और यदि कोई अपराधी है तो वह कहीं का नहीं होता।

पेट्रोल-वैगन चला गया। जब उसके पहियों की आवाज शान्त हो गई तब हम लोग घास पर बैठकर धीमी आवाज में बाचतीत करने लगे जो कानाफूसी की तरह थी। हम सब सहमत थे कि अच्छा होगा कि अब से लोग बिना चिल्लाये हुए खेल खेलें।

उस लड़के को छोड़कर सब सहमत थे जिसने एक दूसरी रात को कहा था, "अहा! हमें चिल्लाने का अधिकार है, यह एक स्वतंत्र देश है। इस लड़के ने सोचा कि मैं अब यहाँ न आकर और कोई खेल खेलूंगा परन्तु पुलिस के सिपाही ने जैसा अच्छा व्यवहार करने के लिए कहा था वैसा न करूँगा। और वह फिर नहीं आता था। बाद में वह शराबखानों में जाने लगा और तत्पश्चात् छोटी चोरी के अपराध में वह पान्टियाक रिफार्मेटरी में रख दिया गया।

हम बिजली बत्ती के नीचे खेलते रहे और शान्त रहने की चेष्टा करते रहे परन्तु इससे हमारे मस्तिष्क पर बहुत जोर पड़ता था। मैं एक काम करता था जहाँ मुझे प्रातःकाल साढ़े छः बजे पहुँचना होता था। एक रात को मैं जल्द घर चला गया। दूसरे लड़के हाकी का खेल उत्साहपूर्वक खेल रहे थे और जोर से चिल्ला रहे थे। दूसरे दिन उन्होंने मुझे बतलाया कि रेलवे का एक फायरमैन रात को अपनी कमीज पहने और हाथ में एक डंडा और रिवाल्वर लेकर वहाँ आया था। यह दिखाने के लिए कि रिवाल्वर में गोली भरी है उसने दो बार हवा में छोड़ी। उसने पटरी के तख्ते पर एक गोली मारी और उनको गोली दिखलाई। उसकी आँखें क्रोधोन्मत्त थीं, वह उन्हें अपशब्द कहता था। उसने एक को तमाचा मारा और दूसरे को लात। फिर घड़ी निकालकर उसने कहा, यदि दो मिनट में तुम लोग नहीं चले जाओगे तो मैं तुम्हें गोली मार दूँगा। आधे लड़के दौड़कर भागे और शेष तेजी से चलकर। तब से फिर कभी रात को उस कोने में उतने अधिक लड़के नहीं एकत्र होते थे। वहाँ मजे की शान्ति हो गई और अच्छे लोग सो सकते थे। कठोर गोली

चलानेवाले फायरमैन से लोग घृणा करने लगे और हम लोग पुलिस के सिपाही फ्रैंक पीटरसन की ओर संकेत करके कहते थे, "क्या तुम जानते हो कि वह बुरा आदमी नहीं है ?"

हमारे मकान से चार मकान पूर्व एक बड़ी जमीन का टुकड़ा खाली पड़ा था। हमने उसमें एक चौकोर खेल का मैदान बनाया। उस समय एक सीधी जर्सी गाय वहाँ चरा करती थी। हमारी गेंद से कभी गाय को चोट नहीं लगी परन्तु जब गेंद उसके निकट गिरती थी और "फील्डर" उसकी तरफ दौड़ता था तब गाय के चरने में बाधा पड़ती थी। गाय के मालिक को भी कष्ट होता था और वह कहता था कि मैं तुम लोगों को पुलिस के सुपुर्द कर दूँगा। इस प्रकार हम तब तक सड़क पर खेलते रहे जब तक वह गाय वहाँ से चली नहीं गई और हमने सुना कि वह बिक गई। तब हम फिर अपने चरागाह में खेलने लगे।

चरागाह की बगलवाली तंग जमीन पर श्रीमती मूर का मकान था। वह गृह-युद्ध में भाग लेनेवाले एक अनुभवी सैनिक की विधवा थीं और संघ से मिलनेवाली पेन्शन से निर्वाह करती थीं। वह कद में लम्बी थीं जिनके काले बालों में कहीं-कहीं सफेद बाल भी थे। वह शान्त स्त्री थीं जो मिट्टी का पाइप पीती थीं; अकेली रहती थीं और तरकारियाँ तथा फूल उगाती थीं। हमारे भवन-समूह में उनकी फुलवारी सबसे अच्छी थी जिसमें सब प्रकार के फूल खिलते थे। उनके मकान के सामने-वाली भूमि हालीहाक, बिगोनिया, साल्बिया, ऐस्टर और झाड़ियों पर चलनेवाली मार्निंग ग्लोरीज से परिपूर्ण थी। हमारा पहला बेस उनके घेरे से केवल १० फुट पर था और प्रायः गेंद उनके आलू, गाजर और हालीहाक में चली जाया करती थी। कोई

लड़का उनके घेरे को फाँदकर खोई हुई गेंद को इधर-उधर ढूँढ़ता था। जब कभी श्रीमती मूर लड़के और उस स्थान के बीच में खड़ी होती थीं जहाँ लड़का गेंद को गिरी हुई समझता था तब दोनों के लिए यह अवसर अरुचिकर होता था। वह पूछती थीं, "लड़को, तुम लोग मेरी जगह में ऐसा क्यों करते हो?" जब लड़का उत्तर देता था, "हम कभी ऐसा न करने की चेष्टा करेंगे," तब वह कहती थीं, "ध्यान रक्खो फिर कभी ऐसा मत करना। मैं तुम लड़कों को कष्ट नहीं पहुँचाना चाहती।"

बार-बार हमारी गेंद उनके सुसज्जित उद्यान में जाती थी। वह डाँटने-फटकारने का प्रयत्न करती थीं किन्तु डाँट बताना उनके स्वभाव के प्रतिकूल था। वह शान्तिपूर्वक कहती थीं कि मुझे पुलिस के पास जाना पड़ेगा परन्तु वह न तो कभी पुलिस के पास गईं और न हमारे माता-पिता के पास। उनको अपनी सम्पत्ति पर अधिकार था और हम उनकी सम्पत्ति का अतिक्रमण करते थे। वह दुर्लभ आन्तरिक गुण-सम्पन्न महिला थीं जिन्होंने आलू और हालीहाक से बुद्धिमत्ता सीखी थी।

जब हम आरम्भ में सड़क पर खेलते थे तब झाड़ू का दस्ता बल्ला का काम देता था; गेंद हाथ की बनाई होती थी--पाँच सेंट की रबर की गेंद के चारों तरफ पतली सुतली लपेटी हुई। एक ईंट होम प्लेट का काम करती थी, पहला बेस भी ईंट ही होता था और दूसरे तथा तीसरे बेस टिन के कनस्तर होते थे। जब तक तेज गेंद की चोट से बचने के लिए हमने एक बड़े मनुष्य के कद के दस्ताने में रूई, ऊन और बाल भरना नहीं सीखा तब तक हम खाली हाथ खेला करते थे।

वह दिन भी आये, जब हम गाँव के चरागाह में बड़े-बड़े मैचों में खेले जानेवाले स्पाल्डिग गेंद भी खेलने लगे। जो लड़का उसे पहले ले आया था हम उसके चारों तरफ एकत्र हो गये। हम कहते थे, "अच्छा, बताओ तुम क्या जानते हो? इस गेंद का मूल्य डेढ़ डालर है।" और एक दूसरे से यह बात आश्चर्यपूर्वक कहते थे! "आज हम डेढ़ डालर की गेंद से खेल रहे थे"—यह वही गेंद है जिसे अमास रूसी बड़ी लीग में फेंक रहा था, और जिससे बिग बिल लैंग शिकागो टीम को पराजित कर रहा था। जब मैं शिकागो के समाचार-पत्र ले गया और उनमें खेलकूद के समाचारों को पढ़ा तब मुझे अमास रूसी द्वारा फेंकी गई 'कपटपूर्ण गेंद' के विषय में अनेक बातें ज्ञात हुईं। मैं उन लोगों में एक व्यक्ति हूँ जिन्हें बाद में यह सुनकर बहुत दुःख हुआ कि अमास रूसी शराब पीने लगा है, वह बड़े और छोटे क्लबों से निकाल दिया गया है और वह डेढ़ डालर दैनिक मजदूरी पर गैस पाइप खोदता है। मेरे पिता क्यू० दूकान में जितनी मजदूरी पाते थे वह उससे प्रतिदिन दस सेण्ट अधिक पाता था तथापि मैं अपने पिता की अपेक्षा उसके लिए अधिक खिन्न था।

जब गेल्सबर्ग के खिलाड़ी नाक्स के मैदान में चिलीकोथ, पियोरिया या राक द्वीप से मैच खेलते थे तब बेरियन के लड़के घेरे के सूराखों से झाँककर देखते थे, क्योंकि वह दो सेण्ट देकर प्रवेश-पत्र नहीं ले सकते थे या होम प्लेट से पचास गज की दूरी पर हम किसी पेड़ पर चढ़कर ऐसी जगह बैठ जाते थे जहाँ से दो डालें निकली रहती थीं और हमको इतना मजा मिलता था मानो हम दो सेण्ट के स्थानों में बैठे हों।

नगर का सबसे उत्साहपूर्ण बेसबाल वर्ष वह था जब एक

"सिटी लीग" का संगठन किया गया और वह प्रति सप्ताह एक या दो मैच खेलती थी। मेन स्ट्रीट के लिपिकों की एक टीम थी, रेलवे की दूकान में काम करनेवालों की दूसरी टीम थी और दो अन्य टीमें थीं। विक्टोरिया के चारों तरफ लम्बी घास के क्षेत्र से एक टीम आई जो आश्चर्यजनक थी। उसका मुकाबिला करने के लिए गेल्सबर्ग से नौ सर्व-श्रेष्ठ खिलाड़ी चुने गये और कहा जाता था कि सम्भव है, गेल्सबर्ग उन्हें पराजित कर दे। परन्तु देहात के लड़कों ने तेज गेंद खेला। उनमें स्प्रैट भाई, बाब और जैक थे जो बाद में छोटी लीग के क्लबों में सम्मिलित हो गये। उनका सेन्टर फील्डर एक लम्बा भद्दा व्यक्ति था जो डर्वी हैट पहने था। जब खेल चलने लगा तब विक्टोरिया ने एक या दो रन जीत लिये और लगभग अन्तिम इनिंग तक जीते रहे। जब गेल्सबर्ग का एक आदमी आउट हो गया और दो खिलाड़ी बेस पर पहुँचे और उसका सबसे भारी भरकम आदमी बैट करने के लिए आया। उसने गेंद को सुन्दर और ऊँचा मारा और वह खेल के मैदान के केन्द्र में पहुँची। डर्बी पहननेवाला लम्बा भद्दा आदमी तेज दौड़ा, कूदकर एक हाथ से गेंद को पकड़ लिया और एक खिलाड़ी को "आफ ब्रेस" कैच करने के लिए गेंद को दूसरे खिलाड़ी के पास फेंका और बेसबाल के इस सुन्दर से सुन्दर नाटक में विक्टोरिया विजयी रहा। ऐसा सुन्दर नाटकीय खेल मैंने और दूसरा नहीं देखा था।

गर्मी के दिनों में मैं प्रायः बेसबाल खेलता था। मैं खेल प्रातःकाल आठ बजे आरम्भ करता था, दोपहर को घर शीघ्रता से खाना खाने के लिए जाता था और फिर जब तक बहुत अँधेरा

नहीं हो जाता था तब तक फीलि्डग और बैटिंग किया करता था। कभी-कभी बेसबाल के नामों और संख्याओं के सिवाय मेरे मस्तिष्क में कुछ भी नहीं रहता था। मैं नेशनल लीग और अमरीकन एसोसिएशन की विजेता और पराजित टीमों के नाम बता सकता था। जो खिलाड़ी बैटिंग और फीलि्डग में प्रमुख थे और जिन गेंद फेंकनेवालों ने कई खेल जीते थे मैं उनके नाम बतला सकता था और राष्ट्रीय खेल में कौन सर्व-श्रेष्ठ खिलाड़ी है, इसके विषय में मेरी निजी धारणा थी।

मेरे मन में यह विचार उत्पन्न हुआ कि यदि मैं काफी खेलने का अभ्यास करूँ तो एक टीम में शामिल हो सकता हूँ। यदि एक बार मैं छोटी लीग टीम में भरती हो जाऊँगा तो मुझे यह दिखाने का अवसर मिलेगा कि मैं क्या कर सकता हूँ। इस प्रकार मैं बड़ी लीग टीमों में लिया जा सकता हूँ। ऐसी चीजों के विषय में कौन जानता है? यह मेरी गुप्त उच्चाकांक्षा थी। जितना समय मेरे पास बचता था उसमें मैं लड़कों के साथ खेलता था और एक तुच्छ टीम में भरती होकर खाली मैदान में अच्छी तरह खेलता था।

तब अक्टूबर के प्रारम्भिक भाग में एक तीसरा पहर आया जब मैं सोलह वर्ष का था। मैंने किसी प्रकार फील्डर का पुराना दस्ताना खरीद लिया था। वह बड़ी लीगों के खेलों में पहना जाता था और मुझे उस पर गर्व था। स्किनीसीली और मैं एक चरागाह में गये और गेंद को मारकर ऊपर उछालने लगे। उसने मेरे लिए गेंद ऊपर मारी और उसको पकड़ने के लिए मैं बड़ी तेजी से दौड़ा। मेरा विश्वास था कि मैं गौरवपूर्वक उसे पकड़ लूँगा। यह "पकड़" ऐसी होगी जैसी मैं उस समय करूँगा जब

सम्भव है, मैं किसी छोटी लीग क्लब का सदस्य हो जाऊँगा। अकस्मात् मेरा दाहना पैर एक गड्ढे में चला गया और मैं मुँह के बल गिर पड़ा। जब मैंने अपने पैर पर दृष्टिपात किया तब मैंने देखा कि जूते का चमड़ा कट गया है और मेरे मोजे से खून निकल रहा है। गड्ढे में शराब की टूटी हुई बोतल थी और इसमें मेरा पैर पड़ गया था।

मैंने लँगड़ाते हुए चरागाह को पार किया और डाक्टर टैगर्ट के घर गया। अपने सामने की बरसाती में उन्होंने मेरा जूता निकलवाया और तब धीरे-धीरे मोजा निकलवाया। उन्होंने चोट को साफ किया, उसमें से सूत और शीशा निकाला और उस पर "ऐन्टीसेप्टिक" दवा लगा दी। तब उन्होंने एक झुकी हुई सुई निकाली और पैर के ऊपरी भाग के ठीक नीचे लगभग बीचो-बीच चार टाँके लगाये। उन्होंने मेरे पैर में पट्टी बाँधी और मैं लँगड़ाता हुआ घर गया। मेरी माता ने शोक और सहानुभूति प्रकट की। पिता ने कहा कि तुम्हें बुद्धि कब होगी और बेसबाल में समय नष्ट करना तुम कब बन्द करोगे ?

उस दिन से मैंने यह आशा बिलकुल छोड़ दी कि मैं महान् खिलाड़ी हो जाऊँगा। कभी-कभी मैं खेल खेल लिया करता था परन्तु उन चार टाँकों ने मेरी वास्तविक गुप्त आकांक्षा को समाप्त कर दिया था।
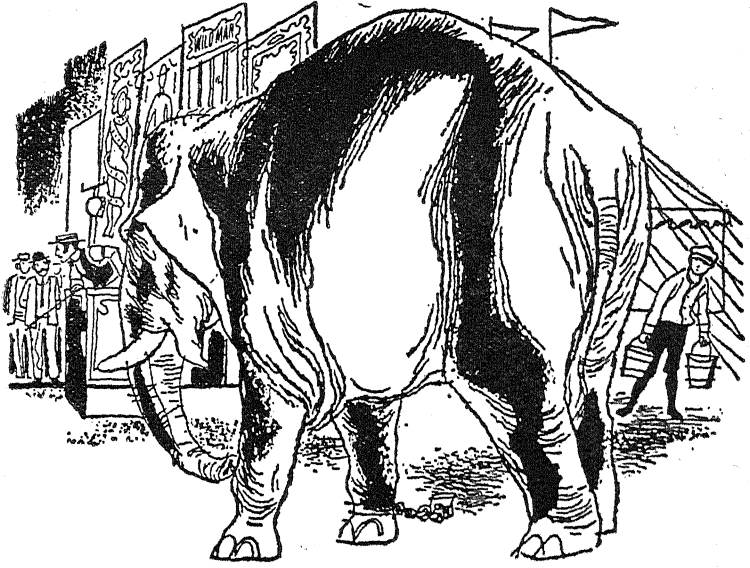
छठा परिच्छेद

मेले और सरकस के दिन

नौ और बारह वर्ष के बीच में हमारी उम्र थी जब हम तीन वर्ष तक लगातार प्रति वर्ष नाक्स-काउंटी मेले में जाते थे। नाक्सविल के ठीक बाहर मेले के मैदान में पहुँचने के लिए हम साढ़े चार मील पैदल चलते थे—हस्की, लार्सन, उसका भाई आल और एक दो अन्य लड़के। सड़क पर गहरी गर्द जमी होती थी। हम जूतों को हाथ में लेकर नंगे पाँव चलते थे। जब हम मेले के मैदान में पहुँचते थे तब उन्हें पहन लेते थे जिससे हमारे नंगे पाँव कुचल न जायँ। रेल का किराया बचाने के लिए हम पैदल चलते थे और पच्चीस सेण्ट का टिकट लेकर भीतर घुस जाते थे। इस प्रकार जो थोड़े से निकेल हमारे पास बच जाते थे हम उन्हें देखते थे।

एक निकेल हम उस आदमी को देते थे जिसके पास नया

और आश्चर्य पूर्ण एडिसन टाकिंग फोनोग्राफ था। मशीन के चारों तरफ मनुष्य खड़े होकर यह देख रहे थे कि जो लोग "इयरफोन" को अपने कानों में लगाकर सुन रहे हैं उन पर क्या प्रभाव पड़ता है। कुछ गम्भीर और संदेहपूर्ण लोगों का चेहरा गम्भीर ही बना रहा और वह लोग यह कहते हुए वहाँ से हटे "मशीन चलती है। आप उस ब्रास बैण्ड को इस प्रकार सुन सकते हैं मानो वह ठीक मेले के मैदान में बजता हो।" परन्तु अधिकांश चेहरों पर मुस्कराहट थी और वह यह कहते हुए वहाँ हटे, "मैं आपसे कहता हूँ कि वह काफी तेज है। मशीन मनुष्य की तरह बातें करती है।"

हम अपने निकेल लेकर आगे बढ़े। हमने फोन के सिरों को अपने कानों में लगाया। हम मशीन पर चलते हुए सिलिण्डर को देखते थे। हमने एक मनुष्य को यह कहते हुए सुना कि यह "एडिसन टाकिंग फोनोग्राफ" है और अब हम एक प्रसिद्ध ब्रास बैण्ड का संगीत सुनेंगे। हमने एक दूसरे को देखा, प्रसन्नतापूर्वक सिर हिलाया और मुस्कराया, "यह चल रही है। क्या यह बड़े जादू की बात नहीं है? यदि मैं स्वयं इसको न सुनता होता तो इस पर विश्वास न करता।"

हम घोड़ों और घोड़ियों, बैलों और गायों, सूअरों और सूअरियों मुर्गों और मुर्गियों को देखते थे—और निर्णायिकों को पारितोषिक और नीले फीते देते हुए देखते थे। हम उन किसानों को देखते थे जिन्हें अपनी पाली और उगाई हुई वस्तुओं पर गर्व था। वायुमंडल कुछ ऐसा था जिसके कारण यह हमें सरकस से कुछ भिन्न मालूम पड़ता था। अनेक किसान और उनके पुत्र नई चीजें सीखने को आये थे। साल भर उनका यह काम था कि वे अपने खेतों और पशुओं से और अच्छी फस्लें और अधिकाधिक खाद्य उत्पन्न करें।

वे अपने सुन्दरतम वस्त्र पहिने थे। परन्तु कहीं-कहीं उनकी मांस-पेशियाँ छोटी गाँठों और गुच्छों की तरह उभरी हुई थीं जिससे उनके कोट उन पर लटके हुए थे। उनकी स्त्रियों के शरीरों पर कठोर परिश्रम के चिह्न थे। उनमें से कुछ को उन अचारों और मुरब्बों पर गर्व था जिन्हें दिखाने के लिए वह आई थीं। उस वर्ष के सबसे बड़े नाक्स काउन्टी के आलू और चुकन्दर देखने योग्य थे।

हमारे पास दो सेन्ट नहीं थे जिससे हम ग्रैंडस्टैण्ड की सीटों पर बैठकर घोड़दौड़ देख सकते। हम लोग ग्रैंडस्टैण्ड की बगल में तख्तों के घेरे के पास खड़े होकर नाक्स काउंटी के तेज से तेज घोड़ों को देखते थे——सवारी करने के घोड़े, अच्छी नसलों के घोड़े, कदम और दुलकी चलनेवाले घोड़े, जिनके कोचवान दो पहियोंवाली हलकी गाड़ियों में बैठे थे। इन गाड़ियों के आरे तो लकड़ी के थे परन्तु हाल लोहे की थी। जैसा हमने गेल्सबर्ग की सड़कों पर देखा था फ्रेड सीकार्ड की तरह अनेक ड्राइवर अपने घोड़ों को सिखा रहे थे और दो पहियों-वाली गाड़ियों को खींचने का अभ्यास करा रहे थे।

उसमें एक विशेषता थी——"संसार में एक मात्र कदम चलने-वाला कुत्ता।" यदा-कदा हम लोगों ने श्री रेडफील्ड को अपने आय-रिश शिकारी कुत्ते के साथ मेन स्ट्रीट पर देखा था और हम जानते थे कि वह साधारण कुत्ता नहीं है। अब अन्त में हमने श्री रेडफील्ड को अपने घोड़े और दो पहियोंवाली गाड़ी को मार्ग पर आते हुए देखा। दाहिने पहिये के साथ-साथ आयरिश शिकारी कुत्ता चलता था। उसके सुन्दर बादामी बाल चमकते थे, वह कदम चलता था, और उसकी टाँगें विचित्र रूप से अगल-बगल में पड़ती थीं। कदम चलता हुआ कुत्ता आधी मील के मार्ग के चारों तरफ दो बार गया। वह इतनी तेजी से नहीं चलता था जितनी तेजी से कदम चलने-

वाले घोड़े चलते हैं परन्तु जनता का विश्वास था कि वह संसार में एक मात्र कदम चलनेवाला कुत्ता है और दर्शक उसको और श्री रेडफील्ड की जयध्वनि करते थे।

उस साल हम लोग घास ढोनेवाली गाड़ी में बैठकर मेले के मैदान से गेल्सबर्ग गये। घर पहुँचकर हम प्रायः यह कहा करते थे कि हमने नाक्स काउंटी में प्रथम एडिसन टाकिंग फोनोग्राफ सुना है और संसार के एक मात्र कदम चलनेवाले कुत्ते को देखा है। कुत्ते के विषय में पिताजी केवल यह कहते थे कि वह मनोरंजक है। परन्तु एडिसन टाकिंग फोनोग्राफ, जो बिना बैण्ड को आपके पास लाये हुए ही उसे आपको सुनाता था, सचमुच विचित्र था। वह कहते थे, "देखो, इसके बाद वे क्या सोचकर निकालते हैं। बाद में जब वह बोलनेवाली मशीन मेन स्ट्रीट में एक खाली दूकान में आई तब उस नूतन यंत्र को सुनने में उन्होंने कई निकेल खर्च किये।"

जब सरकस नगर में आया तब हम किसी प्रकार प्रातःकाल चार बजे जग गये, हमने एक टुकड़ा रोटी और मक्खन खाया और प्रातःकाल सरकस के सामानों और जानवरों को पिंजड़ों से उतरते हुए देखने के लिए हम तेजी से क्यू० यार्ड्स में गये। जो आदमी जलूस में हाथियों से अर्द्ध-भवन-समूह आगे-आगे घोड़े पर चलता था उसकी आवाज बहुत साफ और शानदार थी। वह चिल्लाया, "हाथी आ रहे हैं, अपने घोड़ों को देखो।" पहले वह सड़क की एक तरफ और फिर दूसरी तरफ यह चिल्लाया और जिनके पास चपल घोड़े थे वे उन्हें देखने लगे।

महान् पी० टी० बारनम मुझे कभी दृष्टिगोचर नहीं हुए परन्तु ग्रीष्म ऋतु में एक दिन निर्मल प्रातःकाल को बारनम और बेली कम्पनी के श्री बेली को मैंने देखा। वह अबाबील की दुम जैसा

काला कोट पहने थे और अपने कर्मचारियों को आज्ञा दे रहे थे। वह उस बड़े हरे चरागाह में सरकस चला रहे थे जो शीघ्र ही शहर में मकान बनाने की जमीनों में विभाजित हो गया। और उन अन्य लड़कों के साथ जिन्होंने बेली को देखा था मैं भी कहने लगा, "क्या वह देखने में बहुत गौरवपूर्ण नहीं थे? और जरा सोचो, वह लगभग उतने ही महान् पुरुष हैं जितने स्वयं बारनम।"

जब सरकस के जानवर आदि पिंजड़ों और कठघरों से निकाले जा चुके तब हम जल्दी-जल्दी जलपान करने के लिए घर गये और फिर दौड़कर सरकस के मैदान में पहुँचे जो नगर की सीमा के पास मेन और कार्नहम सड़कों पर एक बड़ा चरागाह था। हममें से जो भाग्यवान् थे उनको कुछ काम मिल गया। हम या तो हाथियों के लिए पानी ले जाते थे या बड़े-बड़े खेमों में दर्शकों के बैठने के लिए लकड़ी के तख्ते घसीटकर ले जाते थे। तीन या चार घंटे तक यह काम करने के पश्चात् हमें कागज की चिटें दी गईं जिससे हम अपराह्न में बड़ा खेल देखने के लिए अन्दर जा सकते थे। यदि हम भाग्यशाली न होते और यदि हमारे पास टिकट खरीदने के लिए पचास सेंट नहीं होते थे तब हम कनात के नीचे से रेंगकर उस स्थान में पहुँचने की चेष्टा करते थे जहाँ से हम तख्तों और मनुष्यों की टाँगों के बीच से झाँककर शानदार मार्च, रस्से पर नाचनेवालों, झूलते हुए डंडों पर कसरत करनेवालों, विदूषकों और रथों की दौड़ को अपनी आँखों के सामने इस प्रकार देख सकते थे जैसे वह नीरों के समय में रोम में हुआ करते थे। एक बार मैं कनात के नीचे से करीब करीब घुस चुका था जब दो बलवान् हाथों ने मेरी घुट्ठी पकड़ी, बाहर ले गये और पटक दिया। फिर उस व्यक्ति ने मुझसे कहा कि मैं जा सकता हूँ।

मैं घूमकर साइड शो में गया। वहाँ बाहर सामने मुफ्ती खेल में, मैंने लचीले चमड़ेवाले आदमी को देखा। वह अपने चेहरे और गर्दन से उसे खींच लेता था और छोड़ देने पर वह फिर अपने स्थान में पहुँच जाता था। वहाँ मैंने एक गोदना गोदे हुए मनुष्य को देखा जिसके चमड़े पर मछली, चिड़ियाँ, श्यामवर्णा बालिकाएँ, जहाज और अनेक अन्य आकार गोदे हुए थे। वहाँ मैंने पूर्व की नाचनेवाली लड़की भी देखी जो खेत में काम करनेवाले हँसते हुए मजदूरों के साथ मुस्करा रही थी।

एक घोषणा करनेवाला मनुष्य था जिसकी मूँछ घनी और ऊपर की तरफ ऐंठी हुई थी। वह जनता की ओर मुड़ा और स्पष्ट तथा उच्च स्वर में बोला, "देवियो और सज्जनो, सामनेवाले शामियाने के नीचे अनेक विचित्र और अद्भुत चीजें हैं—बोर्नियों का वन्य पुरूष, मनुष्यों में सबसे छोटा बौना, और लम्बे से लम्बा देव जो कभी पैदा हुआ है, आपके नगर में लाया हुआ सबसे आश्चर्यपूर्ण साँप, और मानव-भक्षी अजगर जो अफ्रीका के सघन जंगलों में पकड़ा गया है जहाँ मनुष्य मुश्किल से कभी गये थे। मैं आपका विशेष ध्यान 'जो जो' की ओर आकृष्ट करूँगा। वह एक लड़का है जिसका चेहरा कुत्ते के चेहरे जैसा है। वह स्थल से चालीस मील और समुद्र से चालीस मील पर पैदा हुआ था। देवियो और सज्जनो, प्रवेश-शुल्क केवल एक डाइम या दस सेंट है, डालर का दसवाँ भाग। आप लोग बहुत भीड़ होने के पहले अभी अपने-अपने टिकट खरीद लें।"

मेरे पास एक डाइम और पाँच सेंट थे। डाइम देकर मैंने टिकट खरीदा। भीतर जाकर मैंने देखा कि बोर्नियों का वन्य मनुष्य एक दुखी छोटा बौना था। और उसके गलमुच्छे घने तथा

उलझे हुए थे। मुझे ऐसा मालूम होता था कि मोटी स्त्री, बौना और देव ईश्वर की गलतियाँ हैं। जब ईश्वर ने उनकी रचना की थी तब वह अन्यमनस्क था। मैं बौने और उसकी स्त्री के इर्द-गिर्द देर तक खड़ा रहा। मैं उनको उन फोटोग्राफों पर हस्ताक्षर करते हुए देखता था जिन्हें वे दस सेंट पर बेचते थे। वे इतने हँसमुख और हास्यप्रिय थे कि मैं समझ गया कि मैंने उनके विषय में गलत अटकल लगाई थी। क्यू० दूकानों में काम करनेवाले कुछ मनुष्यों की अपेक्षा वे जीवन का अधिक आनन्द लेते थे।

मैं देव को देर तक देखता खड़ा रहा। मैंने देखा कि वह शान्त और संतुष्ट है। यदि कोई चुस्त आदमी पूछता था, "वहाँ ऊपर मौसम कैसा है?" तब वह अपनी एक भौंह उठाता था और प्रश्न का उत्तर नहीं देता था क्योंकि उससे यह प्रश्न अनेकों बार पूछा जा चुका था। अजगर के लिए भी मुझे खेद नहीं था। शायद वह मानव-भक्षी रहा हो। परन्तु वह इस प्रकार सोता था जैसे वह भूल गया हो कि उसने किसको निगलकर हजम कर डाला है। तीन या चार चक्कर लगाने के बाद मुझे केवल बोर्नियो के वन्य पुरुष के लिए खेद था। शायद सब विचित्र प्राणियों में वही एकाकी था। नाचनेवाली पूर्वी लड़की निस्सन्देह कोई अद्भुत प्राणी नहीं थी। वह औसत दर्जे की सुन्दर तमाशा दिखानेवाली लड़की थी। वह कुछ श्यामवर्णा थी और शायद कंजर जाति की थी।

बाद में मेरी समझ में आया कि उन अद्भुत प्राणियों को पहली बार देखकर मुझे दुख हुआ था क्योंकि मैं लज्जाशील व्यक्ति था। घर पर और खेल के साथियों के बीच के सिवाय मुझे यह अच्छा नहीं लगता था कि कोई मुझे घूरकर देखे। मैं सड़क पर लोगों के पास से होकर गुजरता था और जब वे मेरे निकट से होकर चले

जाते थे तब मैं सोचता था कि क्या उन्होंने मुड़कर मुझे फिर दूसरी बार भी देखा होगा। जब मैं सैकड़ों लोगों के बीच में गिरजाघर के बगल के रास्ते से चलता था मुझे ऐसा मालूम पड़ता था कि लोगों कि अँखें मुझ पर लगी हैं। यह मूर्खतापूर्ण बात थी किन्तु लज्जालु व्यक्ति को ऐसा प्रतीत होता है कि लोगों की आँखें उसका अनुसरण कर रही हैं और उसे परेशान कर रही हैं। और वहाँ जो लघु-प्रदर्शन बाहर दिखाया जा रहा था उसमें वे अद्‌भुत प्राणी थे और उनमें से प्रत्येक का काम और व्यवसाय देखने को था। प्रति सप्ताह, एक दिन के बाद दूसरे दिन, वे बैठे या खड़े रहते थे और हजारों आदमी उनको देखते थे और देखे जाने के लिए उन्हें पैसा दिया जाता था। यदि उनमें से अन्य किसी की अपेक्षा कोई अधिक देखा जाता था तब उन प्राणियों के हृदय में ईर्ष्या उत्पन्न होने का खतरा था जिन्हें लोग उतना नहीं देखते थे जितना वह चाहते थे। ऐसा मालूम होता था कि केवल बोर्नियो का वन्य पुरुष और अजगर इस बात की परवाह नहीं करते थे कि कोई उन्हें देखता है अथवा नहीं।

जब मैं इस लघु प्रदर्शन से बाहर निकला तब भी निकेल सिक्का मेरी जेब में था। मैं उस स्थान से गया जहाँ पर बेंत रक्खे थे। वहाँ पर एक आदमी छल्ले दिखा रहा था और इस प्रकार बोलता था मानो उसकी जीभ पर तेल पुता हो, "एक छल्ले के लिए केवल दस सेंट लगते हैं और जिस बेंत में आप छल्ला पहना देंगे वह बेंत आपका हो जायगा।" मैं उस स्थान पर रुका जहाँ एक मनुष्य लगातार चिल्ला रहा था, "लेमोनेड, बर्फ जैसा ठंडा लेमोनेड, सुन्दर ठंडा ताजगी देनेवाला पेय और दाम केवल एक निकेल, पाँच सेंट या डालर का बीसवाँ भाग।" उसके पास से आगे जाकर मैंने एक हँसती हुई

आवाज सुनी, "यहीं पर आपको गर्म भूनी हुई मूँगफली मिलती है; बड़ी-बड़ी दाने से भरी हुई मूँगफली, पाँच सेंट की एक थैली।" मैं उसके पास से भी होकर आगे निकल गया और तब मेरे पास एक निकेल बचा रहा।

तब मैं एक मनुष्य के निकट पहुँचा जो जमीन पर बैठा था। उसकी छाती चौड़ी थी और उसके चेहरे पर शान्ति थी। वह किसी को देखकर चिल्लाता नहीं था। मैंने देखा कि वह नंगे पाँव था। मैंने उसके नंगे पाँवों से ऊपर की ओर दृष्टि डाली और देखा कि उसके कंधों पर केवल ठूँठी बाहें हैं। दाहिने पैर की पहली दो उँगलियों के बीच में वह एक कार्ड लिये था। उसने उसे मेरी तरफ बढ़ाया और कहा, "इसे लेकर पढ़ो।" मैंने उसे पढ़ा जो अत्यन्त सुन्दर अक्षरों में लिखा था : "मैं आपके रखने के लिए कार्ड पर आपका नाम लिख सकता हूँ। इसके लिए आपको केवल दस सेंट देना पड़ेगा।" मैंने कहा, "यदि मेरे पास दस सेंट होते तो मैं आपसे नाम लिखाता, किन्तु मेरे पास केवल एक निकेल है।" मैंने निकेल को निकाल लिया और जेब को उलटकर उसे दिखा दिया कि निकेल के सिवाय उसमें केवल एक चाकू, सूत का एक टुकड़ा और एक अखरोट है। उसने निकेल को अपने बायें पैर से थाम लिया। दाहिने पैर की पहली दो उँगलियों में उसने एक कलम रखा और कार्ड पर "चार्ल्स ए० सैन्डबर्ग" लिखा। उसने पैर मेरी तरफ ऊपर उठाया और मैंने कार्ड ले लिया। उस पर मेरा नाम ऐसा सुन्दर लिखा था जैसा पहले कभी नहीं लिखा गया था। उसके मुख-मंडल पर कोई परिवर्तन नहीं हुआ। उसका चेहरा बराबर ऐसा शान्त बना रहा जैसा सरकस में काम करने-वालों का नहीं हुआ करता। मैं रोनेवाला था। मैंने उसे किसी तरह धन्यवाद दिया और वहाँ से चल पड़ा।
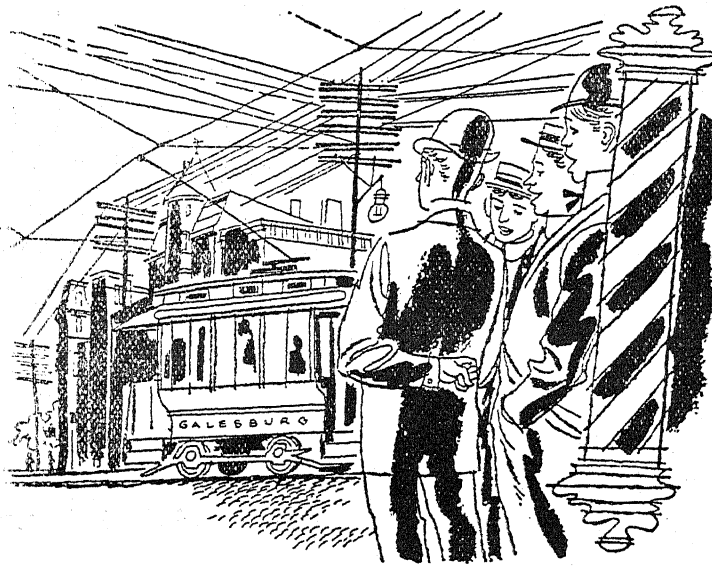
सातवाँ परिच्छेद

अड्डा

बेरियन स्ट्रीट के उत्तर में एवं चेम्बर्स स्ट्रीट के पश्चिम में इमारतों की एक पंक्ति थी। कोने में लकड़ी की बनी हुई "स्वान एच० आल्सन एण्ड ब्रदर्स" की पंसारी की दूकान थी। स्वान की ठुड्डी पर लाल दाढ़ी थी जो बराबर सफाई से कटी-छँटी रहती थी। स्वान शान्ति और नम्रता के साथ ग्राहकों की सेवा करते थे। वह बीस वर्ष की अवस्था में सन् १८५४ में स्वीडेन से आये थे। उन्होंने नाक्स काउंटी फार्म में काम किया था, १८६२ में वह सेना में भरती हुए थे। ऐटलैण्टा समर में उन्होंने युद्ध किया था; कैरोलिना के पार शेर्मन के साथ समुद्र तक और उसके आगे वाशिंग्टन तक ग्रैण्ड रिव्यू के लिए उन्होंने पैदल यात्रा की थी।

बाद के वर्षों में जब तक मैंने उन मार्चों और युद्धों का अध्ययन नहीं किया जिनमें स्वान आल्सन ने सेवा की थी तब तक मेरे हृदय में उनके लिए पूरी श्रद्धा नहीं थी। वह पैदल चलनेवाले सैनिक थे और उनके पैरों ने दो हजार मील से अधिक की यात्रा की थी। उन्होंने भयानक रक्तपातपूर्ण युद्धों में भाग लिया था, नदियों और खाड़ियों को पैदल पार किया था और अपनी बन्दूक तथा कम्बल का बंडल लेकर वर्षा में कई दिनों तक मार्च किया था; परन्तु जब वह श्रीमती नेल्सन के लिए एक क्वार्ट झरबेरी नापते थे या जाड़े में प्रातःकाल दूकान के सामने मछली टाँगते थे जिससे स्वीड लोग जान जायें कि छुट्टियों में खाई जानेवाली उनकी प्रिय मछली आ गई है तब उनको देखकर कोई ऐसा नहीं समझ सकता था।

उनके भाई विलियम की लाल मूँछ बहुत सुन्दर फैली हुई और घुँघराली थी। सेवन्थ वार्ड में वैसी मूँछ और किसी की नहीं थी। वह स्वान की अपेक्षा अधिक बातूनी थे। दोनों भाई अपने कोटों को दूकान के पिछले भाग में टाँग देते थे और केहुनी तक काली आस्तीनें पहन लेते थे जिससे जब वे काफी के बोरों में अथवा गर्दीले बर्तनों में अपने हाथ डालें तब उनके कफ साफ बने रहें। सब पंसारियों की भाँति सेबों की टोकरियों के मुँह पर तार के मजबूत पर्दे लगाते थे। कभी-कभी एक या दो लड़के दूकान के भीतर चीजें देखते थे और जब दोनों भाई ग्राहकों के साथ व्यस्त हो जाते थे तब वे बाहर खड़े होनेवाले एक लड़के को इशारा करते थे जो तार के पर्दे को ढीला कर देता था और इतने सेब लेकर भागता था जितने उसकी जेबों और हैट में आ सकते थे।

जब मैं छः या सात वर्ष का था तब मैंने आल्सन स्टोर से

सौदा खरीदने के विषय में एक पाठ सीखा। जब विल आल्सन उन चीजों की पुड़िया बाँध देते थे जिनके लिए मैं भेजा जाता था तब उन्हें मैं वह कापी देता था जो माँ मुझे दिये रहती थीं और उनसे कहता था, "इन चीजों को कापी में नोट कर दीजिए।" कापी में लिखने के बाद वह उसे मुझको वापस लौटा देते थे। मेरी आँख "लिकोरिस" नामक मिठाई पर पड़ी थी। मैंने पूछा कि उसका क्या दाम है। विल आल्सन ने कहा, "पाँच सेण्ट"। इस पर मैं बोला, "कापी में उसे लिख दीजिए।" तब तक मैंने एक पेनी से अधिक दामवाली कोई वस्तु नहीं खरीदी थी। अब बिना दाम दिये हुए ही चीजें प्राप्त करने का ढंग मुझे मालूम हो गया। मैं यह आशा करते हुए घर गया कि मैं प्रायः "कापी" के साथ पंसारी की दूकान में भेजा जाऊँगा। जब मैं घर पहुँचा तब लोगों ने देखा कि मेरे ओठ और ठुड्ढी लिकोरिस से काले हो गये हैं और उन्होंने उसके विषय में मुझसे पूछा। मैंने कहा कि पंसारी ने मुझे "लिकोरिस का एक बड़ा टुकड़ा दिया था" क्या तुमने उसे उसका दाम दिया? तुम्हें पैसे कहाँ मिले? "मैंने उससे कहा कि दाम कापी में लिख दो।" तब मैंने सुना कि वह कापी परिवार के लिए थी और मुझ जैसे नीच सूअर के लिए नहीं थी। मेरी माँ ने मुझे एक तमाचा मारकर कहा, "जाकर अपना गंदा मुँह धो डालो।" उन्होंने यह भी कहा कि यदि फिर कभी ऐसा होगा तो तुम्हारी ऐसी मरम्मत होगी जो तुम्हें सदा याद रहेगी।

वेतन दिवस को वह कापी लेकर मेरे पिता आल्सन स्टोर को जाते थे और पिछले महीने के सामान के लिए उनके ऊपर जितना रुपया होता था उसका वे योग करते थे। जब वह दाम चुकता करते थे तब वे उनको बच्चों के लिए एक ोला मिश्री और स्वयं

उनके लिए पाँच सेण्ट मूल्य का एक सिगार देते थे। वह प्रति रविवार को सिगार से एक या दो इंच पीते थे और वह अगले वेतन दिवस तक चलता था जब उनको दूसरा सिगार मिलता था। वह केवल उन्हीं सिगारों को पीते थे जो उनको वेतन दिवसों को मिलते थे। वह उन्हें नष्ट नहीं कर सकते थे, इसीलिए उन्हें पीते थे।

आल्सन की लकड़ी की इमारत से लगी हुई एक गली थी। उसके बाद ईंटों की एक मंजिली इमारत आती थी जहाँ फ्रैन्ज नेल्सन गोश्त की दूकान रखते थे। यहाँ रुककर हम लोग फ्रैन्ज से पूछते थे कि अब आप कोई जानवर कब मारेंगे? हम उनके साथ नगर के दक्षिण-पूर्व में पशुओं के कसाईखाने में जाना पसन्द करते थे। हम उनको जवान बैल के सिर में कील ठोंकते हुए या सूअर की गर्दन में चाकू भोंकते हुए देखते थे। पहले-पहल जब हम सूअर की गर्दन के सूराख से निकलते हुए खून को देखते थे तब काँप जाते थे। बाद में हम उसके अभ्यस्त हो गये। हम पानी लाकर या चीजें फ्रैन्ज के निकट ले जाकर उनकी सहायता करते थे। हम लकड़ी के ठीहे पर गोश्त की बोटियाँ काटते हुए उनको देखते थे। वह घर ले जाने के लिए हमें बछड़े या गाय का गुर्दा देते थे और जब कभी कोई ग्राहक पूछता था "क्या एक टुकड़ा गुर्दा आप दे सकते हैं?" तब फ्रैन्ज बिना दाम लिये हुए उसे गुर्दा दे देते थे। वह हम लड़कों को "बैलोनी" देने में बड़े उदार थे।

फ्रैन्ज नेल्सन की गोश्त की दूकान की बगल में ईंटे की उसी इमारत में हमारा प्रिय अड्डा जूलियस शुल्ज सिगार की दूकान थी। सामने के कमरे में एक चौड़ा रास्ता और शीशे के दो शो-केस थे जिनमें शुल्ज के बनाये हुए सिगार और पाइपों तथा तम्बाकुओं

की एक पंक्ति थी। हम श्री शुल्ज को प्रायः नहीं देखते थे। वह बाहर अपने व्यवसाय का प्रचार किया करते थे। वह मँझोले कद के थे, उनकी मूँछ गहरी बादामी थी और उससे मिलता हुआ वह बादामी सूट और बादामी हैट पहनते थे। घड़ी की सुनहली चेन उनके बादामी वेस्टकोट पर लटकी रहती थी। वह दूकान में आते थे, अपने बहीखाते देखते थे और चमड़े के अपने झोले में नमूने भरकर बिना यह देखे हुए चल देते थे कि दूकान में दो, पाँच या छः लड़के पड़े हुए हैं। हम सब श्री शुल्ज को पसन्द करते थे। वह न तो हमारे नाम जानते थे और न हमसे बातचीत करने की चिन्ता करते थे परन्तु चाहे गर्मी हो चाहे जाड़ा वह हमें अपनी दूकान में अड्डा जमाने देते थे और हम एक प्रकार के क्लब की तरह उसका उपयोग करते थे।

पीछे का कमरा हमारा मुख्य अड्डा था। वहाँ "निग" बोहे-नेनबर्जर बैठता था जिसके घर और सम्बन्ध के लोग जर्मन बोलते थे परन्तु उसने उसे नहीं सीखा था। वह कहता था, "लोग मुझे निग कहने लगे क्योंकि मैं साँवला हूँ।" उसकी नाक बाज की तरह थी, उसका चेहरा पीला और शरीर दुबला था। वह सदैव कुछ न कुछ सोचा करता था। वह समाचार-पत्र पढ़ता था और जब सिगारों को रोल करके लपेटनेवाले कागज को चाटता था तब वह हमें बतलाता था कि देहात और नगर में क्या-क्या दोष हैं। अपने वक्तव्य के अन्त में वह प्रायः कहा करता था, "उसके विषय में मैं आपको निश्चित रूप से बता सकता हूँ। वह निश्चित होना पसन्द करता था और हमें उसका निश्चित होना अच्छा लगता था। हम देखते थे कि उसे खासी का दौरा आता है और शनैः-शनैः वह बढ़ता गया। अन्त में क्षयरोग से उसकी मृत्यु हो गई। निग की

अन्त्येष्टि क्रिया से लौटकर एक लड़के ने कहा, "अर्थी में वह ऐसा प्राकृतिक दिखलाई पड़ता था कि मैं रोने से बाज न आ सका।"

लड़कों को काम और खेल के बीच में जो अवकाश मिलता था उसमें वे सिगार की दूकान में आते थे। गर्म मौसम में रात को और रविवार को जब सिगार की दूकान बन्द रहती थी तब हम उसके सामने पटरी पर मिलते और गीत गाते थे। हमारे बीच में लम्बा, दुबला, मोटी हड्डीवाला जान हल्टग्रेन था। वह स्वीड लड़का था जो बोयर ब्रूम फैक्टरी में काम करता था। मोटा, उभड़े गालों और प्रकाशपूर्ण आँखोंवाला जान केरिगन नामक एक आयरिश लड़का था जो अपने पिता से पानी का नल लगाने का व्यवसाय सीख रहा था। दोनों उच्च स्वर के गवैये थे। विलिस (बोहंक) कैल्किन्स और मैं दोनों मध्यम स्वर और निम्न स्वर के गायक थे। चार गायकों की यह टोली "इन दी ईवनिंग बाई दी मूनलाइट," "स्वानी खिर," "कैरी मी बैक टु ओल्ड वर्जिनिया" और "आइ फाउन्ड ए हार्स शू" गा सकती थी और हम कहते थे कि हम अच्छे गायक हैं और जब आल फील्ड्स मिन्स्ट्रेल नगर में आते हैं तो उन्हें हमारा संगीत सुनना चाहिए। कुछ रातों को बोहंक अपना बैन्जो लाता था।

एक दिन लगभग नौ बजे प्रातःकाल शुल्ज की दूकान में जाकर मैंने देखा कि वहाँ पर सनसनी फैली है। रात को किसी ने पीछे की खिड़की तोड़ दी थी और जो कुछ रुपया वहाँ था उसे लेकर चला गया था—शायद आठ या दस डालर रहे होंगे। रात भर जोर से वर्षा हो रही थी। कहा जाता था कि शायद चोर ने सोचा होगा कि सड़क पर बहुत कम लोग होंगे और वे वर्षा में तेजी से इधर-उधर आते-जाते होंगे। कोई दूकान में देखने के लिए

न रुकेगा। हम लोग ओल्ड कैप कोलियर और कार्टर पढ़ रहे थे और हमने चिह्नों का पता लगाने की चेष्टा की। हम आशा करते थे कि यदि चोर की कोई चीज गिरी होगी तो वह हमें मिल जायगी परन्तु उसका कुछ नहीं गिरा था। फर्श पर उसके जूतों की कीचड़ लगी थी जब वह खिड़की से भीतर घुसा था और तब ज्यों-ज्यों वह रुपयेवाली दराज की तरफ आगे बढ़ा था त्यों-त्यों कीचड़ कम होती गई थी——परन्तु कोई चिह्न नहीं था।

शीघ्र ही शान्त आँखों और सुन्दर काली मूँछवाला एक ठिंगना मनुष्य आया। वह नीला सूट पहने था और उसके कोट पर एक सितारा था। हम उसे जानते थे परन्तु किसी घटना का अनुसंधान करते हुए उसे नहीं देखा था। वह पुलिस के अध्यक्ष मार्शल हिनमन थे और उसके साथ वर्दी पहने हुए एक बहुत निपुण पुलिस का सिपाही था। हमने उनको काम करते हुए देखा और हमने देखा कि दूकान के भीतर जितना चिह्न हमें मिला था उससे अधिक उन्हें भी नहीं मिला। तब वे पिछले दरवाजे से बाहर निकले और जिन चीजों से हमने काम नहीं लिया था उनसे पता लगाने लगे। काली कीचड़ में जूतों के निशान थे। मार्शल हिनमन ने जूतों के चिह्नों को ध्यान से देखा। जब वह नीचे कीचड़ में देखते थे तब उनका चेहरा गम्भीर और उत्सुकतापूर्ण था। मैं सोच रहा था, "अब मैं अपराधियों का पता लगानेवाले एक सच्चे आदमी को काम करता हुआ देखता हूँ।"

मार्शल ने कागज की कुछ तख्ती माँगी और उनको जूतों का एक खाली डिब्बा दिया गया। उन्होंने डिब्बे का ढक्कन लिया, अपनी जेब से एक चाकू निकाला और डिब्बे का ढक्कन कीचड़ में बने हुए जूते के निशान पर रखकर कागज की तख्ती को चोर के

जूते के तल्ले के आकार का काटा। तब हमने उनको जूते के निशान पर झुकते हुए देखा। मैंने देखा कि अपराधियों के सब पता लगाने वालों की भाँति वह भी धीरे-धीरे और धैर्यपूर्वक काम करते हैं, अपने चाकू से उन्होंने डिब्बे की पेंदी को कीचड़ में पड़े हुए जूते के दूसरे चिह्न के आकार का काटा। जो कुछ वह कर रहे थे वह एकाएक मेरी समझ में आ गया। पहली तख्ती जो उन्होंने काटी थी वह चोर के बाँयें जूते के आकार की थी और दूसरी तख्ती दाहिने पैर के आकार की थी। यह करने के बाद उन्होंने चिह्नों का थोड़ा और निरीक्षण किया और फिर दूकान के भीतर गये। हमने सोचा कि शायद उनकी तेज आँखों ने कुछ निशानों को देखा हो जिन्हें वे हमको नहीं बताते हों। यदि ऐसा न होगा तो उनको उस आदमी का पता लगाना होगा जिनके बाँयें और दाहिने जूतों की वही नाप होगी जो उनकी काटी हुई तख्तियों की है। मैं अपने मन में तर्क करता था कि यह तो उनके लिए ठीक न होगा कि वह मेन स्ट्रीट पर हजारों आदमियों को रोकें और अपनी काटी हुई तख्तियों को उनके जूतों के तल्लों पर साधें। सम्भव है, पचास या सौ आदमी ऐसे निकलें जो उतने ही बड़े जूते पहने हों और चूँकि उस रात को वर्षा हुई थी वे जानते होंगे कि वर्षा से बाहर कहाँ थे और हर एक मनुष्य यह बहाना करेगा कि उस रात को मैं घटना-स्थल पर नहीं था।

हमें आशा थी कि मार्शल हिनमन चोर को पकड़ लेंगे। हमने उन्हें यह कहकर जाते देखा, "हमें चोर का पता लगाने के लिए काफी मसाला नहीं मिला है किन्तु हमसे जो कुछ हो सकेगा, हम उसे उठा नहीं रक्खेंगे।" तब समय बीतता गया, वर्षों व्यतीत हो गये और चोर का पता न लगा।

कभी-कभी हम लोग शुल्ज स्टोर से पश्चिम तरफ सटे हुए छोटे से मकान में जाते थे। उसमें एक ही कमरा था जो सम्भवत: बारह फुट लम्बा और इतना ही चौड़ा था। यहाँ चमड़े का चोगा पहनकर एक आदमी बैठता था। उसके निकट औजारों की एक पंक्ति और चमड़ा रहता था जिससे वह सरलता से उन्हें उठा सके। हम जूते या बूट के लिए, हाफ-सोल काटते हुए उसे देखते थे। तब वह अपने मुँह में लकड़ी की खूँटियाँ भर लेता था। फिर अपने मुँह में से एक एक कील निकालकर सूजे से किये हुए छेदों में ठोंकता था। अथवा यदि गाहक चाहता था कि हाफ-सोल सी दिया जाय तब जान स्वीडेनबर्ग मोटे तागे में सावधानी से मोम लगाकर उसे सी देता था। वह जूते पर चमड़े का टुकड़ा गोंद से चिपका देता था या सी देता था जैसी वह आवश्यकता समझता था। वह अपना काम पसन्द करता था और आठ बजे प्रात:काल से छ: बजे संध्या तक उसमें लगा रहता था। हम उसके कमरे में जाड़े में अधिक जाया करते थे जब कोयले की अँगीठी के कारण वह छोटा स्थान सुखद होता था।

वह लम्बा आदमी था। उसके कंधे झुके हुए थे। जब वह शान्त रहता था तब उसका चेहरा अच्छा लगता था। जब वह बोलता था तब उसकी आँखें चमकती थीं और ओठ थिरकते थे। जान हमें सदा एक ही पाठ पढ़ाता था। वह केवल तभी चुप रहता था जब उसके मुँह में लकड़ी की कीलें भरी रहती थीं। जान के लिए उपयुक्त शब्द मैंने बाद में सीखा। वह उत्साही धार्मिक व्यक्ति था। उसका उत्साह उसके खून की प्रत्येक बूँद में भरा था। अनेक बार हमने उसको यह कहते हुए सुना: "मैं अपने हृदय में ईसा का ध्यान रखता हूँ। ईसा सदा मेरे साथ रहते हैं, मैं अपने ईसा

से दिन में प्रार्थना करता हूँ और रात में प्रार्थना करता हूँ। लड़को, यदि तुम लोग अपने हृदय में ईसा का ध्यान रक्खोगे तो तुम कभी गलती न करोगे। वह मेरे रक्षक हैं और तुम्हारे रक्षक भी हो सकते हैं। वह संसार के प्रकाश हैं। जब वह मेरे पास होते हैं तब मैं भयभीत नहीं होता। मैं भयभीत हो नहीं सकता क्योंकि उन्होंने मुझे बतलाया है कि जब अन्धकार हो और तुम्हारे ऊपर कष्ट आवे तब तुम मेरा आश्रय लो। लड़को! तुम उनसे प्रार्थना करना सीखो। तुम्हें उनके मंगलमय चरणों पर झुककर क्षमा माँगनी चाहिए और उनसे प्रार्थना करनी चाहिए कि वह तुम्हें अपनी गोद में लें।" बोलने की उनकी निजी शैली थी। उनके शब्द सीधे उनके हृदय से निकलते थे।

जब जान स्वीडेनबर्ग के मुँह से शब्द निकलते थे तब उनकी आँखें देदीप्यमान हो जाती थीं। उनके ओठ काँपते थे जब वह निम्न शब्दों का उच्चारण करते थे, "हम इस संसार में बहुत दिनों तक नहीं रहेंगे। मेरे ईसा दूसरे संसार में मेरी प्रतीक्षा कर रहे हैं और उनका दर्शन मंगलमय होगा।" वह संयमपूर्वक रहते थे, बुधवार की संध्याकालीन प्रार्थना-सभाओं और विशेष प्रार्थनाओं में जाते थे और रविवार के प्रातःकाल और रात को अपना परिवार गिरजाघर में ले जाते थे। हमने कई बार उनको खाँसी का दौरा आते हुए देखा। कुछ दिन ऐसे होते थे जब उनकी दूकान बन्द होती थी। पड़ोसी निग बोहेनेन बर्जर की भाँति उनकी मृत्यु भी क्षय रोग से हुई। दोनों में से कोई भी मृत्यु से डरता नहीं था परन्तु जान को निग की अपेक्षा इस बात का अधिक दृढ़ विश्वास था कि वह ऐसे स्थान में जा रहे हैं जहाँ उन्हें इस पृथ्वी की अपेक्षा कहीं अधिक नित्य आनन्द प्राप्त होगा।
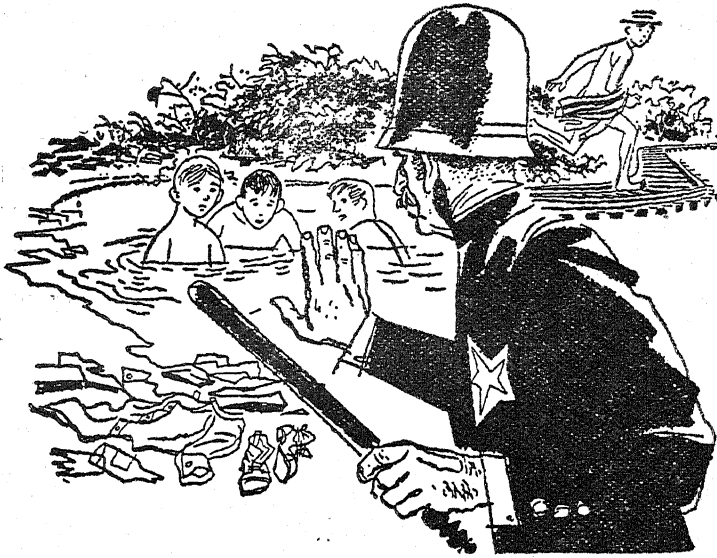
आठवाँ परिच्छेद

गन्दे दर्जन

एक रविवार के अपराह्न में हम कुछ लड़के आल्सन स्टोर के सामने आये। हममें से अधिकांश सोलह या सत्रह वर्ष के थे। हम लोग एक फोटो खिंचानेवाले थे। हमने गिनकर देखा कि हम लोग बारह हैं। किसी ने कहा, "तब हम लोगों को दिखा सकते हैं कि गन्दे दर्जन (लड़के) कैसे दिखाई पड़ते हैं।" और "गन्दा दर्जन" नाम प्रचलित हो गया। ऐसा प्रतीत होता था कि हमारा एक दल है और हम दलगत युद्ध करते हैं। परन्तु गन्दा दर्जन कभी भी दूसरे दल से नहीं लड़ता था और न हम लोग आपस में कभी लड़ाई करते थे। बारह में से सात स्वीडेन से आनेवाले अमरीकियों के लड़के थे। चार "देशी अमरीकी" थे। एक फ्रांसीसी का लड़का था।

एड रोजेनबर्ग की गणना गन्दे दर्जन में की जानी चाहिए थी। उन्हीं लोगों ने उसे यह उपनाम दिया था। वह पीला, दुबला और कुछ नाटा था। वह सदा प्रसन्न रहता था। वह विनोदप्रिय था। एक बार उसने उड़ती हुई गेंद, जिसको पकड़ना सरल था मफ कर दिया अर्थात् खो दिया। तब से हम उसे "मफ" या अधिकतया "मफा" कहने लगे। एक दिन वह राख के रास्ते पर दौड़ रहा था। वह लुढ़ककर गिर पड़ा और यह कहते हुए उठ खड़ा हुआ, "मैं डी ग्रिट" अर्थात् कंकड़ से टकरा गया। तब से उसका नाम "मफा डी ग्रिट" पड़ गया। एक बार गेंद के खेल में गेंद को मारकर उसने विजय प्राप्त की और अपना सिर ऊपर करके अहंकारपूर्वक चारों तरफ घूमता हुआ चिल्लाता था, "खेल किसने जीता? एडी ऐम्पा! एडी ऐम्पा!" उसने "ऐम्पा" शब्द कहाँ से चुना, यह हम नहीं जानते थे परन्तु उचित मालूम पड़ता था और अब उसका नाम "मफा डी ग्रिट ऐडी ऐम्पा" हो गया। एक बार पटरी पर उससे किसी बड़े लड़के से लड़ाई हो गई। वहाँ से आकर वह कहता था कि "वह मुझसे डी ग्रन्ट" करता था। अर्थात् गुर्राता था। इसलिए बहुत दिनों तक जब कभी एंड रोजेनबर्ग पास आता हुआ दिखाई पड़ता था तब वे सब एक स्वर में चिल्लाते थे "मफा डी ग्रिट एडी ऐम्पा डी ग्रन्ट" वह आ रहा है। हमें उसकी अनुपस्थिति से खेद हुआ जब वह डियर प्लाट फैक्टरी में काम करने के लिए मोलिन चला गया जहाँ उसे उसके असली नाम से पुकारते थे।

चार्ल्स (फ्रेन्ची) जूनो मेरे अच्छे से अच्छे मित्रों में से था। उसके पिता छोटे, मजबूत आदमी थे। उनके सिर और दाढ़ी ऐसे थे जैसा आप चित्र में विक्टर ह्यूगो को देखते हैं। और स्वयं फ्रेन्ची का चेहरा और सिर कुछ-कुछ नेपोलियन से मिलता था। वह बालों

का एक गुच्छा सिर पर से खींचकर ललाट पर ला सकता था। वह अपने कोट के सीने पर के मुड़े हुए भाग के नीचे अपना हाथ रखकर पूछता था, "यदि मैं नेपोलियन नहीं हूँ तो कौन हूँ?" वह आरोरा में एक स्टोव-फैक्टरी में धातु पर पालिश किया करता था और जब वह कारखाना बंद हो गया तब वह गेल्सबर्ग में अपने पिता के घर आया। उसने कई नौकरियाँ कीं जो उसे पसन्द नहीं थीं। कुछ समय के बाद जब वह कारखाना फिर खुला तब वह धातु पर पालिश करने का काम करने के लिए आरोरा चला गया। मेरी तरह वह न तो किताबों की परवाह करता था और न संगीत की परन्तु उसमें सूक्ष्म मति और प्रहसन भरा था। जब हमें किसी विषय पर वार्तालाप नहीं करना होता था तब भी एक साथ होना अच्छा लगता था। हम नगर में जाते थे, मेन स्ट्रीट में टहलते थे, एक एक डाइम के आधे दर्जन क्रीम पफ़ खरीदते थे, अपने क्रीम पफ़ खाते हुए मेन स्ट्रीट में घूमते थे, पब्लिक स्क्वायर में चक्कर लगाते थे और बेरियन स्ट्रीट में वापस लौटकर हम कहते थे कि हमने बड़े आनन्द से संध्याकाल बिताया है।

हमने साथ-साथ जाकर विलियम जनिंग्स ब्रायन को रेलगाड़ी से उतरकर क्यू० मार्गों के निकट मलबेरी स्ट्रीट में एक प्लैटफार्म पर चढ़कर भाषण करते हुए देखा था। बाद में जब ब्रायन मन-मथ में भाषण कर रहे थे जो क्यू० मार्ग पर गेल्सबर्ग से सोलह मील पर है तब हम अक्टूबर की ठंडी रात को इंजिन के आगे लगे हुए "काउ कैचर" नामक ढाँचे पर सवार होकर वहाँ गये। हमें बहुत सर्दी लगी थी और फ्रैन्ची ने एक पिण्ट ब्लैक बेरी ब्रैंडी खरीदी जिससे हमें कुछ गर्मी मिली। केवल इसी समय हमने शराब पी थी। ब्रायन का भाषण सुनने के पश्चात् हम फिर

इंजिन के "काउ कैचर" पर बैठकर गेल्सबर्ग वापस आये और हम लोग फिर अपनी पुरानी परिपाटी के अनुसार मेन स्ट्रीट में घूम-घूमकर क्रीम पफ़ खाने लगे।

उस वर्ष पतझड़ में हम लोग नाक्स हाते में एक बड़े शामियाने में गये और बाब इंगरसोल का भाषण सुना जिसमें उन्होंने डेमोक्रैट लोगों और फ्री सिलवर की कठोर आलोचना की। परन्तु पहले फ्रेंची और मैंने एक झोला क्रीम पफ़ खरीदा। जनसमूह की सीमा पर खड़े होकर हम पियोरिया के विख्यात रिपब्लिकन वक्ता का भाषण सुनते थे और अपना क्रीम पफ़ खाते थे। एक रात को जब रोटीवाले की दूकान में क्रीम पफ़ नहीं था तब हमने चोकोलेट यकलेयर खरीदे और यह निश्चय किया कि यदि हमें क्रीम पफ़ मिल सकेगा तो हम इसे फिर कभी नहीं खरीदेंगे।

ग्रीष्म ऋतु के एक रविवार का अपराह्न ऐसा महत्त्वपूर्ण था कि गंदे दर्जन में आठ उसको कभी नहीं भूल सकते थे। हम शुल्ज के सामने एकत्र हुए थे, धूप बहुत तेज थी, किसी ने कहा, "आओ हम लोग बूथ फार्मवाले तालाब में चलकर तैरें।" रास्ते में, नगर की सीमा के ठीक अन्दर हमें एक तालाब मिला जिसे "ओल्ड ब्रिक" कहते थे। यह लगभग तीस गज लम्बा और बीस गज चौड़ा था। किसी समय वहाँ पर एक छोटा घेरा था जिसमें ईंटें बनाई जाती थीं। परन्तु अब सब कुछ नष्ट हो गया था। वहाँ पर केवल एक तालाब था और एक बड़ा पहिया था जिस पर से हम पानी में कूदा करते थे। उसके सबसे गहरे भाग में हमारे कंधों तक पानी था। उसके पेंदे में कीचड़, ईंट, खपड़े और शीशे के टुकड़े थे। हम उससे ऊब गये थे। हमने सुना था कि जिन लोगों ने उसके निकट अपने नये घर बनाये थे वे यह नहीं पसन्द करते थे कि

लड़के उनके घरों के इतने निकट तैराकी करें। परन्तु बूथ फार्म का तालाब तीन मील दूर था और हमने निर्णय किया कि इस गर्मी के दिन हम लोग ओल्ड क्रिक में तैरेंगे। हमने अपने कपड़े उतारे। सुस्त यड रोजेनबर्ग के सिवाय हममें से सब लोग पानी में उतर चुके थे। तब एक आश्चर्य हुआ। एक लड़का चिल्लाया, "देखो, वह वायली आ रहा है।"

हमने डे स्ट्रीट पर पेट्रोल वैगन और विशालकाय पुलिस के सिपाही फ्रैंक पीटरसन और विशालकाय चीफ वायली को अपनी तरफ आते हुए देखा। चीफ अपना दाहना हाथ उठाकर चिल्लाया, "तुम लोग जहाँ हो वहीं खड़े रहो। तुम लोग हिरासत में हो। जब वह निकट आया तब हमने सुना, "तुम लड़कों को जानना चाहिए कि तुमको यहाँ तैरने की आज्ञा नहीं है। यह कानून के विरुद्ध है। तुममें से प्रत्येक वैगन में चढ़कर मेरे साथ चलोगे।" यड रोजेनबर्ग के सिवाय हम सबने कुछ कपड़े पहने और शेष कपड़े पेट्रोल वैगन में पहने। उसने अपना पतलून और कमीज ली और शीघ्रता-पूर्वक मैरोगेज रेल की पटरी के किनारे से जाता हुआ दिखाई पड़ा।

पेट्रोल वैगन में छत नहीं थी और उसमें सीटें लम्बान में लगी थीं। हममें से चार एक तरफ बैठे और तीन एक तरफ। हम एक दूसरे को देखते थे और आश्चर्य करते थे कि क्या होगा। कभी-कभी कनखियों से वायली और पीटरसन को देख लेते थे जो वैगन के सिरे पर बैठे थे। हम उन सड़कों पर ले जाये जानेवाले थे जहाँ लोग हमको जानते थे--हम लोग गिरफ्तार थे और हवालात में ले जाये जा रहे थे। एक रात हवालात में रहने के वाद हम कचहरी में ले जाये जायँगे और वहाँ हम पर मुकदमा चलेगा, और हम नहीं जानते थे कि वे हमें कड़ी से कड़ी सजा दे सकते थे--हम कैसे

जान सकते थे ? कानून कानून है और कानून में कोई चीज घटित हो सकती है। मेरा अच्छा भाई मार्ट मेरे सामने बैठा था। यह पहला अवसर था जब गेल्सबर्ग में कोई सैन्डबर्ग गिरफ्तार किया गया था। बोहूंक काल्किन्स, "जिडी यरिक्सन" और चार्ली ब्लूम-ग्रीन बेरियन स्ट्रीट के अच्छे घरों और भलेमानसों के लड़के थे। वे लोग भी एक वैगन में बैठाये गये थे और पुलिस के दो आदमी उन पर पहरा दे रहे थे। वह दिन दोपहर को चेरी स्ट्रीट हवालात में ले जाये जा रहे थे।

मेन स्ट्रीट में हमने किसी ऐसे व्यक्ति को नहीं देखा जो हमें जानता हो। हम लोग हवालात में बंद कर दिये गये। हममें से तीन लड़के एक कोठरी में बंद किये गये जिसमें चार शराबियों को रखा गया था। शेष तीन लड़के एक दूसरी कोठरी में बंद किये गये, जिसमें चार शराबियों का उन्माद दूर किया जा रहा था। कोठरी में न तो कुर्सियाँ थीं और न चारपाइयाँ। हम या तो पत्थर की फर्श पर बैठते थे या खड़े रहते थे। लगभग तीन बजे का समय था जब उन्होंने हमें बंद किया। सात बजे जब वे शराबियों को खिलाने की तैयारी कर रहे थे तब उन्होंने हमारी कोठरियों को खोला और कहा कि तुम लोग घर जा सकते हो। उन्होंने यह भी कहा, "तुम लोगों को आज्ञा दी गई है कि कल प्रातःकाल दस बजे तुम्हें न्यायालय में जस्टिस आफ दि पीस होलकोम के सामने उपस्थित होना है।"

हम लोग बेरियन स्ट्रीट में स्थित अपने घर गये। रास्ते भर हम यह बात करते गये कि प्रातःकाल जस्टिस होलकोम हमें क्या दंड देंगे। हममें से अधिकांश का विश्वास था कि जस्टिस हमें कारा-वास का दंड न देंगे परन्तु सम्भव है कि वे हमें हलके आर्थिक दंड

दें, "दो डालर और खर्च"। जब समाचार-पत्रों में टोम बेकम या पेग होई का नाम उन्मत्त होकर शान्ति भंग करने के लिए निकला था तब जस्टिस होलकोम ने उन पर "दो डालर और खर्च" का जुर्माना किया था। खर्च पाँच डालर था और हममें कुछ को आश्चर्य होता था कि इतनी बड़ी रकम कहाँ से खोदकर निकालेंगे। मैं जुर्माना तो दे सकता था परन्तु खर्च नहीं दे सकता था और मैं पहले नहीं कह सकता था कि मेरे पिता क्या उत्तर देंगे। जब मार्ट या मैं उनसे कहूँगा, "आप मुझे मुकदमे का खर्च अदा करने के लिए पाँच डालर दीजिए नहीं तो आगस्ट सैन्डबर्ग का एक पुत्र जेल चला जायगा।"

दूसरे दिन प्रातःकाल हम जस्टिस होलकोम के सामने खड़े हुए। हम लोगों ने अपना अपराध स्वीकार कर लिया कि कल रविवार के अपराह्न में हम लोग कपड़े उतारकर नगर की सीमा के भीतर ईंटें बनाने के पुराने हाते के तालाब में तैर रहे थे। जस्टिस होलकम ने हमें ऐसा उपदेश दिया मानो वे हमारे भलेमानस चाचा हों। उन्होंने कहा कि तुम्हें जानना चाहिए कि तुम लोगों ने जो कुछ किया है वह कानून के विरुद्ध है और उन्होंने हममें से प्रत्येक से प्रतिज्ञा कराई कि हम लोग फिर कभी उस तालाब में तैरने नहीं जायँगे।

हमें हर्ष था कि हम मुक्त कर दिये गये और हम वहाँ से चले आये। हम सब लोग इस बात पर एकमत थे कि "उन्हें हमें गिरफ्तार करने के बाद वैगन में बैठाकर हवालात नहीं ले जाना चाहिए था। हममें से एक ने भी नहीं सुना था कि कोई कानून है जिसके अनुसार उस तालाब में तैरना मना है। वे वहाँ पर एक साइनबोर्ड क्यों नहीं लगा देते कि यहाँ तैरना कानून के विरुद्ध है?

हम लोग वर्षों से उस तालाब में तैरते रहे हैं। यदि वे अपने वैगन में से निकलकर हमें केवल बता देते कि हम लोग कानून को भंग कर रहे हैं तब हममें से प्रत्येक यह प्रतिज्ञा कर लेता कि हम वहाँ फिर कभी नहीं तैरेंगे। पुलिस को क्या हो गया है?"

घर पर माता और पिता शान्त रहे और इस मामले के विषय में उन्होंने कुछ नहीं कहा। यद्यपि उन्होंने शब्दों में ऐसा कहा नहीं तथापि प्रतीत होता था कि वे हमारे साथ इस बात पर सहमत हैं कि कानून और पुलिस इस मामले में कुछ त्रुटिपूर्ण है। पुलिस का सिपाही फ्रैंक पीटरसन, जो चीफ वायली के साथ था, हमारे घर की दूसरी मंजिल के कमरों में किराये पर रहता था। मेरा विचार है कि यदि पीटरसन स्वतंत्र होता तो वह हमसे बातें करता और हमें चेतावनी देता न कि वायली की तरह चिल्लाता: "तुम लोग जहाँ हो वहीं खड़े रहो, तुम लोग हिरासत में हो।" यदि आप वयस्क पुरुष हैं और आप पुलिस के चीफ को यह कहते हुए सुनें कि आप हिरासत में हैं। तो आपका शरीर कम से कम काँप जाता है और यदि आप सोलह वर्ष के हैं तो यह वाक्य आपके लिए भयानक प्रतीत होता है। हाँ, ऐसा नहीं होता यदि आप पुराने अपराधी हैं और रिफार्म (सुधार) स्कूल में रह चुके हैं।

मैं अब भी अस्वीकार करता हूँ कि मैंने कोई छोटा से छोटा अपराध भी किया था और मुझे दृढ़ विश्वास है कि मफा डी ग्रिट मेरे साथ सहमत होगा। वह नैरो गेज रेल की पटरी के किनारे-किनारे भागा जब तक पुलिस वैगन अदृश्य न हो गया। तब उसने अपना पैण्ट और कमीज पहना, चुपके से ओल्ड ब्रिक गया, अपने मोजे, जूते और हैट उठाया और घर चला गया। उसे कुछ-कुछ भय था कि पुलिस उसे गिरफ्तार करने के लिए आवेगी, परन्तु

वे नहीं आये। वह मुकदमा उतना महत्त्वपूर्ण नहीं था। हमने मफा डी ग्रिट को उसका सामान दे दिया था। वह चालाक था और तेजी से वहाँ से चला गया।

कुछ लड़के जो हमसे दो चार वर्ष बड़े थे महीने में एक बार नाच करते थे। उन्होंने एक बड़ा कमरा किराये पर लिया था और दो सारंगीवालों को पारिश्रमिक देकर रख लिया था। उन्होंने अपने लिए "गोल्डेन राड क्लब" नाम चुना था। हस्की लार्सन, जिडी इरिक्सन और गन्दे दर्जन के अन्य सदस्य कहते थे कि हम लोग गोल्डेन राड के सामान का मुकाबिला कर सकते हैं। हम लोगों ने भी एक बड़ा कमरा किराये पर लिया और दो सारंगी-वालों को पारिश्रमिक देकर रख लिया। प्रत्येक रात को जब हम नाच करते थे तब हमें पच्चीस सेण्ट प्रति व्यक्ति खर्च करना पड़ता था। हमने निश्चय किया कि हम अपने को मानर्क क्लब कहेंगे। एक सारंगीवाला क्वाड्रिल्स राग बजाता था और बीच-बीच में हम हैन्सन बहनों, ऐली हार्शबार्जर गर्टी गेन्ट और अन्य सुन्दर लड़कियों के साथ वाल्ज, टू-स्टेप, पोल्का और शोटिश नामक नाच नाचते थे। ग्यारह बजे सारंगीवाले शोकपूर्ण "होम स्वीट होम" बजाते थे।

फैटी बेकमन, स्किनी सीली और मैं, बेसबाल के बहुत शौकीन थे। हम वसन्त के प्रारंभिक भाग में खेलना आरम्भ करते थे और पतझड़ में और लड़कों की अपेक्षा बाद तक खेलते रहते थे—जब तक प्रथम तुषार नहीं आता था और चरागाह के पिछले भाग में अन्तिम भूरा सेब पेड़ से झाड़ी पर नहीं गिर जाता था। हम प्रातःकाल अन्य लोगों की अपेक्षा पहले खेलना आरम्भ करते थे और संध्या समय उनकी अपेक्षा देर तक खेलते रहते थे। फैटी मोटा नहीं था,

उसके गाल थोड़ा फूले थे। स्किनी बिलकुल दुर्बल नहीं था, वह पतला और मजबूत था। लोग मुझे "कली" कहते थे क्योंकि वे सोचते थे "कली" "चार्ली" से अच्छा नाम है। फैटी बेकमन एक विधवा का लड़का था और सितम्बर में कई दिन खेल से छुट्टी लेकर एक ठेले में करमकल्ले रखकर पाँच सेण्ट प्रति करम-कल्ले की दर से दरवाजे-दरवाजे बेचता फिरता था। इस प्रकार वह प्रति दिन पचास-साठ सेण्ट कमा लेता था और जब शाम का खाना खाने से पहले वह अन्तिम घंटे में चरागाह आता था तो अपनी जेब बजाता था जिसमें निकेल भरे रहते थे। स्किनी "आडी-टोरियम" नामक नये थियेटर में रहकर रंगमंच बनानेवाले बढ़ई "हस्की" जानसन और थियेटर के स्वामी "कली" रोज की सहायता करने लगा। उन्होंने उसे ऐसा शिक्षण दिया कि जब वह शिकागो गया तब रंगमंच बनाने का काम पा गया।

वह समय भी आया जब विभिन्न रुचियोंवाले अन्य बालक मेरे मित्र हुए। अर्द्ध भवन-समूह की दूरी पर पर्ल और बेरियन स्ट्रीट के मिलने के स्थान में विलिस कैलिकन्स रहता था। उसके पिता ट्रक और कार मोटर बनाते थे। वह स्वच्छ और दयालु पुरुष थे। हर मौसम में वह मुस्कराते रहते थे। उसकी माँ एक सुन्दर स्त्री थी जिसको हमने एक वर्ष क्षय रोग से मरते हुए देखा। विलिस उनका एकमात्र बच्चा था। उनका परिवार गायकों का था और उनके पूर्वज केन्टकी के निवासी थे। विलिस बैन्जो बजाता था, मुझे उसके स्वर सुनाता था और यह बतलाता था कि गीतों में स्वर मिलाकर उसे कैसे बजाना चाहिए।

मेरा पहला बाजा सरई की सीटी थी जिसे मैंने स्वयं काटकर बनाया था। मैं सीटी के पतले भाग को दाँतों के बीच में

पकड़ता था और दाहिने हाथ के अँगूठे से ताल देकर उसमें से राग निकालता था। इसके बाद में कंघी के ऊपर कागज लपेटकर मुँह से बजाता था—पर यह बहुत अच्छा बाजा नहीं था। दस सेण्ट का खरीदा हुआ काजू उससे अच्छा बाजा था। आप उससे मोटे तौर पर ब्रास बैण्ड या मुर्गे की नकल कर सकते थे। टीन की बनी हुई बाँसुरी और लकड़ी की बनी हुई शहनाई मनोरंजक थीं परन्तु आकेरीना मुँह से बजाये जानेवाले उन सब बाजों में श्रेष्ठ था जिन्हें मैं भद्दे ढंग से बजाता था। मेरा पहला तारवाला बाजा सिगार के डिब्बे में रक्खा जाने-वाला बैन्जो था जिसकी खूँटियाँ मैंने स्वयं काटकर लगाईं और उस पर तार भी स्वयं मैंने ही लगाये। उससे न तो राग निकाले जा सके और न स्वर। इसके बाद मैंने मेन स्ट्रीट में श्री गम्बी-नेर की न्यूयार्क पान शाप से पचास सेण्ट की जरा सी टूटी हुई कान्सरटीना खरीदी। उससे सिसकारने की आवाज निकलने लगी, इसलिए मैंने उसे त्याग दिया। मैंने ओल्ड मैन्स अकार्डियन बजाने की चेष्टा की और उससे बहुत अधिक सिसकारने की आवाज निकलती थी। तब मैंने श्री गम्बीनेर से दो डालर का बैन्जो खरीदा। यह बहुत मधुर था और विलिस से मैंने स्वर सीखा। फेरिस स्ट्रीट में रहनेवाली दयालु श्रीमती श्वार्ज से मैंने प्रति पाठ पच्चीस सेण्ट देकर तीन पाठ सीखे। मैं बैन्जो सीखना जारी रखता परन्तु वह संकटकाल था।

विलिस जनप्रिय राष्ट्रीय गीत, गायकों के छोटे गीत और पुराने वीरतापूर्ण गाने गा सकता था। उसका कंठ मधुर और स्वर मध्यम था। उसके गाने में सरल आकर्षण होता था। उसका चेहरा घोड़े जैसा था और उस पर उसकी लम्बी नाक थी। उसका

सुन्दर विनोद सबको अनिवार्यतः हँसा देता था और सब भोजों में उसका स्वागत होता था। उसका धड़ सुडौल नहीं था। वह लुढ़कती हुई चाल चलता था। किसी ने उसे "बोहंक" उपनाम दे दिया और वह प्रचलित हो गया।

एक ग्रीष्म ऋतु में बोहंक और मैं एक दर्जन बार बूथफार्म के तालाब में तैरने के लिए तीन मील दक्षिण पूर्व गये। उसमें हमारी ठुड्ढी तक पानी था। नगर के निकट इन्हीं खेतों में हमने टिमोथी घास, जई और गेहूँ को उगते हुए देखा यद्यपि मैं मक्के से विशेष प्रभावित हुआ। खाने की मेज पर मीठे भुट्टे थे और कई एकड़ बाजरा और चरी बोये थे। परन्तु मक्के के पौधे सबसे ऊँचे थे और मीलों तक बोये थे। मक्का मनुष्यों और घोड़ों के खाने के काम आती थी। यह आश्चर्यजनक मालूम होता था कि जून की मुलायम बालें सितम्बर के अन्तिम भाग में ऐसी पीली, कठोर और छिलकेदार हो जाती थीं कि वे बर्फ जमी हुई जमीन पर पड़ी रहती थीं, और जब तक इस्तेमाल नहीं की जाती थीं तब तक खराब नहीं होती थीं। हमने देखा कि लकड़ियों के टेढ़े-मेढ़े घेरे समाप्त होते जा रहे हैं और उसकी जगह पर ओसेज-आरेंज के घेरे प्रचलित हो रहे हैं। मैं इन झाड़ियों में से ठीक झुकाव की एक डाल चुनता था और चाकू से काटकर हाकी खेलने योग्य स्टिक बनाता था।

बूथफार्म तालाब से वापस लौटते समय बोहंक और मैं कार्नहिल स्ट्रीट और पियोरिया मार्ग के चौरस्ते पर एक निर्णय करते थे। हम बाईं तरफ से जा सकते थे, लोम्बार्ड हाते के बीचों-बीच जाकर अपना मार्ग संक्षिप्त कर सकते थे और गर्म दिन को ढले हुए लोहे के डिवर (करछुल) से, जो लोम्बार्ड पम्प में

बँधा रहता था, ठंडा पानी पी सकते थे। अथवा, फार्नहम स्ट्रीट पर दूर तक चलकर हम ब्रुक्स स्ट्रीट पहुँच सकते थे और वहाँ जान डब्ल्यू० ग्रब के फलों के बाग से स्वादिष्ट सेब चुरा सकते थे। हम सेबों से अपनी जेबें भर लेते थे। पेटी पर कमर के चारों ओर सेब लटकाकर उन्हें कमीज से ढँक देते थे। जिस प्रश्न पर हम फार्नहम और पियोरिया स्ट्रीट पर विचार करते थे वह सरल था, "हम किस मार्ग से चलेंगे? छोटे रास्ते से चलकर हम ठंडा पानी पीयेंगे? या लम्बे रास्ते से चलकर सेब खायेंगे?"

जब वहाँ से काल्किन्स परिवार चला गया तब उनके स्थान पर जोडिन लोग आ गये। जोडिन लोग स्वीड थे जो शिकागो में पन्द्रह वर्ष रह चुके थे और स्वीडिश उच्चारण भूल गये थे। श्री जोडिन रोजाना मजदूरी पर काम करनेवाले दर्जी थे। वह कपड़े नाप सकते थे, काट सकते थे और कपड़ों का सूट सी सकते थे। वह अपना सिर और कंधे सीधे और कुछ पीछे की तरफ लटकाकर चलते थे मानो वह कहते थे, "मैं स्वतंत्र आदमी हूँ और मैं किसी मालिक के सामने सिर नहीं झुकाता। मैं किसी की चापलूसी नहीं करता।" वह मेरे परिचित प्रथम वास्तविक रेडिकल थे। वह एक नया समाज चाहते थे, एक नया संसार जिसमें किसी मनुष्य को दूसरे मनुष्य की चापलूसी नहीं करनी पड़ेगी। घर पर किसी भी सरकार को गरीबों को लूटनेवाले धनिकों के विरोधी व्यक्ति के समक्ष वह एक अराजकतावादी, पापूलिस्ट और समाजवादी थे। वह चतुर दर्जी थे जो अपनी स्त्री, एक लड़की और दो पुत्रों की खूब हिफाजत करते थे। वह कुछ गिलास जौ की शराब, राजनीति के विषय में बातचीत और आनेवाली क्रान्ति को बहुत पसन्द करते थे।

जान जोडिन मुझसे दो तीन वर्ष बड़े थे। उन्होंने शिकागो में मिलवाकी एवेन्यू डिपार्टमेण्ट स्टोर में दो वर्ष काम किया था। उन्होंने "क्लाग डांसिग" में तीन पाठ प्राप्त किये थे। उनसे मैंने भी उस नाच को सीखा और उसे कभी नहीं भूला। शिकागो के चित्रमय और असावधान वातावरण का उनके ऊपर बहुत प्रभाव पड़ा था और उनकी बातचीत से इस बात का पता लग जाता था। उन्होंने विस्तृत अध्ययन किया था। गर्मी की रातों को हम उनके मकान के सामने खाई की बगल में घास पर लेटते थे। वह मेकन मूर नामक जासूस के वीरतापूर्ण कार्यों के विषय में देर तक बातें कर सकते थे। हम लोग मेकन मूर को ओल्ड कैप कोलियर और निक कार्टर से श्रेष्ठ समझते थे।

जॉन जोडिन, उनके भाई अलबर्ट दूसरे लड़के और मार्ट के साथ मैंने बाजी लगाई और हमने दो डालर का एक दुबला घोड़ा और तीन डालर का दूसरा घोड़ा खरीदा। हमने दो हल्की घोड़ा-गाड़ियाँ उधार लीं और उनमें दोनों घोड़ों को जोता और उनको पचास मील हाँककर पियोरिया और चिलिकोथ के स्प्रिग ग्रीन के सामने ले गये। वहाँ हमने शिविर डाला, मछलियाँ पकड़ीं और तैरने लगे। तीन डालर वाला घोड़ा मर गया। हम लोगों ने आदरपूर्वक और अनेक विनोद करते हुए उसे दफन किया। हमारे पास जो कुछ था उसे देकर हमने पाँच डालर एकत्र किया। उससे गेल्सबर्ग में घर वापस आने के लिए हमने एक घोड़ा खरीदा। वहाँ वापस आकर हमने उसे उस आदमी के हाथ तीन डालर पर बेच दिया जिसने हमें तीन डालर में वह घोड़ा दिया था जो मर गया था। जिस मनुष्य ने हमें दो डालरवाला घोड़ा दिया था वह उसे फिर खरीदने पर तैयार नहीं हुआ। मुझे स्मरण नहीं है कि हमने उसे क्या किया यद्यपि

हम उसकी बहुत प्रशंसा करते थे कि यह घोड़ा खूब चलता है और इसमें देर तक दौड़ने की शक्ति है।

उस समय जान बहुत प्रसन्न चित्त थे। वह विनोद और हास्यपूर्ण कहानियाँ पसन्द करते थे और उनके पास उनका भंडार था। अपने पिता की तरह वह भी निश्चित राजनैतिक कार्यों में विश्वास करनेवाले रेडिकल थे। जैसा जॉन देखते थे, "बड़े-बड़े निगम" देश का संचालन कर रहे हैं और वह समय आवेगा जब काम करनेवाले लोग, किसान और मजदूर, संगठित होकर राजनैतिक शक्ति प्राप्त करेंगे और वे लोग बड़े-बड़े निगमों को अपने हाथों में ले लेंगे जिसके आरम्भ में रेलवे का स्वामित्व सरकार के हाथ में चला जायगा। धनियों और गरीबों की अत्यधिक विषमता से जान सदैव खिन्न रहते थे। गरीब लोग कभी नहीं जानते थे कि भविष्य में उनकी क्या दशा होगी और धनियों के पास इतनी अधिक सम्पत्ति थी कि वे नहीं जानते थे कि इनका उपभोग किस भाँति किया जाय।

मैंने जॉन को कभी भी लड़ाई में नहीं देखा। मैं जानता हूँ कि वह किसी भी जनसमूह या दंगे के नेता नहीं हो सकते थे। वह किसी भी मनुष्य के साथ तर्क कर सकते थे। परन्तु वह तर्क या विवाद को झगड़े में नहीं परिवर्तित होने ेते थे। वह मानवजीवन का आदर करते थे। उन्होंने कई बार कहा था कि मैं करोड़पति से घृणा नहीं कर सकता और यह कि अधिकांश धनी लोग अभागे मूर्ख हैं जो अपने धन से अधिक धन पैदा करने के सिवाय उसका कोई अन्य उपयोग नहीं जानते।

मैं जान से अनेक प्रश्न पूछता था और उनके पास लगभग सबके उत्तर रहते थे। मैं उनसे तर्क नहीं करता था। वह विश्वास

रखते थे कि सामान्य जनता के भावों में ज्वार आया करता है। यह ज्वार बढ़ेगा और शक्तिशाली होगा और कई पीढ़ियों के उपरान्त अमरीकी लोग निगमों की शक्ति को चुनौती देंगे और उन्हें समाप्त कर देंगे जो विशेष वर्गों के हित-साधक हैं। जान अभी तक मतदाता नहीं थे किन्तु वह जनता के दल का पक्ष लेते थे जिन्हें पापुलिस्ट कहते थे। मेरे ऊपर उनका मुख्य प्रभाव यह पड़ा था कि उनके सम्पर्क से मैंने विचार करना आरम्भ कर दिया। उन्होंने मुझे सिखाया कि विस्तृत अमरीकी दृश्य में राजनीति, व्यवसाय, व्यापार और अपराध के क्षेत्र में जो कुछ हो रहा है उसके विषय में मुझे अधिकाधिक ज्ञान प्राप्त करना चाहिए।
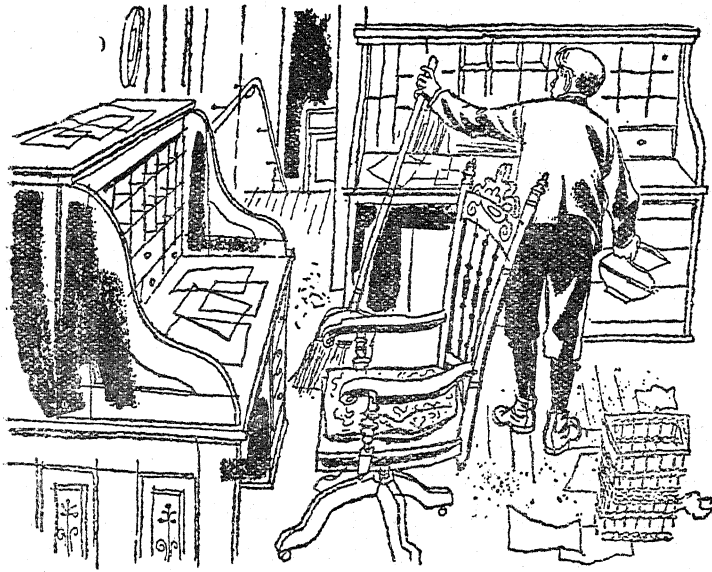
नवाँ परिच्छेद

प्रथम वेतन-दिवस

मैं ग्यारह वर्ष का था जब मुझको प्रथम नियमित काम मिला जिसे करने के लिए मुझे नकद रुपया मिलता था। इसके पहले रुपया कमाने के लिए मैं फुटकर काम किया करता था। शनिवार और स्कूल के समय के पश्चात् हम बोरे लेकर चिथड़े, हड्डियाँ, पुराना लोहा और बोतलें इकट्ठा करने के लिए सड़कों, गलियों, खलिहानों, मकानों, खाइयों और कूड़े के ढेरों में जाते थे जिनके लिए हमें नकद पैसे मिलते थे। एक सप्ताह में मैंने इस प्रकार बोरे में चीजें इकट्ठी करके अठारह सेण्ट पैदा किया था। जब मैं लम्बे पैण्ट पहनने लगा था और ह. शुक्रवार मेरा वेतन-दिवस होता था।

मैं केलोग और प्रेयरी के बीच में मेन स्ट्रीट पर स्थित एक

इमारत की दूसरी मंजिल में कैलेण्डर एण्ड रोडीन नामक जायदाद की दलाली की फर्म में काम करता था। श्री कैलेण्डर भारी-भरकम आदमी थे जिनकी मूँछ हल्के रंग की थी। कानों के बीच में उनका सिर चौड़ा था और उनका मुँह चिकना और गोल था। श्री रोडीन दुबले थे। उनका चेहरा गुलाबी और आँखें नीली थीं।

उनका दफ्तर बड़ा था। पश्चिमी दीवार के निकट श्री कैले-ण्डर का डेस्क था। मेरा ख्याल है कि उनसे दस कदम की दूरी पर पूर्वी दीवार के निकट श्री रोडीन का रोलटाप डेस्क था जिसमें कागज रखने के लिए छोटे-छोटे खाने (पिजन होल) बने थे। श्री कैलेण्डर ने ही मुझे बताया कि यह छोटे-छोटे खाने किस काम के लिए बने हैं। मेरे मन में तो आया, परन्तु मैंने इसका जिक्र श्री कैलेण्डर से नहीं किया कि कुछ पिजन होल इतने छोटे हैं कि कोई ऐसा कबूतर (पिजन) नहीं मिल सकता जो उड़कर उनमें जा सकें। मैंने उनसे यह जिक्र भी नहीं किया कि यह एक अच्छा मजाक होगा यदि पाँच-छः कबूतर लाकर इन खानों में रख दिये जायँ और जब श्री कैलेण्डर और श्री रोडीन अपने-अपने डेस्कों को खोलें तब दफ्तर उड़ते और फड़फड़ाते कबूतरों से भर जाय। मन में इस विचार पर मनन करना मुझे अच्छा लगता था। मैं दूसरे लड़कों से इस विषय में कहता था। एक लड़के ने कहा, "यदि आप ऐसा करेंगे तो वे आप के ऊपर मुकद्दमा चलावेंगे।" हमने उससे यह सुना कि मुकद्दमा चलाये जाने से क्या तात्पर्य होता है। कई सप्ताह तक हम उसे यह कहकर नमस्कार करते थे : "आइए, मुकद्दमा चलानेवाले महाशय," अथवा "मुकद्दमा चलानेवाले छोटे महाशय यह फिर आते हैं।"

श्री कैलेण्डर और श्री रोडीन मेरे साथ अच्छा व्यवहार करते थे। उनके साथ मेरी सबसे लम्बी बातचीत उस समय हुई जब श्री

कैलेण्डर ने मुझे बताया कि मेरा काम क्या होगा। उसके बाद महीनों तक हमारे बीच में केवल शुक्र के प्रातःकाल को बात होती थी जब श्री कैलेण्डर मुझे मेरा वेतन देते हुए कहते थे, ''यह तुम्हारे लिए है'' और मैं ''धन्यवाद'' कहकर चल देता था।

उन्होंने मुझे दफ्तर की चाभी दी थी और मैं सोमवार से शुक्रवार तक पौने आठ बजे से लगभग दरवाजा खोल देता था। मैं कमरों में झाड़ू लगाता था और हर कोने और फर्श के तख्तों के दरारों से गर्द निकाल देता था। तब मैं गर्द को झाड़ू से बटोरकर हाल में लाता था, तब हाल में झाड़ता हुआ छः या आठ फुट चलकर उसे चौड़े जीने के ऊपर पहुँचाता था जिससे सड़क पर उतरा जा सकता था। जीने के आधार पर पहुँचकर अपनी व्यस्त झाड़ू द्वारा झाड़ी हुई गर्द मेन स्ट्रीट की पटरी के उस पार ले जाता था। फिर दो-तीन झाड़ू मारकर आधा बुशेल गर्द, कागज, सुतली और सिगार के टुकड़े पत्थर के कूड़ेखाने में पहुँचा देता था जहाँ वे कूड़ों और घोड़ों की लीदों की तहों में मिल जाते थे। यदि तेज पूर्वी हवा बहती थी तो शीघ्र मेरा झाड़ा हुआ कूड़ा मेन स्ट्रीट पर बिखर जाता था।

जीने से ऊपर जाकर मैं श्री कैलेण्डर के डेस्क के निकट रक्खे हुए उगालदान को हाल में एक छोटे कमरे में ले जाता था जहाँ पीपे में लगी हुई एक टोंटी थी जिससे ठंडा पानी निकलता था। मैं आदरणीय और उपयोगी उगालदान को उलट देता था, फिर उसे बार-बार धोता और खँगारता था और तब उसको श्री कैलेण्डर के डेस्क के निकट ले जाता था। फिर मैं उसी प्रकार श्री रोडीन के उगालदान की सफाई करता था। छः या आठ सप्ताह में एक बार मैं उगालदानों पर पालिश करके उनको चमकदार बना देता था।

कैलेण्डर एण्ड रोडीन की मेरी इस प्रातःकालीन सेवा में आधे घंटे से कम समय लगता था। मैं प्रसन्न और कृतज्ञ होता था जब शुक्रवार को प्रातःकाल श्री कैलेण्डर जेब से अपना हाथ निकालने थे और उनके चेहरों पर ऐसा भाव होता था मानो वह भूल गये हों, मुझे यह कहकर सिक्का देते थे, "यह लो।" और मैं सिक्का लेकर "धन्यवाद" कहता था और जीनें से नीचे चला जाता था और पटरी पर पहुँचकर यह देखने के लिए हाथ खोलता था कि उसमें क्या है। उसमें पच्चीस सेण्ट या डालर का रजत-चतुर्थांश होता था।

कैलेण्डर एण्ड रोडीन से कुछ दरवाजे पश्चिम की ओर दो मंजिले पर गेल्सबर्ग रिपब्लिकन रजिस्टर का मुद्रणालय तथा कार्यालय था। ज्यों ही साढ़े तीन बजे स्कूल बंद होता था त्योंही हम समाचार-पत्र-विक्रेता लड़के वहाँ जाते थे। जब समूचे अखबार प्रेस से निकलते थे तब हम उनको एक मेज पर ले जाकर दोहरा कर देते थे। जब मैं अपने मार्ग में वितरण करने के लिए पचास या साठ अखबारों को मोड़ लेता था तब उन्हें एक मनुष्य के पास ले जाता था जो यह देखने के लिए कि मेरा गिनना ठीक है, उन्हें दुबारा गिनता था। उस गड्डी में एक फालतू प्रति मेरे लिए भी होती थी। यदि कोई भी प्रति कुछ मोटी मालूम पड़ती थी तब वह मनुष्य यह देखता था कि कहीं एक प्रति के भीतर दूसरी प्रति तो नहीं रख दी गई है। यह ऐसी चालाकी थी जिसे लड़के प्रायः किया करते थे। तब अपनी बाँह के नीचे समाचार-पत्रों का बंडल लेकर मैं जीने से उतरकर मेन स्ट्रीट में जाता था, दूसरे कोने पर उत्तर की ओर घूमता था और प्रेयरी स्ट्रीट पर जाता था। मैंने सीखा कि कैसे समाचार-पत्र को आड़े मोड़ा जा सकता है जिससे

वह सामनेवाले दरवाजे पर जोर से शब्द करता हुआ फेंका जा सके। यदि कोई घर निकट होता था तब अखबार फेंकने के लिए मुझे पटरी नहीं छोड़नी पड़ती थी। परन्तु प्रेयरी स्ट्रीट पर धनी-मानी लोग रहा करते थे। उनमें से अधिकांश के घर पटरी से इतनी दूर बने होते थे कि समाचार-पत्र फेंकने से पहले मुझे आधी दूर या उससे अधिक जाना पड़ता था।

एक घर में, जो पटरी से काफी दूर बना था, एक मनुष्य प्रायः घर पर रहकर मेरी प्रतीक्षा करता था। वह विशेषरूप से अमरीका और विस्तृत जगत् से टेलीग्राफ द्वारा आये हुए समाचार की प्रतीक्षा करता था। वह मेरे हाथ से अखबार लेने के लिए दरवाजे से बाहर निकल आता था। वह नगर का सबसे तगड़ा और मोटा आदमी था। वह चारों तरफ से गोल दिखाई पड़ता था। वह पीपे के आकार का मनुष्य था जिसकी ठुड्ढी दोहरी थी, चेहरा गोल था, मूँछ भूरी थी और जिसकी ठुड्ढी पर बकरी की दुम जैसी दाढ़ी थी। यह सम्माननीय क्लार्क ई० कार थे। प्रायः कहा जाता था कि वह नाक्स काउंटी की रिपब्लिकन पार्टी के नेता थे और राष्ट्रीय राजनीति में उनका हाथ होता था। वह रिपब्लिकन राष्ट्रपतियों के द्वारा पोस्टमास्टर नियुक्त किये गये थे। वह डेनमार्क में संयुक्तराज्य के मंत्री के रूप में जानेवाले थे।

श्री कार को इस बात का नवीनतम समाचार देकर कि राष्ट्रपति क्लीवलैण्ड और डेमोक्रैट लोग देश के शासन का संचालन किस प्रकार कर रहे हैं, मैं प्रेयरी स्ट्रीट पर जाता था और नगर के सबसे बड़े मकान में सामनेवाली बरसाती में एक समाचार-पत्र फेंकता था। लोग कहते थे, "इस मकान के बनाने में अस्सी हजार डालर खर्च हुए हैं। इतना धन गेल्सबर्ग के अन्य किसी मकान

के बनाने में नहीं खर्च हुआ है।" वह भूरे पत्थर का बना हुआ तीन-मंजिला मकान था और उसमें मीनार और सुन्दर वक्र रेखाएँ बनी हुई थीं। इसमें सम्माननीय जार्ज ए० लारेंस रहते थे। उन्होंने एक अच्छी स्त्री से विवाह किया था जिसके पास विशाल सम्पत्ति थी। वह वकील थे। उनक गलमुच्छे बादामी थे जो उठे हुए थे और तेज हवा में हिलते और लहराते थे।

मैं अपने समाचार-पत्र लिये हुए प्रेयरी स्ट्रीट के अन्त तक जाता था, फिर एक भवन-समूह पश्चिम चेरी को जाता था, वहाँ से दक्षिण की ओर घूमकर मेन स्ट्रीट पर जाता था और मेरे पास घर ले जाने के लिए रिपब्लिकन रजिस्टर की एक प्रति रह जाती थी। मैं लगभग दो मील पैदल चलता था। यदि कीचड़ या बर्फ होती थी या यदि तूफानी मौसम होता था तो अपना मार्ग तय करने में मुझे डेढ़ घंटा लगता था और अच्छे मौसम में सवा घंटा लगता था। रिपब्लिकन रजिस्टर से मुझे प्रति सप्ताह एक डालर प्राप्त होता था। मैं उस साप्ताहिक रजत-डालर से काफी संतुष्ट था।

अधिकांश मकान एक दूसरे से काफी दूरी पर थे। उनके आस-पास की जमीन उत्तरकालीन समय की अपेक्षा अधिक विस्तृत होती थी। ऐसे मकानों की पंक्तियों के बीच में चलने से मैं सहनों और पेड़ों को जान गया—पेड़ जिन्हें मैंने गर्मी की धूप और वर्षा, जाड़े के बादल और बर्फ में देखा था। जाड़े में बर्फ जमने के कारण उनकी शाखाएँ झुक जाया करती थीं। कहीं-कहीं किसी मकान के पिछले सहन में टमाटर की क्यारी होती थी या उखाड़ने योग्य गाजर होती थी। कुछ सहनों में सेब के पेड़ होते थे और हवा से गिरे हुए सेबों को मैं चुन लेता था।

प्रत्येक मकान के पिछले सहन में जो छोटी इमारत होती थी

उसे कुछ लोग पृष्ठ-भवन (बैक हाउस) और कुछ लोग शौचालय (प्रिवी) कहते थे। समाचार-पत्र ले जाने और बाद में दूध लटकाकर पहुँचाने के कारण मैं भिन्न-भिन्न प्रकार के पृष्ठ-भवनों को जानता था। कुछ पृष्ठ-भवन तो स्वच्छ, बड़े और सुन्दर होते थे। उनके सामने जाली बनी होती थी। कुछ की छतों से पानी टपकता था और उनमें ढीले तख्ते लगे हुए थे जिससे होकर ठंडी हवा और वर्षा भीतर आती थी। कुछ में मुलायम और सादा कागज लगा होता था, किन्तु अधिकांश में समाचार-पत्र या सूची-पत्र लगे होते थे। जब मुझे पृष्ठ-भवन में जाना होता था तब मैं सड़क छोड़कर वर्षा, बर्फ या ओले में जाता था। यदि तापमापक यंत्र शून्य अंश बताता था तब ज्योंही मैं अँगीठी के निकट अपने गर्म स्थान छोड़कर पिछले दरवाजे से बाहर निकलता था त्योंही मेरे शरीर में कँपकपी और सिकुड़न होने लगती थी।

वर्ष में लगभग एक बार एक हब्शी, जिसे हम मिस्टर यल्सी कहते थे, रात को अपनी गाड़ी लेकर आता था और हमारे शौचालय की गुफा को साफ करता था। वह पाइन स्ट्रीट में एक मकान में रहता था जिसका वह स्वयं मालिक था। हम उसका आदर करते थे और उसे मिस्टर कहते थे। वह अपना काम सदैव रात को करता था। वह चाँदनी रात में छाया की भाँति आता और जाता था।

मैं मुख्य लोगों के मकानों और सहनों को जानता था। उनके नाम प्रायः समाचार-पत्र में निकलते थे। जब वे केवानी, पियोरिया या शिकैगो के लिए प्रस्थान करते थे तब मैं अखबार में उनके विषय में "व्यक्तिगत" शीर्षक नोट पढ़ता था। मैं देखता था कि उनके मकानों के सामनेवाली खिड़कियों पर हरे पर्दे डाल दिये गये हैं और तीन या चार दिन के मेरे अखबार सामनेवाली बरसाती में

केवानी, पियोरिया या शिकागो से उनके आने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। यदि बरसाती के फर्श पर वर्षा या बर्फ गिरती थी तब मैं अखबारों को "पाँव-पोंछ" से ढक देता था और मुझे ऐसी भावना होती थी कि मैं बिलकुल बेकार नहीं हूँ।

एक दिन प्रातःकाल मैंने उस आदमी को अपना काम करते हुए देखा जो मेन स्ट्रीट में इधर-उधर जाता था और जिसके विषय में अखबार में "व्यक्तिगत" नोट छपा करता था। वह एक नाटा आदमी था जिसके बाल भूरे, विरले भूरे गलमुच्छे थे और चेहरे पर चित्तियाँ थीं। वह एक नोटबुक में लिख रहा था। मैं उसके निकट गया और एक आदमी से उसको कुछ नामों की हिज्जे पूछते हुए सुना। उसने उस आदमी को धन्यवाद दिया, नोटबुक को जेब में रक्खा और केलाग एण्ड ड्रेक्स ड्राइगुड्स स्टोर में गया। वहाँ मैंने उसको यड ड्रेक से बात करते हुए देखा; नोटबुक फिर उसके बायें हाथ में थी और वह उसमें लिख रहा था। संयोग से श्री कैलेण्डर उधर से जा रहे थे। मैंने उनसे पूछा कि वह आदमी कौन है जो एक नोटबुक में नाम लिख रहा है। श्री कैलेण्डर ने कहा, "वह फ्रेड जेलिफ, रिपब्लिकन रजिस्टर के संवाददाता हैं।"

मैं मुग्ध हो गया। मैंने देखा कि फ्रेड जेलिफ फिर रिपब्लिकन रजिस्टर आफिस में गये और एक मेज के निकट बैठकर पेन्सिल से एक ऐसे कागज पर लिखने लगे जैसे कागज पर रिपब्लिकन रजिस्टर छापा जाता था। तब वह कागजों को एक आदमी के पास ले गये जिसे वे "टाइप सेटर" कहते थे और जब उस दिन का रिपब्लिकन रजिस्टर छपा तब नामों के हिज्जे वही छपे थे जो फ्रेड जेलिफ ने मेन स्ट्रीट में घूम-घामकर लिखे थे। मैं सोचता था कि यदि कोई

आदमी नामों के हिज्जे जानता है और उनको पेन्सिल से कागज पर लिख सकता है तो वह समाचार-पत्र का संवाददाता हो सकता है।

एक वर्ष आया जब मैं समाचार-पत्र के व्यापार में भली भाँति लगा था। अपराह्ण में एक डालर प्रति सप्ताह पर रिपब्लिकन रजिस्टर बेचने के अतिरिक्त मैं प्रातःकाल पचहत्तर सेंट प्रति सप्ताह पर शिकागो के समाचार-पत्र बेचा करता था। प्रति दिन प्रातः-काल, रविवार तथा सप्ताह के अन्य दिनों को, मैं क्यू० डिपो प्लैट-फार्म पर मौजूद रहता था जब सात बजकर दस मिनट पर शिकागो से फास्ट यक्सप्रेस गाड़ी आती थी। जब मेल रेलगाड़ी धीरे-धीरे रुककर खड़ी हो जाती थी तब उसमें से बंडल बाहर निकाले जाते थे और हम उन्हें उठाकर सेमिनरी स्ट्रीट के पार क्रोकर एण्ड राबिन्स पंसारी के सामने ले जाते थे जहाँ एक छाये हुए चबूतरे पर हम वर्षा और बर्फ से सुरक्षित रहते थे।

हम श्री एडवर्ड्स के लिए काम करते थे जिनकी मेन स्ट्रीट पर दूकान थी जहाँ वह पुस्तकें और कागज, कलम तथा पेंसिल आदि बेचते थे और समाचार-पत्र की दूकान रखते थे। उनके लम्बे लाल गलमुच्छे थे। जब वह उत्तेजित नहीं होते थे तब सैन्टा क्लाज की भाँति दिखाई पड़ते थे। जब वह हमें हमारा काम बतलाते थे तब न तो मालिकों की तरह अधिकार जमाते थे न चिल्ल-पों मचाते थे। जब दो या तीन लड़के लड़ने लगते थे तब वह माँ-मुर्गी की तरह बीच में खड़े हो जाते थे और चाहते थे कि शान्ति स्थापित हो जाय और किसी का खून न बहे।

हम बंडलों की रस्सियाँ काटते थे और उनमें से गर्मी के प्रातः-काल की ओस अथवा जाड़े के सूर्योदय के तुषार की भाँति ताजे "शिकागो ट्रिब्यून", "शिकागो रेकार्ड", "शिकागो इन्टर-ओशन",

"शिकागो टाइम्स", "शिकागो हेराल्ड", "शिकागो क्रानिक्ल" निकालते थे। प्रत्येक लड़का अपने समाचार-पत्रों को लेकर अपने मार्ग पर जाता था। वह जानता था कि यदि वह ऐसे घर की बरसाती में डेमोक्रैटिक शिकागो टाइम्स फेंकेगा जहाँ के लोग रिपब्लिकन शिकागो ट्रिब्यून के लिए पैसा देते थे तब उसका परिणाम क्या होगा।

अन्य समाचार-पत्रों की एक प्रति का मूल्य दो सेंट था किन्तु विक्टर लासन द्वारा चलाये हुए शिकागो रेकार्ड की एक प्रति का मूल्य एक सेंट था। आप यह नहीं बतला सकते थे कि कोई आदमी रेकार्ड इसलिए ले रहा है कि वह सब समाचार-पत्रों से सस्ता है अथवा इसलिए कि वह शिकागो का एकमात्र समाचार-पत्र है जो राजनीति में स्वतंत्र है और दोनों दलों के मतों को प्रकाशित करता है। जब कोई परिवार दो समाचार-पत्र लेता था तब उनमें से एक 'रेकार्ड' होता था।

प्रातःकाल मैं साउथ और मलबेरी स्ट्रीट पर जाता था और मेरा मार्ग मेन स्ट्रीट पर समाप्त हो जाता था। रविवार के प्रातःकाल मैं साढ़े सात बजे से लगभग दोपहर तक शिकागो समाचार-पत्रों का एक छोटा सा ठेला खींचता था। मैं उनको पाँच सेंट की एक प्रति के हिसाब से बेचता था और हर बिकी हुई प्रति से मुझे एक सेंट मिलता था। मेरे नित्य के गाहक लगभग पचास थे और कभी-कभी जब कोई महत्त्वपूर्ण समाचार होता था, जैसे शिकागो में मेयोर कार्टर हैरिसन की हत्या, तब मैं दस या बीस अखबार और बेच लिया करता था।

अन्य बालकों की तरह मेरा काम श्री एडवर्ड्स की दूकान पर लगभग एक बजे समाप्त होता था। जब हम श्री एडवर्ड्स को दाम दे देते थे तब हममें से पाँच या छः लड़के सड़कों को पार करके

एक भोजनालय में जाते थे। हम हर रविवार को एक ही तरह का आचरण करते थे। हम स्टूलों पर चढ़कर मुस्कराहट के साथ कहते थे, "वन एण्ड ए बन" जिससे हमारा तात्पर्य होता है कि छोटी मुलायम और मीठी केक के बीच में एक तला हुआ अंडा रख कर दो। हम भूखे होते थे। हम अपना पाँच सेण्ट का भोजन मुँह से काटकर खाते थे और बीच-बीच में बातें करते जाते थे। हममें से हर एक अपना निकेल चुकाता था और संतुष्ट प्रतीत होता था। ऐसा मालूम होता था कि हम लोग वयस्क लोगों की तरह हैं, हमारे पास अपना कमाया हुआ रुपया है और हम लोग घर से बाहर दूकान पर भोजन कर सकते हैं। हममें से कुछ के पैण्ट फटे हुए थे और उनमें पैबंद लगाने की आवश्यकता थी, परन्तु हमारी ऐसी भावना थी कि हम लोग छोटे-छोटे स्वतंत्र व्यापारी हैं और हम अपने लाभ में से एक-एक निकेल खर्च कर रहे हैं।

दो या तीन बागों को खोदकर, एक या दो बाल्टी आलू के कीड़ों को चुनकर मेन स्ट्रीट में पेन्सिलवैनिया का चोकर बेचकर या अन्य फुटकर काम करके मैं प्रतिमास लगभग बारह डालर कमा लेता था। एक फुटकर काम "ईंटों को साफ करना" था। जब कोई ईंटों का मकान या दूकान गिरा दी जाती थी तब हम करनी लेकर ईंटों पर से सूखा हुआ गारा खुरच देते थे और पुरानी ईंटों को नई ईंटों की तरह बना देने की चेष्टा करते थे। हमें प्रति सौ साफ की हुई ईंटों के हिसाब से कुछ मजदूरी मिलती थी। मैं प्रातःकाल और अपराह्न में समाचार-पत्र बेचने के बीच में ईंटों की सफाई किया करता था और मेरी मजदूरी का औसत लगभग पन्द्रह सेंट प्रति घंटा होता था।

परन्तु जब हम इस ऊँची आवाज का जवाब देते थे कि "अँगरेजी

गौरैया का नाश होना चाहिए" तब हमें वह काम की अपेक्षा खेल अधिक मालूम होता था। राज्य हर एक मारी हुई अँगरेजी गौरैया के लिए एक सेण्ट देता था और मैंने तीस से अधिक गौरैयों को मारा था। मैं उनको अपनी बनाई हुई "रबरगन" (गुलेल) से मारने की चष्टा करता था। यह "गुलेल" दो फाँकवाली लकड़ी होती थी जिसमें रबर की पट्टियाँ होती थीं और एक चमड़े की ढेलवाँस होती थी जिसमें पत्थर रक्खा जाता था। गौरैया पर निशाना लगाकर पत्थर को छोड़ देते थे। सैकड़ों "रबरगन" के पत्थरों से मैं केवल एक गौरैया को गिरा सका। तब मैंने एक "एअर राइफल" खरीदी। मैंने अपने पड़ोसी स्वीडिश लड़के ऐक्सल जानसन का प्रायः विश्वास कर लिया था। जब उसने कहा था कि चिड़ियों को मारने के लिए "रबरगन" छर्रोंवाली बंदूक या बारूद इस्तेमाल करने-वाली राइफल से अच्छी होती है। ऐक्सेल कहता था, "चिड़ियाँ बारूद को एक मील दूर से सूँघ लेती हैं।" उसके ऐसा कहने से मैं चिड़ियों की घ्राण-शक्ति के विषय में गंभीर चिंतन करने लगा।

दसवाँ परिच्छेद

दूध की गाड़ी के दिन

सन् १८९२ के अक्टूबर में मैं चौदह वर्ष या लगभग पन्द्रह वर्ष का था। मेरी माँ मुझे प्रातःकाल साढ़े पाँच बजे जगा दिया करती थीं। जब मैं ऊपरी मंजिल के कमरे से नीचे उतरता था तब वह मेरे जलपान के लिए बक ह्वीट केक, सूअर की बगल का तला गोश्त सम्भवतः सेब का मुरब्बा या सूखे हुए बेर और काफी तैयार रखती थीं। मैं लगभग दो मील पैदल चलकर जार्ज बर्टन के घर और धान्यागार पहुँचता था। उनके पास दूध की दो गाड़ियाँ थीं। यदि मैं किराये की गाड़ी पर बैठकर जाता तो मैं आधी दूर पैदल चलने से बच सकता था। परन्तु इसके बदले में जो एक निकेल गाड़ी का किराया देना पड़ता मैं उसे बचा लेता था।

इस अक्टूबर में कई दिन मेरा गला बैठा था। दो दिन मैं बिस्तर पर पड़ा रहा और श्री बर्टन के पास समाचार भेज दिया कि मैं काम करने के योग्य नहीं हूँ। जब फिर मैं उनके यहाँ काम करने गया तब मैंने उनको अपनी स्थिति समझाई। उन्होंने सन्देहपूर्वक मुझे देखा परन्तु कुछ कहा नहीं। मेरे गले में अब भी दर्द था और मुझे कमजोरी मालूम होती थी किन्तु मैंने यह सब श्री बर्टन को नहीं समझाया क्योंकि वह बहुत सन्देहपूर्ण दिखाई पड़ते थे।

उसी सप्ताह में मार्ट का गला भी खराब हो गया और वह बिस्तर पर पड़ गया। चार दिन के पहले वह न उठ सका। तब सबसे छोटे दो लड़के चारपाई पर पड़ गये और उनके गले में ऐसा घाव हो गया था कि वे खाना नहीं खा सकते थे। फ्रेडी दो वर्ष का था और एमिल सात वर्ष का। एमिल का चौड़ा चित्तीदार चेहरा था, नीली आँखें थीं और अपने बड़े मुँह से वह शीघ्रतापूर्वक मुस्करा देता था। उसकी जितनी उम्र थी उसकी अपेक्षा वह अधिक बलिष्ठ था। वह और मैं कुश्ती लड़ते थे, भिड़ते थे। एक दूसरे के हैट को फेंक देते थे और एक दूसरे से खेल खेलते थे। हम दोनों एक ही कहानियों को पसन्द करते थे और ग्रिम कहानियों में जो कहानियाँ मुझे प्रिय थीं उन्हें पढ़कर मैं उसको सुनाता था। वह प्रायः मुझसे "नैपसैक, हैट और हार्न" की कहानी सुनाने को कहता था।

हम लोग एक छोटा सा बिस्तर नीचे रसोईघर में ले गये। वही एकमात्र कमरा था जिसमें स्टोव था। पश्चिमी खिड़की के पास जिसमें से अपराह्न में काफी धूप आती थी, हमने एमिल और फ्रेडी को बिस्तर पर अगल-बगल लिटा दिया। प्रत्येक का गला विचित्र मालूम होता था। ऐसा प्रतीत होता था कि वे कमजोर होते जा रहे

हैं और यद्यपि हमें मालूम था कि डाक्टर विल्सन को बुलाने में डेढ़ डालर खर्च करना पड़ेगा। तथापि मैं उनके मेन स्ट्रीट आफिस में पैदल गया और उनसे जितनी जल्दी हो सके, आने को कहा।

डाक्टर विल्सन लगभग एक घंटे में आये। वह अपना सुन्दर लम्बा, काला कोट, सफेद कमीज और कालर, और रेशमी नेकटाई पहने हुए हमारे रसोईघर में आये। वह विख्यात डाक्टर थे। उन्होंने अपने बक्स से लोहे का चपटा यंत्र निकाला, उसे एमिल की जीभ पर रक्खा और उसे दबाकर सावधानीपूर्वक देर तक एमिल के गले को देखते रहे--फ्रेडी के साथ भी उन्होंने ऐसा ही किया। तब डाक्टर विल्सन उठकर खड़े हो गये, मेरे पिता और माता की ओर मुड़े और गम्भीर तथा खेदपूर्ण मुख से बोले, "यह डिफ्थीरिया है।"

उस दिन अपराह्न के पिछले भाग में नगर के स्वास्थ्य कमिश्नर ने हमारे सामनेवाले दरवाजे पर एक बड़ा लाल कार्ड टाँग दिया, "डिफ्थीरिया", जिससे लोग हमारे मकान में न आवें, क्योंकि उसमें छूत की बीमारी थी। दूसरे दिन प्रातःकाल मैं काम करने के लिए गया क्योंकि मैं समझता था कि यदि मैं घर पर रह जाऊँगा तो श्री बर्टन इस बात को पसन्द न करेंगे और वह सन्देह करेंगे जैसा उन्होंने किया था जब मैं दो दिन के अवकाश के बाद उनके पास गया था। मैंने उनको बताया कि हमारे घर में डिफ्थीरिया है और हमारे सदर दरवाजे पर लाल कार्ड टँगा है। उन्होंने कुछ नहीं कहा इसलिए मैं दूध के कनस्तरों को लेकर एक घर से दूसरे घर नगर के पार सात बजे प्रातःकाल से अपराह्न के एक बजे तक घूमता रहा। उसके बाद के दो दिनों के प्रातःकाल भी मैं श्री बर्टन के लिए दूध बेचता रहा।

कुछ घरों की स्त्रियाँ चिन्तापूर्वक कहती थीं, "जब तुम्हारे घर में डिफ्थीरिया है तब क्या हमारा दूध छूना और बाँटना तुम अपने लिए उचित समझते हो" मैं कहता था कि मैंने श्री बर्टन को यह बात बता दी थी परन्तु उन्होंने कुछ नहीं कहा था और मैं समझता था यदि मैं घर पर रह जाऊँ तो वह इसे नापसन्द करेंगे। इस पर स्त्रियों का मुखमंडल चिन्ताकुल हो जाता था और वह कहती थी : "यह उचित नहीं मालूम पड़ता।"

तीसरे दिन जब डाक्टर विल्सन तीसरी बार आये तब उन्होंने कहा कि लड़कों की दशा नहीं सुधर रही है। उन्होंने अपना सिर हिलाकर कहा, "अब हम केवल आशा ही कर सकते हैं। उनकी दशा सुधर भी सकती है और बिगड़ भी सकती है। मैं कह नहीं सकता।" उस दिन देर तक अपराह्न को हम सब लोग वहाँ थे, पश्चिम से सूर्य की किरणें एमिल और फ्रेडी पर पड़ रही थीं जहाँ वे आँखें बंद किय हुए लेटे थे। फ्रेडी की साँस पहले रुक गई। उसके ललाट और हाथों को छूकर माँ ने कम्पायमान स्वर में कहा, "वह ठंडा हो गया है। हमारा फ्रेडी चल बसा।" उनके चेहरे पर आँसू बह रहे थे। हमने एमिल को देखा। उसका शरीर तगड़ा था और हमें आशा थी कि वह बच जायगा। किन्तु उसकी साँस की गति धीमी पड़ गई और आधे घंटे से कम में ही उसकी साँस भी रुकी हुई जान पड़ी। माँ ने अपना हाथ उस पर रक्खा और उनका शरीर काँपने लगा जब उन्होंने कहा, "हे भगवन् ! एमिल भी चल बसा।"

हम लोगों को घोर शोक हुआ। सामनेवाले कमरे के बीच में एक मेज थी जिसका ऊपरी भाग संगमरमर का था और जिस पर पारिवारिक इंजील रक्खी थी। वह हटाकर एक कोने में कर दी

गई और उसके स्थान पर शव की राख रखने के दो छोटे सफेद बक्स रख दिये गये। पड़ोसी और मित्र आते थे; कुछ लोग फूल लाते थे। क्रैन्स और होम्ज लोग अपने दो छोटे सम्बन्धियों के चेहरों को अन्तिम बार देखने के लिए आये। रेवेरेन्ड कार्ल ए० निब्लैड ने स्वीडिश ल्यूथरन प्रार्थना कही। चार व्यक्तियों ने "ईसा, मेरी आत्मा के प्रेमी" शीर्षकवाला गीत गाया। प्रेत-कर्म करानेवाला इधर से उधर इस प्रकार घूमता था मानो यह उसका दैनिक कार्य हो। माँ रोती थी परन्तु शान्ति के साथ और उनके कंधे उस प्रकार नहीं हिलते थे जैसे उस समय हिलते थे जब उन्होंने कहा था, "हे भगवन्! एमिल भी चल बसा।" मार्ट और मैं नहीं रोते थे। हमारी आँखें सूखी और चेहरे कठोर थे। दो रातों को सोने के पहले हम रोये थे और रात को जागकर हम और भी रोते थे। यही रहस्य था जिससे हम सार्वजनिक अन्त्येष्टि के समय नहीं रोये।

हमने देखा कि शव की राख रखने के दोनों छोटे सफेद बक्स सामने के दरवाजे से बाहर ले जाये गये। तब वे एक शव-वाहक काली गाड़ी में रक्खे गये जिसके अगल-बगल और सिरों पर शीशे की खिड़कियाँ थीं और ऊपरी कोनों पर चार काले झब्बे थे।

हम लोग एक बंद गाड़ी में पीछे-पीछे गये। कब्र पर हमने यह शब्द सुने, "राख राख में और मिट्टी मिट्टी में।" हमने देखा कि दोनों छोटी अर्थियाँ नीची की गईं और उन पर एक मुट्ठी मिट्टी डाल दी गई। क्रैन्स और होम्ज लोगों के गम्भीर मुखमंडल से हमें तनिक सान्त्वना प्राप्त हुई।

हम लोग बंद गाड़ी में घर लाये गये--पिता और माता, बहनें मेरी और ईस्थर मार्ट और मैं। हम घर में गये। सब समाप्त हो

गया था। दो प्राणियों के लिए घड़ी बोल चुकी थी और उनके लिए फिर कभी नहीं बोलेगी। फ्रेडी इतने दिनों तक जीवित नहीं रह सका था कि मेरे हृदय में घर कर सके। परन्तु एमिल की मृत्यु मुझे बहुत खलती थी और वर्षों तक खलती रही। मैं सोचा करता था कि वह मेरा कितना घनिष्ठ मित्र हुआ होता।

उस डिफ्थीरिया और अन्त्येष्टि क्रिया के सप्ताह में दो दिन श्री बर्टन के यहाँ काम पर नहीं गया। जब मैं गया तब उन्होंने पहले की भाँति व्यवहार किया। उन्होंने एक शब्द भी नहीं कहा। उन्होंने यह भी नहीं कहा कि "यह बड़ा दुर्भाग्य है" अथवा "यह बहुत बुरा हुआ।" श्री बर्टन का चेहरा दुबला-पतला था और उनकी मूँछ बादामी थी जिसको वह अपनी उँगलियों से ऐंठना पसन्द करते थे। उनकी ठुड्ढी पीछे की ओर दबी हुई थी। उनकी स्त्री रूपवती थीं जिन्हें देखकर उनका मुखमंडल देदीप्यमान हो जाता था। उनके पास दो या तीन तेज घोड़े थे जिन्हें हल्की गाड़ी में जोतकर हाँकना उन्हें पसन्द था। एक घोड़ा एक वर्ष का था जो उनकी चमकदार काली घोड़ी का बछेड़ा था। घोड़ी का सिर छोटा था और उसकी पतली गर्दन उसके मोटे शरीर पर सुडौल नहीं मालूम पड़ती थी। श्री बर्टन कहते थे कि वह बड़ी अच्छी नस्ल की घोड़ी है तिस पर भी लगभग आधे समय तक वह उस घोड़ी को गाड़ी में जोतवाते थे। चिल्लाकर उसकी चाल तेज करने और फिर उसकी लगाम खींच-कर उसे रोक देने में उन्हें मजा आता था।

एमिल और फ्रेडी के मरने के पश्चात् डाक्टर और प्रेत कर्म कराने-वाले के बिलों और कब्रिस्तान की जमीन का दाम चुकाने के लिए पिता के मासिक वेतन में से नियमित रूप से कटौती हो जाती थी। हम अब सात प्राणियों के परिवार थे और भोजन, वस्त्र, कोयला,

स्कूली किताबों के मूल्य के अतिरिक्त पिता को मकान के लिए कुछ रुपया चुकाना पड़ता था, नहीं तो मकान से हाथ धोना पड़ता। मेरी अब हाईस्कूल के तृतीय और अन्तिम वर्ष में थी। इसलिए उसे निम्न स्कूलों की अपेक्षा अच्छे कपड़े पहनने पड़ते थे। जार्ज बर्टन मुझे जो बारह डालर प्रति मास देते थे वह परिवार के लिए बड़ा उपयोगी होता था। जाड़ा बहुत कठोर पड़ रहा था तिस पर भी कुछ ऐसी कठिनाई थी कि मैं अपने वेतन से एक जोड़ा फेल्ट बूट खरीदने के लिए दो डालर नहीं ले सकता था, ओवर शू खरीदने के लिए मैं एक डालर भी नहीं ले सकता था। जब मैं दूध बेचने जाया करता था तब मेरे पैर नम और ठिठुरे रहते थे और उनमें तेज दर्द होता था। यदि पंसारी के गर्म स्टोव के पास मैं पाँच मिनट तक न रुकता या यदि कोई स्त्री मुझे घर के भीतर जाकर हाथ पैर सेंकने के लिए निमंत्रण न देती तो बहुत दिनों तक मेरे पैर चलने योग्य न रहे होते। मेरे पैर में जो दर्द होता रहता था उसके लिए मैंने एक नया शब्द सीखा, "बेवाई"।

एक बार मुझे श्री बर्टन के पास पहुँचने में दस मिनट की देर हो गई जहाँ वह फेल्ट बूट पहनकर अपनी गाड़ी में बैठे थे। उन्होंने कहा, "आज तुमने बहुत विलम्ब किया।" मैंने उनसे कहा, "मेरे पैर लगभग जम गये थे और उन्हें गर्म करने के लिए मुझे रुक जाना पड़ा।" उन्होंने पूछा, "मेरी तरह तुम भी एक जोड़ा फेल्ट बूट क्यों नहीं खरीद लेते हो?" मैंने उत्तर दिया, "हमारे परिवार में आर्थिक कठिनाई है और मैं दो डालर नहीं बचा सकता।" श्री बर्टन ने नाक से जोर से साँस ली और ऐसी अविश्वसनीयता प्रकट की मानो वह मेरी बात न समझ रहे हों और मुझे विश्वास है कि वह नहीं समझ सके थे।

श्री बर्टन न तो कभी अपने विनोद के लिए गाते थे और न कभी मुझे गाना सुनाते थे, कभी मुझसे हँसी नहीं करते थे, कभी हास्यपूर्ण कहानी नहीं कहते थे, जो कुछ समाचार-पत्रों में छपता था या बाजार की गप के विषय में कभी कुछ नहीं कहते थे, कभी कोई बाजा न तो बजाते थे और न कभी कहते थे कि उन्होंने कोई बाजा सुना था। जिन पुरुषों या स्त्रियों को वह पसन्द करते थे उनके विषय में या विचित्र अथवा नीच गाहकों के विषय में कभी बात नहीं करते थे। कभी-कभी मैं सोचता था कि क्या जार्ज बर्टन कभी लड़के नहीं थे। जब कभी मैं उनसे बात करने का प्रयास करता था जैसा कि एक लड़का एक आदमी से कर सकता है तब वह बीच ही में मुझे रोक देते थे अथवा कुछ न बोलते थे मानो मैंने उनसे कुछ कहा ही नहीं था। परन्तु वह उस आदमी से दस या पन्द्रह मिनट तक बातें करने के लिए घोड़ागाड़ी रोक देते थे जो एक हल्की दो पहियों-वाली गाड़ी में एक तेज दौड़नेवाला घोड़ा हाँकता था। वे बराबर घोड़ों के विषय में बातें करते रहते थे।

मैंने यह समझ लिया कि श्री बर्टन दूध का व्यवसाय करने से न तो लज्जित थे और न उन्हें उस पर गर्व था। उनको अपने दो-तीन घोड़ों पर गर्व था जिनसे उन्हें आशा थी कि वे उनका नाम विख्यात कर देंगे। वह आशा करते थे कि दूध के व्यापार से उन्हें इतना काफी लाभ होगा जिससे वह कुछ और घोड़े खरीद सकेंगे जो विश्व का रेकार्ड तोड़ देंगे। एक दिन मैं अपने मन में कह रहा था, "वह लड़कों को नहीं जानते और यदि आप लड़कों को नहीं जानते तब आप बछेड़ों को नहीं जान सकते और यदि बछेड़ों को नहीं जानते तब आप विख्यात अश्व-पालक हो नहीं सकते।"

प्रति दिन उनको रुष्ट और गम्भीर देखते-देखते मैं ऊब गया और

१८९३ के प्रारम्भिक भाग में जब उन्होंने मेरा मासिक वेतन चुकता कर दिया था, तब मैंने उनसे कहा, "मेरा विचार है कि मैं आप के यहाँ काम न करूँ।" उन्होंने कहा, "अच्छी बात है, मेरी समझ में इससे मुझे कोई हानि न होगी।" मैं उनको दो तीन उत्तर दे सकता था परन्तु मैं शान्त रहा और उन्हें केवल विदाई का नमस्कार करके वहाँ से चला गया।

ग्यारहवाँ परिच्छेद

रोजगार और बेरोजगारी

मेन स्ट्रीट से अर्द्धभवन-समूह दक्षिण में सेमिनरी स्ट्रीट पर लकड़ी की एक इमारत में राँगों और टिन का काम करनेवाले की दूकान थी जो किराये पर चलनेवाली मालगाड़ी के रसोईघर से बड़ी नहीं थी और जिसके तख्तों पर से पालिश का रंग उड़ रहा था। उसकी खिड़की पर साइनबोर्ड लगा था, "यहाँ सब प्रकार का टिन का काम किया जाता है।" मैंने टिन का काम करनेवाले को प्रायः भीतर जाते और बाहर आते देखा था। वह मझोले कद का छोटा आदमी था। उसके कपड़े उसके शरीर पर ढीले-ढाले लटके रहते थे और उसके सिर पर एक सिकुड़ा हुआ टेढ़ा हैट रहता था। उसके बाल कटाने योग्य हो गये थे और वे हैट के एक सूराख में

से होकर बाहर निकले रहते थे। मैं जानता था कि वह इस दुकान में एक वर्ष या इससे कुछ अधिक समय से रह रहा है और लोग इसके पास राँग का काम कराने के लिए आया करते हैं।

अक्टूबर के महीने में एक दिन मैं दरवाजा खोलकर अन्दर गया और पूछा कि क्या आपके यहाँ मेरे करने योग्य कोई काम है। बिना यह पूछे हुए कि क्या तुम्हें इस काम का अनुभव है, या तुम्हारे पास कोई सिफारिश है या इससे पहले तुम कहाँ काम करते थे, उसने कहा, "तुम कल प्रातःकाल सात बजे यहाँ काम आरम्भ कर सकते हो।" फर्श में बने हुए एक सूराख को आधा मिनट देखकर उसने कहा, "मैं तुम्हें प्रति सप्ताह तीन डालर दे सकता हूँ। कल प्रातःकाल सात बजे आना।" उसने मुझसे मेरा नाम नहीं पूछा। मैं भी उसका नाम नहीं जानता था।

दूसरे दिन प्रातःकाल सात बजे मैं दूकान पर पहुँच गया। मैंने देखा कि दूकान में ताला बन्द है। वहाँ रुककर मैं प्रतीक्षा करने लगा। आठ बजे के लगभग वह एक घोड़े की गाड़ी में आया। हमने कुछ सामान गाड़ी पर लादा और गाड़ी को हाँककर ब्राड स्ट्रीट में गेल्सबर्ग के विख्यात फोटो खींचनेवाले आसगुड के घर पहुँचे। हमने सीढ़ियाँ लगाईं और रसोईघर की नीची, ढालू और टिन की बनी हुई छत पर चढ़े। मैंने पुरानी और टूटी हुई टिन की चादरें ढीली करने, सीढ़ी के पास और फिर नीचे जमीन पर ले जाने में उसकी सहायता की।

बारह बजे मालिक ने कहा कि अब हम काम बन्द कर सकते हैं। मैं कागज के झोले में जो खाना ले गया था उसको मैंने खाया। दो बजनेवाले थे जब मालिक आया। पहले मुझे निश्चित ज्ञान

नहीं था किन्तु इस बार मुझे उसकी साँस से ह्विस्की की बू निकलती हुई मालूम हुई। वह सीढ़ी पर टटोल-टटोलकर चढ़ रहा था। एक बार उसके पैर फिसल गये परन्तु उसके हाथ कसकर पकड़े रहे और वह छत पर चढ़ गया। मैं टाँका लगानेवाला सामान लेकर उसके पीछे-पीछे जा रहा था। मैं दो बार नीचे जाकर टिन की नई चादरें ऊपर ले गया। उसने दो या तीन चादरें जोड़ीं और चार बजे के करीब कहा, "अब हम काम बन्द करेंगे।"

दूसरे दिन प्रातःकाल सात बजे मैं दूकान पर हाजिर हो गया। जब नौ बजने के करीब था तब मेरा मालिक गाड़ी में आया। उसके मुँह से ह्विस्की की बू अब भी निकल रही थी। हम फिर गाड़ी में बैठकर आसगुड के घर गये और उसने छत पर सम्भवतः तीन या चार चादरें जोड़ीं। बारह बजे उसने कहा, "आज हम और काम न करेंगे।" मैं प्रसन्न हुआ। वह फिर सीढ़ी पर फिसल गया था और एक बार छत से करीब-करीब लुढ़क चुका था। दूसरे दिन प्रातःकाल मैं दूकान पर आठ बजे पहुँच गया, दस बजे तक प्रतीक्षा की। कुछ देर तक मेन स्ट्रीट में इधर-उधर घूमता रहा, ग्यारह बजे वापस गया और फिर बारह बजे गया परन्तु तब भी दरवाजे पर ताला बन्द था।

वहीं और उसी समय मैंने निश्चय किया कि मुझे राँग और टिन का काम करने के व्यवसाय के सीखने की आवश्यकता नहीं है। मुझे टिन का काम करनेवाले उस व्यक्ति के लिए खेद था और मैंने कहा, "मैं वापस जाकर उससे अपना वेतन नहीं मागूँगा। उसका अन्त बहुत निकट है।" कुछ सप्ताह के पश्चात् मैंने देखा कि दूकान बन्द हो गई है और साइनबोर्ड "यहाँ सब प्रकार का टिन का काम किया जाता है" हट गया है।

जब मैंने एक सोडावाटर और लेमोनेड आदि बनाकर बोतलों में भरनेवाले कारखाने में बोतल धोने का काम करना आरम्भ किया तब मैं जान गया कि इस काम के करने से भविष्य में मेरी कोई उन्नति नहीं हो सकती। आप प्रातःकाल और तीसरे पहर उसी प्रकार की बोतलें धोते हैं जैसी आपने कल धोई थीं और जैसी आप कल धोवेंगे। आप इस्तेमाल की हुई बोतलों को भीतर आते देख सकते हैं और धुली हुई बोतलों को बाहर जाते देख सकते हैं। यही कार्यक्रम प्रातः सात बजे से शाम को छः बजे तक जारी रहता था। जब वे आपको काम में लगाते थे तब उसके विषय में एक बात आपसे कहते थे; आप जितना लेमोनेड आदि चाहें उतना पी सकते हैं। मैं बोतलों की बोतलें पीने लग गया। चौथे दिन मैंने उस गैसयुक्त बोतल को पीना बन्द कर दिया। मैंने इतना पी लिया था जो मेरे जीवन भर के लिए पर्याप्त था। दो सप्ताह के बाद मैंने उस काम को छोड़ दिया। मुझे लेमोनेड आदि की बोतलों का भीतर आना और बाहर जाना देखना अच्छा नहीं लगता था और रोज-रोज वही काम करना भी मुझको अच्छा नहीं लगता था।

पतझड़ के अन्तिम भाग और जाड़े में मैं हार्वे एम० क्रेग के अत्तारखाने में काम करता था। मेरे पास उसकी चाभी रहती थी। मैं सात बजे प्रातःकाल उसका दरवाजा खोलता था। मैं स्टोर और नुस्खे लिखे जानेवाले कमरे के फर्श पर झाड़ू लगाता था और साढ़े सात बजे के करीब दवायें बेचनेवाले श्री हिनमन आते थे। मैं पहाड़ी हिरण का चमड़ा लेकर शो केसों को पोंछता था। नुसखा लिखे जानेवाले कमरे से खाली बोतलों को निकालकर मैं तहखाने में जाता था और विभिन्न प्रकार की शराबों के पीपों

की टोटियाँ खोलकर बोतलें भर लेता था। वहाँ पर मैंने पहली पोर्ट वाइन और क्लेयरेट का स्वाद लिया और मुझे मालूम हुआ कि उसका स्वाद मेरी आशा की अपेक्षा अच्छा है यद्यपि मुझे अब भी सन्देह था कि मुझे उनसे हानि होगी। मैंने ह्विस्की चखी और निर्णय किया कि मुझे यह नहीं पीना चाहिए। सबसे बड़ी बोतलों से जो तीन या चार फुट ऊँची थीं और जिनका शीशा दो या तीन इंच मोटा था, मैं गन्धक का तेजाब, नमक का तेजाब, लकड़ी की शराब, टरपेन्टाइन और अन्य चीजें उँडेलता था। जिनकी ऊपर आवश्यकता रहती थी।

नौ बजे हार्वे क्रेग सामने के दरवाजे से भीतर आते थे उनकी स्त्री लगभग सदैव उनके साथ होती थीं। श्री क्रेग मजे के मोटे-ताजे आदमी थे यद्यपि वे इतने भारी-भरकम नहीं थे जितने उनके पिता इलिनोइस स्टेट सुप्रीम कोर्ट के जस्टिस ए० एम० क्रेग थे। उनका चेहरा उनके पिता के चेहरे से कुछ-कुछ मिलता था—मुख कठोर था और ओठों के सिरे जरा नीचे की ओर झुके थे। वह मेरे और हिनमन के ऊपर दयालु थे यद्यपि जब वह वहाँ होते थे तब किसी प्रकार का हँसी-मजाक या खेल कूद नहीं होता था। उनकी स्त्री उनकी बगल में छोटी दिखाई पड़ती थीं। उनमें शान्ति और सौन्दर्य था। साधारणतया वह दोपहर के पहले वहाँ से चली जाती थीं।

मैं श्री हिनमन के साथ काम करना पसन्द करता था। वह इकहरे बदन के थे। उनका रंग कुछ गहरा था। उनकी साफ छोटी और काली मूँछ एडगर एलन पो की मूँछ से मिलती थी। जब उनका मुँह मुस्कराता था तब उनकी आँखें भी मुस्कराती थीं। औषधियाँ बनाने में उन्हें रुचि थी। उन्हें इस बात पर गर्व था कि

वे औषधियाँ और शराब बनाते हैं। जो नई-नई दवाइयाँ निकलती रहती थीं, वह उनका अध्ययन किया करते थे। वह बड़े विनोदी व्यक्ति थे। वह एक लड़के की कहानी कहना पसन्द करते थे जो एक अत्तारखाने में गर्मी के रविवार को गया और दस सेण्ट का ऐसाफीटिडा माँगा। अत्तारखाने का लिपिक सीढ़ी पर चढ़कर एक ताक से एक बोतल लेकर उतरा। उसने दस सेण्ट का ऐसा-फीटिडा तौला और चढ़कर फिर बोतल को उसके स्थान में रख दिया। तब फिर उतरकर उसने ऐसाफीटिडा को लपेटा और पुड़िया लड़के को दे दी। लड़के ने कहा, "इसका कैश मेमो बना दीजिए।" लिपिक ने पूछा "क्या नाम है?" लड़के ने कहा, "आगस्ट शिमेल डरफर।" इस पर लिपिक चिल्ला पड़ा। "तुम छोटे शैतान, भागो यहाँ से। मैं दस सेण्ट के लिए ऐसाफीटिडा और शिमेल डरफर की हिज्जे नहीं लिखूँगा।"

नुसखा बनानेवाले कमरे में एक बड़ी और मोटी किताब थी। बेब्सटर्स अनऐब्रिज्ड डिक्शनरी के सिवाय मैंने दूसरी कोई उतनी बड़ी और मोटी किताब नहीं देखी थी। उस किताब का नाम सामने और पीछे के कवर पर छपा था: दी फार्मेकोपिया। जितनी भी औषधियाँ हैं उन सबका नाम उसमें लिखा था। और यह भी लिखा था कि उनका प्रभाव मनुष्य के ऊपर क्या पड़ेगा। मैं उसे यत्र-तत्र पढ़ता था। जो कुछ मैं पढ़ता था उसके विषय में मैं श्री हिनमन से प्रश्न पूछता था। वह बहुत धैर्य और कृपा के साथ मेरी बातें सुनते थे और उनका उत्तर देते थे। वह अपनी विद्या को एक नवयुवक को सिखाना पसन्द करते थे जिसके हृदय में इतनी आशा भरी थी जिनका पूर्ण होना सम्भव नहीं था।

एक जाड़े की ऋतु में एक या दो महीने तक मैं डाक द्वारा

सामान खरीदने और बेचने के व्यवसाय पर विचार करता रहा। जान जोडीन ने मेरे मन में उसके लिए उत्कट इच्छा पैदा कर दी थी। उसने अनेक साप्ताहिक और मासिक पत्रिकाएँ ली थीं जिनमें मेल आर्डर बिजिनेस के विज्ञापन भरे पड़े थे। उसने आगस्टा, मेन में "कामोफर्ट" को दिखलाया जिसके लाखों गाहक थे। देश में उसके बराबर और किसी समाचार-पत्र का प्रचलन नहीं था। इसके स्तम्भों में औषधियों मुर्गी के बच्चों, काजू, आईवाश, औजारों के झोलों, चाकू, संगीत के बक्सों, खिलौनों, सस्ती घड़ियों, पेनी दामवाली पेन्सिलों आदि के विज्ञापन भरे रहते थे। जान कहता था कि अनेक लोग मेल आर्डर बिजिनेस करके धनी हो गये हैं, अनेक आदमियों ने केवल छोटे से छापेखाने से यह व्यवसाय आरम्भ किया था परन्तु आज करोड़पति हो गये हैं। जान ने कहीं पाँच या दस डालर देकर टाइप का एक सेट और एक छोटा सा प्रेस खरीदा था जिससे पाँच इंच लम्बा और चार इंच चौड़ा कागज छपता था। जो दो या तीन डालर मैंने बचाये थे उसको मैंने इस योजना में लगा दिया। मैं छोटा साझीदार था, और लाभ में मुझे उतना ही प्रतिशत हिस्सा मिलता जितनी मैंने पूँजी लगाई थी।

हम लोग एक "मेल आर्डर जरनल" छापने जा रहे थे। जान कहता था, "इसमें केवल विज्ञापन के लिए स्थान रहेगा, इसलिए हम इसे बेचने की आशा नहीं कर सकते। चन्दे का मूल्य एक सेंट भी नहीं होगा, इसलिए हम अपने मेल आर्डर जरनल का यही नाम रक्खेंगे।" हमने उसकी पचास या साठ प्रतियाँ छापीं और विज्ञापन तथा विक्री के क्षेत्र में इस नवीन प्रकाशन के पहले पृष्ठ पर उसका नाम था—नाट ए सेन्ट। हमने फिर उसका अंक छापा। जो

कुछ विज्ञापन हमने उसमें छापा था वह सब मुझे भूल गया है। किन्तु मुझे यह निश्चित रूप से याद है कि हमने "थोड़ी इस्तेमाल की हुई एक वाटरबरी घड़ी" "थोड़े इस्तेमाल किये हुए दो चाकू" और "थोड़ी इस्तेमाल की हुई कई किताबें" बेचने का प्रस्ताव किया था। हमारे पास इतने पैसे नहीं थे कि हम अपने "मेल आर्डर जरनल" को डाकखाने के द्वारा भेज सकते। मित्रों और अनजान पुरुषों में हमने यत्र-तत्र आधी से अधिक प्रतियाँ बाँट दीं और शेष रख लीं जिससे उनको देखकर हम कह सकें कि "हम प्रकाशक हैं।"

जोडीन परिवार क्यू० मार्गों के पूर्व में मजदूरों के पड़ोस में उत्तर की तरफ चला गया था। हम ठंढे दिनों में अपने ओवर कोट पहनकर धान्य गार के सूखी घास रक्खे जानेवाले कमरे में छपाई करते थे और शरीर को गर्म करने के लिए प्रायः घर में चले जाया करते थे। मुझे नगर में से होकर एक मील पैदल जाना पड़ता था। मैं जोडीन रसोईघर में जान के साथ खाना खाता था। मेल आर्डर व्यवसाय के आरम्भ से अन्त तक जान हँसता था। निस्सन्देह हमारे मस्तिष्क के दूरवर्ती कोने में हमारी क्षीण प्रकाशवाली आशा थी कि शायद संयोग से अकस्मात् कोई ऐसी बात हो जाय, जैसी छोटी पूंजी से आरम्भ किये हुए व्यवसाय में प्रायः हुआ करती है, कि हम लोग सम्पन्न हो जायँ। जब हमने इस व्यवसाय को बंद किया, जब "नाट ए सेन्ट" का प्रकाशन बंद हो गया, तब भी हम उसी तरह हँसते थे जैसे हम उस समय हँसते थे जब हमने इस व्यवसाय का श्रीगणेश किया था।

वह ग्रीष्म ऋतु आई जब मैं कुम्हार का व्यवसाय सीखनेवाला था। डे स्ट्रीट के पूर्व, पियोरिया मार्गों के निकट कुम्हार की एक दूकान थी जो एक या दो वर्ष से चल रही थी। पहली मंजिल पर

चाक चलानेवाले लोग थे। चाक चलाने के लिए आपको वास्तविक कुम्हार बनना होता था जिसने अपना व्यवसाय सीखा था। चाक चलानेवाले की बगल में बेंच पर लोंदा बनानेवाला बैठता था। मैं लोंदा बनानेवाला था। मैं लकड़ी के एक तराज़ू पर इतनी मिट्टी तौलता था जो एक सुराही बनाने के लिए काफी हो। मैं इस लोंदे को बिना उँगली से छुये हुए बेंच पर फेंकता था। उँगलियों से वह ऊपर हवा में इतने जोर से नहीं उछाला जा सकता था कि नीचे आकर वह एक तार पर इस प्रकार गिरे कि वह दो बराबर भागों में बँट जाय। यह काम करने के लिए आपको विशेष चतुराई के साथ अपनी कलाइयों को कड़ी करना होता था और अपनी हथेलियों के निचले भागों से मिट्टी को सानना होता था। मुझे चेतावनी दी गई थी कि एक या दो सप्ताह तक मेरी कलाइयों में दर्द होगा परन्तु दस दिन में यह दर्द ठीक हो जायगा और मैं अन्य लोंदा बनानेवालों के साथ इस प्रकार बातचीत कर सकूँगा मानो मैं भी उनमें से एक हूँ।

जो लोंदा मैं सानता था उसकी शक्ल केक की तरह होती थी। जैसी बड़ी या छोटी सुराही बनानी होती थी वैसा ही बड़ा या छोटा लोंदा होता था। चाक घुमानेवाला उसको लोहे के चाक पर रखता था, उस पर पानी छिड़कता था, और खुरचने के एक यंत्र की सहायता से सुराही बना देता था। तब वह घूमते हुए चाक को रोक देता था। और हाथ से दस्ता बनाकर सुराही पर चिपका देता था। इसके बाद मैं सावधानीपूर्वक सुराही को चाक से हटा देता था और उसे निकट के एक टाँड़ पर सूखने के लिए रख देता था। तब पकाने के लिए उसे गुम्बदनुमा एक भट्ठे में ले जाते थे जो इमारत के बाहर बनता था।

दूसरी मंजिल पर ढालनेवाले लोग थे जो चाक चलानेवालों

से भिन्न श्रेणी के थे। वे घूमते हुए चाक पर प्लास्टर आफ पेरिस के साँचों में मिट्टी रख देते थे और घड़े या बर्तन और साँचे के भीतर की मिट्टी खुरच देते थे। शेष काम चाक कर देता था।

एक दिन प्रातःकाल मैं जलपान करने के लिए नीचे गया और सुना कि मिट्टी के बर्तन बनाने की दूकान रात में जल गई। मैं बाहर गया और धुएँ से भरी हुई दीवारों के चारों ओर घूमकर देखा कि आग ने उसे राख कर डाला है। मैंने तुरन्त निर्णय किया कि मैं कुम्हार का व्यवसाय नहीं करूँगा।

जार्ज झील के किनारे से जानेवाली मुख्य सड़क पर एक ढालू पहाड़ी थी जिस पर से उतरते समय ट्रक-कार चलानेवाले ब्रेक लगा देते थे। ऊपर चढ़ते समय बड़ी कठिनाई होती थी। इसलिए लोगों ने पहाड़ी की ढाल को कम करने का निर्णय किया। मनुष्य स्क्रेपर में खच्चर जोतकर ढाल को खोदते थे। एक आदमी खच्चरों को रोकता था और दूसरा स्क्रेपर के दस्तों के बीच में चलता था। जब स्क्रेपर का बड़ा फावड़ा भर जाता था तब वे घूम-कर पहाड़ी के नीचे मिट्टी फेंक देते थे। वे यह करते रहे और अन्त में पहाड़ी पर एक लम्बा ढाल बन गया। ग्रीष्म ऋतु में तीन सप्ताह तब मैं इस काम में पानी-पाँड़े था। मैं एक पम्प से दो बाल्टी पानी ले जाता था। हर बाल्टी के साथ टिन के दो प्याले थे। वहाँ काम करनेवालों में से कुछ लोग मुझे "सोनी" कहते थे। कोई कहता था "इधर आओ, सोनी"। कोई कहता था, "उसमें से कुछ पानी मुझे दो, सोनी", और कोई पुकारता था, "सोनी, तुम उस आदमी के पास जाओ जो सचमुच प्यासा है।" फिर समय-समय पर खच्चरों को भी पानी देना होता था। मैं मनुष्यों का पानी पाँड़े होना पसन्द करता था परन्तु खच्चरों के लिए पानी पाँड़े होना मुझे नहीं अच्छा

लगता था। एक खच्चर प्राय: पूरी बाल्टी पानी पी जाता था और पम्प सौ गज की दूरी पर था।

एक वर्ष ग्रीष्म ऋतु में मैंने श्री विन्फील्ड स्काट कोवन के यहाँ काम किया जो जार्ज झील पर किराये पर नावें चलवाते थे और उस स्थान के निकट उनका जलपान-गृह था जहाँ ट्रक और कार रुकते थे। श्री कोवन ने जार्ज डब्ल्यू० ब्राउन की एक लड़की से विवाह किया था और ब्राउन कार्नप्लान्टर वर्क्स के सामने सड़क के उस पार एक बड़े मकान में रहते थे। वह मझोले कद के आदमी थे। उनकी मूँछ गहरे बादामी रंग की थी और वह जानते थे कि इस व्यवसाय को कैसे चलाना चाहिए। वह उसके हर एक ब्यौरे को जानते थे। इसलिए वह सदा किसी न किसी बात में व्यस्त रहते थे जो सुलझती हुई नहीं दिखाई पड़ती थी। यदि कुछ गड़बड़ी हो जाती थी तब वह इस प्रकार सावधानी से काम करते थे मानो कोई और भी गड़बड़ी शीघ्र होनेवाली है।

मेरा काम पच्चीस सेण्ट प्रति घंटे के हिसाब से लोगों को नावें किराये पर देना था। मैं उनको डाँड़ देता था, नाव चुनने में उनकी सहायता करता था और तब नाव को धक्का देकर गहरे पानी में ढकेलने में उसे सहायता पहुँचाता था। जलपान भी मेरे सुपुर्दगी में रहता था और मैं उनको आइसक्रीम, केक, कुकी, लेमोनेड और सोडावाटर, अदरक की शराब और कैन्डी बेचता था।

छोटी स्टीम बोट श्री बाबिट के चार्ज में थी। उसमें दस-बारह आदमी बैठ सकते थे। झील के दूसरे किनारे पर जाने और वापस आने के लिए पच्चीस सेण्ट लगते थे। लोग कहते थे कि वह नाक्स काउन्टी की सबसे सुन्दर बोट है और चूँकि नाक्स काउंटी में दूसरी कोई स्टीमबोट नहीं थी। इसलिए यह गम्भीर सत्य था। उसका

नाम लेडी वाशिंग्टन था। श्री बाबिट दिन भर भाप तैयार रखते थे। कभी-कभी उनके पास इतने मुसाफिर हो जाते थे जितनों को वह बैठा सकते थे और कभी-कभी उनकी बोट पर सवारी करने के लिए कोई भी नहीं आता था। श्री बाबिट का कद पूरा था। वह लम्बे थे। उनके कंधे चौड़े और शरीर मोटा था। वह अपना काम शीघ्रतापूर्वक करते थे और ऐसा मालूम होता था कि वह जानते थे कि क्या हो रहा है और क्या करना चाहिए। उनकी मूँछ हल्के रंग की थी। उनकी आँखें तीव्र और प्रकाशपूर्ण थीं। वह अँगरेज थे और मैंने सुना था कि वह कहीं पर पुलिस के सिपाही रह चुके थे। मुझे विश्वास है कि वह प्रथम कोटि के पुलिसमैन रहे होंगे। उनका साथ आनन्दप्रद होता था और वह कहते थे, "जब चिन्ता करने का समय होता है तब मैं चिन्ता करता हूँ और कभी-कभी जिस वस्तु को आप नहीं जानते वह सहायक सिद्ध होती है।"

मौसम के अन्त में हर छोटी-मोटी बात के लिए परेशान होनेवाले श्री विन्फील्ड स्काट कोवन के यहाँ नौकरी छोड़ने से मुझे कोई खेद नहीं हुआ। परन्तु श्री बाबिट का साथ छोड़ना वैसा अच्छा न लगा। वह कहते थे मुझे आशा है कि पतझड़ और जाड़े में रात को पहरा देने के लिए एक चौकीदार की आवश्यकता होगी। मैंने कहा मैं आशा करता हूँ कि मैं आपसे फिर मिलूँगा यद्यपि मैं उनसे फिर कभी नहीं मिला।

एक जनवरी के महीने में जार्ज झील पर दो सप्ताह तक खूब बर्फ पड़ी। थर्मामीटर शून्य से पन्द्रह अंश की गर्मी प्रकट करता था। घर से छः भवन-समूह पैदल चलकर मैं एक स्ट्रीटकार में सवार हुआ जो डेढ़ मील चलकर झील पर पहुँचती थी। रात को काम करनेवाले मनुष्यों का झुंड सात बजे शाम से छः बजे प्रातःकाल तक

काम करता था। आधी रात को उनको एक घंटे का अवकाश मिलता था।

बारह से अठारह इंच मोटी बर्फ जमी थी। बर्फ काटने के लिए लोग आइस कटर्स नामक यंत्र घोड़ों से खिचवाते थे। पहले सप्ताह में मैं वहाँ "फ्लोटर" था। बर्फ काटकर लगभग पन्द्रह फुट लम्बे और दस फुट चौड़े बर्फ के बेड़े बनाये गये थे। फ्लोटर एक बेड़े पर खड़ा होता था और दो काँटोंवाले डंडे से धक्का देकर बेड़े और अपने को बर्फ रखनेवाले बड़े मकान के निकट ढालू मार्ग के आधार पर ले जाता था वहाँ बर्फ को टुकड़ों में तोड़ देते थे और एक पट्टी उनको खींचकर ऊपर ले जाती थी जहाँ वे पंक्तियों में रक्खे जाते थे और उनके ऊपर लकड़ी का बुरादा छिड़क दिया जाता था जिससे वे ग्रीष्म ऋतु और गर्म मौसम तक ठंडे बने रहें।

मेरे पास ओवर शू और गर्म कपड़े थे और मुझे यह काम करने में आनन्द आता था। हवा ताजी थी और जब कभी हम ऊपर देखते थे तब तारों से भरा हुआ निर्मल आकाश हमें दिखाई पड़ता था। कभी-कभी हमें टूटता हुआ तारा और चमकते हुए तुषार की पतली पर्त दिखाई देती थी। इसके पहले मैंने कोई भी रात का ऐसा काम नहीं किया था जिसमें मुझे सूर्योदय तक जागना पड़ता हो। रात को आकाश में जो कुछ घटित होता है उससे मेरा थोड़ा सा परिचय हो गया, कैसे विगडियर चलता है और कैसे तारों का विस्तार और क्रम रातभर बदलता रहता है। मैं सोचता था कि कैसे तारों के विस्तार और स्थान में परिवर्तन होता रहता है और हम जो लोग खड़े होकर ऊपर देखते हैं वह कितने छोटे हैं।

दूसरे फ्लोटर लोग अच्छे व्यक्ति थे और हम लोग अंधकार-पूर्ण पानी के ऊपर चिल्लाकर एक दूसरे को सतर्क करते थे कि यदि

तुम पानी में गिरोगे तो देखोगे कि वह कितना ठंडा है। आधी रात को हम ढाल पर चढ़कर शौकीन लोगों के सोनगोटहा क्लब हाउस में जाते थे। जिस तरफ हवा बहती थी उससे दूर बरसाती में हम जो कुछ कागज के झोलों में ले गये होते थे उसे खाते थे।

दूसरे सप्ताह मैं बर्फ के मकान में रक्खा गया जहाँ हममें से एक दर्जन लोग बर्फ के टुकड़ों पर काम करते थे। ढालू मार्ग से हमारे पास बर्फ के टुकड़े आते रहते थे। हर एक टुकड़ा लगभग तीन फुट लम्बा, दो फुट चौड़ा और एक फुट मोटा होता था। हम अपने लोहे के चिमटों को बर्फ के टुकड़े के सिरों में घुसेड़ देते थे और कठिन परिश्रम के साथ उसे बीस या तीस फुट घसीटकर एक स्थान पर ले जाते थे जहाँ वह अन्य टुकड़ों की पंक्ति में बराबर खड़ा कर दिया जाता था। वह बड़ा कठिन काम था। मैं अपनी पीठ और कंधों की मांसपेशियों का पूरा बल लगाकर खच्चर की तरह खींचता था। इसके पहले मुझे कभी यह विश्वास नहीं होता था कि मैं जो कुछ कर रहा हूँ वह खच्चरों या मशीनों के द्वारा और अच्छी तरह किया जा सकता है। जब मैं पहले दिन प्रातःकाल घर गया तब घुट्टी से लेकर गर्दन तक मेरी मांसपेशियों में दर्द हो रहा था। जलपान करने के बाद मैं सीधा सोने के लिए घर गया और बिस्तर पर पड़ा निद्रा का आह्वान करता रहा। परन्तु मांसपेशियों में ऐंठन होती थी और दोपहर से अधिक समय हो गया जब मुझे नींद आई। तब मांसपेशियों में झुनझुनी होने के कारण तीन या चार बार मैं एकाएक जग जाता था। जब मेरी माँ ने मुझे जगाकर कहा, "काम पर जाने का समय हो गया है," तब मुझे ऐसा प्रतीत होता था कि अभी-अभी मैंने सोना आरम्भ किया है। किसी तरह मैं जागा, धीरे-धीरे बिस्तर से नीचे आया और अपने कपड़े पहने।

दूसरी रात और भी खराब थी। मैं ढालू मार्ग तक धीरे-धीरे वापस जाकर आराम करने की चेष्टा करता था। यदि मैं दो-तीन मिनट चुपचाप खड़ा होकर आराम करने का प्रयत्न करता था तब फोरमैन मेरे पास शान्तिपूर्वक आकर ऐसे धीमे स्वर में कहता था, "सैण्डबर्ग अच्छा हो यदि काम में लग जाओ" जो ढालू मार्ग में बर्फ के टुकड़ों की खड़खड़ाहट और जल्दी-जल्दी आते-जाते मनुष्यों के शोर में मुझे सुनाई पड़ जाता था। यदि उसने चिल्लाकर या गुर्राकर मुझसे ऐसा कहा होता तब मैं उस काम को तुरन्त छोड़ देता। परन्तु उसे मेरा नाम याद था और मैं केवल एक संख्या नहीं था, बल्कि एक व्यक्ति था। और वह इस प्रकार मुझसे कहता था, "अच्छा हो यदि काम में लग जाओ" जैसे मेरी माँ मुझे नींद से जगाकर काम पर जाने के लिए कहती थीं। मैं उसका सम्मान करता था और आशा करता था कि कभी मैं भी फोरमैन हो जाऊँगा और तब उसी की तरह व्यवहार और बातें करूँगा।

सूर्योदय के लगभग मैंने अपने मन में सोचा, "किसी तरह सात बजे और मैं काम छोड़ूँ।" मैं अभी उसके विषय में सोचता हुआ और विश्राम प्राप्त करता हुआ शान्त खड़ा ही था कि फोरमैन मेरे पास आ गया। उसने कहा, "सैण्डबर्ग, अच्छा होगा यदि काम में लग जाओ। तुम जानते हो कि तुम्हें यह काम कुछ ही दिन और करना है। मैं समझता हूँ कि इस सप्ताह में काम समाप्त हो जायगा।" इससे मेरी भावना में परिवर्तन हो गया। मैं घर जाकर पहले की अपेक्षा अच्छी तरह सोया, अच्छी तरह भोजन किया। और मेरी मांसपेशियाँ पहले की तरह दर्द नहीं करती थीं। मैंने पूरे सप्ताह भर काम किया और प्रति रात एक डालर और पच्चीस सेण्ट के हिसाब से मैंने पहले किये हुए सब

कामों की अपेक्षा अधिक धन कमाया। एक चीज मैंने देखा। मैं आवश्यकता से अधिक जल्दी मचाता था। उस काम को करनेवाले अधिकांश दूसरे लोग रेल रोड सेक्शन में काम करनेवाले, खाई खोदनेवाले और गदाला और फावड़ा चलानेवाले आदमी थे और वे उस बात को जानते थे जिनका स्मरण मेरे पिता काम करते समय मुझे कभी-कभी कराया करते थे। "शोली, धीरे-धीरे काम करो।" वे धीरे-धीरे और आराम से काम करते थे जिसे मैंने नहीं सीखा था।

मेरी अवस्था सोलह या सत्रह वर्ष की थी जब विलियम्स रेस टैक्स में छः सप्ताह तक होनेवाली घुड़दौड़ में मैं पानी ले जाता था, समाचार पहुँचाता था और कभी-कभी घोड़े का पसीना पोंछने और सुखाने में सहायता देता था। चौथाई और आधा डालर करके जो कुछ मैंने कमाया था वह सब मिलकर सम्भवतः दस डालर तक हो गया था। इसके अतिरिक्त मुझे एक पास मिला था जिससे मैं घुड़दौड़ के मैदान के अन्दर किसी समय जा सकता था और संसार के सबसे प्रसिद्ध दुल्की दौड़नेवाले और कदम चलनेवाले घोड़ों को मैंने निकट से देखा था।

सी डब्ल्यू० विलियम्स गेल्सबर्ग में इंडिपेन्डेन्स, आयोवा, से आये थे जहाँ लोग कहते थे कि उनका पतंग के आकार का घोड़दौड़ का मैदान है यद्यपि कुछ लोग कहते थे उसका आकार संख्या आठ से अधिक मिलता-जुलता है। वह टेलिग्राफ आपरेटर रह चुके थे और दो घोड़ियाँ ऐसे दामों पर ली थीं जो बाद में मूर्खतापूर्ण मालूम होते थे। विश्व-विख्यात घोड़े ऐक्सटेल और अलर्टन इन्हीं दोनों घोड़ियों के बच्चे थे जो "एक गीत पर खरीदी गई थी।" १८८९ में तीन वर्ष आयुवाले ऐक्सटेल ने विश्व के घोड़ों के दुल्की का रेकार्ड दो

मिनट बारह सेकंड कम कर दिया था और उस दिन की रात को एक लाख पचास हजार डालर को बिक गया। इतना मूल्य उस समय किसी भी नस्ल के घोड़े का नहीं लगा था। दो वर्ष बाद श्री विलियम्स अपने घोड़े अलर्टन को ऐक्सटेल से भी अधिक दाम पर बेच सकते थे। यह उस समय सम्भव हुआ जब उन्होंने अलर्टन को स्वयं हाँककर विश्व के घोड़ों के रेकार्ड को कम करके दो मिनट पौने दस सेकंड कर दिया था।

इसलिए जब श्री विलियम्स १८९४ में गेल्सबर्ग आये तब वह विख्यात हो चुके थे। उन्होंने गेल्सबर्ग डिस्ट्रिक्ट ऐसोसिएशन का संगठन किया और फार्नहम स्ट्रीट के पूर्व नाक्सविल रोड पर एक सौ बारह एकड़ भूमि में घोड़दौड़ का एक नया मार्ग बनवाया। श्री विलियम्स सबसे कहते थे कि घोड़दौड़ का नया मार्ग "विश्व का एकमात्र बिलकुल समतल मार्ग है।" उसकी शक्ल रेल को जोड़नेवाले बोल्टू की तरह थी। उसकी लम्बी भुजाएँ एकदम समतल थीं और सिरों पर वह कुछ ढालू कर दी गई थी जिससे हल्की घोड़ा-गाड़ियाँ सरलता से घूम सकें। श्री विलियम्स ने जो छः सप्ताह की दौड़ के टूर्नामेण्ट की व्यवस्था की थी उसमें कभी-कभी पानी बरसता था तब घोड़दौड़ को स्थगित करना पड़ता था और कभी-कभी कम भीड़ आती थी यद्यपि दुल्की दौड़नेवाले और कदम चलनेवाले घोड़े राष्ट्र-विख्यात थे। किन्तु एक सप्ताह मौसम बहुत अच्छा था और उस सप्ताह में एक दिन जनता की अपार भीड़ घोड़दौड़ देखने आई थी। उस दिन हमने देखा कि काली घोड़ी ऐलिक्स ने मैदान में आकर विश्व के दुल्की दौड़नेवाले घोड़ों का रेकार्ड तोड़ दिया।

उस दिन से सारे देश में गेल्सबर्ग अश्वारोहियों और अश्व-प्रेमियों के लिए विख्यात हो गया। सब के केन्द्र में श्री विलियम्स थे।

वह मँझोले कद के आदमी थे और उनका मुखमंडल मनोरंजक था। अश्व-जगत् में उन्होंने बड़ा नाम कमाया था और देश भर के घोड़े पालनेवाले उनसे मिलने आते थे। अनेक वर्षों तक पुरस्कार प्राप्त अश्वों की नसों में उनके घोड़ों का खून बहता रहा।

तब घोड़ा गाड़ी की दौड़ का प्रचलन कम होने लगा। श्री विलियम्स ने अपने सब घोड़े अच्छे दामों पर बेच डाला और इस प्रकार प्राप्त धन को कनाडा में भूमि खरीदने में लगा दिया। मैं उनको उस रूप में याद रखना पसन्द करता हूँ जिस रूप में मैंने उनको अक्तूबर के एक प्रातःकाल को देखा था——पृथ्वी पर अब भी थोड़ा तुषार शेष था और वह विश्व के एकमात्र समतल दौड़ के मैदान में हल्की दो पहिएदार गाड़ी में अपने घोड़े अलर्टन को धीरे-धीरे दुल्की दौड़ा रहे थे, वह अलर्टन पर दयालु थे और उससे कठोरता नहीं करते थे जिसकी चाल तो समाप्त हो गई थी परन्तु अनेक अश्व अहंकारपूर्वक उसको अपना पितामह कहने को तैयार थे।
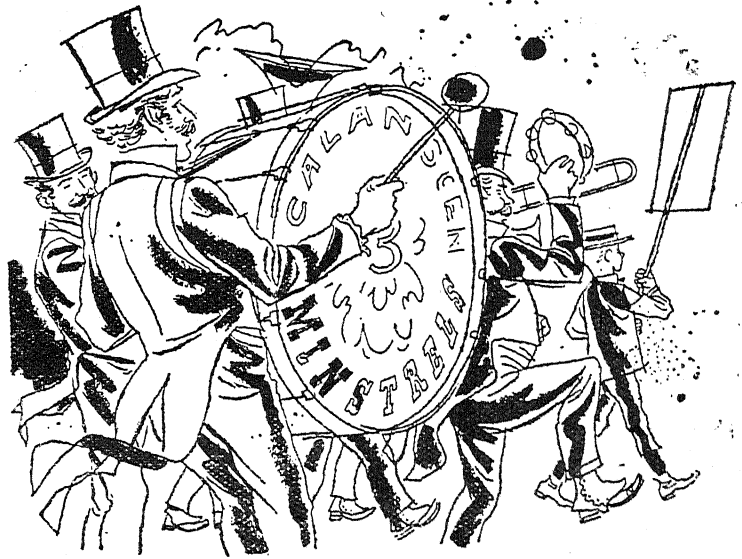
बारहवाँ परिच्छेद

विनोद के लिए काम करना

घर पर एक रात को हमने सुना कि आपेरा हाउस जल रहा है। उसको देखने के लिए मैं दौड़कर मेन स्ट्रीट और प्रेयरी स्ट्रीट के कोने पर गया। आग से दूर सड़क के पार मैं आधी रात तक खड़ा रहा। मुझे उसके विषय में इतनी बातें याद थीं कि मैं नहीं चाहता था कि वह जल कर भस्म हो जाय। वहाँ पर मैंने किकैपू इंडियन लोगों को हिरण का चमड़ा और पंखों की टोपी पहने हुए देखा था। जब वे नाचते थे तब वे अपना युद्ध-संगीत जोर-जोर से गाते थे जिसका हम अनुकरण करने का प्रयत्न करते थे। वे वहाँ छः सप्ताह ठहरे थे और मैं सप्ताह में एक या दो बार जाता था। प्रवेश तो निःशुल्क था ही जिस श्वेतांग के लिए वह लोग काम करते

थे वह नकली दवाइयाँ बेचता था और इस प्रकार उनका विज्ञापन करता था : यदि आपको गठिया है या मांसपेशियों अथवा हड्डियों में दर्द है तो आप उसे किकैपू इंडियन स्नेक आयल से अच्छा कर सकते हैं। यदि आपके पेट या गुर्दे में शिकायत है तब आप कुछ चम्मच किकैपू इंडियन सैग्वा खायँ तो वह ठीक हो जायगा। उसकी एक या दो बोतल के सेवन से आप चंगे हो जायँगे। हम उसकी बातें सुनते थे और उसकी नकल करते थे।

रंगमंच के जो तख्ते इस समय जल रहे थे उन पर डाक्टर ओ'लियरी ने भाषण दिया था। उनका भाषण सुनने के लिए किसी को प्रवेश-शुल्क नहीं देना पड़ता था। "निरामिष भोजन" उनका विषय था। मुझे भूल गया है कि वह क्या बेच रहे थे। वह तीन या चार सप्ताह रहे; वह हमें बताते थे कि गोश्त हमें क्या हानि पहुँचाता है, कैसे आप प्रायः थकावट महसूस करते हैं और अपना काम करने के लिए आपके शरीर में शक्ति नहीं रहती। नगर से उनके जाने के दो सप्ताह बाद तक मैं गोश्त नहीं खाता था तथापि मैं पहले ही की तरह थकावट महसूस करता था। मैंने फिर गोश्त खाना आरम्भ कर दिया और मुझे उसके विष का कुछ अनुभव नहीं हुआ। इसलिए मैं डाक्टर ओ'लियरी को भूल गया।

एक महीने में पाँच या छः रात को दस सेन्ट देकर गैलरी में बैठकर मैंने मेस्मेरिस्ट लोगों को देखा था। इसके पहले मैंने किसी मेस्मेरिस्ट को नहीं देखा था। वे मेरे परिचित कुछ लोगों की आँखों में देखते थे। उनके चेहरे के सामने हाथ फेरते थे और उनको भौंरों से लड़ाते थे या कालीन पर तैराते थे। वहाँ मैंने एक जीवित मनुष्य के शरीर को देखा। उसका सिर एक मेज पर था। उसके पैर दूसरी मेज पर थे। उसके धड़ और टाँगें बलूत के कुन्दे की तरह कठोर

थे। उसके शरीर पर एक चट्टान रक्खी गई और शक्तिशाली लोहार बेन होल कोम्ब ने हथौड़ा मारकर उसे तोड़ डाला। इस कृत्य के बाद भी उसका शरीर कठोर और सीधा पड़ा रहा। तब मेस्मेरिस्ट ने उसके चेहरे पर उँगलियाँ चटकाईं और "ठीक! ठीक!" की तरह कुछ कहा, उसको उठ खड़े होने में सहायता दी और दोनों ने एक दूसरे का हाथ पकड़कर प्रशंसा करनेवाले श्रोतागण को नमस्कार किया। हमने कहा, "यह करामात तो नहीं परन्तु आश्चर्य अवश्य है।"

आग की टेढ़ी और छन-छन करनेवाली लपटों ने रंगमच के परदे और तख्तों को जला डाला जहाँ मैंने गेटिसबर्ग के युद्ध के चित्रों को देखा था। हमें उसके विषय में ग्रामर स्कूल में बताया गया था जहाँ जाने के लिए प्रवेश-शुल्क पाँच सेन्ट था। युद्ध के विभिन्न भागों को दिखाने के लिए एक के बाद दूसरा चित्र-पर गिरता जाता था। परदे गन्दे और फटे हुए थे। जो आदमी लम्बे प्वाइन्टर से युद्ध को समझता था उसके गलमुच्छे लम्बे और चिकने थे। जिसका रंग आप नहीं बता सकते थे। उसके कपड़े ऐसे दिखाई पड़ते थे मानो वह उन्हें पहनकर सोया था और उन पर कभी ब्रश नहीं लगाया था। उसकी आवाज तेज थी। आप बता सकते थे कि वह जो कुछ कह रहा है उसे उसने इतनी बार कहा है कि उसमें उसकी रुचि नहीं रह गई है और उसका मन उसमें नहीं लगता। वह मनुष्य ऐसा दुखी और उदास दिखाई पड़ता था कि उसके विषय में जानने की उत्सुकता के कारण आधे समय तक मैं नहीं देखता था कि वह क्या दिखा रहा है।

मेरी आँखों के सामने वह तख्ते जल रहे थे जहाँ मैंने पहले-पहल शेक्सपियर का "हैमलेट" नामक नाटक देखा था और अन्त

में मैं केवल मारकाट में रुचि रखता था। मैंने उस रंगमंच पर एक मनुष्य को टहलते हुए देखा था जिसके विषय में और अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए मैं उत्सुक था। मैंने शिकागो के समाचार-पत्रों में उसके कारटून देखे थे और जो कुछ मैंने पढ़ा था उससे मैं आशा करता था कि वह वायु को फाड़ेगा, अपनी छाती को पीटेगा और अपने शत्रुओं को पैरों तले रौंद डालेगा। वह जान पीटर आल्टगेल्ड था और वह इलिनोइस का गवर्नर होने के लिए उम्मीदवार था। डेढ़ घंटे तक व्याख्यान देता हुआ वह उसी पग-डंडी पर खड़ा रहा और अपने हाथों से एक बार भी हवा को नहीं चीरा। जब कभी किसी बात पर बल देने के लिए वह अपने हाथ उठाता था तब ऐसा मालूम होता था कि वह हाथ से किसी बीमार मित्र का ललाट सहला रहा हो। वह शान्तिपूर्वक इस प्रकार बोलता था मानो यदि हम भी शान्त हो जायें तब जो कुछ वह कह रहा है उसे हम समझ पायेंगे। जो कुछ उसने कहा था उस पर मेरा पूरा विश्वास नहीं था बल्कि मुझे ऐसा मालूम होता था कि मुझे उसके शत्रुओं से उसकी अपेक्षा अधिक आशंका है।

नया आडीटोरियम (सभा-मंडप) ब्राड स्ट्रीट और फेरिस पर बनाया गया था और प्राय: जब मेरे पास काम नहीं होता था या जब मुझे कोई परेशानी होती थी तब मैं वहाँ चला जाता था। वह आधुनिक थियेटर था जिसमें एक मुख्य फर्श, एक बारजा और एक गैलरी थी जिसे "निगर-हेवन" कहते थे। रंगमंच के सबसे निकटवाली सीटों को "पार्के" कहते थे। टिकटों पर "पारकेट" लिखा रहता था। रंगमंच इतना विशाल था कि ब्राडवे का कोई भी खेल उस पर खेला जा सकता था और ब्राडवे का लगभग हर एक नाटक पश्चिम की ओर जाते समय गेल्सबर्ग में रुकता था।

आडीटोरियम में मैं जो काम करता था उसमें से कुछ के लिए मुझे पैसा मिलता था। प्रायः जो काम मैं करना पसन्द करता था उसके लिए मैं खेल देख सकता था। रंगमंच पर काम करनेवाला बढ़ई स्वीडिश माँ-बाप से पैदा हुआ अमरीकी आस्कर जानसन था और प्रत्येक आदमी उसको "हस्की" कहता था। जब कभी दूसरे अंक के लिए नियत समय पर परदा और रंगमंच के अन्य सामान ठीक करने की जल्दी होती थी तब वह हमें दौड़ाता था और चिल्लाता था और हम समझते थे कि उसको क्रोध करने का अधिकार है। रंगमंच का सब सामान चार्ल्स रोज के चार्ज में था जिसे प्रत्येक आदमी "कली" कहता था। वह समझता था कि थियेटर के इन्चार्ज को जो कुछ जानना चाहिए वह सब मैं जानता हूँ और यदि कोई व्यक्ति उसके साथ तर्क करना चाहता था तो वह उसके लिए तैयार रहता था। उसका विश्वास था कि सब सामान नियत समय पर ठीक रहना चाहिए। वह शीघ्रता से बौद्धिक काम कर सकता था और जिस प्रकार वह हमें चारों तरफ खड़े हो जाने के लिए आज्ञा देता था वह हमें पसन्द था। कली रोज ऐसे आदमियों को मजदूरी पर रखता था जो रंगमंच पर प्रकट होते थे परन्तु उन्हें कुछ बोलना नहीं होता था। फालतू आदमी थियेटर पार्टी के साथ यात्रा नहीं करते थे, परन्तु उनकी जरूरत पड़ा करती थी। "मैक फैडेन्स फ्लैट्स" में मैंने इस प्रकार के फालतू कलाकार का काम किया था। शिकागो के एक गगनचुम्बी भवन की आठवीं मंजिल पर स्थित एक एक कार्यालय का दृश्य रंगमंच पर दिखाता था। रंगमंच से दूर चार आदमी उस मनुष्य को देखते थे हम जिसके चार्ज में थे। जब वह जोर से चिल्लाया "आह-आह-आह" फिर और जोर से "ओह-ओह-ओह"

और फिर धीरे से "उम्फ-उम्फ-उम्फ" तब हमने भी वैसा ही किया। हम क्या कर रहे थे? दफ्तर से आठ मंजिल नीचे शिकागो की सड़क पर जो शोरगुल होता था हम वही शोरगुल रंगमंच पर कर रहे थे। जब नाटक में १८७१ का महान् अग्निकांड दिखाया जा रहा था, तब यह मूक अभिनेता रंगमंच पर एक तरफ से दूसरी तरफ सन्दूक, गठरियाँ और बंडल लेकर भागते थे और कराहते और चिल्लाते थे। तब हम चक्कर काटकर फिर रंगमंच पर आते थे और अन्य सन्दूकों, गठरियों और बंडलों को लेकर रंगमंच के पार भागते थे और दूसरे प्रकार से चिल्लाते और कराहते थे।

हम दृश्य परिवर्तक का काम करते थे और जब हम अपना काम समाप्त कर लेते थे तब कभी-कभी हमारे निकट कुछ ही दूर पर कोई प्रसिद्ध तारिका होती थी जो रंगमंच पर जाने के लिए अपनी बारी की प्रतीक्षा करती रहती थी। हम प्रहसन करने-वाले को देखते थे जो विचित्र वेश-भूषा पहने रहता था। उसका मुखमंडल गम्भीर होता था और उसकी आँखें रंगमंच पर लगी होती थीं। वह रंगमंच पर जाने के लिए संकेत की प्रतीक्षा करता रहता था। एक मिनट बाद वह शरीर ऐंठता और छटपटाता हुआ रंगमंच पर के लम्पो के आगे चला जाता था। उसका मुखमंडल और नेत्र देदीप्य मान होते थे और दर्शक लोग कहकहे लगाते थे। कभी-कभी एक कलाकार धीमी आवाज में उस प्रथम पंक्ति को कहता रहता था जो वह रंगमंच पर जाने पर कहनेवाला था। जब वे रंगमंच से उतरते थे तो हमारे निकट से होकर शीघ्रता-पूर्वक चले जाते थे। भारी दृश्य के बाद वे हाँफते रहते थे और कभी-कभी वे लँगड़ाते थे और उनके शरीर से पसीना निकलता रहता था।

जब हम रंगमंच के अगले भाग में ऊपर उस स्थान में काम करते थे जहाँ से परदे उठाये और गिराये जाते हैं तब हमको प्रति रात दस सेंट मिलते थे। हम लोग तीस या चालीस फुट की ऊँचाई पर होते थे और सिगनल पाने पर रस्सियों को खींचकर हम एक परदे को उठाते और दूसरे को गिराते थे। यदि हम गलत परदा उठाते या गिराते थे तब हमें नीचे से आदेश मिलता था। कली रोज व्यंग्यात्मक ढंग से चिल्लाते थे। जहाँ पर हम थे वहाँ से हम खेल का कुछ भाग देख सकते थे और यदि बाजा बजता था या गाना होता था तब हम पूरा-पूरा सुन सकते थे।

हमने जान एल० सुलीवन को "आनेस्ट हार्ट्स ऐण्ड विलंग हैन्ड्स" में अभिनय करते हुए निकट से देखा था। हम देख सकते थे कि उन्हें रंगमंच पर जाना पसन्द था और वह श्रोतागण से नहीं डरते थे। एक दृश्य में वह एक मेज के निकट बैठे थे और अभिनय करते थे कि वह विपत्ति में हैं और उन्हें बुद्धि का प्रयोग करना है। उन्होंने मेज पर अपनी केहुनियाँ रक्खीं, प्याले की तरह दोनों हाथ बनाकर उसमें उन्होंने अपनी ठुड्ढी रक्खी और तब ऐसे धीमे स्वर में जिसका उन्हें विश्वास था कि श्रोतागण लोग सुन सकते हैं उन्होंने कहा, "अब मुझे सोचना चाहिए।" जब उन्हें परदे की आड़ से पुकारा गया तब उन्होंने दर्शकों को झुककर सुन्दर ढंग से नमस्कार किया, छोटा सा भाषण दिया जिसके अन्त में उन्होंने कहा, "मैं हूँ आपका सच्चा मित्र जान एल० सुलीवन" और रंगमंच से चले गये।

फ्रिडिजाफ नैन्सेन आये। मैंने पत्रिकाओं में उनके लेख पढ़े थे। जिनको उन्होंने अपनी पुस्तक "फार्देस्ट नार्थ" में संगृहीत कर दिया था परन्तु उनका व्याख्यान सुनने के लिए मैं पच्चास

सेंट न इकट्ठा कर सका। जब उनकी रेलगाड़ी क्यू० डिपो पर रुकी तब मैं निकट ही था। बर्फ गिर रही थी और जब वह अपना लम्बा फरकोट पहनकर प्लैटफार्म और स्टेशन से होकर उस स्थान पर गये जहाँ मैंने उनको यूनियन होटल के टट्टू पर सवार होते हुए देखा तब वह मुझे स्कैन्डिनेविया के लम्बे नायक की तरह मालूम पड़ते थे।

जब अफ्रीकी अन्वेषक हेनरी एम० स्टैन्ले व्याख्यान देने के लिए आये तब फिर रेलगाड़ी से उतरते हुए उन्हें देखने के लिए मैं क्यू० डिपो पर उपस्थित था और उनके पीछे-पीछे डिपो में होकर गया। देखने में वह इतने सुन्दर नहीं थे जितने नैन्सेन थे। मुझे ऐसा मालूम होता था कि वह विख्यात लेखक हैं और नैन्सेन महान् नार्समैन और वाइकिंग हैं जिनके हृदय में संघर्ष करनेवाले सब मनुष्यों के लिए सहानुभूति है'

विश्व का विख्यात घूँसेबाज जेम्स जे० कार्बेट "जन्टेलमेन जिम" में आया था और उसकी घूँसेबाजी ने हमारी आँखें खोल दीं। मैं बिग लीग बेस बाल का टूर्नामेन्ट देख रहा था जब मैंने सुना कि सिनसिनाटी रेड्स के शौकीन दूसरे बेसमैन आर्ली लैथम एक खेल में गाना गायेंगे और नाचेंगे तो मैं उनको देखने के लिए गया। खेल बहुत अच्छा नहीं हुआ, आर्ली लैथम गाने और नाचने में दक्ष नहीं थे परन्तु मैंने एक नायक का दर्शन कर लिया। विश्व के दूसरे चैम्पियन बाब फिज साइमन्स को खेल करते हुए मैंने नहीं देखा परन्तु मैंने उनको क्यू० डिपो के प्लैटफार्म पर देखा था। वह लम्बे और पतले थे। उनका बाल नारंगी रंग का और चमड़ा गुलाबी रंग का था। वह एक पालतू शेर को इधर-उधर घुमा रहे थे।

जब प्रसिद्ध अभिनेता जेम्स ओ'नील के साथ मान्टी क्रिस्टो नगर में आया तब मैंने रंगमंच के सजाने में सहायता की। जिस समुद्र को पार करके वह भागा था, किरमिच का हिलोर मारता हुआ वह समुद्र मेरे और कुछ अन्य लड़कों के द्वारा बनाया गया था। जब अंकिल टाम्स केबिन नाटक आया था तब मैं इश्तहार बाँटता था। उसके लिए मुझे दस सेण्ट मिलता था और नाटक देखने के लिए टिकट मिलता था। इश्तहारों में लिखा था कि खेल में दो अंकिल टाम, दो ईवा, दो साइमन लिग्री, दो इलिजा ओहायो नदी को पार करते हुए दिखाए जायेंगे और शिकारी कुत्तों के दो समूह होंगे। हम आश्चर्य करते थे कि प्रत्येक वस्तु दो कैसे हो सकती है और हम कुछ नये और भिन्न खेल की आशा करते हुए गये। हमने वहाँ अंकिल टाम के दो खेल देखे जिनमें दो के बदले में प्रत्येक वस्तु एक-एक थी। इस चालाकी से काफी भीड़ एकत्र हुई थी जो फिर प्रत्येक वस्तु के दो-दो देखने के लिए नगद पैसा न देती।

हम ऐसे रोमांचकारी नाटक देखने के अभ्यस्त हो गये जिसमें घर गिरो रक्खा जाता है और अन्त में दुष्ट नायक, जिसके यहाँ घर गिरो रहता है, दंड पाता है। या कभी नाटक किसी मरे हुए आदमी के वसीयतनामे के विषय में होता था और "वे पुराना वसीयतनामा, पुराना वसीयतनामा" कहकर उसे ढूंढ़ते फिरते थे। वर्ष में निश्चित तिथि को गृह-युद्ध सम्बन्धी खेल आता था जिसमें संघ का एक जासूस एक विद्रोही लड़की के प्रेम में फँस जाता था या इसका विपरीत होता था परन्तु खेल के अन्त में सदैव शादी के घंटे बजते थे और खुशी मनाई जाती थी। ऐसे एक नाटक शेननडोह में मैंने रंगमंच पर मूक पार्ट किया था।

"आना हेल्ड" और जान ड्रियू थियेटर करनेवाले दो प्रसिद्ध व्यक्ति थे। सिगार की दूकानों और सैलूनों में दीवारों पर चित्र बना होता था जिसमें एक स्त्री हाथ में पाँच ताश लिये रहती थी और उसके नीचे यह शब्द लिखे रहते थे: "यह हाथ है जिसे आना हेल्ड ने खेला था।" एक मनुष्य के हाथ में पाँच ताश चित्रित होते थे और उसके नीचे यह शब्द होते थे "यह हाथ है जिसे जान ड्रियू ने खेला था।"

यदि मैं दूध बेचता होता या अन्य कोई काम करता होता और उस समय यदि गायक नगर में आते तब मैं किसी प्रकार दो सेण्ट का प्रबन्ध करके ऊपरवाली गैलरी पर बैठने के लिए टिकट खरीदता। मैं उस समय मेन स्ट्रीट पर उपस्थित होने का प्रयत्न करता था जब गायक पीले-बादामी रंग का ऊँचा हैट, उसी रंग का कोट और पैर ढाकने की पट्टी पहनकर जलूस में निकलते थे और उनके आगे-आगे सिंगे बजते थे और संगीत होता था। जब परदा उठता था तब सदैव मध्यस्थ पुरुष मिस्टर इंटरलोक्यूटर (मध्य में बोलनेवाला) खड़ा होता था। उसके एक तरफ छः व्यक्ति खड़े होते थे जिनके चेहरे पर काग की राख पुती होती थी और जो सफेद धुली हुई कमीजें पहने रहते थे, जिनमें कुछ हड्डियाँ खड़खड़ाती थीं, दूसरी तरफ छः और आदमी खँजड़ी लिए हुए खड़े रहते थे और गीत गाकर खेल आरम्भ करते थे। कई बार हम सिरे परवाले एक मनुष्य को बीचवाले मनुष्य से यह पूछते हुए सुनते थे, "मनमथ में पुलिस के सिपाही रबड़ के बूट क्यों पहनते हैं?" बीचवाला मनुष्य यह नहीं सोच सकता था कि मनमथ में पुलिस के सिपाहो क्यों रबड़ के जूते पहनते हैं। इसलिए सिरे पर का मनुष्य उत्तर देता था, "क्यों, मनमथ में

हर एक आदमी जानता है कि पुलिस के सिपाही रबड़ के बूट पहनते हैं जिससे पुलिस के दूसरे सिपाही जग न पड़ें।" हम लोग हँसते थे क्योंकि गेल्सबर्ग और मनमथ जो एक दूसरे से सोलह मील की दूरी पर हैं एक दूसरे से बहुत ईर्ष्या रखते थे और हमें वह सब हँसी-मजाक अच्छा लगता था जिसमें मनमथ की मूर्खता झलकती थी। हमें ज्ञात हुआ कि मनमथ में गायक पूछते हैं कि गेल्सबर्ग में पुलिस के सिपाही रबड़ के बूट क्यों पहनते हैं। हम हँसते थे और आगे कहते थे, "मुझको पैन्ट पैन्टसिलवैनिया से मिले हैं, वेस्ट वेस्ट बरजीनिया से मिला है, कोट डेकोटा से मिला है और हैट मनहैटन से मिला है। क्या मैं अमरीकन नहीं हूँ ?"

मैं अलफील्ड के गवैयों का कोई समारोह देखने से नहीं चूकता था। मेरा विश्वास था कि अलफील्ड "बैंजों का निर्विवाद राजा" है। जब मैं गवैयों के समारोह में जाता था तब मुझे इस बात का सन्तोष हो जाता था कि "हब्शी स्वर्ग" में मेरे दाम वसूल हो गये हैं। आप सुन सकते थे कि मूँगफली खानेवाले छिल्का तोड़-कर फर्श पर गिरा रहे हैं। ऊपरी गैलरी में यह बात अप्रत्याशित नहीं थी। मुख्य फर्श पर और पारकेट में किसी को मूँगफली खाते हुए दिखाई पड़ने का साहस नहीं होता था और नीचे बैठे हुए लोग न तो अच्छे कृत्य के लिए जोर से शाबाशी दे सकते थे और न बुरे काम की निन्दा ही कर सकते थे।
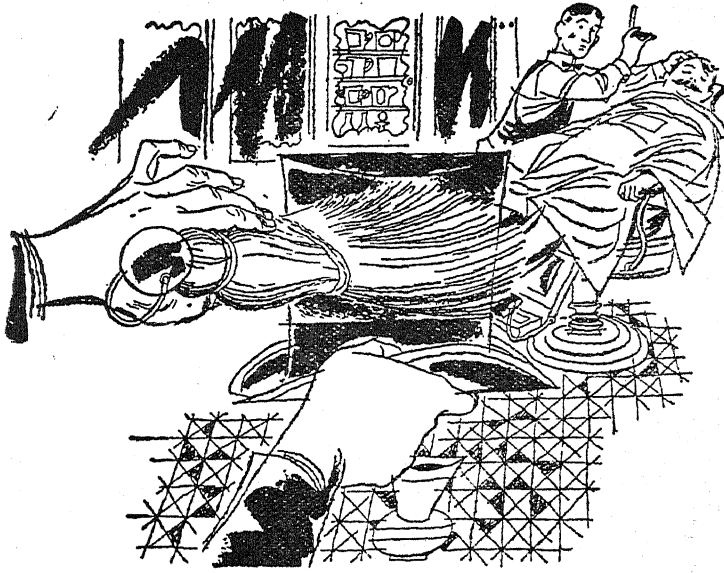
तेरहवाँ परिच्छेद

व्यवसाय सीखना

घर के लोग जानते थे कि पूरे संकटकाल में मैं उनका सहायक था और जो कुछ मैं कमाता था वह घर के लिए महत्त्वपूर्ण था। उन्हें यह ज्ञात था कि मैं स्कूल जाना पसन्द करता हूँ। जब मेरी हाईस्कूल से स्नातिका हुई तब मेरे कमाये हुए थोड़े से डालरों ही से उसे वह सुन्दर सफेद पोशाक प्राप्त हो सकी जिसको पहनकर वह उपाधि वितरण के दिन अन्य छात्रों की भाँति अच्छी दिखाई पड़ती थी जब उसने आगे बढ़कर सिर झुकाया और अपना डिप्लोमा लिया। हम जानते थे कि उस डिप्लोमा का महत्त्व है। अब वह स्कूल में अध्यापन कर सकती थी और परिवार के लिए सहायक हो सकती थी, उसके ऊपर अब परिवार को कुछ खर्च नहीं करना

पड़ेगा। अगले पतझड़ में वह देहात के एक स्कूल में तीस डालर प्रतिमास पर पढ़ाने लगी।

मेरी की हाईस्कूल की पुस्तकों ने मेरी बहुत सहायता की। मैं उसकी बीजगणित और लैटिन की पाठ्य-पुस्तकों का अध्ययन तो नहीं करता था किन्तु उनको यत्र-तत्र खोलकर पढ़ लेता था और इस तरह मुझे उनका थोड़ा सा ज्ञान हो गया। मैं अर्विंग की स्केचबुक, आइवनहो और स्कारलेट लेटर पढ़ता था और अध्यापक उन उपन्यासों का जो तात्पर्य बतलाते थे मैं उसके विषय में मेरी से बातें करता था। किन्तु जो महत्त्वपूर्ण पुस्तक मेरी घर लाई वह जान फिस्के द्वारा लिखित सिविल गवर्नमेंट इन दी यूनाइटेड स्टेट्स थी। यह पुस्तक उस समय मेरे लिए महत्त्वपूर्ण थी क्योंकि उसने कानून, शासन, इतिहास और जनता के विषय में मेरी आँखें खोल दीं। इस पुस्तक में पहली बार मैंने अनेक प्रश्नों के उत्तर पढ़े: कर क्या है? कर लगाने का अधिकार किसे होता है? कर लगाने और डकैती में क्या अन्तर है? किन परिस्थितियों में कर डकैती हो सकता है? पुलिसमैन वर्दी क्यों पहनता है? सरकार क्या है? इस पुस्तक में मैंने पहले पहल संयुक्तराज्य का संविधान पढ़ा और मैंने इँगलिश मैगना कार्टा को भली भाँति समझने का प्रयत्न किया।

कई महीने तक मैं प्रतिदिन गेल्सबर्ग ईवनिंग मेल में वाल्टर वेल्मैन द्वारा वाशिंग्टन में लिखा हुआ स्तम्भ पढ़ता था। मुझको बहुत आश्चर्य होता था कि सरकार जो कुछ कर रही है उसके विषय में इतना अधिक ज्ञान एक पुरुष को कैसे प्राप्त हो गया है जो लाखों आदमियों को स्पष्ट समझाता है कि आजकल क्या हो रहा है। जान फिस्के की पुस्तक से मैंने सीखा कि सरकार के तीन अंग

होते हैं---कार्यकारिणी, व्यवस्थापिका और न्यायपालिका। वाल्टर वेल्मैन के लेखों को पढ़कर मुझे ऐसा मालूम होता था कि यह तीनों अंग जो कुछ कर रहे हैं वह मुझे ज्ञात है।

मेरे मन में प्रायः यह विचार आता था कि मैं किसी विशेष दिशा में प्रगति नहीं कर रहा हूँ। मैं कोई काम चाहता था जिससे मैं कोई व्यवसाय सीख सकूँ। मैं नल लगानेवालों, बढ़इयों, घर रँगनेवालों से पूछता था और वे कहते थे कि कोई जगह खाली नहीं है अथवा यह कि फिर कभी आना। जब मैं क्यू० मशीन बनानेवालों और ब्वायलर बनानेवालों से पूछता था कि क्या आप लोगों के यहाँ कोई जगह खाली है तब वे कहते थे कि अभी संकट-काल चल रहा है और बहुत से पुराने मनुष्य जो काम से अलग कर दिये गये हैं फिर काम मिलने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। मैंने सुना कि यूनियन होटल की नाई की दूकान में एक कुली की आवश्यकता है। मैंने कहा, "हजामत बनाना एक व्यवसाय है। नाई एक समुद्रतट से दूसरे समुद्रतट तक यात्रा करके दूसरे नगरों में काम कर सकता है। नाई का व्यवसाय करते हुए यह सम्भव है कि आपको किसी ऐसे आदमी की हजामत बनाने को मिल जाय जो आपको कोई काम दे सके जिससे आपको हजामत बनाने की अपेक्षा अधिक रुपया मिल जाय।"

मैं श्री हम्फ्री की दूकान में तीन डालर प्रति सप्ताह पर काम करने लगा। इसके अतिरिक्त मुझे जूते पर पालिश करने का पैसा और बख्शीश के पैसे भी मिलते थे। यह दूकान फार्मर्स ऐण्ड मेकैनिक्स बैंक के नीचे आधे तहखाने में थी जिसकी बड़ी खिड़कियों में से आप पटरियों पर चलनेवाले यात्रियों के जूतों को देख सकते थे। आठ सीढ़ियाँ ऊपर जाकर आप पब्लिक स्क्वायर, ब्राड स्ट्रीट

से कोर्ट हाउस-पार्क तक और उसके आगे नाक्स कालेज का हाता देख सकते थे। दूकान के फर्श में काले और सफेद खपड़े जड़े हुए थे जिस पर मैं प्रतिदिन प्रातःकाल झाड़ू लगाता था। बरसाती मौसम में या जब बर्फ पड़ती थी तब लोगों के पैर में लगकर वहाँ कीचड़ आ जाती थी इसलिए तीसरे पहर मैं फर्श पर एक बार फिर झाड़ू लगाता था। सड़क की तरफ जो बड़ी खिड़कियाँ थीं मैं उनको सप्ताह में एक बार साबुन और पानी से धोता था और स्पंज तथा पहाड़ी हिरन के चमड़े से पोंछता था और पीतल के चारों उगाल-दानों की मैं प्रतिदिन खूब सफाई करता था। चार कुर्सियों में से एक जिस पर बैठाकर गाहकों की हजामत बनाई जाती थी, लम्बे दर्पण के सामने रक्खी थी जो दीवार पर लटकाया था। सप्ताह में तीन बार मैं श्वेत द्रव से शीशे को धोता था और तब पहाड़ी हिरण के चमड़े से उसे पोंछ देता था।

श्री हम्फ्री, हेड बार्बर और मालिक, पहली कुर्सी पर बैठनेवालों के बाल बनाते थे। दूसरी कुर्सी पर बैठनेवालों का बाल एक लम्बा आदमी बनाता था जिसके मूँछ थीं, उसका नाम जान था। तीसरी कुर्सी फ्रैंक वाईकाक के जिम्मे थी जिसका चेहरा चिकना और बाल रेशमी सुनहले थे। वह शिष्ट व्यक्ति था और नाचने के लिए विख्यात था। चौथी कुर्सी पर श्री हम्फ्री का अष्टादश वर्षीय पुत्र शनिवार और छुट्टियों के पहले बाल बनाता था जब भीड़ अधिक होती थी।

जिन लोगों को हम लड़के "बिग बग्ज आन द नार्थ साइड" कहते थे उनसे बहुतेरे यूनियन होटल बार्बर शाप पर आते थे। श्री हम्फ्री ने मुझसे कहा था, "चार्ली, जब तक तुम यहाँ काम करोगे तब तक गेल्सबर्ग के शौकीन लोगों को यहाँ देखोगे। हमारी दूकान

पर शौकीन लोग आते हैं और हम अपने स्थान को साफ-सुथरा रखना चाहते हैं प्रत्येक चीज सीढ़ी की तरह साफ।"

श्री हम्फ्री नाई और सम्भ्रान्त व्यक्ति थे। वह मुस्कराहट के साथ सिर से नमस्कार करके और पीठ और कंधों को झुकाकर मधुर स्वर में नियमित गाहक से कहते थे। "श्री हिग्बी, आप क्या शुभ समाचार लाये हैं?" या "श्री ऐपलग्रीन, आपके मिजाज कैसे हैं?" या "श्री हैगेनजास, हम समझते थे कि आपके दर्शन का समय आ गया है।" उनका चेहरा गोल और मुँह पतली रेखा के आकार का था। वह दूकान के मालिक थे और बड़े सुचारु रूप से उसे चलाते थे। सब लोग उनका सम्मान करते थे।

प्रातःकाल साढ़े दस या ग्यारह बजे जब मैं देखता था कि दस या पन्द्रह मिनट तक कोई गाहक कुर्सी से न उठेगा तब मैं पिछले जीने से ऊपर जाता था, यूनियन होटल का बड़ा मुख्य दफ्तर पार करता था और इलिनोइस के उस भाग के सबसे सुन्दर सैलून में पहुँचता था। उसमें महोगनी लकड़ी का पालिश किया हुआ बार और चमकता हुआ पीतल का छड़ था। पीतल के ऊँचे उगालदान थे, एक लम्बा दर्पण था जिसमें "बार" के निकट खड़े होनेवाले लोग अपना या दूसरों का चेहरा देख सकते थे। दर्पण के ऊपर और अगल-बगल में लकड़ी पर खुदाई का काम ऐसा सुन्दर हुआ था जैसे फीते लगे हों या सुई का काम हुआ हो। बार के सिरे के निकट साढ़े दस बजे वे मुफ्त भोजन देते थे—किसी जानवर की जाँघ, पनीर, अचार, राई और गेहूँ की रोटी और कभी-कभी हिरण या सूअर का गोश्त—और मैं खाता था। तब मैं नाई की दूकान को वापस लौट जाता था। मैं भोजनालय के सेवकों के प्रति कृतज्ञ होता था क्योंकि वह यह नहीं पूछते थे कि अल्पवयस्क मैं वहाँ क्या कर रहा हूँ। मैं भोजना-

लय के मालिकों, सोलोमेन फ्रालिक और हेनरी गार्ट के प्रति भी कृतज्ञ था, जो जर्मन यहूदी थे। जब मैं अपनी तेज झाड़ू से झाड़-पोंछ करता था या जूतों में पालिश लगाता था तब उनका विशेष ध्यान रखता था।

जो बड़े लोग नगर में आते थे वे यूनियन होटल में खाना खाते थे, जैसे खेल दिखानेवाले लोग, व्याख्याता-गायक, प्रसिद्ध अभिनेता जो ब्राडवे पर खेल दिखा रहे थे और गेल्सबर्ग से अपने नाटक ओमाहा, डेनवर, साल्ट लेक सिटी और सैन फ्रैंसिस्को को ले जा रहे थे। एक रात खेल दिखाने के लिए गेल्सबर्ग में होटल से ब्राड स्ट्रीट के पार आडिटोरियम एक अच्छा स्थान था। जब लोग होटल के दफ्तर में आकर अपने नाम लिखाते थे, तब मैं यह मालूम करने की चेष्टा करता था कि वे यात्री हैं या खेल दिखानेवाले। नाई की दूकान में प्रति सप्ताह गुलाबी रंग का "पुलिस गजट" पढ़ता था और ऊँचे दर्जे के जासूसों और जुवारियों की खोज में रहता था जो सदा ऊँचे दर्जे के होटलों में ठहरते थे।

डेस्क पर जेम्स या "जिमी" ओटवे नामक अँगरेज थे जिन्हें देखकर मुझे डिकेन्स के उपन्यासों में आये हुए लोगों और उनकी बातों का स्मरण हो आता था। वह नाटे थे। उनके चेहरे का रंग हल्का था। उनके बाल का रंग हल्का था जिसे वह कंधे से पीछे की ओर सुन्दर और लहरदार ढंग से फेरते थे। उनकी हल्के रंग की मूँछ बहुत दूर तक फैल जाती थी परन्तु वह उसे खूब घूँघरदार बनाये रहते थे। विल आल्सन को छोड़कर नगर में और किसी की मूँछ वैसी घूँघरदार नहीं थी। वह हल्के ट्वीड का सूट पहनते थे। उनके कालर कड़े और खड़े होते थे। उनके कफ कड़े और कलप किये हुए होते थे, उनकी नेकटाई रंगीन और बिलकुल साफ-सुथरी थी। वह ऊँची नस्ल

के कुत्ते पालते थे और उनके बादामी और सफेद बालोंवाले कुत्ते दफ्तर में इधर-उधर दौड़ते हुए देखे जा सकते थे। जिमी ओटवे नगर के निवासी थे और गेल्सबर्ग का लगभग प्रत्येक आदमी उनको जानता था। कभी-कभी मैं उसके पास खड़ा होकर इस बात की प्रतीक्षा करता था कि देखूँ क्या कभी वह "एइच" अक्षरों का लोप करते हैं और मुझे मालूम हुआ कि कुछ अँगरेज ऐसे हैं जो अपनी बोली में कभी "एइच" अक्षर का लोप नहीं करते।

मेरी सत्तरहवीं वर्षगाँठ अर्थात् ६ जनवरी १८९५ को जनरल फिलिप सिडनी पोस्ट का देहान्त हो गया। वह हमारे शहर से पाँच बार कांग्रेस के सदस्य निर्वाचित हुए थे और छठीं बार भी हमारा प्रतिनिधित्व आरम्भ कर रहे थे जब उनकी मृत्यु हो गई। सेनेट और कांग्रेस के सदस्य, गृहयुद्ध के वृद्ध सैनिक तथा दूर और निकट के राजनीतिज्ञ उनकी अन्त्येष्टि क्रिया में आये। क्यू० डिपो पर मैंने शिकागो से दोपहर को आनेवाली गाड़ी देखी जिसमें एक विशेष डिब्बे में प्रिंस अलबर्ट कोट और रेशम के ऊँचे हैट पहने हुए लोग बैठे थे। तब यूनियन होटल में स्थित नाई की दूकान में जाकर मैंने देखा कि हजामत बनानेवाली प्रत्येक कुर्सी भरी है और प्रतीक्षा करनेवाली सब कुर्सियों पर प्रिंस अलबर्ट कोट पहने हुए गाहक बैठे हैं। हैट टाँगने की खूँटियाँ रेशमी हैटों से भरी थीं और वैसे ही चमकदार अनेक हैट खिड़कियों की चौखटों पर रक्खे थे।

मैं जूतों में पालिस करनेवाले अपने स्थान पर गया जहाँ पर पहला गाहक पहले ही से प्रतीक्षा कर रहा था। मैंने सेनेट के चार सदस्यों, कांग्रेस के आठ सदस्यों, दो या तीन मेजर लोगों के जूतों पर तथा दो जोड़े घुटनों तक ऊँचे वैसे बूटों पर पालिश लगाई जैसे लिंकन पहना करते थे। जूतों में पालिश लगाने के लिए जितना धन

मैंने उस दिन कमाया उतना कभी नहीं कमाया था। उनमें से अधिकांश ने मुझे नियमित निकेल दिया। कुछ ने मुझे डाइम दिया और दो व्यक्तियों ने, जिनकी साँस से पता चलता था कि वे यूनियन होटल से मद्यपान करके आ रहे हैं। मेरे फैलाये हुए हाथ में क्वार्टर दिया। पहली बार मैंने एक दिन में डालर १·४० कमाया।

जब मैं फिलिप सिडनी पोस्ट को सड़कों पर देखता था तब मैं उनको कोई विशेष योद्धा नहीं समझता था। उनका शरीर मोटा और सुगठित था। उनका चेहरा और मुँह गोल था और नाक सीधी थी। ललाट के ऊपर उनका सिर थोड़ा गंजा था। उनकी गहरे रंग की मूँछ कुछ लम्बी थी और उनकी ठुड्ढी पर बकरी की दुम जैसा दाढ़ी का गुच्छा था परन्तु वह बहुत छोटा कटा होता था और ध्यानपूर्वक देखने से ही दिखाई पड़ता था। बाद में मुझे ज्ञात हुआ कि पोस्ट एक महान् योद्धा थे। वह उन सर्वश्रेष्ठ सैनिकों में से एक थे जो १८६१ में लिंकन के आह्वान पर युद्ध में भरती हुए थे। जब यह आह्वान आया तब वह वायन्डोट, कैंसस, में युवक वकील थे। वह पूर्व की ओर गेल्सबर्ग गये, युद्ध में भरती हुए, ५९वीं इलिनोइस वालंटियर इन्फैन्ट्री की कम्पनी "ए" में भरती हुए, और कुछ रक्तपूर्ण लड़ाइयों में लड़े जिनमें उन्हें चोटें लगीं और आदरपूर्वक उनकी चर्चा होने लगी। वह मेजर, कर्नल और ब्रिगेडियर जनरल हो गये। पी रिज, पेरीबिल, मरफ्री बोरो और चिकैमागा रक्तपूर्ण युद्धस्थल थे और पोस्ट उन सब में मौजूद थे। युद्ध के बाद उनके सेनाध्यक्ष जनरल जार्ज एइच० टामस ने युद्ध-मंत्री से कहा कि पोस्ट को नियमित सेना में कर्नल बना दीजिए।

वियना में तेरह वर्ष कांसल और तत्पश्चात् कांसल-जनरल रहने के बाद १८७९ में पोस्ट गेल्सबर्ग वापस आये थे और वह भू-

सम्पत्ति का व्यापार करने लगे थे। एक दिन दो व्यक्तियों के साथ जनरल पोस्ट यूनियन होटल की नाई की दूकान में आये। तीनों ने हजामत बनवाई और दो ने जूतों में पालिश लगवाई। जिन दो व्यक्तियों के जूतों में मैंने पालिश लगाई उनमें से एक फिलिप सिडनी पोस्ट थे। यदि मैं जानता कि अपनी जवानी में वह पैर कहाँ-कहाँ गये थे तब मैं उनके जूतों पर यथाशक्ति अच्छी से अच्छी पालिश लगाता।

शनिवार को नाई की दूकान में मैं सर्वत्र घूमता फिरता था। दूकान की बगल में एक स्नानागार था जिसमें आठ खाने थे और प्रत्येक में एक टब था और उसमें स्नान करने के लिए पच्चीस सेंट देना पड़ता था। जो कोई चाहता था मैं उनके लिए एक टब गर्म पानी तैयार कर देता था। दो-तीन आदमी नियमित रूप से स्नान के लिए आते थे और ब्रश से अपनी पीठ मलने के लिए मुझे भीतर बुलाते थे। जिनको मैं विशेष सहायता देता था वे लगभग सदैव मुझे एक क्वार्टर देते थे।

मैंने जितनी गलतियाँ की थीं, उनमें सबसे बड़ी वह थी जिसके लिए लोग बहुत दिनों तक मेरी हँसी उड़ाते रहे। एक भद्र पुरुष ने दाढ़ी बनवाई, बाल कटाये और मालिश कराई। मैंने उनके जूतों पर पालिश की। ऐसा मालूम पड़ता था कि वह मुझे बख्शीश में एक डाइम या कम से कम एक निकेल देंगे। मैंने अपना चुस्त ब्रश उनके प्रिंस अलबर्ट कोट और पतलून पर चलाया। तब मैंने खूँटी पर से उनका ऊँचा रेशमी हैट उठाया और उसे ब्रश करने लगा। ऐसे हैट पर मैंने पहले कभी ब्रश नहीं लगाया था। उन्होंने श्री हम्फ्री का बिल चुकता कर दिया था। जब उन्होंने मेरी तरफ देखा, तब वह चिल्लाते हुए मेरी तरफ दौड़ पड़े "तुम ऐसा नहीं कर सकते।" मैं तुरन्त उनका तात्पर्य समझ गया। मैं रेशमी हैटों के विषय में एक-

दम अनभिज्ञ था। खेद प्रकट करने के लिए मैंने कुछ अस्पष्ट रूप से कहा। मैंने देखा कि दोनों नाई हँसी रोकने का प्रयत्न कर रहे हैं। श्री हम्फ्री मेरे निकट आये और मैंने उनको पहली बार मुझसे कठोर शब्द कहते हुए सुना। फिर अन्त में उन्होंने स्वाभाविक रूप से कहा, "चार्ली, तुम्हें नर्म ब्रश या साटन के कपड़े से सिल्क हैट पोछना चाहिए।" गाहक ने हैट को मेरे हाथों से छीन लिया था और उसे इस प्रकार लिए हुए था मानो मैं अकस्मात् कूदकर उनसे हैट ले लूँगा। पालिश के लिए उन्होंने मुझे एक निकेल दिया और इस प्रकार चले गये मानो वह इस स्थान में फिर कभी नहीं आयेंगे। दूसरे दिन मैंने अपने पास साटन का एक टुकड़ा और ऐसे नर्म बालों का ब्रश रख लिया कि यदि उसे आपकी हथेली पर फेरा जाता तब भी आपको महसूस न होता। उसके पश्चात् जब कोई सिल्क हैट पहनकर आता तब मैं उसे पोंछने के लिए तैयार रहता। अब मुझे "विश्वास' हो गया था क्योंकि मैंने "अनुभव" प्राप्त कर लिया था।

नाई लोग आपस में उस्तरों की बातें किया करते थे। उनमें से अधिकांश "वेड ऐण्ड बूचर" उस्तरे को सर्वश्रेष्ठ मानते थे। मुझे यह बड़ा मनोरंजक मालूम होता था कि उस्तरों के एक बनानेवाले का नाम भी बूचर (कसाई) था। जिस मनुष्य की दाढ़ी कड़ी और उलझी होती थी उसे वे "गिलहरी" कहते थे। एक ऐसा व्यक्ति अभी दरवाजे से बाहर निकला था। उसकी दाढ़ी फ्रैंक वाइकोफ ने बनाई थी और वह कह रहा था, "वह बिलकुल गिलहरी था। जब मैंने उसकी दाढ़ी बनाना आरम्भ की तब मैं जानता था कि उस पर फिर साबुन लगाकर रगड़ना होगा। मैंने अपने उस्तरे को छः बार तेज किया। तुम उसके गलमुच्छों को एक साथ नहीं काट सकते, उनको तो धीरे-धीरे घिसना होता है।"

सप्ताह में दो या तीन बार मैं दो और लड़कों से मिलता था। जो नाई की दूकानों में कुली का काम कर रहे थे। हम बातें करते थे कि "उन रफ जूतों के लिए कौन-सी पालिश अच्छी होती है" जिन पर दो कोट पालिश लगाकर ब्रश किया जाता है और गाहक की तरफ कैसे देखना चाहिए अथवा उससे क्या कहना चाहिए जिससे वह निकेल के स्थान में एक डाइम देना उचित समझे। इनमें से एक लड़के का नाम हैरी बेड था। वह समझता था कि जब मैं मुस्कराता हुआ कनखियों से गाहक को देखता हूँ तब वह मुझे एक निकेल फालतू देता है। मैंने दूसरे सीधे कुली और हैरी से कहा, "तुम अच्छी तरह गाहकों को देखते हो और चुस्त कपड़े पहनते हो। यही आधा से अधिक कारण है जिससे तुम हमसे अधिक बख्शीश पाते हो।" यदि हैरी किसी गाहक का चेहरा नहीं पसन्द करता था तो वह उसके साथ अशिष्ट व्यवहार करता था और जब वह कुछ बख्शीश नहीं पाता था तब वह व्यंग्यपूर्ण अवहेलना के साथ "आपको धन्यवाद" कहता था। हेड बार्बर ने यह देख लिया था और कहता था, "हैरी, तुम अच्छे कुली हो, किन्तु यदि तुम यह आदत बनाये रखोगे तब हमें तुमको जवाब देना पड़ेगा।"

हैरी और दूसरे कुली अपने अच्छे से अच्छे वस्त्र पहनकर रवि-वार के दोपहर को ब्राउन्स होटल के भोजन करने के कमरे में जाते थे और पचास सेण्टवाला भोजन मँगाते थे। वे इसे "क्लासी" कहते थे। उनके परिवार के लोग अच्छा खाना देते थे परन्तु पूरे सप्ताह भर नाई की दूकान में कुली का काम करने के पश्चात् वे "शौकीन लोगों के साथ बैठना" चाहते थे। हमारे पड़ोस में केवल हैरी वेड के पास ढोल था। वह उसे रात को बेरियन स्ट्रीट के चरागाह में लाता था जहाँ लड़के घास पर बैठते थे और वह खड़ा होकर उनको

ढोल के ताल सुनाता था। हैरी की बाँहें और कलाइयाँ लकड़ियाँ लेकर तेजी से ढोल बजाती थीं और वह खूब अभ्यास करता था। उसे आशा थी कि वह किसी बैण्ड में शामिल होकर यात्रा पर जायगा। हममें से प्रत्येक व्यक्ति चाहता था कि यदि उसके पास ढोल होता और यदि वह हैरी की तरह उसे बजा सकता तो बहुत अच्छा होता। वह रविवार को ब्राउन्स होटल में पचास सेण्ट मूल्यवाला भोजन नहीं करता था तथापि वह उच्च श्रेणी का माना जाता था।

१८९३ में एक रात को हैरी उस स्थान पर आया जहाँ हम लोग चरागाह में बैठे थे। वह शिकागो से आनेवाली ट्रेन से अभी-अभी उतरा था जहाँ उसने तीन दिन तक वर्ल्ड्स फेयर-विशाल कोलम्बियन प्रदर्शनी देखी थी। हमारे साथ बैठकर एक घंटे तक उसने मेले के विषय में बात चीत की। जब उसने बात बंद की तब हमने उससे प्रश्न पूछे और वह फिर बातें करने लगा जिससे हमें ऐसा लगा मानो हम शिकागो के वर्ल्ड्स फेयर में मौजूद हों। हमारे पास इतना पैसा नहीं था कि हम वहाँ जाते, परन्तु हैरी ने उसके कुछ भागों का हमसे सजीव चित्रण किया।

नाई की दूकान में पतझड़ और जाड़े के महीनों क बाद वसन्त आया और मेरे मन में सन्देह उत्पन्न हो रहा था कि मैं नाई का काम करने के लिए नहीं बनाया गया हूँ। वायु में सुगंध लिये हुए वसन्त आया और मेरे जीवन में सैमबार्लो ने पदार्पण किया। उसने गैल्वा के निकटस्थ अपने फार्म को बेचकर दूध का व्यापार आरम्भ किया था। वह हँसमुख, नाटा और दृढ़ मांसपेशियोंवाला मनुष्य था। उसके कंधे कुछ झुके हुए थे। उसका चेहरा लाल और सब मौसमों को सहे हुए था। उसकी आँखें भूरी थीं, मूँछ घनी और

भूरी थी और उसकी आवाज मुझे पसन्द थी। वह "बार्न-डान्स" में सारंगी बजाया करता था और अब भी सारंगी बजाना उसे पसन्द था।

एक दिन नीचे उसकी दूध की गाड़ी रुकी। बगल के रास्ते से उसने मुझे बुलाया और पूछा, कि क्या तुम मेरे यहाँ बारह डालर मासिक वेतन और भोजन पर काम करोगे? मैंने उसकी बात मान ली। मैंने सोचा कि यह बाहर का काम होगा और मैं रोज आकाश का खूब दर्शन कर सकूँगा। नाई की दूकान में मेरा गला घुटने लगा था। मैंने श्री हम्फ्री से विदा ली। मेरे लिए उनसे यह कहना कठिन हो गया, "श्री हम्फ्री, आप मेरे ऊपर दयालु रहे हैं किन्तु मैं आपके यहाँ काम छोड़ने पर विवश हूँ। मैं सोचता हूँ कि नाई का काम करने के लिए मेरी सृष्टि नहीं हुई है।"

चौदहवाँ परिच्छेद

फिर दूध-विक्रय का काम

सोलह या अधिक महीनों तक प्रतिदिन प्रातःकाल में साढ़े छः बजे घर से निकलकर बेरियन स्ट्रीट पर पश्चिम तरफ जाता था। मेरे मार्ग में क्यू० स्विच यार्ड मार्ग, माइक ओकोनार का रहने का सस्ता अस्तबल, बोयर ब्रूम फैक्टरी, फिर नाक्स कालेज का हाता और तत्पश्चात् ओल्ड मेन इमारत के सामने का भाग पड़ता था। प्रतिदिन प्रातःकाल में ओल्ड मेन का पूर्वी भाग देखता था जहाँ लोगों ने अक्तूबर १८५८ में लिंकन और डगलस के वाद-विवाद के लिए चबूतरा बनाया था। ओल्ड मेन के उत्तरी तरफ मैंने काँसे की तख्ती पर लिखे हुए उन शब्दों को अनेक बार पढ़ा था। जो लिंकन और डगलस ने कहे थे। वे शब्द मुझे याद थे और कभी-कभी मैं केवल

उन शब्दों को पढ़ने के लिए रुक जाता था जिनको लिंकन ने अक्तूबर के हवादार ठंडे दिन को बीस हजार लोगों से कहा था : "जब वह तर्क करते हैं कि जिस किसी को दासों की आवश्यकता है उसे उन्हें रखने का अधिकार है तब वह हमारे चतुर्दिक के नैतिक प्रकाशों को बुझा रहे हैं।" मैं उनको जाड़े के सूर्योदय के समय, ग्रीष्म के दिन के प्रकाश, गिरती हुई बर्फ और वर्षा; वर्ष के सब मौसमों में पढ़ता था।

तब मैं साउथ स्ट्रीट पर मनमथ बूलेवाई में समुयल कोसुथ बार्लो के मकान और धान्यागार तक जाता था। वहाँ मैं तीन घोड़ों को अस्तबल में से निकालता था और फावड़े से उनको साफ करता था। कभी-कभी किसी घोड़े के पैर की चोट में मिट्टी भरता था और गाड़ी में घोड़ा जोतता था। उस समय तक बिल वाल्टर्स जो एक सुन्दर परन्तु भद्दी आवाज और बादामी मूँछवाला मनुष्य था, नगर के पश्चिम के दो फार्मों से बाँटने के लिए दूध लेकर आ जाता था। श्री बार्लो घर के बाहर होते थे और हैरी (फैटी) हार्ट बाहर आता था। वह मोटा नहीं था किन्तु लड़कों ने उसको (फैटी) का उपनाम दिया था और वह प्रचलित हो गया। वह सीधा चलता था; उसके कंधे वर्गाकार थे; उसके गाल गोल और सम्भवतः कुछ उभरे हुए थे; उसके बाल और नेत्र काले थे और वह जल्दी-जल्दी मुस्कराता था। बिल वाल्टर्स गाड़ी से उत्तर तरफ जाता था और दूध बाँटता था, श्री बार्लो, फैटी और मैं नगर के दक्षिणी भाग में दूध बाँटते थे।

सैम बार्लो जार्ज बर्टन से भिन्न था। वह दो गैलन दूध की बाल्टी लेकर भवन-समूहों में पैदल जाता था और फैटी या मैं गाड़ी को हाँकते हुए ले जाता था। वह हमसे बराबर कहता रहता था कि गाहकों की शिकायतों पर ध्यान देना, कभी उनकी अवहेलना न

करना। इसके प्रतिकूल बर्टन इस प्रकार व्यवहार करता था मानो लोगों को उससे दूध मिलना कोई विशेष गौरव की बात हो। श्री बार्लो का हमारे लिए आदेश था कि हम बराबर घरों की तरफ देखते रहें और यदि किसी घर से कोई निकले तो उससे पूछें कि क्या आप हमसे दूध लेना पसन्द करेंगे? साधारणतया हमें नया गाहक मिलता था। अक्तूबर से आगे जब गायें चरने नहीं जाती थीं हम एक डालर के अठारह क्वार्ट दूध के टिकट बेचते थे और उसके बाद गर्मी में एक डालर के बीस क्वार्ट टिकट बेचते थे। जून के प्रारम्भिक भाग से सितम्बर के बीच तक हम दिन में दो बार दूध बाँटते थे। अधिकांश गाहकों के पास बर्फ के बक्स नहीं थे और वे यह नहीं चाहते थे कि रात में उनका दूध खट्टा हो जाय। इसका अर्थ यह होता था कि गर्मी के महीनों में श्री बार्लो और मैं सब बाल्टों को दो बार धोते थे—बड़े आठ गैलनवाले बाल्टे जो गाड़ी में रक्खे रहते थे और दो और तीन गैलनवाली बाल्टियाँ जिन्हें लेकर हम जाते थे और जिनसे पिन्ट और क्वार्ट द्वारा नापकर गाहकों को दूध देते थे। बर्तनों के धोने के बाद श्रीमती बार्लो और उनकी पुत्री के द्वारा परसा हुआ अच्छा भोजन हमें मिलता था।

एक घर में मैं प्रतिदिन एक गाय का दूध एक डिब्बे में ले जाता था। उस घर के बच्चे के लिए डाक्टर ने आदेश दिया था कि वह सदा एक ही गाय का दूध पिया करे। हमको ऐसा करने पर गर्व था क्योंकि बच्चे के पिता फ्रैंक बुलर्ड थे जिनका नाम सारे देश में अखबारों में छप चुका था। वह तेज चलनेवाली मेल ट्रेन के इंजीनियर थे और उन्होंने गाड़ी की चाल का विश्व में नया रेकार्ड स्थापित किया था। मैं उनको अपने घर से बाहर निकलते हुए और फिर सड़क पर बेंत का बना हुआ जलपान का डिब्बा

लेकर शान्तिपूर्वक जाते हुए देखता था। उनके कंधे वर्गाकार थे। वह शरीर और गर्दन सीधी करके चलते थे। उनके बाल काले थे और मूँछ काली थी। हम यथाशक्ति यही चेष्टा करते थे कि बच्चे को बराबर एक ही गाय का दूध मिलता रहे। किन्तु दो-तीन बार हम विवश हो जाते थे। दूध और डिब्बे बदल जाते थे और बच्चे को कई गायों का दूध मिलता था। तथापि हम यह कभी नहीं सुनते थे कि बच्चे की दशा बिगड़ रही है।

जब मैं दूध बाँटने जाया करता था तभी मेरे हृदय में एक लड़की के लिए प्रेम उत्पन्न हो गया। दिन-रात उसका चेहरा मेरे मन में नाचा करता था। उसके परिवार के लोग क्यू० के बार्लिंग्टन मार्गों के निकट एकेडमी स्ट्रीट में रहते थे। वे साधारणतया बरसाती में एक चीनी मिट्टी का बर्तन रख देते थे और उसमें एक क्वार्ट का टिकट डाल देते थे। मैं मिट्टी के बर्तन में से टिकट निकाल लेता था और एक क्वार्ट दूध नापकर उस बर्तन में उँड़ेल देता था। मैं यह भली भाँति जानता था कि वह कभी-कभी रसोईघर की खिड़की पर खड़ी होकर मेरा कृत्य देखती रहती है, किन्तु यदि मैं खिड़की की ओर देखता था तब वह वहाँ से खिसक जाती थी। तथापि सप्ताह में दो-तीन बार चीनी मिट्टी का बर्तन वहाँ नहीं होता था और मैं पुकारता था "दूध" और वह हाथ में वह बर्तन लेकर मुस्कराती हुई आती थी। पहले वह केवल "क्वार्ट" कहती थी और मैं एक क्वार्ट दूध उँड़ेलकर चल देता था। परन्तु मैंने सीखा कि यदि मैं उससे शिष्ट और मधुर "प्रातःकाल का नमस्कार" कहता तो वह उत्तर में "प्रातःकाल का नमस्कार" कहती है जो मेरे लिए आशीर्वाद की भाँति स्मरणीय था। मैंने यह भी सीखा कि यदि मैं यह शब्द कहता हूँ कि "आज का दिन बड़ा अच्छा है" या "आज ठंडी हवा चल रही है" तो

वह जल्दी से कह देती है कि "हाँ, है तो" और मैं यह सोचता हुआ चला जाता था कि किस प्रकार मैं कभी उससे एक या दो मिनट वार्तालाप कर सकूँगा।

आरम्भ से ही यह निराशापूर्ण प्रेम था। मेरे पहली और अन्तिम बार उसके साथ टहलने के बाद वह कम होने लगा। गर्मी की रात को मैं नाक्स स्ट्रीट कांग्रीनेशनल चर्च की पुनरुत्थान प्रार्थना में गया। वहाँ मैंने उसको दूसरी लड़की के साथ देखा। प्रार्थना के उपरान्त मेरे मित्र ने दूसरी लड़की को अपने साथ ले लिया और मैंने अपने स्वप्न की लड़की के साथ अपने को चलता हुआ पाया। मैंने कहा था, "क्या मुझे आपको आपके घर तक पहुँचाना है?" "निस्सन्देह", उसने कहा। हम लोग गर्मी की चाँदनी रात में साथ-साथ चलने लगे और हमें चौदह भवन-समूह पार करना था, मैंने कहा, "आज की चाँदनी रात बहुत ही सुन्दर है।" उसने कहा, "हाँ" और हम लोग चुपचाप एक भवन-समूह तक गये। मैंने कहा, "आजकल बड़ी गर्मी पड़ रही है।" उसने कहा, "हाँ" और हम एक भवन-समूह और चले। मैंने कहा, "गिरजाघर में अकेले गानेवालों में से एक ने काफी सुन्दर गाना गाया था।" उसने फिर अपनी सहमति प्रकट की और बिना एक शब्द कहे हुए हम आगे चले। मैंने कहा कि अगले भवन-समूह के सामने पटरी में लगे हुए लकड़ी के तख्ते ढीले हैं, इसलिए हमें देखकर कदम डालना चाहिए।

मैं अपने दाहिने हाथ से उसकी बाईं बाँह को केहुनी के ऊपर पकड़े हुए था क्योंकि मैंने सुना और देखा था कि किसी लड़की को घर पहुँचने का यही उचित नियम है। मेरी लज्जा का प्रभाव मेरी बाँह पर भी पड़ा। कई भवन-समूह तक मेरा विश्वास था कि सम्भवतः जिस प्रकार मैं उसकी बाँह पकड़े हूँ उसे वह पसन्द नहीं है।

कुछ भवन-समूहों के पश्चात् मुझे ऐसा मालूम होता था मेरी बाँह में चोट लगी है और मैं लकड़ी की बाँह लगाये हूँ जिसे हटाकर मुझे कुछ शान्ति प्राप्त करनी चाहिए। तिस पर भी मैं उसकी बाँह पकड़े ही रहा। यदि मैं उसकी बाँह छोड़ता तो मुझे उसका कारण बताना पड़ता और मेरी समझ में कोई कारण नहीं आता था। जिन भवन-समूहों के सामने हम चुपचाप चलते थे उनमें से एक के सामने मैं यह कह सकता था, "क्या तुम विश्वास करोगी कि जब तुम मुझसे दूर होती हो तब बार-बार मुझे तुम्हारे मुखमंडल का स्मरण होता रहता है। सर्वदा मुझे ऐसा मालूम होता है कि जितने चेहरों को मैंने देखा है वह उन सबसे अधिक आकर्षक है।" परन्तु इसके बजाय मैंने पूछा, "तुम्हारे पिता जो मालगाड़ी के कंडक्टर हैं, वह अपने काम को कैसा पसन्द करते हैं?"

चौदहों भवन-समूह समाप्त हो गये। उसके फाटक पर मैंने उसकी बाँह छोड़ दी, उससे "विदाई का नमस्कार" कहा और शीघ्रतापूर्वक लौट पड़ा मानो मुझे कोई काम रहा हो। मैं यह देखने के लिए भी नहीं रुका कि वह सामने के फाटक तक पहुँची या नहीं। मैंने यह निर्णय कर लिया था कि हम दोनों की प्रकृति एक दूसरे के अनुकूल नहीं है। जब मैं घर की ओर जाता था तब मेरे मन में सन्तोष था। मेरी भीरु दाहिनी बाँह शनैः-शनैः अपनी निष्प्राणता से मुक्त तो हो गई।

प्रतिमास बारह डालर और प्रतिदिन अच्छे भोजन पर बार्लो के यहाँ सोलह या अठारह महीने काम करने के पश्चात् मैंने उनसे अपना वेतन बढ़ाने को कहा। उन्होंने कहा कि "मेरे व्यापार में इतना लाभ नहीं होता कि मैं तुम्हारा वेतन बढ़ा सकूँ।" तब मुझे कहना पड़ा, "आपका साथ छोड़ना मुझे अच्छा नहीं लगता। आप

उन सब मनुष्यों से अच्छे हैं जिनके यहाँ मैंने काम किया है। परन्तु मैं देखता हूँ कि मेरी कुछ भी उन्नति नहीं हो रही है।" उन्होंने कहा, "चार्ली, बहुत अच्छा, यदि तुम्हें जाना है तो जाओ। जो कुछ अवश्यम्भावी है उसे होने दो। तुमने हमारे यहाँ अच्छा काम किया है और हम लोगों का कुछ समय एक दूसरे के साथ अच्छी तरह व्यतीत हुआ है। मुझे आशा है कि तुम यदा-कदा आकर हमसे मिलते रहोगे।" और मैं वैसा ही करता भी रहा। उन्होंने एक नया एडिसन फोनोग्राफ और अनेक सिलिण्डर रेकार्ड खरीदे थे और मैं उस पर (कवि और किसान) नामक संगीत सुनने से कभी नहीं ऊबता था। जब तक सैम बार्लो जीवित थे तब तक उनके साथ मेरी अच्छी मित्रता रही।

पन्द्रहवाँ परिच्छेद

सड़क पर

जब मैं बाल्यावस्था से युवावस्था में प्रवेश कर रहा था तब कभी-कभी मेरा समय बड़ा कटु और एकाकी होता था। परन्तु शनैः-शनैः मैं यह भी समझता जा रहा था कि जिन मनुष्यों और स्त्रियों को मैं जीवन में जानता हूँ और विशेषकर जिन महान् पुरुषों के विषय में मैंने पढ़ा है उनके लिए जीवन सरल नहीं था, उनके जीवन में कभी-कभी कटु और एकाकी समय आता था और यह कि केवल संघर्ष के द्वारा ही हमारी शारीरिक और मानसिक शक्ति का विकास होता है, मैंने "टाम द बूटब्लैक", "फ्राम रैग्स टु रिचेज" और होरैशियो आल्जर द्वारा लिखी हुई पुस्तकें पढ़ी थीं। उनके प्रत्येक नायक के जीवन में भाग्य की रेखा होती थी। एक

भगेड़ू घोड़ा था और नायक ने अपना जीवन खतरे में डालकर और उसकी लगाम पकड़कर एक धनी मनुष्य की लड़की के जीवन की रक्षा की थी। उसने लड़की के साथ विवाह कर लिया और तब से उसका जीवन सुखपूर्ण हो गया।

जीवन में भाग्य नाम की एक वस्तु होती है परन्तु यदि भाग्य आपके अनुकूल न होवे तो आपको संघर्ष में प्रवेश करके उसे पसन्द करना चाहिए। मैंने ओइडा की लिखी हुई पुस्तक "अन्डर ट फ्लैग्ज" पढ़ा था। नायक के पास जो कुछ था उसने एक घोड़े के सिवाय उस सबको खो दिया। वह बिना कोई शिकायत किये हुए सैनिक का गन्दा और रक्तपूर्ण जीवन व्यतीत करता था। मैंने आलिव श्रेनेर की पुस्तक "द स्टोरी आफ ऐन-अफ्रिकन फार्म" पढ़ा। उसमें लगभग हर पृष्ठ पर दुखद-जीवन का वर्णन था तथापि उसमें गानेवाले तारों का धीमा संगीत और प्रेम इतना गम्भीर था कि वह भूला नहीं जा सकता था। मेरा विश्वास था कि अनेक मनुष्यों का जीवन मेरे जीवन की अपेक्षा कहीं अधिक कटु और एकाकी है और उनके सामने निश्चित आदर्श, स्वप्न, ध्येय, आशाएँ और रहस्य थे जो संघर्ष में भी उनको प्रोत्साहित करते थे। मैं टटोल रहा था।

मेरी आयु उन्नीस वर्ष थी और मैं लगभग विकसित मनुष्य हो गया था। मैं बेचैन था। जो काम मुझे मिले थे वे सब मुझे ऐसे मालूम होते थे। कि उनको करने से भविष्य में मेरी कोई उन्नति न हो सकेगी। लड़कों में मैं अपनी सत्ता स्थापित कर सकता था। परन्तु लड़कियों के बीच में मैं भीरु और लज्जित रहता था और जब तक मैं उनसे अलग नहीं हो जाता था तब तक नहीं जानता था कि क्या कहना चाहिए और तब भी मुझे पूरा निश्चय नहीं होता था कि

क्या कहना चाहिए। मुझे कभी भी कोई ऐसी लड़की नहीं मिली जो मेरे साथ स्थिरता का व्यवहार करती।

मैंने स्पैनिश जनरल बेलर और क्यूबा के लोगों के साथ की गई उनकी निष्ठुरताओं के विषय में पढ़ा जो स्वतंत्रता और लोकतंत्र चाहते थे। मैंने गोमेज, गारशिया, मैसियो और उनकी छोटी सेनाओं के विषय में पढ़ा जो बेलर से युद्ध करती थीं। मेरे लिए वे "शूर-वीर" हो गये। मैं कोई उपाय ढूँढ़ने लगा। जिससे वहाँ जाकर मैं भी एक सेना में भरती हो जाऊँ। जो कोई भी रँगरूट भरती करनेवाला गुमाश्ता वहाँ मुझे पहुँचा देता उसी के सामने मैं लड़ाई में सम्मिलित होने के प्रतिज्ञा-पत्र पर हस्ताक्षर कर देता। परन्तु इस आशा का कोई परिणाम न निकला।

१८९६ और १८९७ में मेरे ऊपर जो कुछ घटित हुआ उसका वर्णन करना मेरे लिए सरल न होगा। मैं अपने जन्म-नगर से घृणा करता था तथापि उससे प्रेम करता था। जितना मैं अपने नगर और लोगों से घृणा और प्रेम करता था लगभग उतनी ही घृणा और प्रेम मैं स्वयं अपने आपसे करता था। मैं यह समझ गया कि मेरे कष्ट का कारण नगर और लोगों में होने की अपेक्षा मेरे हृदय में अधिक है।

१८९७ की जून में पश्चिम की तरफ जाकर कैन्सस के गेहूँ के खेतों में काम करने का मैंने निर्णय किया। मैंने सोचा कि मैं रेल की पटरी पकड़कर जाऊँगा। मैं घुमक्कड़ होना चाहता था जो कभी काम नहीं करता। मैं काम ढूँढ़ना चाहता था परन्तु कोई काम मुझे पसन्द नहीं आता था। इन दोनों प्रकार के काफी लोगों से मेरी मुलाकात हो चुकी थी। मैं चाहता था कि अपने जन्म-नगर

से कहीं दूर चला जाऊँ क्योंकि जन्म-नगर में प्रत्येक सड़क, प्रत्येक मकान के निवासी और नगर की सीमा पर के किसानों को जानता था।

मैं गेल्सबर्ग से बहुत दूर कभी नहीं गया था। मेरी अवस्था सोलह वर्ष थी जब मैं पहली बार रेलगाड़ी पर बैठकर पचास मील गया। मैंने थोड़ी धन-राशि एकत्र की थी। मुझे ज्ञात हुआ कि मेरे पास अस्सी सेण्ट हैं। मेरे पिता ने मेरे लिए क्यू० मार्ग का पास प्राप्त कर लिया और मैं पियोरिया तक अकेला गया। मुझे प्रतीत हुआ कि मैं महत्त्वपूर्ण और स्वतंत्र व्यक्ति हूँ। मैं स्टेट फेयर में गया और बहुत देर तक इलिनोइस नदी और स्टीमबोटों को देखता रहा। मैं एक यात्री था जो संसार को देखने निकला था और जब मैं घर पहुँचा तब और लोगों को यह बतलाने से बाज नहीं आ सकता था कि मुझे पियोरिया कैसा दिखाई पड़ता था।

केवल इसके पहले साल जब मैं अठारह वर्ष का था तब मैं पहली बार शिकागो गया था। मैंने एक डालर और पचास सेण्ट इकट्ठा किया था और मेरे कई वर्षों के प्रार्थना करने के पश्चात् मेरे पिता ने मेरे लिए "क्यू०" पर पास प्राप्त कर लिया, मैं बिना किसी सामान के यात्रा कर रहा था, मेरे पास कोई झोला आदि नहीं था। मेरी जेब में मेरा रुपया, एक चाकू, थोड़ी रस्सी, एक पाइप और तम्बाकू और दो रुमाल थे। जान जोडीन ने मुझे सिखाया था कि शिकागो में सस्ता जीवन कैसे व्यतीत किया जा सकता है। मैं जानता था कि जितने अधिक दिनों तक मेरा डेढ़ डालर चलेगा उतने ही अधिक दिनों तक मैं ठहर सकूँगा। मैं प्रायः क्लार्क स्ट्रीट के निकट वान ब्योरेन पर स्थित पिट्सबर्ग जोज में जलपान किया करता था जिसमें गेहूँ की रोटी, शीरा, ओलियो और दूध मिली हुई काफी मिलती थी। इस सबका दाम पाँच सेण्ट होता था। दोपहर

को एक बड़े कटोरे भर उबाला हुआ गोश्त, यथेष्ट रोटी और काफी खाता था। जिसका दाम दस सेण्ट होता था। रात को भी मैं यही खाता था।

साउथ स्टेट स्ट्रीट पर स्थित एक होटल की तीसरी मंजिल पर एक कमरे का किराया पचीस सेण्ट प्रति रात था। लोहे का हिलता हुआ पतंग लकड़ी के फर्श का अधिकांश भाग घेरे हुए था। कोनों में धूल और जलाई हुई दियासलाइयों की राशियाँ थीं। मेरे कपड़े टाँगने के लिए कीलें थीं। एक तंग अँधेरे मार्ग में होकर मैं पानी की कोठरी और नहाने-धोने के कमरे में जाता था जिसमें एक रोल करने-वाला तौलिया रक्खा था।

मैं दो रात को वेरायटी शो में गया और दस सेण्ट देकर ऊपरी मंजिल में संगीत तथा नृत्य-प्रधान नाटक देखा। जान जोडीनने कहा था कि साउथ स्टेट में दस सेण्ट देकर ऐडेन म्यूजी अवश्य देखना और वहाँ मैंने मोम के बने हुए जेस जेम्स और अनेक हत्यारों को देखा। मैं स्टेट स्ट्रीट डिपार्टमेण्ट के बड़े स्टोरों में होकर गया जिनके विषय में मैंने सालों से सुन रक्खा था। मैंने वैन व्यूरन में सीजेल कूपर्स और उत्तर तरफ मार्शल फील्ड्स स्टोर्स देखे। मैं डेली न्यूज बिल्डिग, ट्रिव्यून और इण्टर ओशन विल्डिंग्ज के सामने खड़ा हुआ था। मैंने उनके इतने अधिक समाचार-पत्र ढोये और बेचे थे कि मैं यह देखना चाहता था कि वे कहाँ छापे जाते हैं। मैं विक्टर लासन और उनके "रेकार्ड" और "डेली न्यूज" का बहुत सम्मान करता था और उनके दफ्तर में जाकर उनसे बातें करना पसन्द करता परन्तु मेरी समझ में न आया कि मैं क्या कहूँगा।

मैं मीलों का पैदल चक्कर लगाता था और सड़कों के शोरगुल से नहीं ऊबता था। ट्रक, घोड़ा हाँकनेवाले, ठेले गाड़ियाँ, बग्घियाँ,

फिटनों, सामान पहुँचानेवाली गाड़ियाँ जिन पर बहुत उँचाई तक सन्दूक लदे होते थे। शराबखाने की गाड़ियाँ जिन पर पीपे लदे होते थे, एक घोड़े और दो घोड़ोंवाली किराये की गाड़ियाँ, कभी-कभी बक बोर्ड और कभी-कभी एक बैरूश जिनमें कोचवान वर्दी पहने रहते थे, कभी-कभी घोड़सवार भीड़ को चीरता हुआ, सर्वत्र घोड़े और कहीं-कहीं खच्चर आते-जाते रहते थे और सड़कों पर के घिसे हुए पत्थर जिन पर धूल और घोड़ों की लीद की तहें जमी होती थीं इन चीजों से मैं परेशान नहीं होता था। मैं मिशिगन अवेन्यू पर चलता था और घण्टों तक उस स्थान को देखता था जहाँ अपने जीवन में प्रथम बार मैंने चमकते हुए पानी और आकाश को मिलते हुए देखा था। मैं लूप के हर भवन-समूह के चारों ओर घूमता था और उँचाई पर बनी हुई रेल की पटरियों के ढाँचों को काँपते हुए देखता था और मुझे थोड़ा-थोड़ा सन्देह होता था कि कहीं रेल-गाड़ी सड़क पर न गिर पड़े। मैं बोर्ड आफ ट्रेड में गया और अनाज के सट्टेबाजों को उँगलियाँ उठाकर दाम चिल्लाते हुए देखा।

शिकागो में अपने निवास के तीसरे दिन के अपराह्न में मैं सैलून में ठहरा जिसमें मुफ्त नाश्ते का साइनबोर्ड लगा था। मैंने राई की रोटी के टुकड़े और पनीर और बैलोनी के टुकड़े खाये। एक गिलास जौ की शराब के लिए एक निकेल दिया। मैं जौ की शराब के लिए बहुत इच्छुक नहीं था परन्तु शिकागो के सैलूनों के विषय में मैंने इतना अधिक सुना था कि मैंने निश्चय कर लिया कि एक सैलून को भीतर से बिना देखे हुए मैं शिकागो से नहीं जाऊँगा।

डेढ़ डालर खर्च करके मैंने शिकागो को तीन दिन देखा था। मैं घर वापस गया और लोगों को बताने की चेष्टा करता था कि शिकागो कैसा है। पिता और माता को छोड़कर

और कोई वहाँ नहीं गया था और वे लोग भी वहाँ केवल उतनी देर ठहरे थे कि एक रेलगाड़ी को छोड़कर दूसरी को पकड़ें। मैं प्रसन्न हुआ जब मैं अपने घर वापस आया जहाँ कमरे का फर्श साफ था और बिस्तर की चादरें साफ थीं और पिट्सबर्ग जोज के यहाँ के भोजन की अपेक्षा माता का पकाया भोजन कहीं अच्छा था। तथापि कभी-कभी मेरी इच्छा होती थी कि मैं सड़क की उन भीड़ों और शोरगुल में जाऊँ।

अब मैं पर्यटन करना चाहता था। मेरा परिवार इस विचार को पसन्द नहीं करता था। पिताजी अप्रसन्न थे। माता ने मेरा चुम्बन किया और उनकी आँखों में आँसू भर आये जब एक दिन दोपहर के भोजन के उपरांत मैं घर से निकल पड़ा। मेरे हाथ खाली थे। मेरे पास न कोई झोला था और न बंडल। मैं काले साटन की कमीज, कोट, वेस्टकोट, पतलून, ऊँचा हैट, अच्छे जूते और मोजे पहने था परन्तु कपड़ों के नीचे मैं कोई कपड़ा नहीं पहने था। मेरी जेबों में साबुन का छोटा बार, एक उस्तरा, एक कंघी, एक छोटा दर्पण, दो रुमाल, एक रस्सी, सुइयाँ और डोरा, एक वाटरबरी घड़ी, पाइप और एक थैली तम्बाकू, तीन डालर और पच्चीस सेण्ट थे।

जून का अन्तिम सप्ताह था। अपराह्न निर्मल और शीतल था। सैन्टा फी स्टेशन के थोड़ा पश्चिम एक मालगाड़ी आज्ञा पाने पर चलने के लिए खड़ी थी। जब गाड़ी चलने लगी तब मैं दौड़कर एक डिब्बे में चढ़ गया। मैं बगल के खुले दरवाजे के पास खड़ा था और मीलों तक फैले हुए नये मक्के के खेतों को देखता रहा। मिसि-सिपी के ऊपर के लम्बे पुल को पार करके मैंने नदी को सतृष्ण आँखों से देखा और उस महत्त्वपूर्ण पुरानी नदी के देखने से मुझे काफी

तृप्ति हुई। मेरे पिता के सिवाय जब वह कैन्सस में जमीन खरीदने के लिए गये थे परिवार के और किसी ने इस फादर आफ वाटर्स को नहीं देखा था। फोर्ट मैडिसन में जब रेलगाड़ी की चाल धीमी हुई तब मैं कूदकर बाहर निकल गया।

मैंने एक निकेल का पनीर और पतले बिस्कुट खरीदे और बैठकर उन्हें खाता और मिसिसिपी के पार देखता था। एक छोटी स्टीम बोट के कप्तान ने कहा कि कीलों के पीपे उतारकर मैं कियोकुक तक बिना किराया दिये हुए चल सकता हूँ। मैं नाव पर सोता था, जलपान करता था और खेतों और नगरों के पास से गुजरता हुआ जाता था। बार्लिंगटन, क्वीन्सी और कियोकुक में मैं कीलों के पीपों को कंधों पर रख घाटों पर उतारता था। कियोकुक में एक नहर के निकट घास पर मैंने अखबार बिछाया और खुले मैदान में सो गया। मैंने जेब से साबुन निकाला और नहर में हाथ-मुँह धोकर रुमाल से पोछ लिया। तब मुझे एक आदमी मिला जिसने कहा, "क्या पर्यटन पर चल रहे हो?" जब मैंने "हाँ" कहा तब वह मुझे उस स्थान पर ले गया जहाँ अखबार की पोटली खोलकर वह रोटी और गोश्त खा रहा था। उसने कहा, "पिछली रात को मुझे तीन खूराक (लम्प) भोजन मिला था।" यदि आप किसी घर पर जाकर खाना माँगते हैं तो वहाँ पर जो खाना मिलता है उसे खूराक (लम्प) कहते हैं। मेरे नये मित्र ने कहा, "खाना देने के पहले लोग मुझे बैठा देते थे।" एक घर में उससे कहा गया था कि रसोईघर की मेज पर बैठकर खाना खा लो। तब चूँकि आज का दिन नहर और नीले आकाश को देखने के लिए वह खाली रखना चाहता था, वह एक घर से दूसरे घर जाकर खाना माँगता रहा। वह लकड़ी की पटरियों के नीचे खाना छिपा देता था जिससे उसके हाथ खाली रहें। जो

खाना उसने मुझे दिया उसमें मक्खन लगी हुई रोटी के चार टुकड़े और भूने हुए गोश्त के दो टुकड़े थे। मैंने कहा, "यह मेरे लिए जल-पान और दोपहर का भोजन दोनों है।"

उसका चेहरा और हाथ इतने मोटे थे कि मानो यदि आप उनको छुएँ तो आपकी उँगलियाँ उनमें धँस जायँगी। वह ब्रूकलिन के एक अनाथालय से आया था, और पर्यटन के लिए निकला था। वह कहता था कि जीवन में मैंने कभी एक दिन भी काम नहीं किया है। उसे इस बात का गर्व था कि बिना काम किये ही उसने जीवन-यापन का एक उपाय ढूँढ़ निकाला है। वह सिनसिनाटी स्लिम, शिकागो रेड और दूसरे पेशेवर भिखारियों का नाम लेता था जिनके साथ उसने पर्यटन किया था। मानो वे सब भिखारियों में विख्यात महान् नाम थे और मैंने अवश्य उनके विषय में सुना होगा। वह उन नगरों का नाम बतलाता था जहाँ जेल में अच्छा खाना मिलता था और वह कहता था कि किस प्रकार जाड़े में वह भिक्षुकत्व के लिए दो तीन महीने उन जेलों में दंड भोगेगा। अथवा "मैं जाड़े के दिनों में दक्षिण चला जाऊँगा।" वह कहता था, और "नगरों से दूर रहूँगा जहाँ पर लोग हमसे द्वेष रखते हैं।" उसकी जबान तेज थी और वह जल्दी-जल्दी बातें करता था और शीघ्र ही मैं उसको उस स्थान पर छोड़कर चला गया जहाँ वह नीले आकाश को देखता हुआ हरी घास पर पड़ा था। मुझे उसके लिए खेद हुआ होता यदि उसे यह दृढ़ विश्वास न होता कि वह अपनी रक्षा स्वयं कर सकता है।

उस दिन की वर्षा और तूफान की रात को मैं एक मकान के सूखे तहखाने में सोया जिसको बढ़इयों ने पूरा नहीं किया था और उनके काम पर आने के पहले ही मैं उठकर बाहर निकल गया। मैंने पन्द्रह सेण्ट देकर जलपान किया। मुझे

टमाटर का एक पुराना कनस्तर मिला। मैंने एक सस्ता ब्रश खरीदा और कुछ निकेल देकर उसे ऐस्फाल्टम से भरवा लिया। तब मैं एक दरवाजे से दूसरे दरवाजे को गया और जंग लगे हुए स्टोवों को काला रँगने का तीन काम पाया। जिससे मुझे पचहत्तर सेंट मिले। मुझे दो काम और मिले जिनके करने के लिए मुझे दिन और रात का भोजन प्राप्त हुआ। मैं फिर उसी मकान में सोया जिसे बढ़इयों ने नहीं पूरा किया था और दूसरे दिन एक घर से दूसरे घर को गया परन्तु नकद मजदूरी पर जंग लगे हुए स्टोवों पर ऐस्फाल्टम पोतने का काम मुझे नहीं मिला यद्यपि तीन कामों के लिए जलपान, दिन का भोजन और रात का भोजन प्राप्त हुआ था। जिस दिन पैसा देकर मैंने कनस्तर को ऐस्फाल्टम से फिर भराया, उसके बादवाले दिन को, मुझे तीन बार का भोजन और पचीस सेण्ट प्राप्त हुआ। उसके बादवाले दिन की भी वही दशा रही। मुझे ज्ञात हुआ कि घरों की मालकिनें बहुत कुछ वैसी ही हैं जैसी वे जिनके यहाँ मैं गैल्सबर्ग में दूध पहुँचाया करता था। मुझे यह भी मालूम हुआ कि यदि मैं कहता था कि मैं कालेज में जाने के लिए धन कमाने की आशा करता था तब वे मेरी सहायता करने के लिए तैयार थीं। दिक्कत यह थी कि उनके यहाँ जंग लगे हुए काफी स्टोव नहीं थे।

अगले दिन जुलाई की चार तारीख थी और लोगों की भीड़ कियोकुक में आ रही थी। मैंने एक साइनबोर्ड देखा जिस पर लिखा था कि मेन स्ट्रीट के सिरे के निकट तीसरे पहर के नाश्ते के काउंटर पर एक सेवक की आवश्यकता है। मालिक अकेला होटल चला रहा था और उसने कहा तुम प्रतिदिन पचास सेंट और भोजन पर यहाँ काम कर सकते हो। उन्होंने मुझे अंडे, सूअर की चर्बी और कड़ाही,

समोसे के लिए मीठी केक और गोश्त, चर्बी में तला हुआ मीठा आटा और काफी का बर्तन दिखलाया। दस बजे वह मुझसे यह कहकर बाहर चले गये कि मैं चार्ज में हूँ और यह कि गाहकों का खाना परसने में मुझे शिष्ट व्यवहार करना चाहिए। साढ़े ग्यारह बजे उनके वापस आने के पहले तीन-चार आदमी आये थे। जब वह स्वस्थ लौटे तब उन्होंने कहा कि दोपहर को जो गाहकों की भीड़ होगी उसमें मैं भी सहायता करूँगा। अगले दो घंटों में पाँच या छः गाहक आये। वह एक शान्त कोने में बैठे ऊँघते रहे और मैं गाहकों को भोजन परसता था। किसी भी समय दो से अधिक गाहक नहीं आते थे। इसलिए मैं चारों ओर घूमता था और हमारे सादे भोजन की सूची में से वह जो कुछ माँगते थे उसे मैं देता था। मैं अपने को महत्त्वपूर्ण समझने लगा और सोचता था कि सम्भव है कि काम करके कुछ समय के उपरान्त मैं भी उस व्यवसाय का साझीदार बन जाऊँ।

मालिक की नींद टूटी और वह यह कहकर बाहर चले गये कि मैं शीघ्र वापस लौटूँगा तीन बजे वह वापस लौटे। इस बार वह पहले की अपेक्षा अधिक अच्छे थे। वह दोपहर को भोजन करना भूल गये थे और मैंने उनके सामने दो तले हुए अंडे, एक मीठी केक और काफी परोसा। यह कहकर कि मैं शीघ्र लौटूँगा वह फिर बाहर चले गये। पाँच बजे वह बहुत व्यग्र लौटे, फर्श पर एक कोने में पड़ गये और उन्हें नींद आ गई। मैंने अपने लिए तीन अंडे तलकर दो मीठी केकों और काफी के साथ खाया। मैंने दो टुकड़े गोश्त रखकर समोसे बनाये, उनको और थोड़ा मीठा तला हुआ आटा अपने कोट की जेबों में रक्खा, और रुपये का दराज खोलकर आधा डालर निकाला। कोट को एक बाँह पर रखकर मैंने हल्के-हल्के सामने का दरवाजा बंद किया और उस रात को एक डिब्बे में सोया जो मुझे

मिसोरी राज्य के पार आधी दूर तक ले गया। मैं एक गरीब लड़का था जो धनोपार्जन करना चाहता था। इसलिए एक दिन में मैंने जो यहाँ उपार्जन किया था वह बुरा नहीं था।

इसके बाद मिसूरी के अन्तर्गत बीन लेक पर रेल पर काम करनेवालों का जत्था रहता था। मेरे आयरिश मालिक फे कोनोर्स ने मुझे एक डालर पच्चीस सेण्ट प्रतिदिन पर काम में लगा लिया। मुझे उनके घर के एक कमरे में रहने और भोजन के लिए प्रति सप्ताह उनको तीन डालर देना पड़ता था। मैं उनके चार कमरेवाले एक मंजिले मकान में रहता था जो रेलमार्ग से तीस फुट पर था। उस जत्थे में पाँच आदमी थे और आपको मालूम हो सकता था कि कोनोर्स हमारे प्रधान हैं। वह अपनी आवाज और अधिकार को पसन्द करते थे। वह कभी-भी किसी के ऊपर बिगड़कर चिल्लाते नहीं थे परन्तु वह बड़े शान्त भाव से लोगों को बता देते थे कि वह पहले एक सेक्शन में काम करनेवाले मजदूर थे परन्तु अब उसके प्रधान हैं। मैं कई दिनों तक सात बजे से दोपहर तक और एक बजे से छः बजे तक कठोर परिश्रम करता था। मेरी मांसपेशियाँ रात को उसी प्रकार दर्द करती थीं जैसे वे उस समय दर्द करती थीं जब मैं बर्फ काटने का काम करता था। तब जंगली घास-पौधे काटने का काम आया। हम हँसिया से रेल-मार्ग पर उगे हुए जंगली पौधों को काटते थे। हमें नई मांसपेशियों से काम करना पड़ता था और वे रात को दर्द करती थीं।

कोनोर्स की मेज पर प्रातःकाल, दोपहर और शाम तीनों समय मुझे वही भोजन मिलता था। सूअर की बगल का तला हुआ गोश्त, तले हुए आलू और काफी। ऐसा मालूम होता था कि कोनोर्स को वह पसन्द है। वैसे ही उनकी स्त्री और तीन बच्चे भी उसे पसन्द

करते थे। दो सप्ताह के पश्चात्, रविवार के प्रातःकाल मालगाड़ी में बैठकर मैंने कैन्सस नगर के लिए प्रस्थान कर दिया और बास कोनोर्स के यहाँ अपना वेतन छोड़ दिया। जिसमें से वह मेरे खाने का दाम और कमरे का किराया ले सकते थे।

कैन्सस नगर में श्रीमती मल्लिन ने आर्मर अवेन्यू में अपने जल-पान-गृह की खिड़की में एक साइनबोर्ड लगा रक्खा था "रकाबियाँ धोनेवाले की आवश्यकता है।" जब इलिनोइस से आनेवाला स्वीड लड़का रसोईघर में काम करने लगा तब उस स्त्री ने साइनबोर्ड हटा दिया। दोपहर को गोश्त को डिब्बों में बन्द करनेवाले कारखानों से आनेवाले मजदूरों की भीड़ होती थी। गाहकों को खाना परसने के लिए नाँद में रकाबियाँ धोने में बड़ी जल्दी रहती थी। मैं प्रातः-काल और अपराह्न में खाने के कमरे में झाड़ू लगाता था और शनि-वार को कपड़े से रगड़कर पोंछता था। हाल के गलियारे के सिरे पर मेरे सोने का स्थान था। मेरी चारपाई परदे की आड़ में थी और हाल की एक नाली के पास मैं नहाता-धोता था और अपनी जेब के दर्पण में देखकर दाढ़ी बनाता था।

मैं प्रातःकाल छः बजे उठ जाता था और खाने के कमरे में गाहकों के लिए झाड़ू देता था क्योंकि जब हम लोग साढ़े छः बजे जलपान-गृह खोलते थे तब गाहक आने लगते थे। अपराह्न में एक या दो घंटे के सिवाय मैं सप्ताह के छः दिन आठ बजे रात तक काम करता था। उस रसोईघर में मेरा समय अच्छी तरह बीतता था। बावर्ची यूरोपीय तथा हब्शी माता-पिता की सन्तान था। वह मोटा और हँसमुख था तथा सदा प्रसन्न रहा करता था। वह मुझे दिन में तीन बार अच्छा खाना देता था। वह मुझसे पूछता था कि तुम क्या चाहते हो मानो वह मेरा चाचा हो और वह मुझको सब कुछ

दे सकता है। वहाँ का एकमात्र सेवक भी यूरोपीय तथा हब्शी माता-पिता की सन्तान था। उसका नाम जार्ज था। वह सुन्दर और प्रसन्न-चित्त था। वह पुराने समय के तथा आधुनिक गीत गा सकता था। जिन विशेष गीतों को मैं गाने को कहता था वह उनको भी गाता था। रविवार को मैं काम से मुक्त रहता था और कैन्सस नगर के चारों तरफ मीलों तक घूमता था।

एकाध सप्ताह में कैन्सस के पश्चिमी भाग में गेहूँ की फसल तैयार होनेवाली थी। श्रीमती मल्लिन ने मुझे दूसरे सप्ताह का वेतन एक डालर और पचास सेण्ट दिया और मैं उनसे विदा हो गया। उन्होंने "रकाबियाँ धोनेवाले की आवश्यकता है" नामक साइन-बोर्ड को फिर खिड़की में लगा दिया। जार्ज और बावर्ची से विदा लेना सरल नहीं था। वे अच्छे हृदयवाले व्यक्ति थे जिन्होंने हर एक वस्तु को मेरे लिए सरल और सुखदायक बना दिया था।

दो रात को मैं एक मकान की दूसरी मंजिल पर एक प्रकार के मुसाफिरखाने में सोता था। जिसके लिए मुझे पन्द्रह सेण्ट देना पड़ता था। वहाँ एक कमरे में चालीस आदमी सोते थे। उनकी चारपाइयाँ एक दूसरे से लगभग एक-एक हाथ की दूरी पर थीं। कभी-कभी निकट का पड़ोसी जोर से खर्राटा लेता था और कभी-कभी प्रातःकाल दो या तीन बजे कोई बुरा स्वप्न देखने के कारण जगने के बाद चिल्लाता था। सबसे अधिक कष्टदायक खटमल थे जो आपको काटते थे जिससे आप तत्क्षण जग जाते थे। उन्होंने हमारे कम्बलों में घर कर लिया था। हमारे पास चादरें नहीं थीं।

कूदकर मालगाड़ी में सवार होकर मैं जब पश्चिम की तरफ जा रहा था तब एक अपराह्न को मेरी बड़ी दुर्दशा हुई। मैं

कोयले के एक खुले डिब्बे में दुबका हुआ था। एक ब्रेकमैन ने मुझको उतर जाने की आज्ञा दी थी। जब गाड़ी चलने लगी तब मैं फिर सवार हो गया। जब गाड़ी पूरी रफ्तार से जा रही थी तब वह अगले डिब्बे से आया और उसके पीछे-पीछे दूसरा ब्रेकमैन आया। उसने अपना मुँह मेरे मुँह के निकट किया और कहा, मैंने तुमसे कहा था कि इस गाड़ी पर मत चढ़ना। "अच्छा, अब दो सेण्ट निकालो नहीं तो तुम्हारी दुर्दशा होगी।" इस प्रकार के ब्रेकमैन से यह मेरी पहली मुलाकात थी। मेरी मुलाकात ऐसे ब्रेकमैन से हो चुकी थी जो क्रमशः छोटी-छोटी रिश्वत नहीं लेते थे और उनमें से एक ने मजाक में मुझसे कहा था "यदि तुम गाड़ी में चढ़कर जाना चाहते हो तो आँख से ओझल रहो।" मैंने सोचा कि किराये का रुपया मेरे ऊपर रेलवे का अवश्य चाहिए परन्तु ब्रेकमैन मुसाफिर से किराया वसूल करनेवाला व्यक्ति नहीं था। इसलिए मैंने उसको दो सेण्ट नहीं दिया। उसका वजन मुझसे लगभग चालीस पौण्ड अधिक था और जब उसका दाहिना घूँसा मेरे बायें जबड़े पर पड़ा और उसका बायाँ घूँसा मेरे मुँह पर पड़ा तब मैं फर्श पर गिर पड़ा। जब मैं धीरे-धीरे उठ बैठा तब वह गुर्राया, "जहाँ हो वहीं पड़े रहो नहीं तो और पाओगे।" फिर जब वह और उसका साथी जाने के लिए घूमे तब मुझे अन्तिम बार देखकर वह हँसा, "तुम इस गाड़ी में सवार होकर चल सकते हो, तुमने इसका किराया चुका दिया है।"

मैं खड़ा होकर गुजरती हुई भूमि को देखने लगा। पेड़ थोड़े थे और उनकी लकड़ी ऐसी नहीं थी जैसी इलिनोइस और मिसूरी में पेड़ों की थी। मैं बड़े मैदानों में आ गया था। यद्यपि मुँह पर रखने के कारण मेरे रुमाल में धब्बे पड़ गये थे तथापि मैंने यात्रा

को जारी रक्खा। जब गाड़ी धीमी हुई तो मैं उतर पड़ा और अपने को भिखारियों के जंगल में पाया। दो आदमी उस रेलगाड़ी पर सवार होने के लिए चले जिस पर से मैं उतरा था। दो और आदमी एक उथली झील में अपनी कमीजें धो रहे थे जिस पर कपास के तीन पेड़ों की छाया थी। मैंने अपनी कमीज, मोजे और रुमाल धोये। वे दोनों आदमी भिखारी थे। उन्होंने कहा कि हम लोगों के पास जो कुछ पैसा था उससे हमने रोटी और आधा पिण्ट जावा खरीद लिया है। उन्होंने मुझसे पूछा कि क्या कुछ खाद्य पदार्थ खरीदने के लिए तुम्हारे पास पैसा है? मैंने कहा, हाँ है और मैंने कुछ खाद्य पदार्थ खरीदा और हम लोगों ने अच्छी तरह खाया। उस रात को मैं एक मालगाड़ी में सवार हुआ जो मुझे यम्पोरिया में ले गई जहाँ मैं "यम्पोरिया गजट" के कार्यालय के सामने से गया परन्तु मुझमें इतना साहस न था कि भीतर जाकर उसके सम्पादक विलियम ऐलन ह्वाइट से मुलाकात करता। दो बड़े सिक्के देकर भोजन करने के उपरान्त मैं सिटी पार्क में गया जहाँ सोने के लिए मैं घास पर लेट गया और दो आदमियों से बातचीत की जिन्होंने मुझको उन्हें गाना सुनाने के लिए तैयार किया। वे पेशेवर कंजड़ थे और चाहते थे कि मैं उनके साथ जाऊँ। उन्हें दृढ़ विश्वास था कि मैं भोजनालयों और मद्यालयों में गाना गाकर रुपया कमा सकता हूँ और उनका विचार था कि इस प्रकार जो रुपया प्राप्त होगा उसमें हम सब लोग भाग लेंगे। यह मुझे कुछ विचित्र मालूम पड़ता था।

उस रात को स्वच्छ आकाश में पूर्ण चन्द्रमा प्रकाशमान था और सैन्टी फी जलाशय के आगे मालगाड़ी पर सवार होने के अवसर की प्रतीक्षा करते हुए आठ मनुष्यों का आनन्दपूर्ण समूह था जिनमें

से अधिकांश गेहूँ की फसल काटने के लिए पश्चिम जाना चाहते थे। जिस गाड़ी में मैं एम्पोरिया में सवार हुआ था उससे जब मैं उतरा तब पानी बरस रहा था और हवा चल रही थी और एक चबूतरे के नीचे मैंने सोने का स्थान पाया जिस पर से गाड़ी में माल लादा जाता था। प्रातःकाल सात बजे के लगभग मैंने स्टेशन का साइनबोर्ड पढ़ा और मुझे ज्ञात हुआ कि मैं हृचिन्सन, कैन्सस में हूँ। मैंने सुना था कि रेल के निकट के मकानों में जाकर कुछ माँगना ठीक नहीं है क्योंकि भिखारी लोग प्रायः वहाँ माँगा करते हैं। आठ या दस भवन-समूहों को पार करके मैंने दो घरों में पूछा, "क्या आपके पास कोई ऐसा काम है जिसको करने के लिए मुझे कलेवा प्राप्त हो सके?" प्रत्येक घर पर उन्होंने मुझे देखा और दरवाजा बन्द कर लिया। तीसरे मकान पर एक स्त्री ने अपनी लड़की को मेरे लिए आरी लाने को भेजा, और मुझे लकड़ियों की एक राशि दिखलाई। एक घंटे तक मैं आरी चलाता रहा, लकड़ी का ढेर लगाया और उस घर पर गया। मुस्कराती हुई माँ और लड़की मुझे खाने की मेज पर ले गईं और मेरे सामने सूअर का तला हुआ गोश्त, आलू, सेब की चटनी, रोटी और काफी परसा। जब मैं खा चुका तब उन्होंने मुझे खाने की बड़ी खूराक दी। मैंने उन्हें धन्यवाद दिया और यह देखने के लिए कि हृचिन्सन कैसा है मैमेन स्ट्रीट में चलने लगा और फिर चबूतरे पर गया जहाँ से गाड़ी पर माल लादा जाता था। खाने की गठरी खोलकर मैंने देखा कि उसमें मुर्गी के बच्चे का तला हुआ गोश्त और रोटी है जो मेरे दिन और रात के भोजन के लिए काफी था। मेरे दो जेबों में सेब भरे हुए थे जो पिछली रात को हवा और पानी में गिरे थे।

कैन्सस के अन्तर्गत लिन्ड्सबोर्ग में स्वीडिश लोग निवास करते

थे और वहाँ के बेथनी कालेज के अध्यक्ष पैस्टर स्वेन्सन लूथरन सिनड नेता थे जिनको मैंने गेल्सबर्ग में उपदेश देते हुए सुना था। लिन्ड्सबोर्ग के निकट अन्य स्वीड लोगों के साथ फार्म में मैं घास या बाजरा काटा करता था। मैं प्रतिदिन एक डालर और भोजन पर तीन दिन तक रहा और खलिहान में पुआल रखने के मकान में कोठे पर सोता था। तीसरे और अन्तिम दिन के प्रातः-काल जब मैं कुछ मिनट पहले जगा था तब मैंने नीचे कुछ शब्द सुने। एक आदमी की आवाज स्पष्ट सुनाई पड़ती थी। एक स्वीड कह रहा था, "क्या वह आवारा उठ गया है?" मैंने अपने मन में कहा, "क्या मैं आवारा हूँ?" और मुझे उत्तर देना पड़ा, "हाँ, मैं आवारा हूँ।" मैं आवारागर्दी करते समय लिन्ड्सबोर्ग आया था; मेरे पास कोई सामान या बंडल नहीं था और मैं आशा करता था कि मैं रेलगाड़ी पर बैठकर लिन्ड्सबोर्ग से बाहर चला जाऊँगा। अपने जीवन में पहली बार अपने को आवारा कहते हुए मैंने उन स्वीड लोगों को सुना था जिनसे मिलने के लिए मैंने टेढ़े-मेढ़े मार्ग से यात्रा की थी। मुझे ऐसी मित्रता नहीं प्राप्त हो रही थी जैसी मुझे कैन्सस सिटी के रसोईघर में जार्ज और मुख्य बावर्ची से प्राप्त होती थी।

समाचार-पत्रों से ज्ञात होता था कि देश संकटकाल से निकल रहा है तथापि अब भी अनेक व्यक्ति बेरोजगार थे। बहुत से आदमियों ने अपने घरों को इस आशा से छोड़ दिया था कि उनको कहीं कोई काम मिल जायगा। वे रेलगाड़ी पर सवार होकर इधर-उधर आते-जाते थे और जंगल में अड्डों पर बैठे रहते थे। उनमें से कुछ लोगों ने भिखारियों की भाषा सीख ली थी और कुछ उसे सीखने की परवाह नहीं करते थे। वहाँ सदैव एक छोटी बिरा-

दरी होती थी जो एक दूसरे की भाषा सुनकर तुरन्त पहचान लेते थे। वे पेशेवर कंजड़ थे जो भिखारियों और छोटे चोरों में विभक्त रहते थे। भिखारी आपस में बातें करते थे कि मेन स्ट्रीट में कैसे भीख माँगनी चाहिए और कैसे चेहरेवाले लोगों से डाइम या क्वार्टर माँगना चाहिए। मैंने एक आदमी को यह कहते हुए सुना, "जो आदमी लाल नेकटाई पहने हो उसे कभी मत मूड़ो।" वे आपस में उस सर्वश्रेष्ठ प्रकार की कहानी के विषय में तर्क करते थे जो उस नागरिक के हृदय को द्रवित कर देगी जिसके साथ आप यात्रा कर रहे हों। "आप अपनी कहानी जितनी लम्बी बनावेंगे उतना अधिक खतरा होगा कि नागरिक आपसे प्रश्न पूछेगा और सम्भव है कि जब आप उत्तर दे रहे हों तब वह पुलिस मैन आवे और आपको पहचानकर गिरफ्तार कर ले।" एक ने कहा, "मेरा विचार है कि मैं इस नगर में बकरी से कुछ लेने का प्रयत्न करूँ" और मुझे ज्ञात हुआ कि बकरी से उसका तात्पर्य कैथलिक पुरोहित से था। "मैं पिछली रात को ज्ञान के एक सन्दूक में सोया था" से तात्पर्य था कि वह व्यक्ति देहात के एक स्कूल में सोया था।

छोटे चोर कम बातें करते थे। केवल एक व्यक्ति जो मुझसे रहस्य की बातें करता था वह बादामी सूट, बादामी कमीज और बादामी नेकटाई पहने था। उसका चेहरा और मूँछ फैमिली स्टोरी पेपर के नायक के चित्रों की भाँति थे। उसने मुझसे शान्तिपूर्वक कहा, "मैं दूसरी मंजिल पर चोरी करता हूँ। मैं तुमसे काम ले सकता हूँ।" वह चाहता था कि मैं उसके कंधों पर खड़ा होकर बरसाती पर चढ़ जाया करूँ और खिड़की से अन्दर जाकर धन और आभूषण की तलाश करूँ जिसे हम लोग आपस में बाँट लेंगे। इधर हाल में उसका काम अच्छी तरह नहीं चल रहा था परन्तु उसने अच्छा समय देखा

था और फिर अच्छा समय आ सकता था। उसकी आवाज मुलायम थी और वह शिष्ट था। मैंने उससे कहा कि मैं इसके विषय में सोचूँगा परन्तु उसे बिना यह बताये हुए कि उस काम के विषय में मेरा क्या विचार है, मैं किसी प्रकार उसके पास से चला गया।

मेरी मुलाकात साथी यात्रियों और साथी अमरीकियों से होती रहती थी परन्तु न तो उस समय और न बाद में मैं निश्चयपूर्वक कह सकता था कि उनका प्रभाव मेरे हृदय, मस्तिष्क और व्यक्तित्व पर क्या पड़ रहा है। तथापि इतना मैं जानता था कि उस समय की अपेक्षा जब मैं गेल्सबर्ग में रहता था मेरा आत्म-सम्मान गम्भीर होता जाता था। कहानी कहने की मेरी निपुणता बढ़ रही थी। जब आप प्रतिदिन अज्ञान व्यक्तियों से मिलते हैं जिनसे केवल एक घंटे, एक दिन या दो दिन तक आपका परिचय रहेगा तब आप उनके साथ आराम से और ढीले-ढाले तौर पर व्यवहार कर सकते हैं। काम के समय या बैठने के समय जिन लड़कियों से मेरी मुलाकात होती थी वह यह जानना चाहती थीं कि मैं कहाँ से आया हूँ, कहाँ जा रहा हूँ, मेरा घर और परिवार कैसा है और शनैः-शनैः मेरी लज्जा कम हो रही थी।

एक बार जब मैं गाड़ी से जा रहा था तब मेरी मुलाकात फार्म में काम करनेवाले एक मजदूर से हुई जो इंडियाना से आया था। मुझे वह इतना पसन्द आया कि मैंने उससे पूछा कि कैसा होगा यदि हम दोनों कुछ सप्ताह तक साथ-साथ यात्रा करें और जो कुछ हम कमायें उसे बराबर-बराबर बाँट लें। उसने कहा कि इस बात पर मैं सहमत हूँ यदि आप मेरे साथ क्लांडाइक चलें। सोने की खान की खुदाई हो रही थी और वह अलास्का की ओर जा रहा था। वह कैन्सस में गेहूँ की फसल काटने के लिए रुककर रुपया कमाने की

आशा करता था जिसकी उसे आवश्यकता थी। परन्तु अब उसने सोचा कि ऐसा करने से चिल्कूट दर्रा पहुँचने में उसे देर हो सकती है और वह उस सोने को नहीं पावेगा जो पहले जानेवालों को मिल सकता था। हम लोग खेदपूर्वक एक दूसरे से अलग हुए।

कैन्सस राज्य के अन्तर्गत पानी काउंटी के लारनेड नगर में मैंने अपने को भिखारी मानने से इन्कार कर दिया। मेरे पिता उस जिले में भूमि के स्वामी थे और जब वह भूमि को देखने के लिए आये थे तब इस नगर में उन्होंने पदार्पण किया था। पानी काउंटी के काउंटी ट्रेजरर के पास टैक्स भेजते समय मैंने अपने पिता के लिए पत्र लिखे थे। जब मैं न्यायालय के सामने से गुजरा तब मुझे ऐसा महसूस होता था कि मैं महत्त्वपूर्ण और सम्माननीय नागरिक हूँ। मेन स्ट्रीट में जो थोड़े से भवन-समूह थे आप उनको लगभग तीन मिनट में पार कर सकते थे। कहीं-कहीं खाली मकान दिखाई पढ़ते थे; संकट-काल के कारण लोग उनको छोड़कर अन्यत्र चले गये थे। टिलर्स एण्ड ट्वायलर्स जर्नल नामक साप्ताहिक पत्र यदि और किसी चीज के लिए नहीं तो केवल अपने नाम के कारण ही पढ़ने योग्य था।

पचहत्तर सेण्ट दैनिक मजदूरी पर तीन दिन तक मैंने एक बढ़ई की सहायता की। पाँच दिन तक मैंने गेहूँ माँड़नेवाले समूह के साथ काम किया—तीन दिन तक एक फार्म में और दो दिन तक दूसरे फार्म में। मैं थ्रेशर मशीन की मेज पर गेहूँ के बंडल उठाता रहता था। यह कठोर काम था परन्तु काम करनेवाले प्रसन्नचित्त थे, खाना अच्छा मिलता था, खलिहान साफ था जहाँ हममें से चार आदमी सूखी घास पर सोते थे। हमारी मजदूरी प्रतिदिन एक डालर पच्चीस सेण्ट थी। इसके अतिरिक्त हमें भोजन भी मिलता था। इसके बाद

पाँच दिन तक वहाँ कोई काम नहीं था। मैंने निर्णय किया कि पश्चिम लाकिन नगर जाऊँ जहाँ मैंने सुना था कि अधिक काम है।

काम के बीच में जब खाली दिन होते थे तब कैन्सस नगर से आनेवाले एक विचित्र व्यक्ति के साथ मैं देर तक वार्तालाप करता था और सैन्टा फी जलाशय पर हम लोग साथ-साथ भोजन करते थे। वह कहता था कि मैं यहाँ कई वर्षों से एक कोयले की दूकान में मुनीम रहा हूँ। उन लोगों ने उसे जवाब दे दिया था क्योंकि व्यापार मन्द हो गया था। मालूम होता था कि उसके पास रुपया है। उसके पास छः गोलियोंवाला तमंचा था जिसको वह कभी-कभी निकालता था और उस पर उँगली फेरता था। उसका चेहरा मनोरंजक था। उसकी नाक बाज की चोंच जैसी थी। उसका मुँह अच्छा था और उसकी ठुड्ढी नुकीली थी। उसकी नीली आँखों से कुछ खतरा प्रकट होता था जिसे मैं नहीं समझ पाता था। वह मेरे साथ मैत्री-पूर्ण व्यवहार करता था और कभी-कभी संकेत करता था कि सम्भव है हम लोग साथ-साथ यात्रा करें।

परन्तु मैं अकेला लाकिन गया जिसे मैंने टाइमटेबुल में देखा कि सैन्टा फी पर स्थित गेल्सबर्ग से छः सौ चौरासी मील है। मैंने अन्दाज लगाया कि जब से मैंने घर छोड़ा है तब से चक्करदार रास्तों पर चलकर मैंने एक हजार मील की यात्रा की है। लाकिन के इर्द-गिर्द मैंने अनाज माँड़नेवाले जन-समूह के साथ तीन सप्ताह काम किया। जब एक फार्म पर काम समाप्त हो जाता था तब हम दूसरे फार्म पर चले जाते थे और अन्य फार्मर तथा उसके परिवार के यहाँ काम करते थे।

लाकिन से बाहर जाने के लिए मैं एक तेज मालगाड़ी के बम्पर पर सवार हो गया था, परन्तु एक ब्रेकमैन ने मुझे उतार दिया।

उतरने के एक मिनट बाद मेरी मुलाकात लार्नेड से आनेवाले नीली आँखोंवाले एक व्यक्ति से हुई। उस समय लगभग आधी रात हो चुकी थी। हम दोनों रात का खाना खरीदने गये और उसने अनुरोध किया कि मैं पूरा मूल्य चुकाऊँगा। उसके पास नोटों का एक पुलिन्दा था और उसने कहा, "मैं धनी हूँ।" मैंने उससे कहा कि यदि इसके बाद जानेवाली मालगाड़ी में कोई खाली डिब्बा होगा जिसमें मैं सो सकूँ तो मैं उस पर सवार होकर लाकिन से बाहर चला जाऊँगा। वह मेरे साथ पानी के तालाब तक गया जहाँ उसने अपने पैन्ट की पिछली जेब से रिवाल्वर निकाला और कहा, "युवक, यह रिवाल्वर बहुत सहायता देता है और हमें कठिन परिश्रम से बचाता है।" तब रिवाल्वर बाहर निकला। वह खेतों में फसल काटनेवाले मजदूरों को गोली मारने की धमकी देकर उनका रुपया लूट लेता था। एक बार तालाब के किनारे और एक बार मालगाड़ी के डिब्बे में उसने अपना रिवाल्वर निकाला था और "मैंने रिवाल्वर को उसके पेट में घुसाकर कहा कि तुम्हारे पास जो कुछ धन है वह सब दे दो नहीं तो मैं घोड़ा खींच दूँगा और उसने अपना सब धन दे दिया।" मेरे पास तीस से कुछ अधिक डालर थे और मुझे आश्चर्य होता था कि वह मेरे पेट में रिवाल्वर क्यों नहीं घुसेड़ रहा है। मुझे पूरा विश्वास है कि यदि वह ऐसा करता तो मैं अपना अन्तिम डालर भी उसे दे देता। मेरा विचार है कि वह अब भी आशा करता था कि मैं एक बन्दूक खरीदकर उसका साझीदार बन सकता हूँ। जब मालगाड़ी आई तब मैंने उसका साथ छोड़ दिया। उसने कहा, "अगले दो-तीन दिन मैं यहाँ अच्छे शिकार पाने की आशा करता हूँ। सम्भव है मैं मेलन डे को राकी फोर्ड में आपसे मुलाकात करूँ।"

मेलन डे मनाने के लिए राकी फोर्ड में हजारों आदमी जाया

करते थे। तरबूज और खरबूजे लोगों को मुफ्त बाँटे जाते थे। उस दिन शाम को मैं एक मुसाफिर गाड़ी में सवार हुआ जिसमें बड़ी भीड़ थी। मैं पहियों के बीच के छड़ों पर एक छोटे तख्ते पर बैठा था। उसके बाद मैं एक मालगाड़ी में सवार हुआ जिसमें मैं एक खाली डिब्बे में सोया और सबेरे जब मैं उठा तब मुझे मालूम नहीं था कि मैं कहाँ हूँ। मैंने इस बात की परवाह नहीं की कि पीछे वापस जाकर स्टेशन का साइनबोर्ड पढ़ूँ। मैं रेल की पटरी के किनारे-किनारे पश्चिम तरफ समोसे खाता हुआ गया। दिन धूपीला और शीतल था। मैंने बहुत ऊँची ढालू जमीन देखी जैसी मैंने पहले कभी नहीं देखी थी। यह राकी पहाड़ था। अप्रत्याशित रूप से चट्टानों और देवदारों से परिपूर्ण पर्वत को देखकर मेरे मुँह से निकल पड़ा, "यह ईश्वर की कृति है।" मुझे स्मरण नहीं आता था कि पहले मैंने कभी कोई चीज देखी थी जिसके लिए मैंने इस वाक्यांश का प्रयोग किया हो।

मैं पैदल चलकर कैमियन नगर में गया जहाँ मैंने नाशपातियाँ चुनीं, परिश्रम करके भोजन और कुछ अर्द्ध डालर कमाये। तब मैं सैलिडा गया जहाँ मैंने दो दिन बिताये। फिर डेन्वर पहुँचने के उद्देश्य से मैं पूर्व जानेवाली कोलोरैडो मिडलैण्ड ट्रेन पर सवार हुआ। उस गाड़ी में कोई खाली डिब्बा नहीं था और पहली बार मैं रात में देर को बम्पर पर सवार होकर यात्रा कर रहा था। मेरे पैर दो गाड़ियों के बीच के बोल्टुओं पर थे और मेरे हाथ ब्रेक के छड़ पर थे जिससे यदि मेरे पैर फिसल जायँ तब भी मैं चिपका रह सकूँ। अकस्मात् मैंने अपने मन में कहा, "तुम मूर्ख आदमी, तुम सो गये थे।" मेरे स्तब्ध मस्तिष्क ने मुझे बतलाया कि जब तुम बम्परों पर सोते हो तब यह तुम्हारा सौभाग्य है कि तुम्हारे हाथ

ढीले नहीं पड़ते और तुम चलती हुई गाड़ी के नीचे नहीं गिरते। मैंने सतर्क रहने का इरादा किया। किन्तु फिर मैंने अपने आपको नींद से जगते हुए पाया। तब से मैं अपने ऊपर यह विश्वास नहीं करता था कि मैं एक सेकेण्ड भी शान्त रहकर नींद से बच सकता हूँ। इसलिए मैं अपना आसन बदलता रहा। मैं अपने हाथों और पैरों को हिलाता रहा। मैं अपने सिर की अगल-बगल में घूँसा मारता था। मैं एक पैर से दूसरे पैर पर लात मारता था। मैं एक घंटा ऐसा करता रहा और तब गाड़ी रुकी। मैं उतर गया और ईश्वर तथा राकी पर्वत के ऊपर चमकनेवाले शाश्वत तारों को धन्यवाद दिया।

मैंने पाइक्स पीक देखा जिससे बाद में मैं यह कह सकता था कि मैंने उसे देखा है। डेन्वर में स्थित विण्डजर नामक एक प्रथम कोटि के होटल में दो सप्ताह तक एक डालर पर और एक सप्ताह तक पचास सेण्ट पर मैं रकाबियाँ धोता था। उसमें मुझे एक छोटी सी कोठरी मिली थी और वह अच्छा से अच्छा भोजन मिलता था जो रेशमी हैट पहननेवाले धनी अतिथियों को परसा जाता था। तब एक प्रश्न आया, क्या मुझे पश्चिमी तट की तरफ जाना चाहिए अथवा पूर्व में स्थित गेल्सबर्ग की तरफ? मैंने स्वीकार किया कि मैं घर जाने के लिए उद्विग्न था। एक रात को एक मुसाफिर गाड़ी स्टेशन के घेरे स धीरे धीरे निकल रही थी। मैं कूदकर सोनेवाले एक डिब्बे के कदमचे पर चढ़ा। एक कण्डक्टर और कुली ने उतर जाने के लिए मुझे आज्ञा दी। मैं उतर गया और देखा कि रेलगाड़ी धीमी होकर रुक गई। मैं सोनेवाले एक डिब्बे की छत पर चढ़ गया, अपना सिर इंजिन की तरफ करके लेट गया और गम्भीर शपथ खाई कि मैं नहीं सोऊँगा। जब गाड़ी मोड़ पर चलती थी तब वह हिलती थी और मुझे धक्का

लगता था परन्तु मेरे हाथ कसकर पकड़े थे जिससे मैं गिरता नहीं था। वह सितम्बर की शीतल रात थी और गाड़ी की रफ्तार के कारण वह बहुत ठंडी मालूम होती थी। मैंने अपने कोट के बटन बंद किये, कालर को ऊपर उठाया और अपने गले में रुमाल बाँध लिया। दो बार मुझे नींद आ गई और जब नींद टूटती थी तब मैं अपने आपको हाथों और पैरों से मारता रहता था जिससे मैं जागता रहूँ।

सूर्योदय हुआ। प्रातःकाल उठनेवाले एक फार्मर ने मुझे नमस्कार किया। मैंने देखा कि हम लोग नेब्रास्का में स्थित मैक-कुक नामक जिला की तरफ जा रहे थे। मैं नीचे उतर गया और रेल के हाते से बाहर निकलने लगा। सादे कपड़े पहने हुए एक काने आदमी ने मुझे रोका जो एक लाठी लिये था और जिसके कपड़े पर तारा बना था। उसने मुझसे पूछा, "तुम कहाँ से आ रहे हो ?" उसका स्वर शत्रुतापूर्ण था। मैंने कहा, "मैं अभी अभी उस रेल-गाड़ी से उतरा हूँ।" और अधिक शत्रुतापूर्ण स्वर में उसने मुझे आज्ञा दी, "हम यह पसन्द नहीं करते कि तुम्हारे जैसे लोग नगर में जायँ। तुम वापस जाकर उस गाड़ी पर सवार हो जाओ।" जब मैं उस स्थान पर फिर चढ़ा जहाँ मैं सवार था तब रेल का कोई आदमी दिखाई नहीं पड़ता था मैंने दिन में मैककुक से अगले ठहराव ऑक्सफोर्ड तक तीस मील तक नेब्रास्का का दृश्य देखा था। ऑक्सफोर्ड में मेरे लिए कोई प्रतीक्षा नहीं कर रहा था। मैं दोपहर का खाना खरीदने के लिए दूकान में गया। वहाँ लोगों ने मुझे अनुमति दे दी कि मैं रसोई के अन्दर जाकर कोयला और कालिख धो सकता हूँ। तब मैंने पैंतीस सेण्ट का खूब अधिक कलेवा खरीदा जिसमें सूअर का गोश्त, अंडे, तले हुए आलू, रोटी, काफी और दो समोसे शामिल थे।

पूर्व की ओर जाकर मैं एक जंगल में पाँच अच्छे आदमियों के साथ तीन दिन तक ठहरा। हमने अपनी कमीज, मोजे और रुमाल धोये। हमने निकट के खेतों से भुट्टे चुने और उनको भून या उबालकर कई बार खाया। रात के भोजन के उपरान्त हम आग की चारों ओर बैठकर गपशप करते थे। मैं एक मालगाड़ी पर सवार हुआ जो मुझे नेब्रास्का शहर ले गई। मैं लकड़ी काटता था और दो बार खाने के लिए मैंने सेब चुन लिये। ईंट के एक बड़े भट्टे पर, जहाँ मैं लकड़ी काटता था, भट्टे के मालिक एक वकील थे, मेरे सूट को कुछ कटा हुआ देखकर उन्होंने मुझसे पूछा, क्या तुम मेरा एक पुराना सूट लेना पसन्द करोगे? वह लोहे के रंग का एक भूरा ऊनी सूट बाहर ले आये। वह उन सब सूटों से अच्छा था जो जीवन में मुझे कभी मिले थे। मैंने और अधिक लकड़ी काटने का प्रस्ताव किया परन्तु वह हँसे और बोले कि अच्छा होगा कि तुम अपने घर के मार्ग का अनुसरण करो। उस रात को चार अन्य व्यक्तियों के साथ मैं रेलगाड़ी के एक डिब्बे में सवार हुआ। हमने अपने नीचे अखबार बिछाये, अपने कंधों पर कोट फैला दिये और सोने का प्रयत्न किया। उस रात को आकाश में बादल नहीं थे और तुषार-पात हो रहा था। दो घंटों के पश्चात् हम कहने लगे, "इतना ठंडा है कि यहाँ सोना असम्भव है।" हम पाँचों आदमी नगर के हवालात गये और मार्शल से कहा कि हम लोगों को भीतर जाने दीजिए। कोठरियों में, जैसी हम आशा करते थे, वैसी ही बदबू थी परन्तु हम पत्थर की फर्श पर अखबार और गर्म स्थान में सोये। जब हम वहाँ से चले तब हमें आज्ञा दी गई कि आज ही नगर के बाहर चले जाओ।

मैं ओमाहा में एक मालगाड़ी पर सवार हुआ। कैन्सस नगर और डेन्वर की भाँति ओमाहा में मैं संयुक्तराज्य की सेना में भरती

करने के दफ्तर के सामने खड़ा हुआ और कई बार उस वेतन और शर्तों को पढ़ा जो अमरीका अपने सैनिकों को देता था। मैं भरती कराने के निकट था। मैं एक या दो साल तक सेना में सेवा कर सकता था परन्तु तीन वर्ष तक सेवा करना आवश्यक था। इसलिए मैं भरती नहीं हुआ। मैं निश्चय करके चला जाता था और दूसरे दिन फिर आकर वेतन और शर्तों को पढ़कर वही निर्णय करता था कि तीन वर्ष बहुत लम्बा समय है।

होटल मर्सर में मैं एक डालर पचास सेण्ट प्रति सप्ताह पर रकाबियाँ धोने लगा। होटल पट्टे पर उठाया गया था और उसका संचालन सुन्दर वस्त्रधारी एक लम्बा आदमी करता था जिसको लोग विंक (निमेष) टेलर कहते थे। मैंने किसी समय उसे पलक भाँजते हुए नहीं देखा परन्तु सम्भवतः उसका यह नाम इसलिए पड़ा था कि वह इतनी तेजी से काम करता था जितनी तेजी से पलक गिरती है। मुझे न तो पहले सप्ताह के अंत में मेरा वेतन मिला और न दूसरे सप्ताह के अन्त में। तब समाचार मिला कि होटल मर्सर बंद हो गया है और विंक टेलर गायब हो गया है। उसके ऊपर मेरा तीन डालर चाहिए था। इसी प्रकार सेविकाओं, रसोईघर और भोजनालय में काम करनेवाले अन्य नौकरों का भी रुपया उसके ऊपर चाहिए था।

मैं अन्तिम बार मर्सर में सोया, फिर काउंसिल ब्लफ्स में जाकर जलपान किया। तब एक के बाद दूसरी मालगाड़ी में सवार हुआ और अन्त में पन्द्रह अक्तूबर के अपराह्न में मैं गेल्सबर्ग पहुँचा।

बेरियन स्ट्रीट पर चलकर मैं संयुक्तराज्य में उस एकमात्र मकान में पहुँचा जहाँ मैं बिना दरवाजा खटखटाये हुए अन्दर जा सकता था और मकान की मालकिन का चुम्बन प्राप्त कर सकता था।

उन लोगों ने मुझे बैठाया और चूँकि "मैंने उनके पास केवल दो या तीन पत्र भेजे थे इसलिए उन्होंने मुझसे अनेक प्रश्न पूछे कि मैं कहाँ-कहाँ हो आया हूँ। जब मैंने अपने पिता को पन्द्रह डालर और कुछ निकेल दिखाये तब उन्होंने कहा कि यह धन बहुत उपयोगी होगा, तुम इसे हिफाजत से रखना। बिस्तर की साफ चादरें उस दिन बहुत सुखद प्रतीत हुईं।

मेरे कपड़ों के सुन्दर सूट के विषय में मार्ट को कुछ सन्देह था। उसने कहा, "मैं बाजी लगा सकता हूँ कि तुमने इसको नया नहीं खरीदा है। यदि तुमने इसे नया खरीदा है तो अवश्य चोरी की दूकान से खरीदा होगा।" इसलिए मैंने उसे बतलाया कि वह किस प्रकार मुझे प्राप्त हुआ था। मार्ट ने कहा कि अगस्त में मैंने एक समाचार-पत्र में एक भिखारी के विषय में पढ़ा था जो पश्चिमी कैन्सस में बम्पर से गिरकर कट मरा था। परिवार के लोगों ने उसे नहीं पढ़ा था, और उसने उनको यह बात नहीं बताई थी। उसने कहा, "परन्तु कली, मुझे डर था कि सम्भव है कि तुम्हीं कट मरे हो।" तब मैंने बताया कि किस प्रकार कोलोरैडो में मैं भी कटकर मर सकता था।

इस पर्यटन से मेरा क्या लाभ हुआ था? मैं नहीं कह सकता था। उसने मुझे बदल दिया था। अब मैं सरलता से लोगों से आँखें मिला सकता था। जब मुझसे प्रश्न पूछे जाते थे तब मैं पहले की अपेक्षा शीघ्रतापूर्वक उनका उत्तर दे सकता था। या उनका प्रति-क्षेप कर सकता था। मैं एक युवक अजनबी था जिसकी मुलाकात अनेक विचित्र अजनबियों से हुई थी और मुझे उत्तर देने और सुनने का अभ्यास पड़ गया था। परिवार के लोग और गन्दे दर्जन

के मेरे पुराने मित्र जानते थे कि मैं बदल गया हूँ परन्तु मेरी तरह वह भी नहीं बतला सकते थे कि मैं किस प्रकार बदला हूँ। अब मेरे हृदय के गूढ़ स्तर में आशा थी जैसी पहले कभी नहीं थी। मैं निश्चित रूप से जानता था कि भविष्य में मुझे संघर्ष करना पड़ेगा परन्तु चाहे जो कुछ भी संघर्ष करना पड़े मैं भयभीत नहीं था।

सोलहवाँ परिच्छेद

सेना में

मैं गेल्सबर्ग से तीन मील पूर्व श्वार्ज फार्म पर काम करने जाता था। मैं प्रातःकाल साढ़े चार बजे उठ जाता था, दो घोड़ों को मल-दलकर साज पहनाता था और श्री श्वार्ज और मैं बाइस गायों को दूहते थे। मैं आठ गायें दूहता था और श्री श्वार्ज जो मुझसे अधिक आयुवाले और शीघ्रतापूर्वक काम करनेवाले थे चौदह गायें दूहते थे। हम दूध को आठ गैलनवाले बाल्टों में रखकर उन्हें गाड़ी में लादते थे। जलपान के पश्चात् मैं दूध लेकर नगर में जाता था और पिण्टों और क्वार्टों में उँड़ेलकर बाँटता था। मैं प्रतिदिन शिकागो रेकार्ड खरीदता था और फार्म को वापस लौटते समय गाड़ी में शिकागो विश्वविद्यालय के प्रोफेसरों द्वारा साहित्य, इतिहास, राजनीति

और शासन पर दिये हुए व्याख्यानों को पढ़ता था जो दो स्तम्भों में छपते थे। घोड़े इस बात की परवाह नहीं करते थे। जब मैं पढ़ता था तब धीरे-धीरे चलना उन्हें अच्छा लगता था।

दोपहर के भोजन के उपरान्त मैं बाल्टियों को धोता था और फिर श्री श्वार्ज और मैं गायों को दूहते थे। श्री श्वार्ज लम्बे थे, उनके कंधे कुछ झुके हुए थे और उनकी दाढ़ी काली थी। वह दयालु पुरुष थे। वह पेन्सिलवैनिया डच लोगों में से थे। श्रीमती श्वार्ज तगड़ी और अच्छी गृहिणी थीं और जब एक दिन शाम को उनकी चतुर्दशवर्षीया पुत्री ने भोजन करते समय "स्पानड्यूलिक्स" शब्द का प्रयोग किया तब उन्होंने कठोरतापूर्वक कहा, "क्यों, ईथेल, मुझे आश्चर्य होता है कि तुम ऐसी भाषा का प्रयोग करती हो।" वे लोग मेथडिस्ट थे, उन्होंने खूब अध्ययन किया था। वे भक्त थे परन्तु लकीर के फकीर नहीं। हम कह सकते हैं कि वह उस प्रकार का परिवार था जिसका वर्णन "यूथ्स कम्पैनियन" नामक पुस्तक में पाया जाता है। श्रीमती श्वार्ज ने देखा था कि रात के भोजन के उपरान्त मैं घंटे दो घंटे तक उनकी पुस्तकों और पत्रिकाओं में से कुछ पढ़ा करता हूँ। एक दिन सुन्दर गम्भीर भाव से उन्होंने मुझसे कहा, "चार्ली, मैं सोचती हूँ कि तुम अपने को कुछ बनाने जा रहे हो।" उस समय तक केवल मेरी ही एक ऐसी व्यक्ति थी जिसने मुझसे इस प्रकार के शब्द कहे थे। प्रति रात को मैं साढ़े आठ बजे बिस्तर पर लेट जाता था। जब मैं गेल्सबर्ग में वापस लौटा था तब मेरा वजन एक सौ छत्तीस पौण्ड था और श्वार्ज फार्म पर वह सोलह पौण्ड बढ़ गया था।

फरवरी के बीच के लगभग मुझे खेदपूर्वक श्वार्ज परिवार से विदा लेनी पड़ी। एक मूर्ख दिखाई पड़नेवाले स्वीड के यहाँ मैं पेण्टर

का व्यवसाय सीखने लगा। अन्त में एक व्यवसाय सीखने का अवसर मुझे प्राप्त हुआ था। मुझे प्रतिदिन दस घंटे काम करना होता था। कभी-कभी मुझसे पेण्ट का पहला कोट लगाने को कहा जाता था। किन्तु अधिकांश दिनों को मैं खुरचता और रेगमाल लगाता था। मैं मकानों के बाहर और भीतर सीढ़ियों पर चढ़ता था और लकड़ी के ऊपर सैंड पेपर रगड़ता था जिससे वह पेण्टर के लिए चिकनी हो जाय। मालिक अल्पभाषी व्यक्ति थे। जब मैं उन्हें प्रातःकाल नमस्कार करता था तब वह कुछ अस्पष्ट रूप से उत्तर देते थे। उन्हें विश्वास था कि हमें अपना काम चुपचाप और बिना हँसे हुए करना चाहिए। एक बार जब उन्होंने मुझे गाते हुए सुना था तब वह बहुत रुष्ट हुए थे।

सप्ताह में छः दिन प्रातःकाल मैं वहाँ सात बजे तैयार हो जाता था जिससे मालिक और एक दूसरे पेण्टर के लिए तख्तियाँ रगड़-कर चिकनी कर सकूँ। सप्ताह में आधे दिन कभी मैं पहला कोट लगाने के लिए ब्रश का इस्तेमाल नहीं करता था। कितना समय लगेगा जब वे मुझे दूसरा और तीसरा कोट लगाने देंगे?

१५ फरवरी, १८९८ को मैं साढ़े नौ बजे सो गया। बहुत दिनों के पश्चात् मुझे ज्ञात हुआ कि उस दिन रात को दो बजे वाशिंग्टन में जहाजी बेड़े के सेक्रेटरी ने दरवाजे पर खटखटाहट सुनी जिससे वह जग गये और उन्हें एक तार दिया गया जिससे वह घबड़ाये। उन्होंने ह्वाइट हाउस के एक पहरेदार को फोन किया और उससे कहा कि राष्ट्रपति को जगा दो। फोन पर श्री मैक किनले ने तार को सुना, "आज रात को नौ बजकर ४५ मिनट पर हवाना हारबर में मेन उड़ा दिया गया। बहुत से लोग घायल हो गये हैं और निस्सन्देह इससे अधिक लोग मर या डूब गये हैं।" मेन प्रथम कोटि का युद्ध-

पोत था और उसके तीन सौ बावन अफसरों और आदमियों में से दो सौ साठ मर गये थे और जहाज हारबर के पेंदे में डूब गया था।

समय बीतता गया और में लकड़ी पर सैण्डपेपर रगड़ता रहा। जो कुछ मैं पढ़ता और सुनता था उस पर मैं विश्वास करता था—कि जिस स्पैनिश सरकार के जनरल वेलर ने क्यूबा के हजारों देश-भक्तों को मार डाला था जो स्वतंत्रता और जनतंत्रात्मक शासन चाहते थे उसी का हाथ मेन के उड़ाने में भी है। बाद में मुझे ज्ञात हुआ कि कोई नहीं जानता कि मेन कैसे उड़ाया गया—किसी मनुष्य ने उसे उड़ाया अथवा वह ईश्वर का काम था। मैं अमरीका के लाखों आदमियों का साथ देने को तैयार था जो स्पैनिश सरकार को क्यूबा से निकालने और क्यूबावालों को जनतंत्र दिलाने के लिए युद्ध करने को लगभग तैयार थे। यदि युद्ध होवे तो मैं जानता था कि मैं क्या करूँगा। मार्च और अप्रैल के प्रारम्भिक भाग में मैं लकड़ी पर रेगमाल रगड़ता रहा और सोचता रहा परन्तु मैंने अपने श्याम वदन मालिक को यह नहीं बतलाया कि मैं क्या सोच रहा हूँ।

राष्ट्रपति मैक किनले ने युद्ध की घोषणा कर दी और २६ अप्रैल को इलिनोइस स्वयंसेवकों के सिक्स्थ इन्फैण्ट्री रेजिमेण्ट की कम्पनी सी में मैं भरती हुआ और दो वर्ष तक सेवा करने की शपथ ली। यह रेजिमेण्ट स्टेट मिलिशिया का एक अंग था। कम्पनी सी गेल्सबर्ग का सजीव भाग था, उसका ड्रिल हाल था, वह सार्वजनिक अवसरों पर बन्दूक और संगीन लेकर मार्च करता था और वह वर्ष में एक बार सैनिक व्यायाम के लिए एक स्प्रिंग-फील्ड जाता था। कम्पनी का कोटा पूरा करने के लिए एक दर्जन रँगरूटों की आवश्यकता थी और मैं सबसे पहले भरती होनेवालों में से एक था। मैं अधिकांश सैनिकों को जानता था और मैंने आडिटोरियम में कारपोरल कली

रोज की सेवा की थी। लगभग तीन चौथाई सदस्य गेल्सबर्ग के थे और शेष गेल्सबर्ग के इर्द-गिर्द के फार्मों और देहाती कस्बों के निवासी थे। वे अपने अधिकारियों का स्वयं निर्वाचन करते थे और आप लोगों को यह कहते हुए सुन सकते थे कि इस रेजिमेण्ट में देश के पश्चिमी भाग का कोई सैनिक नहीं है।

जब मैंने अपना काम छोड़ा और परिवार से बतलाया कि मैं सैनिक होने जा रहा हूँ तब वे दुखी और कुछ चकित हुए किन्तु वे जानते थे कि वे मुझे रोक नहीं सकते। मार्ट ने परिवार के पक्ष में कहा, "हमें यह सम्मान पसन्द होगा कि हमारे परिवार में संयुक्तराज्य का एक सैनिक हो परन्तु हम यह नहीं चाहते कि तुम मार डाले जाओ।" मैंने कहा हो सकता है कि वास्तव में लड़ाई न हो और यदि सचमुच युद्ध हो भी तो भी यह सम्भव है कि मुझे गोली न लगे क्योंकि कुछ सैनिक सदैव जीवित घर लौटते हैं। और इसके अतिरिक्त पश्चिम को देखने के पश्चात् मैं पूर्व को देखना पसन्द करूँगा और सम्भव है कि मैं अटलांटिक महासागर और क्यूबा को देख सकूँ। मेरे परिवार के सब लोग सैकड़ों अन्य परिवारों के साथ वहाँ मौजूद थे जब कम्पनी सी को लिये हुए रेलगाड़ी क्यू० डिपो से बाहर निकली जिसको आजकल "बर्लिंग्टन स्टेशन" कहते हैं।

स्प्रिंग फील्ड के सुन्दर मैदान में ईंटों की एक बड़ी इमारत में हम लोग रक्खे गये जो पशुओं की प्रदर्शनी के लिए काम में आती थी। जहाँ पारितोषिक प्राप्त करनेवाली दुधार गायें और नीले फीतेवाले बैल फूस पर सोते थे वहीं हम लोग अप्रैल के अन्तिम भाग और मई के प्रारम्भिक भाग में अपने कम्बलों के नीचे फूस बिछाकर सोते थे। हमारे अन्दर ऐसे युवकों की कमी नहीं थी

जो गर्सनी गाय या होल्स्टाइन बैल की भाँति बोल सकते हैं। जब मैं असैनिक वस्त्र धारण किये हुए था तभी मुझको स्प्रिंग-फील्ड राइफिल दी गई और अस्त्रों का प्रयोग तथा कम्पनी ड्रिल सिखाई गई।

लगभग दस दिनों में मुझे वर्दी पहनने को मिली जिसमें नीले ऊन की एक भारी कमीज थी, गहरे नीले रंग का एक कोट था जिसमें गले तक पीतल के बटन लगे हुए थे और हल्के नीले ऊनी कपड़े का पैण्ट था जो कोट के कपड़े का दूना मोटा था। यह वही वर्दी थी जो पैंतीस वर्ष पहले ग्राण्ट और शेर्मन के मातहत सैनिक पहनते थे। यह दक्षिण की सीमा पर स्थित उन राज्यों में पहनने के लिए बनाई गई थी जहाँ पर बर्फ गिरती थी और शून्य अंश मौसम आ सकता था जैसे उस रात को हुआ था जब ग्राण्ट ने फोर्ट डानेलसन पर आक्रमण किया था। छोटी टोपी वर्षा से हमारे कानों की रक्षा नहीं कर सकती थी और चेहरे को ढकनेवाले कड़े काले भाग के ऊपर वह चपटी थी मानो वहाँ पर हमारे सिर चपटे होने चाहिए। प्रसिद्ध संघ सेनाओं की वर्दी पहनकर मैं गौरवान्वित महसूस करता था तथापि मैं उस पर शंका भी करता था।

कांग्रेस-भवन के एक बड़े कमरे में हममें से सौ सैनिक एक परीक्षक सर्जन के सामने से होकर गुजरे। वह जर्मन था जो शब्दों पर विशेष जोर देकर और बहुत ऊँचे स्वर में बोलता था। यह सर्जन नियमों की कठोर पाबन्दी नहीं करता था। जब हमारा मित्र जो डन आया तब वह वांछित ऊँचाई से एक या दो इंच छोटा पाया गया। जो के चेहरे पर आँसू बहने लगे। इस सर्जन ने निकट खड़े हुए अधिकारियों की ओर देखा और उन्होंने सिर

हिलाकर संकेत किया कि जो को भरती कर लीजिए। उसने नापने-वाले फीते को एक उँगली में लपेटकर फिर नापा और कहा कि जो पास हो जायगा।

हम राजधानी के चारों तरफ घूमते थे, हम गवर्नर के भवन और आगे अब्रहम लिंकन के भवन के सामने से घूमते थे। जब हम रेलगाड़ी से वाशिंग्टन जाते थे तब गर्म अफवाह थी कि बहुत शीघ्र हम लोग स्पेन निवासियों को गोली का शिकार बनायेंगे। गाड़ी में दिन में हमारे बैठने के लिए और रात में सोने के लिए बेंत की सीट थी। टिनों में बन्द फलियाँ, टिनों में बन्द सामन मछली, रोटी और काफी हमारा राशन था। कुछ स्टेशनों पर जन-समूह हमारी गाड़ी को देखकर मुस्कराता और जय-ध्वनि करता था। गाड़ी वाशिंग्टन पहुँची और जब वह फाल्स चर्च, वर्जिनिया, में हटाई गई तब रात अँधेरी थी। दो मील मार्च करके हम समतल भूमि पर पहुँचे जिसके चारों तरफ झाड़ियाँ और जंगल थे। हम लोगों ने खेमे गाड़े और हर खेमे में दो-दो सिपाही जमीन पर सोये। दूसरे दिन प्रातःकाल हम जंगल में गये और दो शाखाओंवाले पौधे काटे जिन पर हम अपने कम्बल रख सकें

यह मेरा सौभाग्य था कि खेमे में मेरा साथी ऐन्ड्रियू टैनिंग था जो बहुत साफ-सुथरा, नियमों को माननेवाला तथा संयमी कार-पोरल था। उसका जन्म स्वीडेन में हुआ था, उसका चेहरा सुन्दर और मुँह छोटा था। उसकी मूँछ छोटी और साफ थी। हम लोग खेमें में एक दूसरे से हाथ भर की दूरी पर सोते थे। सोते समय उसकी नाक या मुँह से कभी भी आवाज नहीं निकलती थी। सप्ताह में दो बार वह गेल्सबर्ग में रहनेवाली अपनी स्वीड प्रेयसी को पत्र लिखता

था जिसके साथ बाद में उसने विवाह कर लिया। उसका दूसरा प्रेम उसकी अपनी स्प्रिंगफील्ड राइफिल से था जिसको वह सदैव चमाचम रखता था और उस पर कोई धब्बा नहीं पड़ने देता था। वह अपनी राइफिल के नम्बर का प्रयोग स्वयं अपने लिए करता था और यह कहते हुए खेमें में प्रवेश करता था, "लो यह आ गया नम्बर अड़तीस।" वह कम्पनी सी में दो वर्ष तक रह चुका था और मानर्क क्लब का सदस्य था। इसलिए मैं उसकी प्रेयसी अमण्डा हैन्सन और उसकी बहन टिली के साथ नाच चुका था। टिली पतली थी और नाचते समय प्रकाश में वह ऐसी मालूम पड़ती थी जैसे नीली हवा में सफेद पंख। जब मैं नाई की दूकान में दरबान था तब ऐण्डी यूनियन होटल के सामान की देख-रेख करता था। इसलिए बातचीत करने के लिए हमारे पास काफी मसाला था।

मई के अन्तिम भाग और पूरे जून भर हमने ड्रिल किया। हम नल के पानी से अपना कैण्टीन भरते थे और जंगल में एक धुँधले तालाब में अपनी कमीजें, मोजे और नीचे पहननेवाले कपड़े धोते थे। हम प्रायः लड़नेवाले सिपाहियों का राशन खाते थे मानो हम युद्ध में भाग ले रहे हों और वस्तुओं की अपेक्षा प्रायः हम फलियों का शोरबा, सूअर का गोश्त और फलियाँ खाते थे। हमारी कम्पनी का बाबर्ची आर्थर मेटकाफ—हमारे लिए बड़ा मूल्यवान् था। उसका चेहरा चन्द्रमा की भाँति प्रकाशित था और उसके मुँह पर चौड़ी मुस्कराहट रहा करती थी। युद्ध विभाग अपने क्वार्टर मास्टरों के द्वारा जो कुछ उसे देता था उसको वह भली भाँति पकाता था। एक दिन प्रातःकाल मैंने देखा कि नमक लगाये हुए सूअर की बगली से वह एक चौथाई भाग काटकर निकाल रहा था जिसमें

कीड़े भरे हुए थे। यह काम वाशिंग्टन नगर से सात मील पर किया गया था जहाँ पर युद्ध विभाग का कार्यालय था।

हमारे कप्तान टॉमस लेस्ली मैक गर थे जो गेल्सबर्ग के द्वितीय श्रेणी के वकील थे। वह लम्बे भारी आदमी थे जिनकी तोंद निकली हुई थी। उनके जबड़े भारी थे और उनकी बड़ी मूँछ कुछ-कुछ पक रही थी। उनके पास एक बड़ा पीले बालोंवाला सेण्ट बर्नर्ड कुत्ता था जिसका नाम स्मगलर था जिसे कभी-कभी मनुष्यों के सामने गाय की जाँघ का ऊपरी भाग खिलाया जाता था। हमारे फर्स्ट लेफ्टिनेण्ट कानरैड बाइलाफ थे जो सेवन्थ वार्ड स्कूल में हमारे सहपाठी रह चुके थे, जिन्होंने ब्वायलर बनाने का काम सीखा था और क्यू० में काम करते थे। उनके पिता स्वीडिश सेना में कप्तान रह चुके थे और स्वयं कान भी जन्मजात सेनाध्यक्ष मालूम पड़ते थे। सैनिक उनसे बड़ा स्नेह रखते थे; कमाण्ड देते समय वह कठोर हो सकते थे परन्तु बिना मुस्कराये हुए वह हमसे कभी ड्रिल नहीं कराते थे जिससे प्रकट होता था कि हम जो कुछ कर रहे हैं उससे आनन्द प्राप्त कर सकते हैं। हमारे सेकंड लेफ्टिनेन्ट डैनियल के० स्मिथ थे जो विद्वान् और भद्र पुरुष थे और अपने सैनिकों का सदा ध्यान रखते थे।

मुझे स्मरण नहीं है कि नौ सार्जेण्टों और ग्यारह कारपोरलों में से मैं किसी से घृणा करता था। आप सम्भवतः उस फर्स्ट सार्जेण्ट को कैसे भूल सकते हैं जो प्रतिदिन सौ नामों को छः या आठ बार पुकारकर अपनी आवाज का परिष्कार करता है? कुछ सप्ताहों के पश्चात् कुछ मनुष्य बिना किसी रजिस्टर में देखे हुए बेन्जमिन ऐण्डरसेन से हेनरी क्ले वुडवार्ड तक नामों को इतनी

सफाई से पुकार सकते थे जैसे फर्स्ट सार्जेण्ट एफ० एलम् जानसन पुकारते थे जो रेकर्ड रखते थे, हुक्मों को पढ़ते थे और कम्पनी में जिनको सबसे अधिक काम करना पड़ता था। कारपोरल एड पेके-नपा कम्पनी स्ट्रीट में इधर-उधर टहलते रहते थे और केवल बहरे लोग उनकी ऊँची आवाज को सुनने में असफल हो सकते थे जब वह कहते थे, "मैं समझता हूँ कि मुझे अपने बच्चे के पास तार भेजना होगा।" कारपोरल जेम्स स्विटजर कम्पनी में बिगुल बजाया करते थे। वह सत्रह वर्ष के सुन्दर युवक थे और लोग उनको "मिम" कहकर पुकारा करते थे।

हमारी कम्पनी के दस सैनिक नाक्स कालेज के विद्यार्थी थे और दो लोम्बार्ड के थे। बीस या और अधिक सैनिक फार्मों में काम करनेवाले व्यक्ति थे। कम से कम बीस सैनिकों के पिता, चाचा या निकट सम्बन्धी गृहयुद्ध में लड़ चुके थे। सब लोग मिश्रित उद्देश्य से सेना में भरती हुए थे। अभियान का प्रेम या खतरों का मुका-बिला करने और कठिनाइयाँ सहने की उत्सुकता एक उद्देश्य थी और मेरी समझ में यही मुख्य उद्देश्य था। अधिकांश आदमियों में थोड़ा-थोड़ा देश और झण्डे का रहस्यमय प्रेम था। कुछ व्यक्तियों की बातचीत से पता चलता था कि वे घर के नीरस वातावरण को छोड़कर उत्तेजना और उत्साह के लिए सेना में भरती हुए थे। अधिक आयुवाले कम से कम दो सैनिकों की स्त्रियाँ घर पर बहुत कष्ट पहुँचाती थीं। सेवा के बाद पेन्शन की आशा का कभी-कभी निश्चित रूप से जिक्र किया जाता था। १८९८ में हम सबके ऊपर गृह-युद्ध और उसको अन्त तक लड़नेवाले आदमियों की छाया थी। यह गृह-युद्ध हमारे भरती होने के केवल तैंतीस वर्ष पहले हुआ था। हमारे उद्देश्य ऐसे मिश्रित थे जैसे गृह-युद्ध में लड़नेवाले

सैनिकों के थे। गार्ड ड्यूटी के सुनसान घंटों में आप इस बात पर विचार कर सकते थे कि आप क्यों भरती हुए थे।

एक दिन की छुट्टी पाने पर हम लोग दो मील पैदल चलकर फाल्सचर्च पहुँचे, वहाँ से ट्रॉली द्वारा वाशिंग्टन गये, कांग्रेस-भवन देखा और ह्वाइट हाउस के पास से गुजरे। मैंने फोर्ड थियेटर को बाहर और भीतर से पहली बार देखा और सड़क के पार पीटर-सन हाउस को बाहर से देखा।

स्टेट मिलिशिया टोपियों के बदले हमें चौड़े किनारेवाले हैट मिले और स्प्रिंग फील्ड राइफिलों की जगह हमें क्लैग-जारजेन्सेन मिलीं। छः जुलाई को बहुत चहल-पहल थी। वर्जिनिया और नार्थ कैरोलिना को पार करके साउथ कैरोलिना में स्थित चार्ल्स्टन पहुँचने के लिए हम अटलांटिक कोस्टलाइन रेलगाड़ी पर सवार होने लगे। हम लोगों ने पहली बार दक्षिण की हवेलियों, कोठरियों और झोपड़ियों के इर्द-गिर्द तम्बाकू और कपास को उगते हुए देखा और कहीं-कहीं स्टेशनों पर हमने आदमियों को मकई की शराब की बोतलें बेचते हुए देखा जिसका रंग वर्षा के पानी की तरह था। रात को हम अपनी गाड़ी की सीटों पर सोये और दूसरे दिन हम लोग घाट के निकट रूई के बड़े-बड़े गोदामों में ठहराये गये। हम लोग तैरते हुए घाट तक जाते थे जहाँ इलिनोइस प्रेयरी के लड़के अटलांटिक महासागर के पानी का स्वाद लेने के लिए उसे मुँह में भरते थे और फिर एक दूसरे से कहते थे, "यह खारा है, क्यों है न?" जब हम गृहयुद्ध की वर्दियाँ पहनकर चार्ल्स्टन में चारों तरफ घूमते थे तब लोग हमारे साथ स्नेहपूर्ण व्यवहार करते थे। जलपान-गृहों और सैलूनों में हम जो कुछ खाते-पीते थे उसके लिए वे हमसे पैसे नहीं लेते थे। हब्शी शान्तिपूर्वक एक तरफ

खड़े हो जाते थे और हमारे प्रति सम्मान प्रकट करने के लिए अपने हैट उतार देते थे। हम लोगों को कड़े और चपटे बिस्कुट दिये गये थे जो रुपयों की तरह अच्छे थे। चुनौती देने पर एक दक्षिणी सुन्दरी ने एक कड़े बिस्कुट के बदले में हममें से एक सैनिक का जोर से चुम्बन किया।

हमने लंगर डाले हुए 'रीटा' को देखा जो लकड़ी ढोनेवाला जहाज था। वह पहला जहाज था जिसको हमारे जहाजी बेड़े ने स्पेनवालों से छीना था। ११ जुलाई को सिक्स्थ इलिनोइस की छः कम्पनियाँ उस पर सवार हुईं। प्रत्येक मनुष्य को नई खुरदरी लकड़ी की बनाई हुई बेंच दी गई। जब हम उस पर अपनी नंगी बाँह या पैर फेरते थे तब उसमें खपाचियाँ मालूम पड़ती थीं। नीचे हवा भारी, गर्म और नम थी। जब रात साफ होती थी तब कई सौ आदमी अपने कम्बल लेकर ऊपर आते थे और उनके सोने के ऊपर का पूरा डेक (तल्ला) भर जाता था। पहला दिन बीतने पर एक आदमी ने कहा, "यह नाँद इस प्रकार हिलती है जैसे कच्चा अंडा ह्विस्की के गिलास में हिलता है।" समुद्र पार चलने के कारण बीमार आदमियों में से एक ने दूसरे कहा, "तुम्हारा चेहरा नीबू की भाँति हरा क्यों है?" हमारा अधिकांश राशन टिन में बन्द ठंडी फलियाँ और सामन मछलियाँ थीं। एक या दो दिन जब हमें टिन में बन्द टमाटर दिया जाता था तब उन्हें हम छुट्टियाँ कहते थे। बैंड रोज बजता था और मनुष्य उसके लिए कृतज्ञ थे। एक दिन गतिशील जलस्तम्भ देखा गया, दूसरे दिन एक शार्क और कुछ उड़ती हुई मछलियाँ देखी गईं और स्थल पर रहने-वाले मनुष्यों ने सोचा कि जिस उद्देश्य से वे लोग आये थे उसका एक भाग यह भी है।

१७ जुलाई की शाम को रीटा गुवानटानामो बे, क्यूबा में पहुंचा। हमारा बैंड बज रहा था और आरेगन, इंडियाना, आयोवा नामक विख्यात युद्धपोतों से हमारे लिए जय-ध्वनि आ रही थी। क्रूजरों और पनडुब्बियों से और भी अधिक जय-ध्वनि आती थी। प्रातःकाल कर्नल जैक फास्टर और स्टाफ अफसर समुद्र-तट पर गए और शीघ्र यह समाचार लेकर आये कि सैन्टियागो ले लिया गया है और क्यूबा में युद्ध करने के लिए हम तट पर नहीं उतारे जायँगे। कुछ मनुष्यों को निराशा हुई और दूसरों को संतोष हुआ। यह भी समाचार मिला कि तट पर लगभग चार सौ सैनिकों को यलो फीवर हो गया है और कर्नल जैक को तुरन्त रीटा पर वापस चले जाने की आज्ञा मिली थी।

हम लोग लंगर डालकर कुछ दिन रहे और जब हम लोग गुवानटानामो बे से बाहर निकले तब अफवाह थी कि हम लोग पोर्टोरीको जा रहे हैं। यदि हम संयुक्तराज्य के समाचार-पत्रों को पढ़ते होते, तो हम विश्वास करते कि हम पोर्टोरीको की राजधानी सैन जुयेन के निकट केप फेजार्डो में उतरने जा रहे हैं। परन्तु पोर्टोरीको का आधा मार्ग समाप्त करने पर इस अभियान के तीन हजार आदमियों के कमाण्डर जनरल नेल्सन ए० माइल्स ने अपना इरादा बदल दिया। उत्तरी तट पर केप फेजार्डो पर उतरने के बदले हम लोग पोर्टोरीको के दक्षिणी तट पर उतरेंगे। उनके मन में यह विचार आया कि चूँकि युद्ध-विभाग ने समाचार-पत्रों को और समाचार-पत्रों ने संसार को बतला दिया था कि यह अभियान कहाँ उतरेगा, मार्च करेगा और युद्ध करेगा, इसलिए उसका अन्य स्थान पर उतरना अधिक सुरक्षित और सरल होगा जहाँ उसकी आशा नहीं की जाती थी। कुछ आदमी ऐसे थे जो

बाद में कहते थे कि सैन जुयेन के सुरक्षित हार्बर पर हमला करने के लिए जहाजी बेड़े और उसकी बन्दूकों की आवश्यकता थी और सैनिक होने के कारण जनरल माइल्स ने दक्षिणी तट पर उतरना और सेना का दक्षिण से द्वीप पर अधिकार करना अच्छा समझा जिससे कुछ समय के उपरान्त सैन जुयेन के शासन करने के लिए द्वीप का बहुत थोड़ा भाग रह जाय। बाद में हमने यह भी सुना कि युद्ध-सचिव तथा बहुत से अन्य लोग यह सुनकर स्तब्ध हो गये थे कि जनरल माइल्स ने अपना इरादा बदल दिया है और दक्षिण तट पर युद्ध-कार्य आरम्भ कर दिया है।

२५ जुलाई को सूर्योदय के उपरान्त शीघ्र हमने एक बन्दरगाह देखा और उसमें प्रवेश किया। आगे हमने एक जहाज से छोड़ी जानेवाली गोलियाँ देखीं और यह भी देखा कि नीली जैकेट पहननेवाले सैनिकों से भरी हुई नावें समुद्रतट की ओर जा रही हैं। हमें आज्ञा दी गई कि हम अपनी कारतूसवाली पेटियाँ पहनें और राइफिल लेकर मार्च करनेवाली अपनी पोशाकें पहन लें। हम गोलियों की आवाजें सुनते थे, तट की ओर दृष्टि-पात करते थे और थोड़ा-थोड़ा सफेद धुआँ देखते थे और हम अपनी बारी की प्रतीक्षा करते थे कि रस्सी की सीढ़ियों से हम नावों में उतरें जिनको "लाइटर्स" कहते थे। हम एक उथली खाड़ी में ले जाये गये जहाँ हम पानी में उतरे जो हमारी कमर से गहरा था। अपने सिरों के ऊपर राइफिलें लिये हुए हम लोग पानी में हिलकर तट पर पहुँचे।

हम गुवानिका में थे जो एक सड़कवाला नगर था और जिसमें ताड़ और नारियल के पेड़ थे जिनको हमने कभी नहीं देखा था। हम आशा करते थे कि कहीं नगर में अथवा निकटवर्ती पहाड़ी

में स्पैनियार्ड लोगों से युद्ध करने की हमको आज्ञा मिलेगी। हमें मार्च कराकर एक मैदान में ले जाया गया जहाँ हम दोपहर और तीसरे पहर प्रतीक्षा करते रहे। रात को हमने टिनों में बन्द फलियाँ और कड़े बिस्कुट खाये और शीघ्र हमें मार्च करने की आज्ञा दी गई। जब हम ठहरे तब अँधेरे में हम प्रतीक्षा करते थे और हमने गोलियाँ सुनीं जो निकट ही मालूम पड़ती थीं। यही केवल एक समय था जब उस द्वीप पर, हममें से अधिकांश यह आशा करते थे कि, हमें युद्ध करना पड़ेगा परन्तु वैसा नहीं हुआ। प्रतीक्षा करने के उपरान्त हम गुवानिका के निकट अपने मैदान में वापस लौट गये।

प्रातःकाल हम लोगों ने याको और फिर पान्स तक मार्च किया और देखा कि शत्रु उन नगरों को छोड़कर पीछे हट गये हैं। दो रात तक हमने जंगल में एक दर्रे में खेमा डाला। पहले हम अपनी बनियाइन और जाँघिया पहनकर सोये थे और हमारे पैर नंगे थे परन्तु जब मच्छरों ने हमको दो-तीन घंटा काटा तब नम गर्मी के होते हुए भी हमने अपने पतलून, ऊनी कमीजें और मोजे पहने। वे मच्छर बड़े-बड़े, भूखे और निष्ठुर थे। एक आदमी ने, जिसका चेहरा मच्छरों के काटने से फूल गया था, कहा, "वे बिगुल बजाकर आते हैं जिससे प्रकट होता है कि वे खाना खाने आ रहे हैं।" मेरी एक आँख बन्द हो गई थी क्योंकि उसके चारों ओर सूजन हो गई थी। कुछ आदमियों की दोनों आँखें बन्द हो गई थीं। दूसरी रात को दूसरों का अनुसरण करके मैंने अपने सिर पर अपना रबड़ का चोगा लपेट लिया। एक घंटे के बाद मैं जग जाता था क्योंकि अनेक बार गन्दी हवा में साँस लेने के कारण मेरे सिर में दर्द होने लगता था। मैं चोगे को फेक देता था, मच्छरों को मार भगाता था और फिर सिर पर चोगा ओढ़ लेता

था; तब मैं उस समय तक सोता था जब तक सिर दर्द से मैं जग नहीं जाता था। इस क्रिया को मैं दोहराता रहता था।

जब हम सड़कों और गलियों में मार्च करते थे तब नंगे पाँव-वाले पुरुषों और स्त्रियों को देखते थे जो मुस्कराकर हमसे कहते थे कि पोर्टोरीको अ रीका का है। चार सौ वर्षों तक मैड्रिड से स्पैनिश सरकार इस द्वीप का शासन करती थी। अब यह अमरीका का होनेवाला था और यह स्पष्ट था कि द्वीप के सामान्य लोग इस विचार को पसन्द करते थे और उससे बहुत आशा रखते थे। सड़क पर कई बार हमने नंगे पाँववाले मनुष्यों को देखा जो केवल पतलून, कमीज और हैट पहने हुए थे और भूने हुए भुट्टे खाते थे। हमने घुटने के बराबर बच्चों को देखा जो केवल फटी हुई कमीज पहने थे और उनके छोटे फूले हुए पेटों से प्रकट होता था कि उनको उचित प्रकार का और पर्याप्त भोजन नहीं मिलता है।

पाँस में हम लोग कुछ दिनों तक खेमा डाले रहे और तब पहाड़ी सड़कों पर चढ़ने लगे। अगस्त की उष्ण कटिबन्धीय गर्मी आरम्भ हो गई थी। हम लोग कारतूस की पेटी, राइफिल, संगीन, कम्बल का पुलिन्दा, आधे किरमिच का छोटा खेमा, राशन भरे हुए झोले और कोट लिये हुए थे। हम लोग अब भी पोटोमैक की '६५ सेना की भारी नीली ऊनी कमीज पहने हुए थे और मोटे किरमिच की पट्टियाँ घुट्ठियों से घुटनों तक हमारे बँधी थीं। एक के बाद दूसरे विश्राम-स्थल पर अपना बोझा हल्का करने के लिए कुछ आदमी अपने कम्बल को दो टुकड़ों में फाड़ डालते थे। मैंने अपने कम्बल का तिहाई भाग फाड़कर फेंक दिया। कुछ ने पूरा कम्बल फेंक दिया। कुछ लोग थककर गिर पड़ते

थे और कुछ को लू लग गई थी। यह चढ़ाव की तरफ आठ मील का मार्च था। रात में हम लोग सड़क के ऊपर एक ढाल पर ठहरे। आधी रात के करीब हम लोग सो रहे थे और सर्वत्र शान्ति थी। अकस्मात् एक चीख सुनाई पड़ी। फिर कई चीखें सुनाई पड़ीं। और कई कम्पनियों के आदमी शीघ्रतापूर्वक ढाल से सड़क की ओर जाने लगे। जो लोग सो रहे थे या अभी-अभी उठे थे वे कुचल गये और घायल हो गये। यह ज्ञात हुआ कि सामान और बारूद आदि की गाड़ियों को खींचनेवाले बैलों में से एक खुल गया था और घास की तलाश करते हुए उसने एक सोनेवाले व्यक्ति के ऊपर पैर रख दिया था। वह व्यक्ति जोर से चिल्लाया। उसका चिल्लाना सुनकर दूसरे भी चीखने लगे। हम ढाल पर चढ़कर गये और उनको "फर्स्टबैट्ल आफ द बुल रन" कहकर सो गये।

हम लोगों ने ऐडजन्टा के किनारे ढाल पर खेमा डाला जहाँ हमने अमरीकी झंडे को फहराते हुए देखा। बाबर्ची मेटकाफ ने एक दिन तीसरे पहर बहुत देर तक टिन में भरा हुआ गोमांस उबाला जिसे हम लोगों ने "रेड हार्स" नाम दिया था। बहुत उबालने पर भी वह रेशेदार और निस्स्वाद रह गया। हम लोगों ने अपने खेमे गाड़े, अपने चोगे और कम्बल जमीन पर रक्खे और हल्की-हल्की बूँदों में सोने लगे। प्रातःकाल तीन बजे के लगभग जोर की वर्षा आरम्भ हुई जो कुछ देर तक जारी रही और ढाल पर बहनेवाले पानी ने हमारे कम्बलों को भिगो दिया। हम अपने खेमों में से निकले, जितना हो सकता था उतना अपने कम्बलों को निचोड़ा और उनको और चोगों को अपने कंधों पर रख लिया। तब लगभग हजार आदमी चारों तरफ खड़े होकर सूर्योदय की प्रतीक्षा करने लगे और वह यह आशा करते थे कि वर्षा रुक जायगी। जब दिन हुआ तो मेटकाफ

ने सूअर का कुछ मांस, फलियाँ और गर्म काफी तैयार किया। प्रातःकाल सूर्य निकला, हमारे कपड़े सूख गये और हमने युटुआडो को मार्च किया।

युटुआडो में समाचार मिला, "मूल-लिपि पर हस्ताक्षर हो गये हैं और संधि की घोषणा कर दी गई है और हमें आज्ञा मिली है कि पाँस को वापस लौट जायँ। हम प्रसन्न हुए और चिल्लाये, "मूल-लिपि जिन्दाबाद।" यह एक नया विचित्र शब्द था जिसे हम पसन्द करते थे। एक रात को हम एक इमारत में सोये जो काफी सुखाने के काम में आती थी। एक आदमी अच्छी तरह एक सूखे खाने में लेट सकता था जो काफी की गंध से परिपूर्ण था।

पाँस में हममें से बहुतों ने अपने को तौला कि देखें हमारा वजन कितना घट गया है। आधे दर्जन के सिवाय शेष सभी मनुष्यों का वजन घट गया था। तराजू से मालूम हुआ कि अप्रैल का मेरा वजन १५२ पौण्ड से घटकर अगस्त में १३० पौण्ड हो गया है। बहुत से लोग दुबले हो गये थे और उनके चमड़े का रंग थोड़ा पीला हो गया था। वर्दियाँ कमजोर हो चली थीं और कहीं-कहीं फट गई थीं। हैटों में छेद हो गये थे।

पूरी सिक्स्थ इलिनोइस को लेकर हमारा जहाज न्यूयार्क के लिए रवाना हुआ। राशन के लिए हम लोग आठ-आठ आदमियों के मेसों में विभक्त थे। "रेड हार्स" का एक टिन एक आदमी को दिया जाता था जो उसे खोलता था। वह उसे अपनी नाक के पास रखता था, उसे सूँघता था, अपना चेहरा बिगाड़कर थूक देता था। दूसरा आदमी वही करता था और फिर दूसरा। इसी प्रकार मेस के आठों आदमी सूँघते थे और मुँह बिगाड़कर थूक देते थे। तब "रेड हार्स" का वह टिन अटलांटिक महासागर में उन मछलियों

के खाने के लिए फेक दिया जाता था जो उसे खाना चाहती थीं। किसी प्रकार हम लोग टिन में भरी हुई ठंडी फलियाँ यदा-कदा सामन और विश्वसनीय क़ड़े बिस्कुट खाकर दिन काटते थे। जिसे हम "रेड हार्स" कहते थे वह शीघ्र पूरे देश में "एम्बाड बीफ" के नाम से बदनाम हो गया।

जहाज पर हमने रस्म अदा किया जिसे पहले कई बार हमने पूरा किया था। डेक पर अनेक आदमी वृत्ताकार बैठे गपशप करते और खुशी मनाते रहते थे जब एक कहता था, "कमीजें उतारो! निरीक्षण का समय आ गया है।" तब हर एक व्यक्ति अपनी कमीज के सब भागों पर नजर दौड़ाता था विशेषकर सिलाई पर और चीलरों को चुनकर मार डालता था। पतलून और जाँघिया के चीलरों को मारना अधिक कठिन था। जब हम खेमों में रहते थे तब कभी-कभी जब हमारे पास समय और बड़े देकचे में पानी होता था तब उनको उबाल डालते थे।

जब रिचर्ड हार्डिंग डैविस ने लिखा कि जनरल माइल्स के मातहत सैनिकों के लिए "पोर्टोरीको एक आमोद-प्रमोद की यात्रा था।" तब उन्हें याद था कि वह आदेश देनेवाले उच्च अधिकारियों के साथ रहते थे। जब उन्होंने लिखा था कि सैन्टियागो के भयानक युद्ध की तुलना में पोर्टोरीको का अभियान "पुष्पों का उत्सव" था तब उन्होंने गम्भीर और भयानक सत्य लिखा था। परन्तु केवल उस खून, ज्वर और गल्तियों की भयानक घटनाओं की तुलना में ही हमारा अभियान पुष्पों का उत्सव था। कीचड़ और मच्छर गुलाब और प्रायन्सेटिया नामक फूल नहीं है। और न तो वर्षा में सोना और कड़ी धूप में पचास पौण्ड का बोझा लेकर मार्च करना भोज है। ऐसी कोई पिकनिक नहीं होती जहाँ लोग टोकरियों

में रक्खी हुई टिन में बन्द फलियाँ, कड़े बिस्कुट और "रेड हार्स" खाते हैं और फिर अपनी-अपनी कमीजें उतारकर चीलर मारते हैं। यद्यपि यह युद्ध छोटा था तथापि यह प्रथम युद्ध था जिसमें संयुक्त राज्य ने अपनी सेनाओं को जहाजों पर बैठकर विदेश में लड़ने और किसी द्वीप पर अधिकार जमाने के लिए भेजा था। यह एक छोटा युद्ध था जिसका परिणाम अत्यन्त महान् हो सकता था।

हम लोगों ने न्यूयार्क के बन्दरगाह में रात को प्रवेश किया; हम लोग वीहाकेन के डाक में ठहरे और प्रातःकाल हमने देखा कि एक छोटा जन-समुदाय हाथ हिलाकर हमारा स्वागत कर रहा है। डाक में मैंने एक निकेल की गेहूँ की एक रोटी और एक निकेल का एक क्वार्ट दूध खरीदा। जब मैं उस रोटी और दूध को खाता था तब मैंने महसूस किया कि अभी तक मैं पशु का जीवन व्यतीत कर रहा था और अब मनुष्य हो गया हूँ—भोजन बहुत साफ और स्वादिष्ट था। समाचार-पत्रों में हमारे विषय में समाचार निकल चुके थे और जब हम लोग न्यूयार्क नगर में घूमते थे तब पुरुष और स्त्रियाँ हमें रोककर पूछते थे कि हम लोग कहाँ से होकर आये हैं। कुछ लोग उन रेजिमेण्टों के विषय में पूछते थे जिनमें उनके लड़के भरती हुए थे और दूसरे लोग पूछते थे कि आप लोगों को किसी खाद्य और पेय का अभाव तो नहीं है। लोग देखते थे कि हम दुर्बल दिखाई पड़ते हैं, हम लोग कुछ थके थे और हमारे वस्त्र फटे थे। हम लोगों का रंग धूप और समुद्र के कारण साँवला हो चला था। परिस्थितियों और कीड़ों के कारण हमें काफी कष्ट पहुँचा था। लोगों ने हमारा आतिथ्य-सत्कार किया जिससे हमें हर्ष हुआ वह इस प्रकार व्यवहार करते थे मानो हम लोग वीर योद्धा हों। इसके विषय में हमें सन्देह था किन्तु इतना हम अवश्य जानते थे कि हम और अधिक

ताजा खाना खा सकते हैं और गर्म पानी और साबुन से नहा-धो सकते हैं। कभी-कभी हमें काँख में खुजलाने के लिए हाथ फैलाना पड़ता था।

हम लोग फिर रेलगाड़ी में सवार हुए जिसमें बेंत की सीटों पर हम बैठते और सोते थे। इस प्रकार हम लोग स्प्रिंग फील्ड, इलिनोइस पहुँचे और वहाँ खेमा डाला। वहाँ हमारी हाजिरी के कागज सजा दिये गये। जब २१ सितम्बर को हमारी गाड़ी गेल्स-बर्ग में बर्लिंगटन स्टेशन पर आई तब हम लोगों को गये हुए केवल पाँच महीने बीते थे परन्तु हमें ऐसा प्रतीत होता था कि हम लोग बहुत दिनों से कहीं गये थे। स्टेशन के प्लेटफार्म पर एक विशाल जन-समुदाय एकत्र हो गया जो सेमिनरी स्ट्रीट पर उत्तर की ओर एक भवन-समूह तक फैला था और वहाँ से आगे मेन स्ट्रीट तक पटरियों पर अनेक लोग एकत्र थे। मैंने अपनी माँ का चेहरा देखा और परिवार के अन्य लोगों को देखा जो हँस रहे थे और अपने हाथ ऊँचे उठाकर हिला रहे थे। हम लोग पंक्तिबद्ध खड़े हो गये और कम्पनी सी के ड्रिल हाल तक मार्च करते हुए गये।

उस दिन शाम को मैं मेरी के साथ डाहिण्डा के निकट एक फार्म-हाउस में गया जहाँ वह एक देहाती पाठशाला में अध्यापन करती थी। लोगों ने मुझे चार पायेवाले पंखों के बिस्तर पर सुलाया और मैं पंखों में धँसकर सोने की चेष्टा करने लगा। आधे घंटे तक मैं करवट बदलता रहा, फिर बिस्तर छोड़कर बाहर निकल आया और तब फर्श पर बिछाये हुए ऊनी कालीन पर तीस सेकंड में मुझे नींद आ गई।

दूसरे दिन मैं घर गया। मार्ट ने कहा, "अच्छा, तुम मरे नहीं।" मैंने कहा, "नहीं, लोगों ने मुझे इसका अवसर नहीं दिया।"

मार्ट ने आगे पूछा, "तुमने क्या सीखा?" मैंने उत्तर दिया, "मैंने जितनी चीजें सीखी हैं उनका सबका इस्तेमाल नहीं कर सकता।" मार्ट ने कहा, "अच्छा, पिछले वर्ष तुम भिखारी थे। इस वर्ष सैनिक हो। इसके बाद तुम क्या करोगे?" मैंने उत्तर दिया, "सम्भव है कि मैं कालेज जाऊँ।" इस पर वह बोला, "कालेज! वह महत्त्वपूर्ण होगा!"

मेरे पिता मुझे देखकर आनन्दपूर्वक मुस्कराये और मुझसे हाथ मिलाया जिससे मैं मुरझा गया। उन्होंने कहा कि परसों मैं अपने काम में लगा था और जब दूकानदारों ने पूछा कि तुम छुट्टी क्यों नहीं ले लेते तब मैंने कहा था, "मैं अपने लड़के से घर पर मिलूँगा और वह मुझे हर एक चीज बतला देगा।" माँ ने कहा, "उनके लिए यह ग्रीष्म ऋतु बहुत लम्बी हो गई थी।" दूकानदार और पड़ोसी उनसे प्रायः पूछते थे, "गस, लड़का कैसा है?" अथवा, "गस, कम्पनी सी देश से बहुत दूर जा रही है। हमें आशा है कि आपका लड़का कुशलतापूर्वक लौटेगा।" मार्ट कहता था कि ऐसे शब्दों का हमारे वृद्ध पिता पर गहरा प्रभाव पड़ा था और ऐसा मालूम होता था कि अब उन्हें निश्चय था कि वह अमरीका के नागरिक हैं। सेना में मुझे कुल १०३ डालर और ७३ सेण्ट मिले थे जिसमें से मैंने उनको ५० डालर दे दिया।

उस सप्ताह में समाचार-पत्रों में हमारे विषय में अनेक समाचार छपते रहे। आर्मी और नैवी लीग ने यूनिवर्सलिस्ट चर्च में हमें भोज दिया और लेडीज सोसायटी आफ द फर्स्ट प्रेसबीटिरियन चर्च ने हमें दूसरा विशाल भोज दिया। सबसे महत्त्वपूर्ण भोज वह आयस्टर सपर था जो फर्स्ट मेथडिस्ट चर्च के तहखाने में दिया गया था जहाँ भूतपूर्व मेयोर फारेस्ट एफ० कुक, कांग्रेसमैन जार्ज डब्ल्यू०

प्रिंस रेवेरेण्ड० डब्ल्यू० एच० गाइस्टवाइट ने भाषण दिया था। नाक्स के प्रेसिडेण्ट फिन्ले ने हमारे अभियान के विषय में एक कविता पढ़ी। वह पिंगल के नियमों से मुक्त कविता थी जिसमें हास्य का सुन्दर पुट था और लाल कवर की छोटी सी पुस्तक में उसकी छपी हुई प्रतिलिपि कम्पनी सी के प्रत्येक सदस्य को उपहार के रूप में दी गई।

लगभग प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में अप्रत्याशित आकस्मिक छोटी घटनाएँ आती हैं जो उसकी गति को मोड़ देती हैं। मेरे जीवन में भी दो ऐसी घटनाएँ आईं। कम्पनी सी के सैनिक जार्ज आर० लॉंगब्रेक ने, जिसका ब्रुक्स स्ट्रीट पर स्थित पिछला सहन बेरियन स्ट्रीट पर स्थित हमारे पिछले सहन से मिला था, जहाज पर मुझसे लोम्बार्ड विश्वविद्यालय में जाने के विषय में बातचीत की थी जहाँ वह एक वर्ष तक विद्यार्थी रह चुका था। उसने मुझसे पूछा था कि क्या मैं वहाँ नाम लिखाऊँगा। उसने बतलाया था कि शायद वहाँ मुझे एक वर्ष तक निःशुल्क शिक्षा मिले। मैंने कहा था कि हाँ, मैं वहाँ नाम लिखाऊँगा। इसलिए सब प्रोत्साहन और चर्चों में दिये गये भोजों के उपरान्त वह मेरे पास यह कहने के लिए आया कि लोम्बार्ड में हर्षपूर्वक सब व्यवस्था कर दी गई है। कम्पनी सी में लोम्बार्ड का एक और विद्यार्थी सैनिक लूइस डब्ल्यू० के था जो हमारी विदेश यात्रा के समय ज्वर से मर गया था।

तब विज ब्राउन ने आकर मुझसे कहा फायर डिपार्टमेण्ट में एक जगह खाली है। उस विभाग में दो चौकीदार थे जो रात को फायर हाउस में सोते थे और दिन में टेलीफोन से रिपोर्ट करते थे कि आग लगने की सीटी बजी थी या नहीं। यदि कहीं बड़ी आग लगती थी तब वह साइकिल चलाकर यथाशक्ति शीघ्रता-

पूर्वक वहाँ पहुँचते थे। चौकीदार को प्रतिमास दस डालर दिया जाता था। विज ने कहा, "कली, यह अच्छी रकम है और मुझे विश्वास है कि यदि मैं मेयोर कार्ने से तुम्हारे विषय में कहूँगा तो वह तुम्हें अवश्य नियुक्त कर देंगे। उन्होंने मुझे नियुक्त कर दिया। मैंने एक साइकिल और एक नीली कमीज खरीदी जिसमें सिलवर-डालर के बराबर सीप के बटनों की दो पंक्तियाँ थीं और एक बड़ा कालर था जिसमें सीने से बहुत नीचे बटन बन्द होता था। मैं प्रेयरी स्ट्रीट फायर हाउस की दूसरी मंजिल पर सोने लगा। हम सोलह आदमी एक कमरे में सोते थे। लोहे के फ्रेमवाले प्रत्येक बिस्तर की बगल में एक जोड़ा रबर बूट और पतलून रहते थे। जब खतरे का घंटा बजता था तब हम बिस्तर से बाहर निकलकर पतलून पहनते थे, पीतल के डंडे के सहारे फिसलकर नीचे उतरते थे और केमिकल वैगन या होज कार्ट पर कूदकर चढ़ते थे। चीफ जिम ओब्रायन ने प्रसन्नतापूर्वक मुझसे हाथ मिलाकर कहा, "चार्ली, जहाँ तुम काम कर चुके हो उसका विचार करके मैं आशा करता हूँ कि तुम अच्छे फायरमैन सिद्ध होगे।"

लैटिन, अँगरेजी, इनआरगैनिक केमिस्ट्री, नाटक और सार्वजनिक भाषण का अध्ययन करने के लिए मैंने लोम्बार्ड में नाम लिखाया। वहाँ पर विद्यार्थियों द्वारा विषयों के निर्वाचन करने की प्रणाली प्रचलित थी और मैंने इन्हीं विषयों का निर्वाचन किया। कुछ दिनों के पश्चात् मुझे प्रोफेसर जॉन डब्ल्यू० ग्रब के पास लैटिन सीखने के लिए आठ बजे जाना था। वर्षों पहले मैंने उनको गाय दूहते हुए और उसको चरागाह तक पहुँचाते हुए देखा था। मैंने सोचा कि सीजर की "कामेन्टरीज" उस प्रोफेसर के साथ पढ़ना मनोरंजक होगा जो वस्त्रों की रक्षा के लिए चोगा पहनकर गाय

दुह सकता है। जब आग की सीटी बजती तब मुझे क्लास छोड़ देना पड़ता था परन्तु यह अवसर इतना अधिक नहीं होता था जिससे क्लास के विद्यार्थियों या प्रोफेसर को कोई परेशानी हो।

मैं शिक्षा प्राप्त करने जा रहा था। मुझे लॉटी गोल्डक्विस्ट का कहना याद था कि हम कभी भी पर्याप्त शिक्षा नहीं प्राप्त कर सकते।

—